# राम-वर्षा

भाग १--२

अर्थात् श्रीरामतीर्थ ग्रन्थावली के भाग ७, ८, ९

का

संशोधित और विस्तृत संस्करण

---

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ.

( जो सन १८६० के एक्ट २१ के अनुसार रजिस्टर्ड है )

१९२८.

[ तीसरा संस्करण, संख्या ४००० ]

मूल्य घटिया क़ागज़ बिना जिल्द १)    बढ़िया क़ागज़ सजिल्द १॥)

# निवेदन

लीग यह देख कर हर्षित और उत्साहित हो रही है कि रामवर्षा हिन्दी का दूसरा संस्करण शीघ्र समाप्त हो गया और पाठकोंने लीग को इसका तीसरा संस्करण शीघ्र प्रकाशित करने का उत्साह दिया। यदि राम प्रेमियों ने इस संस्करण का शीघ्र वितरण करके लीग का उत्साह बढ़ाया, तो हमें पूर्ण आशा है कि इस का चौथा संस्करण इस से भी बढ़ चढ़ कर बहुत शीघ्र प्रकाशित होग । ईश्वर करे पाठकों के हृदय रामवर्षा के भजनों से और भी अधिक हरेभरे और प्रसन्न हों, जिस से इस संस्करण का प्रकाशन सफल हो ।

मन्त्री
श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग
लखनऊ

# भूमिका

आत्मा के केवल परोऽक्ष ज्ञान से हृदय में शान्ति और निजानन्द की प्राप्ति नहीं होती, किन्तु उस के अपरोऽक्षज्ञान अर्थात् आत्मसाक्षात्कार से ही होती है। और यह आत्मसाक्षात्कार केवल पुस्तक-अध्ययन वा वादविवाद से प्राप्त नहीं होता, किन्तु उसी आत्मज्ञान के श्रवण, मनन और निदिध्यासन के नित्य जारी रखने से स्वतः प्राप्त होता है । इसीलिए श्रुति बार बार इस भाव को स्पष्ट रूप से ऐसे कहती है:—

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।"

अर्थ—आत्मा साक्षात्कार करने योग्य, सुनने योग्य, मनन करने योग्य और निदिध्यासन करने योग्य है।

इस आत्मज्ञान के श्रवण, मनन और निदिध्यासन का सुगम और सरल उपाय तत्त्व-विचार तथा निजानंद के भजनों का नित्य सुनना व गाना है। प्रथम तो भजन की मधुर ध्वनि ही गाने वाले और श्रोता के चित्त की वृत्तियों को बाहर से हटा कर अंतर्मुख व एकाग्र कर देती है। दूसरे, यदि ध्वनि के साथ साथ भजन के अर्थ भी स्मरण होते जायँ तो चित्तवृत्ति स्वतः आत्मध्यान में लीन वा परमानन्द से पूर्ण हो जाती है। बिना भजन के अन्य विधि से उक्त फल शीघ्र और सुगमता पूर्वक प्राप्त नहीं होता। बल्कि कहना पड़ता है कि पूर्व ऋषियों व ब्रह्मवेताओं को प्रायः इसी विधि से शीघ्र आत्मानुभव प्राप्त हुआ था। यही कारण है कि वेद, शास्त्र, रामायण, गीता, ग्रन्थ साहिब इत्यादि अनेक ग्रन्थ, जो मस्त पुरुषों द्वारा उच्चारण हुए वा लिखे गये हैं, सब के सब छन्दों, पद्यों, स्वरों, रागों, और भिन्न भिन्न प्रकार की ध्वनियों से पूर्ण हैं।

मस्तपुरुषों के उपदेशों का छन्दों, मंत्रों, पद्यों, स्वरों और गीतों में बहना वा लिखे जाना इस लिए भी है कि बड़ा फैला हुआ ख्याल

कविता या मंत्र में थोड़ी जगह घेरता है, मानो समुद्र एक कूज़ा में बन्द हो जाता है। पर यह हाल गद्य का नहीं है। इसीलिए सरल इबारत से कही बात दिल पर वैसी चोट नहीं लगाती जैसी कि कविता वा गीत।

चूँकि तत्त्वचिन्तन के भजनों और स्वरभरे रागों और छन्दों के गायन से चित्त पर भारी प्रभाव पड़ता है, जिस से चित्तवृत्ति आत्मध्यान में शीघ्र लीन हो जाती है, इसलिए ऐसे रागों व भजनों से पूर्ण पुस्तक की अत्यावश्यकता समझ कर सब से पहले एक पुस्तक 'रामवर्षा' के नाम से उर्दू भाषा में रची गई थी, जिस के तीन संस्करण आज तक निकल चुके हैं और चौथा इसी वर्षमें निकलने वाला है। उसी पुस्तक का उल्था हिन्दी अक्षरों में करके सब से पहले सन् १९११ में श्री नागजी नाथू भाई, प्रौडर व मालिक गणात्रा यन्त्रालय राजकोट (काठियावाड़) द्वारा छपवाया गया। तत्पश्चात् उसका दूसरा संस्करण सन् १९२१ में परमहंस श्री स्वामी रामतीर्थ जी महाराज के भक्तोंसे स्थापित संस्था "श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग लखनऊ" द्वारा प्रकाशित किया गया। और ईश्वर का धन्यवाद है कि आज इतने वर्ष बाद इसी पुस्तक के तीसरे संस्करण को प्रकाशन करने का भी सौभाग्य इसी लीग को प्राप्त हुआ। यदि पाठक गण ने, विशेषतः रामप्यारों ने, इस संस्करण का वितरण ज़ोर से किया, तो आशा है कि बहुत शीघ्र ही यह संस्करण समाप्त हो जायगा, और लीग फिर इस से भी बढ़ चढ़ कर चौथा संस्करण निकालने का प्रयत्न करेगी।

इस संस्करण में परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज के वैराग्य व मस्ती भरे समस्त भजन दिये गये हैं। इन से अतिरिक्त अन्य लेखकों के अनेक भजन भी हैं कि जो स्वामीजी महाराज की नोटबुकों में पाये गये या गुरु ग्रन्थ साहिब इत्यादि प्रसिद्ध पुस्तकों से उद्धृत किये गये हैं। यह संस्करण यद्यपि लगभग ५५० पृष्ठों में

समाप्त हुआ है, पर भजन संख्या इस में पूरी चार सौ (४००) है। इन चार सौ भजनों में से जो भजन स्वामी रामतीर्थ जी महाराज की अपनी लेखनी से बहे हुए हैं उनके आरम्भ में ऐसा चिह्न * दे दिया गया है, जिस से पाठकों के पता लग जाय कि अमुक भजन स्वामी राम का है और अमुक अन्य का। और कठिन कठिन भजनों का पंक्तिवार अर्थ भी साथ दे दिया है जिस से पाठक गण को कठिन भजनों के समझने में दिक्कत न हो।

यह संस्करण दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में तो केवल गाने वाले भजन हैं, और दूसरे भाग में वेदान्त के भिन्न भिन्न विषय पद्यों में पुरोये हुए हैं, जो प्रायः कविता के रूप में हैं। प्रथम भाग के भजन नौ अध्यायों ( अर्थात् १ मंगलाचरण, २ गुरुस्तुति, ३ उपदेश, ४ वैराग्य, ५ भक्ति, ६ आत्मज्ञान, ७ ज्ञानी, ८ त्याग और ९ निजानन्द वा मस्ती) में विभक्त हैं। दूसरे भाग के भजन विविधि विषयों के पाँच प्रकरणों ( १ वेदाँत २ माया ३ तीन शरीर और वर्ण, ४ निजी अनुभव और ५ भारतवर्ष) में विभक्त हैं। दूसरे भाग में पहले तीन प्रकरणों के भजन तो सबके सब स्वामी राम जी की लेखनी से वहे हुए हैं। और पिछले दो प्रकरणों के भजन सबके सब दूसरे लेखकों के हैं। देशभक्ति के प्रचारार्थ और देशभक्तों के उत्साहार्थ इस संस्करण के अन्त में भारतवर्ष विषयक बहुत से भजन भी दे दिये गये हैं।

स्वामी राम के प्रेमियों को ऐसी धार्मिक पुस्तकों के छपवाने और जनता तक पहुँचाने में पहले बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। पर जब से राम प्रेमियों ने इसी कार्यके लिये अपनी एक संस्था श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग के नाम से लखनऊ में स्थापित कर ली है, तब से बहुतसी कठिनाइयाँ दूर होगई हैं;और तभी से स्वामी राम के सब लेख व उपदेश हिन्दी, अँगरेज़ी और उर्दू भाषा में क्रमानुसार निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं।

लीग के उद्देश्य और संक्षिप्त नियम ये हैं कि:—

उद्देश्य (क) विशेषतः ब्रह्मलीन श्री स्वामी राम तीर्थ जी के लेखों, व्याख्यानों तथा जीवन-चरित्र को ।

(ख) सामान्यतः उन के उपदेशों के अनुकूल अन्य ग्रन्थों को भी भिन्न भिन्न भाषाओं में उत्तम शैली और मनोहर रूप में, विषयों की विशुद्धता और मौलिकता की संरक्षा करते हुए प्रकाशित करना और उन्हें यथासम्भव सस्ते दाम पर बेचना ।

नियम—श्रीस्वामी रामतीर्थजीके उपदेशों के अनुयायी, अथवा उनसे सहानुभूति रखने वाले सज्जन इस लीग के आजन्म संरक्षक १०००) रुपया देने पर, आजन्म सदस्य में २००) रुपया देने पर और आजन्म संसर्गी २५) रु० देने पर होंगे । और संरक्षक को ५०) रुपया की, सदस्य को १०) रुपया की और संसर्गी को १।) रुपया की पुस्तकें बिना मूल्य प्रति वर्ष पाने का अधिकार होगा ।

शेष नियम लीग की नियमावली मंगवाकर पढ़िये ।

यदि रामप्यारों ने इस धार्मिक संस्था में शीघ्र प्रविष्ट होकर इस की तन मन धन से सहायता की, तो हमें पूर्ण आशा है कि यह संस्था अपने उद्देश्यों को भली भाँति पूर्ण करती हुई जनता की सेवा में पूर्णतया सफल होगी ।

ईश्वर करे पाठकों के हृदय लीग की प्रकाशित पुस्तकों के अध्ययन से प्रफुल्लित, प्रसन्न और हर्षित हों, जिससे वे अपना सर्वस्व इस अति उपयोगी संस्था में अर्पण करने योग्य और उत्सुक हों । तथास्तु ।

र. स. नारायणस्वामी
(ग्रन्थ रचयिता)

ॐ

# श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ से

## श्रीस्वामी रामतीर्थजी की

## तीन भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकें

| नाम भाषा | नाम पुस्तक | दाम साधारण संस्करण | विशेष संस्करण |
|---|---|---|---|
| हिन्दी | परम हंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज के समग्र ग्रंथ, २८ भागों का दाम | १०) | १५) |
| " | " आधे १४ भाग का दाम | ६) | ८) |
| " | फुटकर भागों का दाम | ॥) | ॥।) |
| " | संक्षिप्त राम-जीवनी ... ... | ।) | — |
| उर्दू | खुमखाना-ए-राम, प्रथम जिल्द ... | १) | १॥) |
| " | राम-वर्षा ( प्रथमभाग ) ... ... | — | ॥।) |
| " | राम-पत्र ... ... ... | ॥) | ॥।) |
| अँग्रेज़ी | स्वामी रामजी के समग्र लेख, व्याख्यान चार जिल्द, मूल्य प्रति जिल्द ... | २) | — |
| " | राम-हृदय ... ... ... | ॥) | १) |
| " | राम-कविता ... ... ... | ॥) | १) |
| " | संक्षिप्त राम-जीवनी सहित गणितपर लेख | ॥।) | — |
| " | राम-कथा सरदार पूर्णसिंह कृत ... | — | ३) |
| फ़ोटो | स्वामी रामकी बड़े साइज़ की तिरङ्गी फ़ोटो | | १०) |
| " | " " सादी फ़ोटो | | ५) |
| " | " कैबिनेट साइज़ | | १) |
| " | " छपे चित्र दस का सेट | ॥) | प्रत्येक –) |

# श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ

की

## अन्य प्रकाशित पुस्तकें

| नाम भाषा | नाम पुस्तक | दाम साधारण संस्करण | विशेष संस्करण |
|---|---|---|---|
| हिन्दी | श्रीमद्भगवद्गीता पर परमहंस स्वामी राम के पट शिष्य श्रीनारायण स्वामी कृत व्याख्या, सम्पूर्ण दो भागों में पृष्ठ लगभग १६००, दाम प्रत्येक भाग | २) | ३) |
| हिन्दी | वेदानुवचन, श्रीबाबा नगीनासिंह-कृत | १॥) | २) |
| उर्दू | ,, ,, | १) | १॥) |
| | मियारुलमुकाशफ़ह, अर्थात् आत्म-साक्षात्कार की कसौटो | ॥) | ॥।) |
| फ़ोटो | श्रीयुत परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी के पट शिष्य श्रीमान् नारायणस्वामी की फ़ोटो कैबिनिट साइज़ | १) | |

अधिक पुस्तक-परिचय के लिए लीग का सविस्तर सूचीपत्र मँगवाकर देखिये।

मैनेजर, श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ।

---


मुद्रक-पं० मन्नालाल तिवारी,
हरीकृष्ण कार्यालय, शुक्ला प्रिंटिङ्ग प्रेस, ६६, लाटूश रोड,
लखनऊ.

SWAMI RAMA TIRTHA, M. A.

LUCKNOW 1902.

# विषय-सूची

## उपदेश

नोट—नं० ७१ से १०४ तक भजन हैं तो वैराग्य अध्याय के, पर प्रेस

## बैराग्य

## भक्ति

# आत्म-ज्ञान

## ज्ञानी

## त्याग



---

* नं० २७८ दो भजनो के साथ प्रेस की भूल से छप गया, पर इस भूल को ठीक करने के ख्याल से नं० ३२३ ( निजानन्द अध्याय के अन्त में ) घटा कर छाप दिया गया है जिस से संख्या के जोड़ में अशुद्धि न होने पाय।

## निजानन्द ( मस्ती )

---

* नं० ३२४ से पहिले नं० ३२३ इस लिए नहीं दिया गया कि संख्या नं० २७८ पहिले पृष्ठ २१० व २११ पर दो बार दी गई है।

# भाग दूसरा

## वेदान्त

## माया



## तीन शरीर और वर्ण

## निजी अनुभव



## भारत वर्ष

# मंगलाचरण

[ १ ]

दोहरा, राग विभास

नारायण सब रम रहा, नहीं द्वैत की गन्ध।
वही एक बहु[1] रूप है, पहिला बोलूँ छन्द॥ १॥

कृपा सद्गुरु देव से, कटी अविद्या फन्द।
मैं तो शुद्ध ब्रह्म हूँ, द्वितीया बोलूं छन्द॥ २॥

स्व स्वरूप राम[2] को लखूं एक सच्चिदानन्द।
वह मेरो है आत्मा, तृतीया बोलूं छन्द॥ ३॥

स्वाँस स्वाँस अनुभव करूँ, राम कृष्ण गोविंद।
सो मैं ही, कोई भिन्न न, चतुर्थ यह बोलूं छन्द॥ ४॥

सो[3] स्वरूप सा मैं लख्यो; निजानन्द मुकन्द।
सो आनन्द मैं एक रस, पञ्चम बोलूँ छन्द॥ ५॥

---

१ अनेक, नाना, २ राम भगवान् वा राम स्वामी से भी अभिप्राय है, ३ वही।

[ २ ]

राग पीलू, ताल दीप चन्दी

रफीक़ों[1] में गर है मुरव्वत[2] तो तुझ से।
अज़ीज़ों[3] में गर है मुहब्बत तो तुझ से ॥ १ ॥

ख़ज़ानों में जो कुछ है दौलत तो तुझ से।
अमीरों में है जाह-ओ-सौलत[4] तो तुझ से ॥ २ ॥

हकीमों में है इल्मो-हिकमत[5] तो तुझ से।
या रौनके-जहाँ[6] या है बरकत तो तुझ से ॥ ३ ॥

है रो कर यह तकरारे-उलफत[7] तो तुझ से।
कि इतनी यह हो मेरी क़िस्मत तो तुझ से ॥ ४ ॥

मेरे जिस्मो-जाँ[8] में हो हरकत तो तुझ से।
उड़े मो-ओ[9]-मनी की वह शिरकत[10] तो तुझ से ॥ ५ ॥

मिले सदक़ा[11] होने की इज़्ज़त तो तुझ से।
सदा एक होने की लज़्ज़त तो तुझ से ॥ ६ ॥

उड़े टेढ़ी बांकी यह चालाकियाँ सब।
सिपर[12] फैंक, ढूंढूं सलामत[13] तो तुझ से ॥ ७ ॥

---

१ मित्रों, २ सत्कार, लिहाज़, कृपा, शील, ३ प्यारों में, ४ पद, मान और वैभव, ५ विद्या और चिकित्सा-बुद्धि, ६ संसार की शोभा, ७ प्रेमके झगड़े और विवाद, ८ देह और प्राण, ९ अहंकार. १० पृथकता, जुदाई, ११ अर्पण होना, १२ तिस पर, १२ कल्याण।

[ ३ ]

राग शाम कल्याण

क्या क्या रक्खे है भगवान्! सामान तेरी कुदरत[1]।
बदले है रंग क्या क्या, हर आन[2] तेरी कुदरत ॥ १ ॥

सब मस्त हो रहे हैं, पेहचान तेरी कुदरत।
तीतर पुकारते हैं, सुबहान[3] तेरी कुदरत ॥ २ ॥

कोयल[4] की कूक में भी, तेरा ही नाम हैगा।
और मोर की ज़टल[5] में, तेरा ही प्याम[6] हैगा ॥ ३ ॥

यह रंग सोलहड़े[7] का जो सुबहो-शाम[8] हैगा।
यह और का नहीं है, तेरा ही काम हैगा ॥ ४ ॥

बादल हवा के ऊपर, घंघोर नाचते हैं।
मेंढक उछल रहे हैं, और मोर नाचते हैं ॥ ५ ॥

बोलें बाये[9] बटेरें, कुमरी पुकारे कू कू।
पी पी करे पपीहा, बगले पुकारें तू तू ॥ ६ ॥

क्या फाख्तों की हक हक[10], क्या हुदहुदों की हू हू।
सब रट रहे हैं तुझ को, क्या पंखी[11] क्या पखेरू ॥ ७ ॥

---

१ माया, प्रकृति, २ समय, हर घड़ी, ३ तेरी माया पर बलिहारि, ४ पक्षी का नाम, ५ चाल, ६ पैग़ाम, संदेशा, ७ शफ़क़, प्रातः व सायंकाल की आकाश में लाली ८ प्रातः सायं, ९ पक्षी का नाम, १० आवाज़ का नाम, ११ पक्षी छोटे व बड़े।

[ ४ ]

मुसद्दस राग बुढहँस अथवा राग बरवा ताल तीन

कहीं कैवाँ[1] सितारह[2] हो के अपना नूर चमकाया।
ज़ुहल में जा कहीं चमका, कहीं मर्रीख़[3] में आया॥
कहीं सूरज हो क्या क्या तेज़ जल्वाँ[4] आप दिखलाया।
कहीं हो चाँद चमका और कहीं ख़ुद बन गया साया॥

तू ही बातन[5] में पिनहाँ[6] है, तू ज़ाहर हर मकान् पर है।
तू मुनियों के मनों में है, तू रिंदों की ज़ुबान् पर है (टेक)॥१॥

तेरा ही हुक्म है इन्दर, जो बरसाता है यह पानी।
हवा अटखेलियाँ करती है तेरे ज़ेरे[7]-निगरानी॥
तजल्ला[8] आतशे-सोज़ाँ[9] में तेरी ही है नूरानी[10]।
पड़ा फिरता है मारा मारा डर से मर्गे-हैवानी[11]॥ तूही० २॥

तू ही आँखो में नूरे-मर्दमक[12] हो आप चमका है।
तू ही हो अक़्ल का जौहर सिरों में सब के दमका है॥
तेरे ही नूर का जलसा है क़तरा में जो नम[13] का है।
तू रौनक़ हर चमन[14] की है, तू दिलबर जामे-जम[15] का है॥तूही०३

---

१ सातवां आकाश का, २ शनिश्चर तारा, ३ मंगल तारा ४ तेज व प्रकाश, ५ अन्दर, ६ छिपा हुआ, ७ निग्रानी के नीचे, आज्ञाधीन ८ तेज, रौशनी, ९ जलती हुई अग्नि, १० चमक, प्रकाश, ११ पशुस्वभाव मृत्यु देवता, १२ आँख की पुतली की रौशनी, १३ तरी, १४ बाग़, १५ बादशाह का प्याला।

कहीं ताऊस[1] ज़री[2] बाल बनकर रक्स[3] करता है।
दिखाकर नाच अपना मोरनी पर आप मरता है॥
कहीं हो फाख़्ता[4] कू कू की सी आवाज़ करता है॥
कहीं बुलबुल है खुद है बागबां फिर उससे डरता है॥ तू०४

कहीं शाहीन्[5] बना शहपर[6], कहीं शकरा[7] है मस्ताना।
शिकारी आप बनता है, कहीं है आब[8] और दाना॥
लटक से चाल चलता है कहीं माशूक़े-जानाना[9]।
सनम[10] तू, ब्राह्मण, नाकूस[11] तू खुद, तू है बुतखाना[12] ॥तूही०५॥

तू ही याक़ूत[13] में रौशन, तू ही पुखराज और दुर में[14]।
तू ही लाल-ओ बदख़शां[15] में, तू ही है खुद समुद्र में॥
तू ही कोह[16] और दर्या में, तू ही दीवार में, दर[17] में।
तू ही सेहरा[18] में आबादी में तेरा नूर नय्यर[19] में॥ तूही० ६॥

[ ५ ]

राग बरवा, ताल तीन

अजब हैरान हूँ भगवन्! तुम्हें क्योंकर रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं॥ १॥

करूँ किस तरह आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जा[20]।
निरादर है बुलाने को, अगर घंटी बजाऊँ मैं॥ २॥

---

१ मोर, २ सुनैहरी बालों वाला, ३ नृत्य, नाच, ४ घुग्गी ( घुगगतो ), ( ५, ६, ७, ) पक्षियों के नाम, ८ पानी और दाना, ९ प्रिया स्त्री की तरह. १० प्रिय, प्यारा, ११ शंख, १२ मंदिर, ( १३, १४, १५, ) मोती और लाल, १६ पर्वत, १७ द्वार, घर, १८ जंगल, १९ सूर्य, २० हर जगह, प्रत्येक स्थान।

तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान् पर भगवान् को कैसे चढ़ाऊँ मैं ॥ ३ ॥

लगाना भोग कुछ तुमको, यह इक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को, उसे कैसे खिलाऊँ मैं ॥ ४ ॥

तुम्हारी ज्योति से रोशन, हैं सूरज चाँद और तारे।
महा अंधेर है तुमको. अगर दीपक दिखाऊँ मैं ॥ ५ ॥

भुजाएँ हैं न सीना है, न गर्दन है, न पेशानी[१]।
तू है निर्लेप नारायण, कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं ॥ ६ ॥

[ ६ ]

राग हिंडोल

तेरी कुदरत तू ही जानें और न दूजा जाने।
जिसनूँ कृपा करे तू प्यारे सोई तुझे पिछाने ॥ १ ॥

तेरी सेवा तुझसे होवे और न दूजा करता।
भगत तेरा सोई तुध[३] भावे जिसनूँ तू रंगधरता[४] ॥ २ ॥

तू वड्[५] दाता, तू वड् दाना और नहीं कोइ दूजा।
तू समरथ स्वामी मेरा, हौं[६] क्या जाना तेरी पूजा ॥ ३ ॥

तेरा महल अगोचर मेरे प्यारे! बिखम[७] तेरा है भाना[८]।
कहो नानक ढहं पया द्वारे. रख लेवो मुगध अजाना ॥ ४ ॥

---

१ छाती व स्थान, २ मत्था, ३ तुझे, ४ हृदय को रंगता है, ५ बड़ा, ६ मैं, ७ कठिन, ८ भान करना, जानना, ९ गिर पड़ा।

[ ७ ]

हे अच्युत ! हे पार ब्रह्म ! अविनाशी अघनाशै ।
हे पूर्ण ! हे सर्वमय ! दुख भंजन गुण तासै ॥ १ ॥

हे संगी, हे निरंकार, हे निर्गुण सब टेक ।
हे गोविन्द, हे गुण निधान, जाकै सदा विवेक ॥ २ ॥

हे अपरम्पर हरहरे, है भी, होवन हार ।
ह सन्ताँ के सदा संग, निधारा आधार ॥ ३ ॥

हे ठाकुर हौं[3] दासड़ो, मैं निर्गुण गुण नहिं कोय ।
नानक दीजे नाम दान राखो हियैं परोय ॥ ४ ॥

[ ८ ]

श्लोक

ऊँचा अगम अपार प्रभु कथन न जाय अकथ्थ ।
नानक प्रभु शरणागति राखन को समरथ्थ ॥ १ ॥

बासुदेव सर्वत्र में ऊन न कतहूँ ठायँ ।
अन्तर बाहर संग है नानक कायँ दुड़ाय ॥ २ ॥

लाल गोपाल गोविन्द प्रभु, गहिर, गंभीर अथाह ।
दूसर नाहिं अवर कोय, नानक बेपरवाह ॥ ३ ॥

---

१ पाप के नाशक, २ उसका ३ मैं, ४ हृदय में परोकर, हृदय के साथ, ५ अकथनीय, ६ समर्थवान, ७ खाली, न्यून, ८ कहीं भी, ९ स्थान, जगह, १० क्यों दौड़ रहा है वा दौड़ रहा है, ।

रूप न रेख न रंग कछु त्रै गुण ते प्रभु भिन्न।
तिसहि बुझाये नानका जिस होवे सुप्रसन्न ॥ ५ ॥

[ ९ ]

राग तिलंग ( महल्ला ५ )

तुधं बिन दूजा नाहि कोय।
तूं करतार करें सो होय ॥

तेरा ज़ोर तेरी मन टेक³।
सदा सदा जप नानक एक ॥ १ ॥

सब ऊपर पार ब्रह्म दातार।
तेरी टेक तेरा आधार ॥ } रहाव

है तू है तू होवन हार।
अगम अगाध उच्च अपार ॥
जो तुध सेवे तिन भौदुःख⁴ नाहि।
गुरुप्रसाद नानक गुण गाहि ॥ २ ॥

जो दीसे⁵ सो तेरा रूप।
गुण निधान गोविन्द अनूप ॥
सिमर सिमर सिमरे जन सोई।
नानक करम⁶ प्रापत होई ॥ ३ ॥

जिन जपया तिसको बलिहार।
तिसके संग तरे संसार ॥

१ उसे दर्शन देता या अनुभव कराता है जिसपर वह स्वयं प्रसन्न होता है
२ तेरे विना, ३ आश्रय, ४ संसार का दुःख, ५ दीखे, दिखाई दे, ६ भाग्य।

कहो नानक प्रभु लोचा पूरे।
संतजनों की बाछों धूर॥ ४॥

[ १० ]

राग बरवा ताल तीन

है आरफों[2] के दिल में; भगवन्! मकान[1] तेरा।
और वेद पाठियों के, लबे[3] पर है नाम तेरा॥ १॥

काशी के बुतकदों[4] में, कुछ तू नहीं मुक़ैयद[5]।
हर जा[6] है तेरा मन्दिर, हर जा है धाम तेरा॥ २॥

जपते हैं तुमको प्यारे, दुनिया के जीव सारे।
हस्ती[7] का तेरी शाहद[8], हर एक काम तेरा॥ ३॥

दिल साफ़ कर लिया है, दुनिया की मल[9] से जिसने।
वह देखता है दिल में दर्शन मुदाम[10] तेरा॥ ४॥

आज़ाद को सिखा दो प्रीति की राह अपनी।
जिससे अमर हो पी के अमृत का जाम[11] तेरा॥ ५॥

[ ११ ]

तरज़ ठुमरी राग कुमाच, ताल तीन

जो तुम हो सो हम हैं प्यारे, जो तुम हो सो हम हैं। (टेक)

पर्वत में तुम, नदीयन में तुम, चहुँदिश तुम ही हो विस्तारे॥
वृक्षलता में तुमहि विराजो, सूरज चन्द्र तुम ही हो तारे॥१॥

---

१ पूर्णरूप में देखा, २ आत्मज्ञानियों, ३ मुख पर, ओष्ट पर, ४ मन्दिरों, ५ परिच्छिन्न, कैद, ६ स्थान, देश, ७ अस्तित्व, मौजूदगी, ८ साक्षी, ९ मैल, कीचड़, १० नित्य, सर्वदा, ११ प्याला।

देश भी तुम हो, काल भी तुमहो, तुमही हो सबके आधारे ॥
अलख ब्रह्म है नाम तिहारो, माया से तुम नित्य हो न्यारे ॥२॥

रूप नहीं, नहीं गुण है तुममें, वस्तु क्रिया से दूर सदा रे ॥
तीनों लोक में तुम ही व्यापो, तबहूँ उनते होत तुम न्यारे ॥३॥

जो ध्यावे सो यह ही पावे, तुम उनके चेतन प्यारे ॥
रामानन्द अब जान लेहु यों, आनन्द चेतन नहीं दो न्यारे ॥ ४ ॥

---

नोट—उक्त भजन राम भक्त स्वर्गवासी राय बहादुर लाला बैजनाथ साहब जज का है जो उन्होंने स्वामीजी को अपने पत्र द्वारा लिखकर भेजा था।

# गुरु-स्तुति

[ १२ ]

राग पीलू ताल दीप चन्दी

तेरी मेरे स्वामी ! यह बाँकी अदा[1] है ।
कहीं दास है तू, कहीं ख़ुद ख़ुदा है ॥ १ ॥

कहीं कृष्ण है तू, कहीं राम है तू ।
कहीं संगी है तू, कहीं तू जुदा है ॥ २ ॥

पिलाया है जब से मुझे जाम[2] तू ने ।
मेरी आँख में क्या नया गुल[3] खिला है ॥ ३ ॥

तेरे इश्क़ के बहर[4] में मस्त हूँ मैं ।
बक़ा[5] में फ़ना[6] है, फ़ना में बक़ा है ॥ ४ ॥

मुनज़्ज़ह तेरी ज़ात[7], तशबीह[8] से फ़ारग़[9] ।
मगर रंग तशबीह का तुझ पर चढ़ा है ॥ ५ ॥

---

१ नख़रे, नाज़, २ प्रेम-रस का प्याला, ३ पुष्प अर्थात् दृष्टि, ४ प्रेम-सागर, ५ हस्ती, अस्तित्व, ६ नेस्ती, नाश, ७ तेरा शुद्ध, पवित्र स्वरूप, ८ प्रमाण, दृष्टान्त, ९ रहित ।

नज़ारा तेरा 'राम' हर जा पै देखूं।
हर एक नग़मा ऐ जान! तेरी सदा है ॥ ६ ॥

[ १३ ]

※ सवैया राग धनासरी ※

आँखी अदायें देखो, चँद का सा मुखड़ा पेखो। (टेक)

बादल में बहते जल में, वायु में तेरी लटकें।
तारों में नाज़नीं में, मोरों में तेरी मटकें ॥ १ ॥

चलना ठुमक ठुमक कर, बालक का रूप धर कर।
घूँघट अधर उलट कर, हँसना यह बिजली बनकर ॥ २ ॥

शबनमें गुलें और सूरज, चाकर हैं तेरे पद के।
यह आनबान सजधज, ऐ 'राम'! तेरे सदके ॥ ३ ॥

[ १४ ]

राग यमन कल्याण तरज़ बलोचां ज़ालमान्

लखूं क्या आपको ऐ अब प्यारे!
अविनाशी कब वाचक शब्द तुम्हारे ॥ (टेक)

जहाँ गति रूप की न नाम की है।
वहाँ गति हाँ हमारे राम की है ॥ २ ॥

---

१ दृश्य, दर्शन २ गीत, राग, ध्वनि, ३ आवाज़, ध्वनि, ४ नख़रे, ढकरे, मुरकियाँ, ६ बादल का घूँघट, ७ ओस, ८ पुष्प, ९ न्योछावर।

वहीं इक रूप से पी प्रेम-शरबत।
नदी जंगल में जा देखे हैं परबत ॥ ३ ॥

वही इक रूप से नगरों में फिरता।
किसी के खोज में डगरों में फिरता ॥ ४ ॥

अजब माया है तेरी शाहे[1]-दुनिया!
कि जिससे है मेरी तेरी यह दुनिया ॥ ५ ॥

न तुझको पा सका कोई जहाँ में।
न देखा जिसने तुझको हर मकाँ में ॥ ६ ॥

तुझे समझा किये सौ कोस अब तक।
नहीं समझा मगर अफ़सोस अब तक ॥ ७ ॥

तू ही है 'राम' और तू ही है यादव।
तू ही स्वामी तू ही है आप माधव ॥ ८ ॥

[ १५ ]

※ [ ईशावास्योपनिषद् के आठवें मन्त्र का भावार्थ ] ※

है मुहीतो[2]-मनज़्ज़हो[3]-बे अबदाँ[4]।
रगो-पै[5] है कहाँ? हमा-बीं[6] हमा-दाँ[7] ॥ १ ॥

वह बरी[8] है गुनाहों[9] से, रिन्दे-ज़माँ[10]।
बदो-नेक[11] का उसमें नहीं है निशाँ[12] ॥ २ ॥

---

१ संसार के स्वामी, ईश्वर, २ सर्वव्यापक, ३ शुद्ध, ४ देह रहित, ५ नाड़ी, पट्ठा, ६ सर्वद्रष्टा, ७ सर्वज्ञ, ८ निर्लिप्त, ९ पाप, १० पूर्ण मस्त, जीवन मुक्त, ११ पुण्य पाप, १२ लेश मात्र।

वह बुज़ुर्ग-बज़ुर्गतर[1] है राहते-जाँ[2]।
वह है बाला[3] से बाला व नूरे-जहाँ[4] ॥ ३ ॥

वही खुद[5] है जुनाँ[6] व ब्रू[7] अज़ बियाँ।
दिये उसने अज़ल[8] में है रंगतो-शाँ[9] ॥ ४ ॥

यही 'राम' है दीदों[10] में सब के निहाँ[11]।
यही 'राम' है बहर[12] में बर[13] में अयाँ[14] ॥ ५ ॥

[ १६ ]

राग पीलू ताल दीप चन्दी

जो तू है, सो मैं हूँ, जो मैं हूँ, सो तू है ।
न कुछ आज़ू[15] है, न कुछ जुस्तजू[16] है ॥ १ ॥ (टेक)

बसा राम मुझ में, मैं अब राम में हूँ।
न इक है, न दो है, सदा तू ही तू है ॥ २ ॥

उठा जब कि माया का परदा यह सारा।
किया गम खुशी ने भी मुझ से किनारा ॥ ३ ॥

जुबाँ को न ताकत, न मन को रसाई[17]।
मिली मुझ को अब अपनी बादशाही ॥ ४ ॥*

---

१ सर्वोपरि श्रेष्ठ, २ प्राणों को सुख देनेवाला, ३ ऊँचा से ऊँचा, ४ संसार का प्रकाश, ५ स्वयं, ६ स्वर्ग, ७ वर्णन से परे, ८ अनादि काल, ९ नाना नाम रूप, १० नेत्रों में, ११ छिपा हुआ, १२ समुद्र, १३ पृथ्वी, १४ विद्यमान, प्रकट, १५ इच्छा, १६ जिज्ञासा १७ पहुँच।

* नोट—यह कविता स्वर्गवासी राय बहादुर लाला बैजनाथ की है जो उन्होंने अपने गुरु स्वामी रामजी महाराज को एक पत्र के रूप में लिखकर भेजी थी।

[ १७ ]

साखी या सवैया

बैठत राम ही, ऊठत राम ही, बोलत राम ही, राम रह्यो है।
खावत रामही, पीवत रामही, धामही रामही, राम गह्यो है॥
जागत रामही, सोवत रामही, जोवत रामही, राम लह्यो है।
देतहु राम ही, लेतहु राम ही, सुन्दर राम ही राम रह्यो है॥

[ १८ ]

( राग देव गंधारी महल्ला ५ )

माई गुरु चरणी चित्त लाइये ( टेक )
प्रभु होय कृपाल कमल प्रकाशे, सदा सदा हर ध्याइये॥ १ ॥

अन्तर[1] एको, बाहर एको, सब में एक समाइये।
घट-अवघट रविया सब ठाई[2], हर पूर्ण ब्रह्म दिखाइये॥ २ ॥

उस्तत[3] करें सेवक मुनि केते[4], तेरा अंत न कतहूं[5] पाइये।
सुखदाते दुःखभंजन स्वामी, जन नानक सदबलि[6] जाइये॥३॥

[ १९ ]

श्लोक ( महल्ला १ )

बलिहारी गुरु अपने, द्योहाड़ी[7] सदवार।
जिन मानस[8] से देवते कीये, करत न लागी वार॥ १ ॥

---

१ अन्दर, बाहर, २ जगह, ३ स्तुति, ४ कितने, ५ कहीं भी, कभी भी, ६ सौ बार न्योछावर जाइये, ७ दिन भर, सौ बार, ८ मनुष्य योनि से।

जे[1] सौ चन्दा[2] उगावें[3], सूरज चढ़ें[4] हज़ार।
एते[4] चानन[5] हुँदियां, गुरु बिन घोर अंधार॥ २॥

[ २० ]

पौड़ी

जिन अन्तर[6] हृदय सुधि है, तिस जनको सभी नमस्कारी नम०।
जिस अन्दर नाम निधान[7] है तिस जनको हौं[8] वलिहारी॥ १॥

जिस अन्दर बुद्धि विवेक है, हरि नाम मुरारी।
सो सतगुरु सबनाँ[9] का मित्र है, तब तिसहि प्यारी॥ २॥

सब आत्म-राम पसरिया गुरु-बुद्धि विचारी।

---

१ अगर, २ सौ चन्द्रमाँ, ३ चढ़ें, उदय हों, ४ इतने, ५ प्रकाश, तेज होने पर, ६ अन्दर, ७ राम नाम का ख़ज़ाना, निधि, ८ मैं, ९ सबका।

# उपदेश

[ २१ ]

※ झिंझोटी, ताल दादरा ※

[ केनोपनिषद् के पाँच मन्त्रों का तात्पर्य ]

चक्षु जिन्हें देखें नाहिं, चक्षु की अखें जान।
सो परमात्म देव तू, कर, निश्चय नहीं आनें ॥ १ ॥

जाको वाणी न जपे, जो वाणी की जान।
सो परमात्म देव तू, कर निश्चय नहीं आन ॥ २ ॥

श्रोत्र जाको न सुनें, जो श्रोत्र के कान।
सो परमात्म देव तू, कर निश्चय नहीं आन ॥ ३ ॥

प्राणों कर जीवत नहीं, जो प्राणों के प्राण।
सो परमात्म देव तू, कर निश्चय नहीं आन ॥ ४ ॥

---

१ नेत्र, २ अन्य, दूसरा।

मन बुद्धि जाको न लखें, परकाशक पहचान।
सो परमातम देव तू, कर निश्चय नहीं आन ॥ ५ ॥

[ २२ ]

※ राग पहाड़ी, ताल चलन्त ※

साधो! दूर दुई[1] जब होवे, हमरी कौन कोई पत[2] खोवे। (टेक)
ऐसा कौन नशा तुम पीया, अबलौं[3] आप लही[4] नाहीं कीया ॥ १ ॥
सिन्धु[5] विषे रञ्चक सम देखें, आप नहीं पर्वत सम पेखे ॥ २ ॥
चमके नूर तेज सब तेरा, तेरे नैनन काहे[6] अँधेरा? ॥ ३ ॥
तू ही राम भूप पति राजा, तू ही तीन लोक को साजा ॥ ४ ॥

[ २३ ]

※ राग देश, ताल दादरा ※

ज़िन्दह रहो रे जीया! ज़िन्दह रहो रे। (टेक)
सदा अखंड चिदानन्दघन, मोह भय शोक क्यों करो रे ॥ १ ॥
(ज़िन्दह०)
आया ही नहीं तो जायगा कौन गृह, सोया ही नहीं तो कहाँ जागे? ।
उपजा ही नहीं तो विनसेगा किस तरह? वेह और शोक सब हरो रे ॥२॥
(ज़िन्दह०)
तू नहीं देह बुद्धि प्राण मन, तेरा नहीं मान अपमान जन।
तेरा नहीं नफ़ा नुक़सान धन, ग़म चिन्ता डर ख़ौफ़ को तरो रे ॥ ३ ॥
(ज़िन्दह०)

---

१ द्वैत, २ मान, बड़ाई, ३ अब तक, ४ अपने आपको ठीक नहीं पहिचाना अर्थात् अनुभव नहीं किया, ५ समुद्र में छोटे से मोती को तो ढूंढ़ रहा है पर अभी तक अपने भीतर जो पर्वत के समान भारी रत्न (अपना स्वरूप) है उसका तू अनुभव नहीं करता, ६ किस लिये, क्यों।

जाग रे लालन जाग रे ! वर तेरे सदा सुहाग रे।
सूर्यवत् उगरे भाग रे! सब फिकर को परे कर धरो रे॥ ४॥
(ज़िन्दह०)

है 'राम' तो सदा ही पास रे! हँस खेल क्यों हुआ उदास रे।
आनन्द की शिखर पर वास रे, हर श्वास में सोहं को भरो रे॥ ५॥
(ज़िन्दह०)

*[ २४ ]*

मरे न टरे न जरे[1] हरे[2], तमं[3], परमानन्द सो पायो।
मङ्गल मोद भरयो घट भीतर, गुरु श्रुति ब्रह्म त्वमेवं[4] बतायो॥१॥

टूटी ग्रन्थी अविद्या नाशी, ठाकुर सत राम अविनाशी।
लय मुझमें सब गयो रे बाकी, वासुदेव सोंह कर झाँकी॥ २॥

अहनिशं[6] का सूरज में नाश, अहं प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश।
सूर्य को ठंडक लगे, जल को लगे प्यास? आनन्द घन मम राम से क्या आशा को आस॥ ३॥ *

[ २५ ]

* गजल भैरवी *

शाहंशाहे-जहान[8] है, सायल[9] हुआ है तू।
पैदाकुने-ज़मान[10] है, डायल[11] हुआ है तू॥ १॥

---

१ वह ईश्वर वा परमात्मा मैं हूँ, २ घटे, ३ बढ़े, ४ अंधकार, ५ तू ही ब्रह्म है, ६ दिन रात, ७ समीपता, ८ चक्रवर्ती राजा, ९ भिखारी, मँगता, १० समय का उत्पन्न कर्ता, ११ घड़ी की सुई।

* तात्पर्यः—जैसे दिन रात सूर्य में नहीं होते और न सूर्य को ठण्डक न जल को प्यास लग सकती है, ऐसे ही मैं जो आनन्द घन, अर्थात् आनन्द स्वरूप राम हूँ, मेरे समीप किसी प्रकार की आशा की दाल नहीं गल सकती।

सौ बार ग़र्ज़ होवे तो धो धो पिये क़दम[1]।
क्यों चरख़ो[2]-मिहरो[3]-माह[4] पै मायल[5] हुआ है तू ॥ २ ॥

ख़ञ्जर की क्या मजाल[6] कि इक ज़ख़्म कर सके।
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू ॥ ३ ॥

क्या हर गदा[7]-ओ-शाह का राज़िक़[8] है कोई और।
अफ़लासो[9]-तङ्गदस्ती का क़ायल[10] हुआ है तू ॥ ४ ॥

टायम[11] है तेरे मुजरे के मौक़या[12] की ताक में।
क्यों डर से उसके मुफ़्त में ज़ायल हुआ है तू ॥ ५ ॥

दमबग़ल[13] तुझसे रहता है हर आन[14] 'राम' तो।
बन परदा अपनी वसल[15] में हायल[16] हुआ है तू ॥ ६ ॥

[ २६ ]

❀ राग नट नारायण, ताल दादरा ❀

मनुवा[17] रे नादान ! ज़री मान, मान, मान। (टेक)
आतम-गङ्ग सङ्ग जङ्ग, विष्टा में गलतान ॥ १ ॥ मनुवा रे०
शाहंशाही छोड़ के, तू क्यों हुआ हैरान ॥ १ ॥ मनुआ रे०
शङ्कर शिव स्वरूप त्याग, शव[18] न बन री जान ॥ ६ ॥ मनुवा रे०
उदय अस्त राज तेरा, तीन लोक साज तेरा, फेंक दे अज्ञान ॥४॥ म०

---

१ चरण, १२ आकाश. ३ सूर्य, ४ चन्द्रमा. ५ मोहित, ६ समर्थ, शक्ति. ७ फ़क़ीर, (भिखारी) और राजा, ८ अन्नदाता, ९ निर्धनता और तंगी. १० विश्वासी, अधीन, ११ काल, १२ अवसर की प्रतिक्षा में, १३ बग़ल में अर्थात् अपने साथ, १४ हर समय, १५ मिलाप, साक्षात्कार, १६ दो के बीच आच्छादित, या रुकावट डालने वाला, १७ रे मन !, १८ मृतक, मुर्दा।

हाय ब्रह्मघात करके, करे तू खान पान ॥ ५ ॥ मनुवा रे०
तू तो रवि रूप 'राम', शोक मोह से काहे काम, तिमिर की संतान ॥ ६ ॥ मनु०

[ २७ ]

※ राग नट नारायण, ताल दादरा ※

मनुवा वे मदारिया ! नशंग बाज़ी ला ( टेक )
नशंग[1] बाज़ी ला वे निडंग[2] बाज़ी ला ॥ मनुवा[3] वे०
महल अरु माड़ी उच्च अटारी दम भर दे विच ढा[4] ॥ मनु०
झगड़े झांजे सब कर कोतां[5], अपने आप में आ ॥ मनु०

[ २८ ]

※ राग नट नारायण, ताल दादरा ※

(१) गंजे-निहां[6] के कुफ़्ल पर, सिर ही तो मोहरे-शाह[7] है ।
तोड़ के कुफ़्लो-मोहर को कन्ज़[8] को खुद न पाये क्यों ? ॥ १ ॥

---

पंक्तिवार-तात्पर्य [ २८ ]

(१) गुप्त भण्डार ( ख़ज़ाना ) जो प्रत्येक प्राणी के भीतर है उसके ताले पर प्रजापति की मोहर अहंकार रूपी सिर है । हे प्यारे ! इस ताले और मोहर को तोड़कर तू भीतर के रत्न (ख़ज़ाना) को क्यों नहीं पाता ?

---

१ निर्भयता से, निडर होकर, २ शर्म रहित होकर, ३ ऐ मदारी या जादूगर मन ४ गिरा दे ५ छोटे, या कम कर अर्थात् फ़ैसल करदे, ६ गुप्त भंडार, ७ महाराजा की मोहर, ८ ख़ज़ाना, गुप्त रत्न ।

(२) दीदा-ए-दिल[1] हुआ जो वा[2], खुब गया[3] हुस्ने-दिलरुबा[4]।
यार खड़ा हो सामने, आँख न फिर लड़ाये क्यों॥ २॥

(३) जब वह जमाले-दिलफ़रोज़[5], सूरते-मिहरे-नीमरोज़[6]।
आप ही हो नज़ारा सोज़[7], परदे में मुँह छुपाये क्यों?॥ ४॥

(४) दशना-ए-ग़मज़ा जाँसिताँ[8], नावके-नाज़े-बे पनाह[9]।
तेरा ही अक्से-रुख़[10] सही, सामने तेरे आये क्यों?॥ ५॥

(५) आप ही डाल साया को, उसको पकड़ने जाय क्यों?
साया जो दौड़ता चले, कीजिये वाये वाये क्यों?॥ ३॥

---

(२) दिल की आँखें जब खुलीं तब प्यारे का सौन्दर्य भीतर धस गया। हे प्यारे! जब अपना यार (प्रियतम) सामने खड़ा हो तो फिर उससे तू दृष्टि क्यों नहीं लड़ाता?

(३) जब वह दिल को प्रकाशित करने वाला सौन्दर्य मध्याह्न काल के सूर्य की भाँति आप ही प्रकाशमान हो अथवा दृष्टि को प्रकाशित करता हो, तो फिर हे प्यारे! तू पर्दे में मुख क्यों छिपाता है?

(४) यह प्राण हरनेवाली नैन-कटारी, यह अथाह नख़रे का तीर, यह चाहे तेरे ही मुख का प्रतिबिम्ब हैं, पर तेरे सामने क्यों आते हैं? अर्थात् मोहनेवाली यह तेरी माया तेरी छाया होकर तेरे (स्वरूप के) सामने आकर तुझे क्यों ठगती वा मोहती है?

(५) आपही अपनी छाया डालकर तू उसको पकड़ने क्यों दौड़ता है? और छाया को पकड़ने के लिये दौड़ते समय जब वह भी आगे दौड़ती चली जाती है (जो कि उसका स्वभाव है), तो हे प्यारे! तू तब हाय हाय क्यों करता है?

---

१ दिल का नेत्र, दिव्य चक्षु, २ खुल गया, ३ धस गया, ४ प्यारे का सौन्दर्य, ५ हृदय को प्रकाशित करनेवाला सौंदर्य, ६ मध्याह्न काल के सूर्य के रूप में, ७ प्रकाशमान हो या दृष्टि को प्रकाशित करे, ८ नैन कटारी, या प्राण हरने वाला कटाक्ष, ९ अथाह नख़रे का तीर १० मुख की छाया वा प्रतिबिम्ब।

(६) एहलो-अयालो[१] मालो-ज़रे[२], सबका है बार[३] राम पर।
अस्पे[४] पै साथ बोझ धर, सिर पर उसे उठाये क्यों? ॥ ६ ॥*

[ २१ ]

❀ राग झंझरा भरवा, ताल कैरवा ❀

फकीरा! आपे अल्लाह हो। (टेक)
आपे लाड़ा[५], आपे लाड़ी[६], आपे मापे[७] हो ॥ १ ॥ फकीरा०

---

(६) घर बार (बाल बच्चे) और धन दौलत सबका बोझ जब एक राम भगवान् पर है, तो तू भोले जाट* के समान घोड़े पर अपने साथ बोझ रखकर उसको स्वयं अपने सिर पर क्यों उठाता है?

भजन नम्बर २१ का पंक्तिवार अर्थ

(१) आपही तू स्वयं पति, आपही पत्नी, और आपही पिता माता है। इस लिये ऐ प्यारे! तू आपही ईश्वर हो, अर्थात् वस्तुतः अपने आप को ही तू ईश्वर निश्चय कर।

---

१ बाल बच्चे, २ धन दौलत, ३ बोझ, ४ घोड़े पर, ५ पति, ६ पत्नी, ७ पिता माता।

* एक भोला जाट अपने साथ घोड़े पर असबाब रखकर अपने ग्राम को जा रहा था। घोड़े के साथ उसका अत्यन्त मोह था। समय मध्याह्न काल का था। ग्रीष्म ऋतु थी। असबाब घोड़े की पीठ पर रखकर उस पर आप सवार था। जब कुछ काल तक सवार रहने से (उसके और अस्बाब के बोझ से) घोड़े की पीठ पर पसीना आ गया, तो मारे मोह के अस्बाब को उसने पीठ पर से अलग कर दिया। उसी पीठ पर आप स्वयं सवार हो गया, और उस असबाब को अपने सिर पर रख लिया, जिस से बोझ तो घोड़े पर उतना ही रहा, पर व्यर्थ में अपनी गर्दन बोझ से तोड़ ली। (इसी प्रकार सब जगत् का बोझ ईश्वर रूपी घोड़े पर है, पर जो मूर्खता से उस बोझ को अपने सिर पर डाल लेता है, वह अपनी गर्दन व्यर्थ में तोड़ लेता है, बोझ चाहे तब भी ईश्वर पर वैसे का वैसा ही रहता है)।

आप वधाइयाँ, आप स्यापे[1], आप अलापे[2] हो ॥ २ ॥ फ़क़ीरी०
राँझा[3] तूहीं, तूही राँझा, भुल हीर[4] न वेले[5] रो ॥ ३ ॥ „
तेरे जिहा[6] सानू[7] एथे[8] ओथे, कोई न जापे[9] ओ ॥ ४ ॥ „
घुण्ड[10] कड के, क्यों चन मोंह[11] उत्ते, ओहले[12] खड़यों खलो ॥५॥ „
तूं ही सब दी जान प्यारी, तैनूँ[13] ताना[14] लगे न को ॥६॥

---

( २ ) आप ही तू बधाई ( आशीर्वाद ) है, आप ही स्यापा और आप ही तू रोने पीटने का आलाप है। इस लिये ऐ प्यारे ! तू अपने आप को ही प्रभु अनुभव कर।

( ३ ) वास्तव में तूही राँझा (प्रेमी) और तू ही हीर (प्रिया) है, अपने आप को भूल कर तू हीर (प्रिया) की ख़ातिर वन में व्यर्थ मत रुदन कर।

( ४ ) तेरे जैसा यहाँ वहाँ हमें कोई नहीं दीखता, तू अपने आप को देख।

( ५ ) अपने चन्द्र मुख पर घूंघट निकाल कर तू ओट में क्यों खड़ा हो रहा है? अपने को साक्षात् कर।

(६) तू ही सब की प्यारी जान है, तुझे कोई बोली ठठोली नहीं लग सकती है। अपने को सब का स्वामी निश्चय कर।

---

१ पञ्जाब में मनुष्य के मरने पर स्त्रियाँ खड़े होकर जो नियमबद्ध अलाप से रोती पीटती हैं, उसे स्यापा कहते हैं २ उस स्यापे में जिस शब्द की टेक से पीटा जाता है उसे अलाप कहते हैं ३ एक प्यारे ( आशक़ ) का नाम है, ४ राँझा की प्रिया का नाम है, ५ वन, जङ्गल, ६ समान, ७ हमें, ८ यहाँ वहाँ, ९ जचता वा दीखता, १० घूँघट, ११ मुख पर, १२ ओट में, १३ तुझे, १४ बोली ठठोली।

बोली ताना[1], यारी सेवा, जो देखें तूँ सो ॥ ७ ॥
सूली सलीबें[2], ज़हर दे मुके[3], करे न मुकदा जो ॥ ८ ॥
बुक्कलें[4] विच वड़ यार जो सुत्ते, ओथे[5] तेरी लो[6] ॥ ९ ॥
तूँ ही मस्ती विच शराबाँ, हर गुलँ[7] दी खुशबो ॥ १० ॥
राग रङ्ग दी मिट्ठी सुर तूँ, लै कलेजा[8] टो ॥ ११ ॥
लाह[9] लीड़े, यूसफ घुट मिल लै, दूई दे पट ढो ॥ १२ ॥
आठवें अर्श[10] तेरा नूर चमकदा, होर[11] भी ऊच्च हो ॥ १३ ॥

---

(७) बल्कि बोली ठठोली, मित्रता सेवा इत्यादि जो दिखाई देते हैं, वह सब तू है।

(८) सूली सलीब और ज़हर के अन्त होने पर जो कदापि नहीं मरता, वह तू है।

(९) प्यारे की बग़ल में प्रवेश होकर जब हम सोये, तो वहाँ तेरा ही प्रकाश पाया।

(१०) शराब में मस्ती और पुष्प में गन्ध तू है, इसलिये अपने आप का तू अनुभव कर।

(११) कलेजे में चुटकियाँ भरनेवाली जो राग रङ्ग की मीठी स्वर है, वह तू है।

(१२) द्वैत के वस्त्र उतारकर तू अपने प्यारे आत्मा (यूसफ़) को घुट कर मिल।

(१३) आठवें आकाश पर तेरा ही प्रकाश है, और तू इससे भी ऊपर हो।

---

१ बोली ठठोली, २ एक प्रकार की सूली, ३ ख़तम होने पर, ४ बग़ल, ५ वहाँ, ६ प्रकाश, ज्योति, ७ पुष्प ८ चित्त में चुटकियां भरता है, ९ वस्त्र उतार कर, १० आकाश, ११ और।

यह दुन्या तेरे नौंहां[1] दे विच, हथ[2] गल ते रख न रो ॥ १४ ॥
जे रब भालें बाहिर किधरे, पसे[3] गल्लों मुँह धो ॥ १५ ॥
तू मौला नहीं बन्दा चन्दा, झूठ दी छडदे खो[4] ॥ १६ ॥
पवन इन्दर तेरी पण्डाँ[5] ढोंदे, क्यों तेनूं किते न ढो ॥ १७ ॥
काहनूँ[6] पया खेड़ना हैं भों[7] भों विलयां, बैठ निचल्ला हो ॥१८॥
तेरे तारे सूरज थई थई नचदे, तूँ बेह जाकर चों[8] ॥ १९ ॥
पचे न तैनूँ सुख वे ओड़क, पहो गिरनी[9] ग्वो ॥ २० ॥

---

( १४ ) यह संसार तेरे नाखुनों का खेल है, तू मुख पर हाथ रख कर मत रो।

( १५ ) यदि तू अपने से बाहिर कहीं ईश्वर ढूंढना चाहता है, तो इस बात से तू रो।

(१६) तू स्वयं मालिक वा प्रभु है, नौकर चाकर तू नहीं है। अपने आप को बद्ध जीव मानने का जो तेरा झूठा स्वभाव है, उसे तू छोड़।

(१७) पवन और इन्द्र देवता तो तेरा बोझ उठाते हैं, फिर तेरी सेवा क्यों नहीं कभी करते?

(१८) प्यारे को इधर उधर ढूंढने की जो घूमन घेरी खेल है, उस खेल को व्यर्थ तू क्यों खेलता है। स्थित होकर बैठ और अपना अनुभव कर।

(१९) तेरे आश्रय तारे और सूर्य थई थई नाच रहे हैं। तू स्वयं स्थिर होकर बैठ।

(२०) तुझे अनन्त सुख पचता नहीं है, इस बदहज़मी को तू दूर कर।

---

१ नाखुन, २ हाथ, ३ इस बात से, ४ स्वभाव, ५ बोझ उठाते, ६ किस लिये ७ घूमन घेरी खेल ८ शौक़ से, आनन्द से, ९ बदहज़मी दूर कर।

दुःखहर्ता ते सुखकर्ता, तैंनूँ[1] ताप गये कद पोह[2] ॥ २१ ॥
चोर न पये, तैंनूँ भूत न चमड़े, होर[3] गयो क्यों हो ॥ २२ ॥
तूँ साक्षी केड़ी[4] कईयां मारें, हुन[5] थक कर खल्लियाँ हैं सौ ॥२३॥
खुल्लियाँ तैंनूँ[6] भऊ[7] न खान्दे, लुक लुक कैद न हो ॥ २४ ॥
वहदतँ[8] नूँ कर कसरतँ[9] देखें, गयों भैङ्गा[10] किधरों[11] हो ॥ २५ ॥
ताज तखत छड ठट्टी[12] मल्ली, एस[13] गल्लों तू रो ॥ २६ ॥

---

(२१) तू स्वयं दुखःहर्ता और सुखकारक है, तुझे कब तीनों ताप तपा सकते हैं ?

(२२) तुझे चोर नहीं पकड़ते और न भूत प्रेत तुझे चिमट सकते हैं, फिर तू अपने से इतर क्यों हो रहा है ?

(२३) तू साक्षी कौन सी कसियाँ मार रहा है अर्थात् कौन सा परिश्रम कर रहा है, जो अब थक कर सोने लगा है ?

(२४) मुक्त ( आज़ाद ) होने में तुझे कोई राक्षस इत्यादि तो नहीं खाते, इसलिये छिप छिप कर बद्ध मत हो।

(२५) एकता को तू बहुत करके देखता है। भैंगे नेत्रवाला तू कहाँ से हो गया है।

(२६) निजी राज्य का ताज और तख्त छोड़ कर छोटी सी कुटिया तू ने ले ली है, इस मूर्खता पर तू रुदन कर और अपने स्वरूप का अनुभव कर।

---

१ कब २ सताने लगे ३ दूसरा, ४ कौनसी, ५ अब, ६ तुझे, ७ हव्वा, शैतान, ८ अद्वैत, ९ द्वैत, बहुत, १० कम दृष्टिवाला, ११ कहाँ से, १२ छोटी कुटिया, १३ इस बात से।

छड के घर दियाँ खण्डाँ खीरां, की लोड़[1] चबावें तो[2] ॥ २७ ॥
तेरे घर विच राम वसेन्दा, हाय कुट कुट भर न भो[3] ॥ २८ ॥
राम रहीम सब बन्दे तेरे, तैथों[4] वड़ा न को ॥ २९ ॥
आप भगीरथ, आपही तीरथ, बन गङ्गा मल धो ॥ ३० ॥
पर्दे फाश होवीं रब करके, नङ्गा सूरज हो ॥ ३१ ॥
छड मौहरा[5], सुन 'राम' दुहाई, अपना आप न को[6] ॥ ३२ ॥

[ ३० ]

ग़ज़ल

आँख होवे तो देख बदन के परदे में अल्ला[7] }
परदे में अल्ला, कलब[8] को साफ करो वल्ला } टेक

(२७) निज घर के स्वादिष्ट भोजन छोड़कर छिलके व तूड़ी को तू क्यों चबा रहा है ?

(२८) तेरे घट में जब राम बस रहा है। हाय वहाँ भुस कूट कूट कर मत भर।

(२९) राम रहीम सब तेरे बन्दे ( सेवक ) हैं, तुमसे बड़ा कोई नहीं है।

(३०) श्री गङ्गा को स्वर्ग से लानेवाला राजा भागीरथ तू आप है और आप ही तू तीर्थ है, स्वयं गङ्गा रूप होकर तू सब मल धो।

(३१) ईश्वर करे तेरे सब पर्दे खुलें, और तू सूर्यवत् नितान्त नङ्गा हो।

(३२) तू संसार रूपी खेल वा विषय भोग रूपी विष को त्याग, ऐसी राम की पुकार है, और अपने आप को व्यर्थ नष्ट मत कर अर्थात् आत्म-घात मत कर।

१ क्या ज़रूरत, २ तूड़ी, भूसी, ३ भूसी, ४ तुमसे, ५ संसार रूपी खेल का मौहरा छोड़, ६ कोसना, शाप देना, आत्मघात करना. ७ ईश्वर. ८ अन्तःकरण, हृदय।

जप तप दान यज्ञ तीर्थ सें यही काम भला[1]।
अन्त समय पर मित्र ! साथ न जाये इक छल्ला ॥ १ ॥

भव सागर से पार लंघाने को सतगुर मिला।
झूठा है दारा[2] सुत[3] मित्र मुफत का रल्ला[4] ॥ २ ॥ आंख०

"तू तेरा," "मैं मेरा" स्वप्ने का सा है हल्ला[5]।
निजात्म जान, सुखी हो जा, है यही नेक सल्लाह[6] ॥ ३ ॥ आंख०

अज[7] अविनाशी आत्म जाने होये खैर[8] सल्ला।
निर्भय ब्रह्म रूप निज जाने हुआ पाक[9] पल्ला ॥ ४ ॥ आंख०

[ ३१ ]

जागो रे संसारी प्यारे ! अब तो जागो मेरे प्यारे ॥ टेक

घोर अविद्या के वश होकर, स्वामी से तुम भये हो कंकर।
विषयन के कीचर में फंस कर, स्मृत[10] नहीं हो तुम संभारे १जा०

शान बड़ाई खोई है तुम ने, झूंठी विद्या पढ़ी है तुम ने।
माया को नहीं चीना[11] तुमने, अब तो सोचो टुक मेरे प्यारे २जा०

जिन को नित्य उठ तुम ही गावो, मूरत जिनकी होत बनावो।
शिक्षा उनकी चित्त में लावो, देखो उनकी तरफ निहारे[12] ३

---

१ अच्छा, उत्तम, २ स्त्री, ३ पुत्र, ४ झगड़ा, शोर, ५ शोर, ६ उत्तम सम्मति, ७ जन्म से रहित, ८ उत्तम, भला, ९ शुद्ध, पवित्र १० होश, अपने स्वरूप का स्मरण, ११ जाना, पहिचाना, यहाँ मुराद है क़ाबू ( वश ) करने से, १२ ग़ौर सें देखो, सोच विचार कर।

नोट—यह कविता राम स्वामी के भक्त राय बहादुर ला० बैजनाथजी की है।

शिव संकादिक जिसको ध्यावें, नेति नेति से वेद लखावें ।
मन बुद्धि जा का पार न पावें, वह तुमही हो मित्र प्यारे । ४ ॥

विष्यन से अब चित्त को खैंचो, प्रेम के जल से हीये[1] को सींचो ।
ज्योती से मत नैनन[2] मीचो, तुम चेतन के ज्योत हो प्यारे ५

महावाक्य[3] को मन में गावो, अहंब्रह्म यह नित उठ गावो ।
ओंकार से अलख जगावो, आनन्द से नहीं तुम हो न्यारे । ६

[ ३२ ]

राग पीलू, ताल धमार

शशि[4] सूर[5] पावक[6] को करे प्रकाश सो निजधाम[7] वे ।
इस चाम[8] से त्यज[9] नेह[10] तू, उस धाम कर विश्राम[11] वे ॥ १ ॥

इक दमक तेरी पाय के सब चमकदा संसार वे ।
टुक[12] चीन्ह ब्रह्मानन्द को, जगनीर[13] से होय पार वे ॥ २ ॥

मंसूर[14] ने सूली सही, पर बोलता वही बयन[15] वे ।
बन्दा[16] न पायो इश्क[17] में, जब देखियो निज[18] नयन वे ॥ ३ ॥

---

१ हृदय २ चक्षु, यहाँ दिल की आंख से अभिप्राय है ३ वेदवाक्य अर्थात् अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि, ४ चन्द्रमा, ५ सूर्य, ६ अग्नि, ७ अपना असली घर, परम धाम, अर्थात् आत्म स्वरूप, ८ चमड़ा अर्थात् देह, ९ छोड़, १० प्रीति, आसक्ति, ११ आराम, चैन, १२ लै अनुभव कर, १३ भवजल, जगत रूपी समुद्र से पार हो, १४ एक मस्त ब्रह्मज्ञानी का नाम है, १५ कलमा, मंत्र, रमज़ १६ जीव, दास, १७ सृष्टि, जगत, १८ अपने नेत्र ।

इशिक़ लखावें सैनें[1] जो, लखें सैन[2] को कर चैन-वे।
तू आप मालिक ख़ुद ख़ुदा, क्यों भटकदा दिन रैनें[3] वे॥ ४॥

भाषे[4] ज्ञानी सुन प्राणी, नीरे[5] न, घर और वे।
आपा[6] भुलायो जग बनायो, सब अपनी तक़सीरें[7] वे॥ ५॥

[ ३२ ]

भिंझोटी, ताल दादरा

ग़फ़लत से जाग देख क्या लुतफ़ की बात है }
नज़दीक़ यार है मगर नज़र न आत है } (टेक)

दुई की गर्द[8] से चश्म[9] की रौशनी गई।
महबूब[10] के दीदार[11] की ताक़त नहीं रही॥
इसी बात से दुन्या के तू फंदे में फाथे[12] है॥ गफ़० १

बिसियार[13] तलब[14] है अगर तुझे दीदार की।
मुर्शिद[15] के सख़ुन[16] से चलो गली विचार की॥
जिससे पलक में सब फँद टूट जात है॥ गफ़० १

जिसके ज़ुहूर[17] से तेरा रौशन वजूद[18] है।
ख़लक़त[19] की सभी ख़ूबियों का भी जो ख़ूब है॥
सोई है तेरा यार यह सब वेद गात है॥ गफ़० २

---

१ इशारा, संकेत, २ समझ, पहचान, ३ रात्रि, ४ कहे, ५ जल, ६ अपना स्वरूप, ७ दोष, अपराध ८ धूल, ९ आँख, नेत्र, १० प्यारा, माशूक, ११ दर्शन, १२ आसक्त, फँसा हुआ, १३ अधिक, बहुत, १४ जिज्ञासा, ढूँढ, चाह, १५ गुरू, १६ उपदेश, नसीहत, १७ शोभा, उपस्थिति अर्थात् विराजने से १८ शरीर, १९ सृष्टि।

कहते हैं ब्रह्मानन्द नहीं तेरे से जुदा।
वुही है तू क़ुरान में लिखा है जो खुदा॥
जिगर में लेके समझना मुश्किल की बात है॥ गफ़० ४

[ ३४ ]

झिंझोटी, ताल दादरा.

गाफिल! तू जाग देख क्या तेरा स्वरूप है।
किस वास्ते पड़ा जन्म मरण के कूप[२] है (टेक)

यह देह गृह नाशवान है नहीं तेरा।
वृथाभिमान जाति में फिरे कहां घेरा॥
तू तो सदा विनाश से परे अनूप[३] है॥ गाफिल तू० १

भेद-दृष्टि कीन जभी दीन हो गया।
स्वभाव अपने से ही आप हीन हो गया॥
विचार देख एक तू भूपों[४] का भूप है॥ गाफिल० २

तेरे प्रकाश से शरीर चित्त चेतता।
तू देह तीन दृश्य को सदा है देखता॥
द्रष्टा नहीं होता कभी दृश्यरूप है॥ गाफिल० ३

कहते हैं ब्रह्मानंद, ब्रह्मानंद पाइये।
इस बात को विचार सदा दिल में लाइये॥
तू देख जुदा करके जैसे छाया धूप है॥ गाफिल० ४

---

१ किन्तु, २ कुआँ, गड़हा, ३ अद्वितीय आनन्द धारा, ४ स्वामी, बादशाह, ५ हरकत करता, चिन्तवन करता।

[ ३५ ].

झिंझोटी, ताल दादरा

अजी मान, मान, मान, कहा मान ले मेरा।
जान, जान, जान, रूप जान ले तेरा ॥ (टेक)

जाने बिना स्वरूप, राम न आवे है कभी।
कहते है वेद बार बार बात यह सभी॥
हुशियार हो आज़ाद, बारे डार मैं मेरा॥ मान० १

जाता है देखने जिसे काशी द्वारका।
मुक़ाम है बदन में तेरे उसी यार का॥
लेकिन बिना विचार किसी ने नहीं हेरा॥ मान० २

नयनन[3] के नयन जो हैं सो बैनन[4] के बैन है।
जिसके बिना शरीर में न पलक चैन है॥
पिछान ले बखूबे[5] सो स्वरूप है तेरा॥ मान० ३

ऐ प्यारी जान! जान तू भूपों की भूप है।
नाचत है प्रकृति सदा मुजरा अनूप है॥
संभाल अपने को, वह तुझे करे न घेरा॥ मान० ४

कहते हैं ब्रह्मानन्द, ब्रह्मानंद तू सही।
बात यह पुराण वेद ग्रन्थ में कही॥
विचार देख मिटे जन्म-मरण का फेरा[6]॥ मान० ५

---

१ भार, २ पाया, ३ चक्षु, आँखें, ४ ज्ञान-चक्षु अथवा अन्तरीय दृष्टि, दिव्य दृष्टि इत्यादि, ५ अच्छी तरह से, ६ आवागमन का चक्कर।

[ ३६ ]

राग भैरवी, ताल ठुमरी

दिलबर पास बसदा, ढूँडन किथे[1] जावना। टेक,

गली ते[2] बाज़ार ढूँडो, शहर ते दयार[3] ढूँडो।
घर घर हज़ार ढूँडो, पता नहीं पावना ॥ दिलबर० १

मक्के ते मदीने जाईये, मथे चा मसीतें[4] घसाईये।
उची कूक बांग सुनाईये, मिल नहीं जावना ॥ दिलबर० २

गंगा भावें[5] जमुना नहावो, काशी ते प्रयाग जावो।
बद्री केदार जावो, मुड़[6] घर आवना ॥ दिलबर० ३

देस ते दसौर ढूँडो, दिल्ली ते पशौर ढूँडो।
भावें ठौर ठौर ढूँडो, क़िसे न बतावना ॥ दिलबर० ४

बनो जोगी ते वैरागी, संन्यासी जगत त्यागी।
प्यारे से न प्रीति लागी, भेस की वटावना ॥ दिलबर० ५

भावें गले माला डाल, चंदन लगावो भाल।
प्रीति नहीं साईंनाल, जगत नूं दिखावना ॥ दिलबर० ६

मोमनांदी[7] शकल बनावें, काफ़रां दे कम्म कमावें।
मथे[8] ते मेहरावें[9] लगावें, मौलवी कहावना ॥ दिलबर० ७

---

१ कहाँ, २ और, ३ देश, ४ मसजिद, ५ चाहे, ६ वापिस, ७ सन्तों की, ८ पेशानी पर, माथे पर, ९ दहलीज़ की राख, या मंदिर के चरणों की धूल, भस्म।

[ ३७ ]

राग भैरवी, ताल तीन

बराये नाम[1] भी अपना न कुछ बाक़ी निशां रखना।
न तन रखना, न दिल रखना, न जी[2] रखना, न जां रखना॥ १॥

ताल्लुक़[3] तोड़ देना छोड़ देना उसकी पाबन्दी[4]।
खबरदार अपनी गर्दन पर न यह बारे-गिरां[5] रखना॥ २॥

मिलेगी क्या मदद तुझको मददगाराने-दुनियाँ[6] से।
उमेदे-यावरी[7] उनसे न यहां रखना, न वहां रखना॥ ३॥

बहुत मज़बूत घर है आक़बत[8] का दारे-दुनियाँ[9] से।
उठा लेना यहां से अपनी दौलत और वहां रखना॥ ४॥

उठा देना नसव्वरे[10] ग़ैर[11] की सूरत का आँखों से।
फ़क़त सीने के आयीने[12] में नक़्शे-दिलस्तान्[13] रखना॥ ५॥

किसी घर में न घर कर बैठना इस दारे-फानी[14] में।
ठिकाना बे ठिकाना और मकाँ पर लामकाँ[15] रखना॥ ६॥

---

१ नाम मात्र भी, २ चित्त, ३ सम्बन्ध, ४ क़ैद, मजबूरी, विवशता, ५ भारी बोझ, ६ संसार के सहायकों, या सेवकों, ७ फल की आशा, ८ परलोक, ९ संसार के घर से, १० भ्रम, ख्याल, ११ द्वैत-भावना, अनात्मा का, १२ अन्तःकरण के शीशे में, १३ चित्त हरने वाले ( आत्मा ) की सूरत ( का ध्यान ) रखना, १४ मृत्युलोक, १५ देशातीत या स्थान-रहित।

[ ३८ ]

राग सोहनी, ताल तेवरा.

दुनियाँ अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स[1] यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात ले॥
मेवा खिला, मेवा मिले, फल फूल दे, फल पात ले।
आराम दे, आराम ले, दुख दर्द दे, आफात ले॥

कलयुग नहीं करयुग है यह, यहाँ दिन को दे और रात ले।
क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले॥ } (टेक

काँटा किसी के मत लगा, गो मिस्ले-गुल[3] फूला है तू।
वह तेरे हक़[4] में तीर है, किस बात पर झूला है तू॥
मत आग में डाल और को, क्या घास का पूला है तू?।
सुन रख यह नुक़ता बेख़बर, किस बात पर भूला है तू॥
कलयुग नहीं० ॥ २ ॥

शोख़ी शरारत मकरो-फ़न[5] सबका बसेरा[6] है यहाँ।
जो जो दिखाया और को, वह खुद भी देखा है यहाँ॥
खोटी खरी जो कुछ कही, तिसका परेखा[7] है यहाँ।
जो जो पड़ा तुलता है मोल, तिल तिल का लेखा है यहाँ॥
कलयुग नहीं० ॥ ३ ॥

---

१ वस्तु, चीज़, २ कष्ट, मुसीबत, ३ पुष्प की तरह, ४ तेरे वास्ते, तेरे को, ५ दग़ा-फरेब, धोका, ६ बसेरा, रहने की जगह, घर, ७ परखना, जाँचना।

जो और को बस्ती[1] रखे, उसका भी बसना है पुरा।
जो और के मारे छुरी, उसके भी लगता है छुरा॥
जो और की तोड़े घड़ी, उसका भी टूटे है घड़ा।
जो और की चेते[2] बदी, उसका भी होता है बुरा॥
कलयुग नहीं० ॥ ४ ॥

जो और को फल देवेगा, वह भी सदा फल पावेगा।
गेहूँ से गेहूँ, जौ से जौ, चाँवल से चाँवल पावेगा॥
जो आज देवेगा यहाँ, वैसा ही वह कल पावेगा।
कल देवेगा कल पावेगा, फिर देवेगा फिर पावेगा॥
कलयुग नहीं० ॥ ५ ॥

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिन्स यहाँ तैयार है।
आराम में आराम है, आज़ार[3] में आज़ार है॥
दुनियाँ न जान इस को मीयाँ, दरिया की यह मँझधार है।
औरों का बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है॥
कलयुग नहीं० ॥ ६ ॥

तू और की तारीफ़ कर, तुझको सनाख़्वानी[4] मिले।
कर मुश्किल आसां और की, तुझको भी आसानी मिले॥
तू और को मेहमान कर, तुझको भी मेहमानी मिले।
रोटी खिला रोटी मिले, पानी पिला पानी मिले॥
कलयुग नहीं० ॥ ७ ॥

जो गुल[5] खिलावे और का, उसका ही गुल खिलता भी है।
जो और का कीले[6] है मुँह, उस का ही मुँह किलता भी है॥

---

१ नगरी, २ दिल में लावे, विचार करे, ३ दुःख, ४ तारीफ़, स्तुति, ५ फूल पुष्प, ६ कीले अर्थात् निन्दा करना या किसी पर धब्बा या दाग लगाना।

जो और का छीले जिगर, उसका जिगर छिलता भी है।
जो और को देवे कपट, उसको कपट मिलता भी है॥
कलयुग नहीं॥

कर चुक जो कुछ करना है अब, यह दम तो कोई आन[1] है।
नुक्सान में नुक़्सान है, एहसान में एहसान है॥
तोहमत में यहाँ तोहमत मिले, तूफान में तूफान है।
रैहमान[2] को रैहमान है, शैतान को शैतान है॥
कलयुग नहीं० ॥ ९ ॥

यहाँ ज़हर दे तो ज़हर ले, शक्कर में शक्कर देख ले।
नेकों को नेकी का मज़ा, मूज़ी[3] को टक्कर देख ले॥
मोती दिये मोती मिले, पत्थर में पत्थर देख ले।
गर तुझको यह बावर[4] नहीं, तो तू भी करके देख ले॥
कलयुग नहीं० ॥ १० ॥

अपने नफ़े के वास्ते मत और का नुक़सान कर।
तेरा भी नुक़सान होवेगा, इस बात पर तू ध्यान कर॥
खाना जो खा सो देखकर, पानी पिये सो छानकर।
यहाँ पाँ को रख तू फूँक कर, और खौफ़ से गुज़रान कर॥
कलयुग नहीं० ॥ ११ ॥

ग़फ़लत की यह जगह नहीं, साहिबे-इदराक[5] रहे।
दिल शाद[6] रख दिल शाद रहे, ग़मनाक रख ग़मनाक रहे॥

---

१ घड़ी, पल, २ दाता, कृपालु, बरकत देनेवाला, ३ सताने वाला, दुःख देनेवाला, ४ निश्चय, यक़ीन, ५ तीव्र द्रष्टा, तेज़समझ वाला पुरुष, ६ प्रसन्न चित्त।

हर हाल में भी तू नज़ीर[1] अब हर क़दम की खाक रहे।
यह वह मकाँ है ओ मीयाँ! याँ पाक[2] रहे बेबाक[3] रहे॥

कलयुग नहीं० ॥ १२ ॥

[ ३९ ]

राग सोहनी, ताल तेवरा

दुनिया है जिसका नाम मीयाँ! यह अजब तरह की हस्ती[4] है।
जो मँहगों को तो मँहगी है और सस्तों को यह सस्ती है॥
यहाँ हरदम झगड़े उठते हैं, हर आन[5] अदालत बस्ती है।
गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त[6] करे तो पस्ती है॥

कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ओर अदलपरस्ती[7] है। } टेक
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यहां सौदा दस्त बदस्ती है॥ }

जो और किसी का मान रखे, तो उसको भी अरु मान मिले।
जो पान खिलावे पान मिले, जो रोटी दे तो नान[8] मिले॥
नुक़्सान करे नुक़्सान मिले, एहसान करे एहसान मिले।
जो जैसा जिसके साथ करे, फिर वैसा उसको आन मिले॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ॥ २ ॥

---

१ कवि का नाम है, २ शुद्ध, पवित्र, ३ निडर, भय रहित, ४ वस्तु है, ५ हर वक़्त, हर दम, ६ घटावे, कम करे, अर्थात् झगड़े बढ़ावे तो उसके वास्ते बाज़ार गर्म है और जो लड़ाई-झगड़ों को घटाना चाहे तो उसके वास्ते घटा हुआ बाज़ार है, ७ न्याय, इन्साफ, ८ रोटी।

जो और किसी की जां बख़्शे, तो हक़[1] उसकी भी जान रखे।
जो और किसी की आन[2] रखे, तो उसकी भी हक़ आन रखे॥
जो यहां का रहनेवाला है, यह दिल में अपने ठान रखे।
वह तुरत फुरत[3] का नक़्शा है, इस नक़्शे को पहचान रखे॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ॥ ३ ॥

जो पार उतारे औरों को, उसकी भी नाव उतरनी है।
जो ग़र्क़ करे फिर उसको भी याँ डुबकूं डुबकूं करनी है॥
शमशेर, तबर, बन्दूक, सनां[4] और नस्तर तीर निहरनी[5] है।
यां[6] जैसी जैसी करनी है, फिर वैसी वैसी भरनी है॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ॥ ४ ॥

जो और का ऊँचा बोल[7] करे, तो उसका बोल[8] भी बाला है।
और दे पटके तो उसको भी कोई और पटकने वाला है॥
बेजुर्म-ख़ता[9] जिस ज़ालिम[10] ने मज़लूम[11] ज़िबह[12] कर डाला है।
उस ज़ालिम के भी लहू का फिर बैहता नदी नाला है॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ॥ ५ ॥

---

१ ईश्वर, २ इज़्ज़त, मान, ३ जल्दी, फ़ौरन् अर्थात् अदले का बदला फ़ौरन् ही मिल जाता है ऐसा दुनियाँ का नक़्शा है, ४ भाला, ५ निहेरण, छीलना वा छीलने का वा नाखून काटने का औज़ार, इस पंक्ति में सब हथ्यारों के नाम हैं, ६ इस जगह, इस दुनियाँ में, ७ बड़ी इज़्ज़त दे वा किसी का सन्मान से ज़िकर करे, ८ नामवरी, इज़्ज़त, ९ दोष व अपराधरहित मनुष्य को, १० ज़ुल्म करने वाला, या बिना अपराध के पीड़ा वा दुःख देने वाला, ११ दुःखी, पीड़ित, १२ गला घोंट कर वा छुरी से मार डाला है ।

जो मिसरी और के मुँह में दे, फिर वह भी शक्कर खाता है।
जो और के तईं अब टक्कर दे, फिर वह भी टक्कर खाता है॥
जो और को डाले चक्कर में, फिर वह भी चक्कर खाता है।
जो और को ठोकर मार चले, फिर वह भी ठोकर खाता है॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ॥ ६ ॥

जो और किसी को नाहक़ में कोई झूठी बात लगाता है।
और कोई ग़रीब बिचारे को नाहक़ में जो लुट जाता है॥
वह आप भी लूटा जाता है और लाठी मुक्की खाता है।
[1] जैसा जैसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ॥ ७ ॥

है खटका उसके साथ लगा, जो और किसी को दे खटका।
वह ग़ैब से झटका खाता है, जो और किसी को दे झटका॥
चीरे[2] के बदले चीरा है, पटके[3] के बदले है पटका।
क्या कहिये और नज़ीर आगे, यह है तमाशा झटपट[4] का॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ॥ ८ ॥

[ ४० ]

लावनी

नाम राम का दिल से प्यारे, कभी भुलाना न चाहिये।
पा कर नर का बदन रत्न को, खाक मिलाना न चाहिये॥

---

१ अव्यक्त, दैवयोग से अर्थात् ईश्वर से वह चोट खाता है, २ एक प्रकार की सुंदर पगड़ी का नाम है, ३ पटका भी एक उत्तम पगड़ी को कहते हैं, ४ उसी समय ( तुरंत ) बदला देनेवाला।

सुंदर नारी देख प्यारी, मन को लुभाना न चाहिये।
जलति अगन में जान पतंग समान समाना न चाहिये ॥
बिन जाने परिणाम काम को हाथ लगाना न चाहिये।
कोई दिन का ख्याल कपट का जाल बिछाना न चाहिये ॥ नाम १

यह माया बिजलीका चमका, मनको जमाना न चाहिये।
बिछड़ेगा संयोग भोग का रोग लगाना न चाहिये ॥
लगे हमेशा रंग संग दुर्जन के जाना न चाहिये।
नदी नाव की रीत किसी से प्रीत लगाना न चाहिये ॥ नाम २

बांधव[1] जन के हेत[2] पाप का खेत जमाना न चाहिये।
अपने पाँव पर अपने कर[3] से चोट लगाना न चाहिये ॥
अपना करना भरना दोष किसी पर लाना न चाहिये।
अपनी आँख है मंद चंद को दो बतलाना न चाहिये ॥ नाम ३

करना जो शुभ काज आज कर देर लगाना न चाहिये।
कल जाने क्या हाल काल को दूर पिछाना न चाहिये ॥
दुर्लभ तन को पाय कर विषयों में गँवाना न चाहिये।
भवसागर में नाव पाय चक्कर में डुबाना न चाहिये ॥ नाम ४

दारादिक[4] सब घेर फेर तिन में अटकाना न चाहिये।
करी वमन[5] के ऊपर फिर कर दिल ललचाना न चाहिये ॥
जान आपनो रूप कूप[6] गृह में लटकाना न चाहिये।
पूरे गुरु को खोज मज़हब का बोझ उठाना न चाहिये ॥ नाम ५

---

१ सम्बन्धी, २ कारण, ३ हाथ, ४ स्त्री इत्यादि, ५ कै की हुई या उलटी ६ घर रूपी कूंआ।

बचा चाहे पापन से मन से मौत भुलाना न चाहिये।
जो है सुख की लाग, तो कर सब त्याग, फलाना न चाहिये॥
जो चाहे तू ज्ञान, विषय के बाण चलाना न चाहिये।
जो है मोक्ष की आश[1] संग की पाश[2] बढ़ाना न चाहिये॥ नाम ६

परमेश्वर है तन में, बन में खोजन जाना न चाहिये।
कस्तूरी है पास, मृग को घास सुंघाना न चाहिये॥
कर सत्संग, विचार, निहार, कभी बिसराना न चाहिये।
आत्म-सुख को भोग, भोग में फिर भटकाना न चाहिये॥ नाम ७

[ ४१ ]

लावनी

चेतो चेतो जल्द मुसाफिर गाड़ी जाने वाली है। }
लाइन किलीयर लेने को तैय्यार गार्ड वनमाली है॥ } टेक

पाँच धातु की रेल है जिसको मन अंजन ले जाता है।
इन्द्रीगण के पहियों से वह खूब ही तेज़ चलाता है॥
मील हज़ारों चलने पर भी थकने वह नहीं पाता है।
कठिन वज्र लोहे जैसा होकर चंचलता दिखलाता है॥
बड़े गार्ड वनमाली से होती इसकी रखवाली है॥ १ ॥ चेतो० ॥

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया चार मुख्य स्टेशन हैं।
आठ पहर इनही में विचरे रेल सहित यह अंजन है॥

---

1 आशा, 2 फाँसी, जाल।

कर्म, उपासन, ज्ञान टिकट घर लेता टिकट, हरइक जन है।
फ़र्स्ट, सैकंड, अरु थर्ड क्लास ले जितना पल्ले शुभ धन[1] है॥
बैठ न पावे हरगिज़ वह नर जो इस ज़र से खाली है॥ २॥ चेतो०

रहगीरों के ललचाने को नाना रूप से सजती है।
तीन घंटिका बाल, तरुण, और जरा[2] की इसमें बजती है॥
तीसरी घंटी होने पर झट जगह को अपनी तजती है।
आते जाते सीटी देकर रोती और चिल्लाती है।
धर्म सनातन लाइन छोड़ के निपट[3] बिगड़ने वाली है॥ ३॥ चेतो०

पाप पुण्य के भार का बंडल अक्सर साथ ही रखते हैं।
काम क्रोध लोभादिक डाकू खड़े राह में तकते हैं॥
स्टेशन स्टेशन पर अनेक रोगादिक रिपू[4] भटकते हैं।
पुलिसमैन सद्‌गुरु उपदेशक रक्षा सबकी करते हैं॥
निर्भय वह ही जाता है, जो होवे पूरा ज्ञानी है॥ ४॥ चेतो०॥

[ ४२ ]

तर्ज़ लेली मजनूं

प्रभू प्रीतम जिसने बिसारा हाय जनम अमोलक बिगाड़ा॥ टेक

धन दौलत माल खज़ाना, यह तो अन्त को होवे बेगाना।
सत्य धर्म को नाहीं विचारा, भूला फिरता है मुग्ध[5] गँवारा॥१॥ प्रभू०

झूठे मोह में तन मन दीना, नाहीं भजन प्रभू का कीना।
पुत्र पौत्र और परिवारा[6], कोई संग न चल्लन हारा॥ २॥

---

१ धन, २ बुढ़ापा, ३ जल्द, ४ बदमाश, दग़ाबाज़, शत्रु, ५ मूर्ख, अज्ञानी, ६ कुटुम्ब,।

भ्रातृ भाव न प्रीति परस्पर, कपट छल है भरा मन अन्दर।
कुछ भी किया न पर उपकारा, खोटे कर्मों का लिया अजारा॥ ३॥ प्रभू०

तेरा यौवन और जवानी, ढलती जावे ज्यों बर्फ का पानी।
मीठी नींद में पाँव पसारा, चिड़ियाँ चुग गईं खेत तुम्हारा॥४॥ प्रभू०

धोकेबाज़ी के दाम फैलाये, विषय-भोग के चैन उड़ाये।
पुण्य दान से रहा नियारा, ऐसे पुरुषों को हो धिक्कारा॥ ५॥ प्रभू०

जो जो शास्त्र वेद बखाने[2], मूर्ख उलटा ही उनको जाने।
समय खोया है खेल में सारा, सत्संग से किया किनारा॥ ६॥ प्रभू०

ऐसे जीने पै तू अभिमानी, टीला रेत का ज्यों बीच पानी।
क्यों न गुण अरु कर्म सुधारा, मानुष जन्म न हो बारंबारा॥७॥ प्रभू०

तेरे कर्म हैं नाव[3] समाना, जिसमें बैठा है तू अज्ञाना।
गैहरी नदिया है दूर किनारा, कोई दम में तू डूबन हारा॥ ८॥ प्रभू०

अपने दिल में तू जाग रे भाई, कुछ तो करले रे नेक कमाई।
संग जाये नहीं सुत दारा[4] सत्य धर्म ही देगा सहारा॥ ९॥ प्रभू०

[ ४३ ]

रागनी भिभास, ताल तीन

तू कुछ कर उपकार जगत में, तू कुछ कर उपकार। टेक[1]
मानुष जनम अमोलक तुझको मिले न बारंबार॥ १॥ तू०

---

१ ठेका, २ उपदेश को, ३ नाव, बेड़ी, किश्ती, ४ स्त्री, पुत्र।

सुकृत[1] अपना कर धन संचय, यह वस्तु है सार।
देश उन्नती कर पितृ सेवा, गुणियन का सत्कार ॥ २ ॥ तू०

शील, संतोष, परस्वारथ, रति[2], दया क्षमा उर धार।
भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, दीजे यथा अधिकार ॥ ३ ॥ तू०

कठिन समय में होवेंगे साथी तेरे श्रेष्ठ आचार।
इसलिये इनका कर तू संग्रह[3], सुख हो सर्व प्रकार ॥ ४ ॥ तू०

होय अज्ञानी कहे चन्दा गन्दा[4], तिसको है धिक्कार।
है ज्ञान ही औषध सब अवगुण[5] की करते वेद पुकार ॥ ५ ॥ तू०

[ ४४ ]

राग धुन, ताल तीन

काहे शोक करे नर मन में, वह तेरा रखवारा है रे ॥ टेक

गर्भवास से जब तू निकला दूध स्तनों में डारा है रे।
बालकपन में पालन कीनो, माता मोह द्वारा है रे ॥ १ ॥ काहे०

अन्न रचा मनुषों के कारण पशुओं के हित चारा है रे।
पक्षी वन में पान फूल फल, सुख से करत अहारा है रे ॥ २ ॥ काहे०

जल में जलचर रहत निरंतर, खावें मास करारा है रे।
नाग बसें भूतल के मांहि, जीवें वर्ष हज़ारा है रे ॥ ३ ॥ काहे०

---

1 पुण्य कर्म रूपी धन, 2 पर स्वार्थ में लगन वा सुख, 3 एकत्र, 4 कपूर, 5 पाप, बेवकूफ़ियाँ।

स्वर्ग लोक में देवन के हित, बहुत सुधा की धारा है रे।
ब्रह्मानंद फिकर सब तज के, सिमरो सर्जन हारा है रे॥ ४॥ काहे०

[ ४१ ]

राग भूपाली, ताल दादरा

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन।
क्यों न हो उसको शान्ति, क्यों न हो उसका मन मगन॥

काम क्रोध लोभ मोह यह हैं सब महाबली।
इनके हनने[1] के वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन॥ १॥ विश्व०

ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शान्ति से तू।
पैदा न ईर्षा की आँच[2] दिल में करे कहीं जलन॥ २॥ विश्व०

मित्रता सबसे मन में रख, त्याग दे वैर भाव को।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को, ठीक कर अपना तू चलन॥ ३॥ विश्व०

जिससे अधिक न है कोई, जिसने रचा है यह जगत।
उसका ही रख तू आश्रा, उसकी ही तू पकड़ शरन॥ ४॥ विश्व०

छाड़ के राग द्वेष को, मन में तू अपने ध्यान कर।
तो निश्चय तुझको होवेगा, यह सब हैं मेरे आत्मन्॥ ५॥ विश्व०

जैसा किसी का हो अमल[3], वैसा ही पाता है वह फल।
दुष्टों को कष्ट मिलता है सुष्टों[4] का होता दुख हरन॥ ६॥ विश्व०

---

१ मारना, जीतना, २ आग, ३ कर्म, करनी, आचरण, ४ श्रेष्ठ पुरुष, धर्मात्मा या शुभ आचरण वाले।

आप ही सब तु रूप है अपना ही कर तू आश्रा।
कोई दूसरा नाहिं होगा सहाये, जो छेदे तेरे दुःख कठिन ॥ ७ ॥ वि०

[ ४६ ]

राग जंगला

नाम जपन क्यों छोड़ दिया, प्यारे ! (टेक)

झूठ न छोड़ा, क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥ १ नाम
झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ॥ २ नाम
कौड़ी को तो खूब सँभाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया ॥ ३ नाम
जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥ ४ नाम
खालिस इक भगवान् भरोसे, तन मन धन क्यों छोड़ दिया ॥ ५ नाम

[ ४७ ]

रागनी पीलू, ताल तीन

नेक कमाई कर ले प्यारे ! जो तेरा परलोक सुधारे । टेक

इस दुन्या का ऐसा लेखा², जैसा रात को स्वप्न देखा ॥ १ ॥ नेक०
ज्यों स्वप्ने में दौलत पाई, आँख खुली तो हाथ न आई ॥ २ ॥ नेक०
कुटुंब क़बीला काम न आवे, साथ तेरे इक धर्म ही जावे ॥ ३ ॥ नेक०
सब धन दौलत पड़ा रहेगा, जब तू यहाँ से कूच करेगा ॥ ४ ॥ नेक०

---

१ मददगार, साथी, २ हिसाब, वर्ताव, तरीका ।

तोशा[1] कुच्छ नहीं सफर है भारा, क्योंकर होगा तेरा गुज़ारा ॥ ५ ॥ नेक०
अबतक गाफ़िल रहा तू सोया, वक्त अनमोल अकारथ[2] खोया ॥ ६ ॥ नेक०
टेढ़ी चाल चला तू भाई, पग पग ऊपर ठोकर खाई ॥ ७ ॥ नेक०
खूब सोच ले अपने मन में, समय गँवाया मूरखपन में ॥ ८ ॥ नेक०
यदि अब भी नहीं तू यत्न करेगा, तो पछताना तुझको पड़ेगा ॥ ९ ॥ नेक०
कर सत्संग और विद्याध्ययन[3], तब पावे तू सुख और चैन ॥१०॥ नेक०
एक प्रभू बिन और न कोई, जिसके सुमरे मुक्ति होई ॥११॥ नेक०
उसी का केवल[4] पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा मारा ॥१२॥ नेक०

[ ४८ ]

सोरठ ताल दादरा वा जैजयवंती ( महल्ला ९ )

राम सिमर, राम सिमर, यही तेरो काज[5] है ॥ टेक

माया को संग त्याग, प्रभू जी की शरण लाग ।
जगत सुख मान मिथ्या, झूठो ही सब साज है ॥ १ ॥ राम०

स्वप्ने जैसा धन पहचान, काहे पर करत मान ।
बालू की सी भित्त[6] जैसे बसुधा[7] को राज है ॥ २ ॥ राम०

नानक[8] जन कहत बात, बिनस जायो तेरो गात[9] ।
छिन्न छिन्न कर गयो काल, तैसे जात आज है ॥ ३ ॥ राम०

---

१ रास्ते का भोजन आदि, २ बेफायदा, व्यर्थ, ३ ब्रह्म-विद्या का पढ़ना, ४ सिर्फ, कविका नाम भी है, ५ फर्ज़, काम, ६ रेत का घर या रेत की दीवार, ७ धन दौलत ८ श्री गुरु नानक देव से यहाँ अभिप्राय है, ९ अंग, बल ।

[ ४९ ]

राग जयजयवंती ( महल्ला ९ )

राम भज, राम भज, जन्म सिराते[1] है। ( टेक )

कहूँ कहा बार बार, समझत न क्यों गँवार।
विनसत ना लागे बार, ओरे[2] सम गात[3] है ॥ १ ॥

सगले[4] भरम डार दे, गोविन्द को नाम ले।
अन्त बार संग तेरे, यह एक जात है ॥ २ ॥

विषयाँ[5] विष ज्यों विसार, प्रभु को यश हियँ[6]-धार।
नानक जन कह पुकार, अवसर[7] विहात[8] है ॥ ३ ॥

[ ५० ]

राग तिलंग ( महल्ला ९ )

चेतना है तो चेत ले, निश-दिन[9] में प्राणी। ( टेक )
छिन छिन अवधि[10] बिहात[11] है, फूटे घट ज्यों पानी ॥ १

हरिगुण काहे न गावहीं, मूरख अज्ञाना ।।
झूठे लालच लाग के, नहीं मरण पिछाना ॥ २ ॥

अजहूँ कुछ बिगड़ियो नहीं, जो प्रभु गुण गावे।
कहो नानक तिहि[12] भजन से निर्भय पद पावे ॥ ३ ।

---

१ गल रहा, बीत रहा है, २ ओले, गड़े, ३ शरीर, ४ सारे, ५ विषयों से, ६ हृदय में धारण कर, ७ समय, आयू, ८ बीती जाती है, ९ रात दिन, १० आयु, ११ बीती जाती है, १२ इस के।

[ ५१ ]

गौड़ी ( महल्ला ९ )

साधो ! मन का मान त्यागो । ( टेक )
काम क्रोध संगति दुर्जन की ताते[1] अहं-निश[2] भागो ॥ १ ॥

सुख दुःख दोनों सम कर जाने, और मान अपमाना ।
हर्ष शोक से रहे अतीता, तिन जग-तत्व पिछाना ॥ २ ॥

उस्तति[3] निन्दा दो त्यागे, खोजे पद निर्वाणा ।
जन नानक यह खेल कठिन है, किन्हू[4] गुरुमुख जाना ॥ ३ ॥

[ ५२ ]

राग गौड़ी वा धनासरी ताल, धुमाली ( महल्ला ९)

साधो ! गोविन्द के गुण गावो । ( टेक )
मानुष जन्म अमोलक पायो, बिरथा[5] काहे गँवावो ॥ १ ॥

पतित पुनीत दीन बंधु हरि, शरण ताहि तुम आवो ।
गज[6] को त्रास[7] मिट्यो जहि सिमरत, तुम काहे बिसरावो ॥ २ ॥

तज अभिमान मोह माया पुनि[8], भजन राम चित्त लावो ।
नानक कहत मुक्ति-पंथ यह, गुरुमुख होय तुम पावो ॥ ३ ॥

---

१ उससे, २ दिन-रात, ३ स्तुति, ४ किसी-किसी ने, ५ व्यर्थ, ६ हाथी, ७ भय, ८ फिर, पुनः ।

[ ५३ ]

राग रामकली ( महल्ला ९ )

प्राणी ! नारायण सुधि ले । ( टेक )
छिन छिन अवधि[1] घटे निशवासर[2] वृथा जात है देह ॥ १ ॥

तरुनापो[3] विषयन संग खोयो, वालपना अज्ञाना ।
वृद्ध भयो अजहों नहीं समझे, कौन कुमति उरझाना ॥ २ ॥

मानुप जन्म दियो जिस ठाकुर, सो तैं[4] क्यों विसरायो ।
मुक्ति होत नर जाके सिमरे, निमष[5] न ताको गायो ॥ ३ ॥

माया को मद कहा[6] करत है, संग न काहू जाई ।
नानक कहत चेत चिन्ता मनि, होत है अन्त सहाई ॥ ४ ॥

[ ५४ ]

राग बिलावल ( महल्ला ९ )

जाँ[7] में भजन राम को नाहिं । ( टेक )
तैं[8] नर जन्म अकारथ खोया, यह राखो मन मांहि ॥ १ ॥

तीर्थ करे, व्रत पुनि राखे, न मनुआ वश जाको ।
निष्फल धर्म तांहि तुम मानो, साच कहत मैं या को ॥ २ ॥

जैसे पाहन[9] जल में राखयो, भेदे[10] नाहिं तहि[11] पानी ।
तैसे ही तुम तांहि पिछानो, भक्ति हीन जो प्राणी ॥ ३ ॥

---

१ आयू, २ रात दिन, ३ युवावस्था, ४ तूने, ५ एक पलक-भर, ६ क्या ७ जिसमें, ८ वह, ९ पत्थर, १० छेदे, ११ उसको ।

कलु[1] में मुक्ति नाम ते पावत, गुरु यह भेद बतावे।
कहो नानक सोई नर गरुवा[2], जो प्रभु के गुण गावे ॥ ४ ॥

[ ५५ ]

राग रामकली ( महल्ला ६ )

रे मन ! ओट[3] लेओ हरि नामा । ( टेक )
जाके सिमरन दुर्मति नासे, पावें पद निर्वाणा ॥ १ ॥

बड़ भागी[4] तेहि[5] जन को जानो, जो हरि के गुण गावे।
जन्म जन्म के पाप खोय के, पुनि वैकुण्ठ सिधावे ॥ २ ॥

अजामल को अन्त काल में, नारायण सुधि आई।
जाँ गति को योगी सुर[6] वांछतें, सो गति छिन में पाई ॥ ३ ॥

नाहिं गुण नाहिं कुछ विद्या, धर्म कौन गज[8] कीना।
नानक विरद[9] राम का देखो, अभय दान तें दीना ॥ ४ ॥

[ ५६ ]

श्लोक महल्ला ६

गुण गोविंद गायो नहीं, जन्म अकारथ[10] कीन।
कहो नानक हरिभज मना, जहि विधि जल को मीन[11] ॥ १ ॥

---

१ कलियुग, २ श्रेष्ठ, बड़ा, ३ आश्रय, ४ बड़ा भाग्यवान्, ५ उसे, ६ योगी और देवता अथवा योगीश्वर, ७ चाहे हैं, ८ गज, हाथी, ९ महिमा, बड़ाई, यश, १० व्यर्थ किया, ११ जल की मच्छी जैसे जल बिना नहीं जीवती है वैसे नाम बिना जीना कठिन है।

विषयन[1] स्यों काहे रचयो, निमष[2] न होय उदास
कहो नानक भज हरि मना, पड़े न यम की फास ॥ २ ॥

तरुनापो[3] यूं ही गयो, लियो जरा[4] तन जीत ।
कहो नानक भज हरि मना, अवधं[5] जात है बीत ॥ ३ ॥

वृद्ध भयो सूझे नहीं, काल पहुँचयो आन ।
कहो नानक नर बावरे ! क्यों न भजे भगवान् ॥ ४ ॥

धन दारा संपति सगल, जिन अपनी कर मान ।
इनमें कुछ संगी नहीं, नानक साची जान ॥ ५ ॥

पतित उधारन, भयहरन, हरि अनाथ के नाथ ।
कहो नानक तहि[6] जानिये, सदा बसत तुम साथ ॥ ६ ॥

तन धन जहि[7] तो को दियो, तास्यों[8] नेह[9] न कीन ।
कहो नानक नर बावरे ! अब क्यों डोलत दीन ॥ ७ ॥

तन धन संपै[10] सुख दियो, अरु जहि[11] नीके[12] धाम ।
कहो नानक सुन रे मना ! सिमरत काहे न राम ॥ ८ ॥

सब सुख दाता राम है, दूसर नाहि न कोय ।
कहो नानक सुन रे मना ! तहि सिमरत गति होय ॥ ९ ॥

जहि सिमरत गति पाइये, तहि भज रे तैं मीत[13] ।
कहो नानक सुन रे मना ! अवध घटत है नीत[14] ॥ १० ॥

---

१ विषयों के साथ, २ पलक भर भी, ३ युवावस्था, ४ बुढ़ापा, ५ आयु ६ उसे, ७ जिस ने, ८ उसके साथ, ९ प्यार, प्रीति, १० संपत्ति, ११ जिसने १२ अच्छा अस्थान, १३ ऐ मित्र, १४ नित्य ।

पाँच तत्व को तन रचयो, जानहु चतुर सुजान।
जिह ते उपजयो नानका! लीन ताहि में मान ॥ ११ ॥

घट घट में हरि जू बसे, सन्तन कहयो पुकार।
कहो नानक तिह भज मना! भवनिधि[1] उतरे पार ॥ १२ ॥

सुख दुःख जिह परसे[2] नहीं, लोभ मोह अभिमान।
कहो नानक सुन रे मना, ! सो मूरत भगवान ॥ १३ ॥

उस्तति[3] निन्दा नाहिं जिहिं, कंचन लोह समान।
कहो नानक सुन रे मना! मुक्त ताहि[4] ते जान ॥ १४ ॥

हर्ष शोक जाके नहीं, वैरी मीत समान।
कहो नानक सुन रे मना! मुक्त ताहि ते जान ॥ १५ ॥

भय काहू को देत नहीं, नहीं भय मानत आन[5]।
कहो नानक सुन रे मना! ज्ञानी ताहि बखान[6] ॥ १६ ॥

जिहि विषयाँ सगली तजी, लियो भेष बैराग।
कहो नानक सुन रे मना! तिह नर माथे भाग ॥ १७ ॥

जिहि माया ममता तजी, सब से भयो उदास।
कहो नानक सुन रे मना! तिह घट ब्रह्म निवास ॥ १८ ॥

जिहि प्राणी हौं[8] मैं तजी, कर्त्ता राम पछान।
कहो नानक वह मुक्त नर, यह मन साँची जान ॥ १९ ॥

---

१ संसार, समुद्र, २ स्पर्श न करे, ३ स्तुति, ४ इसी से, ५ दूसरे ६ कहो, जानो, ७ विषय, ८ अहंकार, ममत्व।

भय नासन दुर्मति हरन, कलि[1] में हर को नाम।
निश-दिन जो नानक भजे, सफल होय तिह काम ॥ २० ॥

जिह्वा गुण गोविन्द भजो, कर्ण सुनो हरि नाम।
कहो नानक सुन रे मना ! पड़े न यम के धाम ॥ २१ ॥

जो प्राणी ममता तजे, लोभ मोह अहंकार।
कहो नानक आपन[2] तरे, औरन लेत उद्धार ॥ २२ ॥

ज्यों स्वप्ना अरु पेखनों[3], ऐसे जग को जान।
इन में कछु साचो नहीं, नानक बिन भगवान् ॥ २३ ॥

निश दिन माया कारणे, प्राणी डोलत नीतं[4]।
कोटन में नानक कोऊ, नारायण जहि चीतं[5] ॥ २४ ॥

जैसे जल से बुदबुदा, उपजे विनसे नीत।
जग रचना तैसे रची, कहो नानक सुन मीत ॥ २५ ॥

प्राणी कछु न चेतई[6], मद माया के अन्ध।
कहो नानक बिन हरि भजन, पड़त ताहि यम फंद ॥ २६ ॥

जौं[7] सुख को चाहें सदा, शरण राम की ले।
कहो नानक सुन रे मना ! दुर्लभ मानुष देह ॥ २७ ॥

माया कारण धावहिं[8], मूरख लोग अजान।
कहो नानक बिन हरि भजन, बिरथा[9] जन्म सिरानं[10] ॥ २८ ॥

---

१ कलियुग, २ अपने आप, ३ देखना, ४ नित्य, ५ चित्त में, ६ चिन्तवन करे, ७ अगर, ८ दौड़ते हैं, ९ वृथा, १० गला रहा, बिता रहा।

जो प्राणी निश दिन भजे, रूप राम तिहि[1] जान।
हरिजन, हरि अन्तर नहीं, नानक साची मान॥ २९॥

मन माया में फंस रह्यो, बिसरयो गोविन्द नाम।
कहो नानक बिन हरि भजन, जीवन कौनें[2] काम॥ ३०॥

प्राणी! राम न चेतई, मद माया के अन्ध।
कहो नानक हरि-भजन बिन, पड़त ताहि यम-फंध॥ ३१॥

सुख में बहुसंगी भये, दुःख में संग न कोय।
कहो नानक हरि भज मना! अन्त सहाई होय॥ ३२॥

जन्म जन्म भरमत फिरयो, मिटयो न यम को त्रास[3]।
कहो नानक हरि भज मना! निर्भय पावें वास॥ ३३॥

यत्न बहुत मैं कर रह्यो, मिटयो न मन को मान।
दुर्मति स्यों नानक फंधयो, राख लेयो भगवान॥ ३४॥

बाल, जवानी, अरु बृद्ध पुनि, तीन अवस्था जान।
कहो नानक हरि भजन बिन, बिरथा[4] सब ही मान॥ ३५॥

करनो हुतो[5] सो न कीयो, पड़यो लोभ के फंध।
नानक समयो रम गयो, अब क्यों रोवत अंध॥ ३६॥

मन माया में रम रह्यो, निकसत नाहि न मीत।
नानक मूरत चित्र ज्यों, छाडत नाहि न भीत[6]॥ ३७॥

---

१ उसे राम का रूप जान, २ किस काम का, ३ भय, ४ वृथा, ५ करने योग्य जो था, ६-दीवार को जैसे चित्र नहीं छोड़ता वैसे माया को मन नहीं छोड़ रहा है।

नर चाहत कछु और, औरे की औरे भई।
चितवत रह्यो ठगौर[1], नानक फांसी गल पड़ी। ३८॥

यत्न बहुत सुख के किये, दुःख को कियो न कोय।
कहो नानक सुन रे मना! हरि भावे सो होय॥ ३९॥

जगत भिखारी फिरत है, सब को दाता राम।
कहो नानक मन सिमर तिहि, पूर्ण होवें काम॥ ४०॥

झूठे मान कहां करे, जग स्वप्ने ज्यों जान।
इन में कछु तेरो नहीं, नानक कह्यो बखान॥ ४१॥

गर्भ करत है देह को, विनसे छिन में मीत।
जिहि प्राणी हरियश कह्यो, नानक तिहि जग जीत॥ ४२॥

जिहि घट सिमरन राम को, सो नर मुक्ता जान।
तिहि नर हरि अन्तर नहीं, नानक साची मान॥ ४३॥

एक भक्ति भगवान, जिहि प्राणी के नाहि मन।
जैसे सूकर[2] स्वान[3], नानक मानो ताहि तन॥ ४४॥

स्वामी को गृह ज्यों सदा, स्वान तजत नहीं नित्त[4]।
नानक यह विधि हरि भजो, इक मन होय इक चित्त॥ ४५॥

तीरथ, व्रत अरु दान कर, मन में धरे गुमान।
नानक निष्फल जात तिह, ज्यों कुंजर[5] असनान॥ ४६॥

---

1 चित्त के भीतर ठगपन, २ सूअर, ३ कुत्ता, ४ नित्य, ५ हाथी जैसे स्नान के बाद धूल अपने पर फैंक लेता है वैसे अहंकारी पुरुष के तीर्थ व्रत इत्यादि निष्फल होते हैं।

सिर कम्पयो, पग डगमगे, नैन[1] जोत से हीन।
कहो नानक यह विधि भई, तौ न हर रस लीन ॥ ४७ ॥

निज कर देखियो जगत में, को काहू को नाहिं।
नानक थिर[2] हरि भक्ति है, तिहि[3] राखो मन मांहि ॥ ४८ ॥

जग रचना सब झूठ है, जान लियो रे मीत।
कहो नानक थिर न रहे, ज्यों बालू की भीत ॥ ४९ ॥

राम गयो, रावण गयो, जाको बहु परिवार।
कहो नानक थिर कछु नहीं, स्वप्ने ज्यों संसार ॥ ५० ॥

चिंता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय।
यह मारग संसार को, नानक थिर नहीं कोय ॥ ५१ ॥

जो उपजयो सो विनस है, पड़ो आज के काल।
नानक हरि गुण गाय ले, छाड सगले[4] जंजाल ॥ ५२ ॥

बल छुटियो, बंधन पड़े, कछु न होत उपाय।
कहो नानक अब ओट[5] हरि, गज ज्यों हो सहाय ॥ ५३ ॥

*बल होवा बंधन छुटे, सब किछु होत उपाय।
नानक सब किछु तुमरे हाथ में, तुम ही होत सहाय ॥ ५४ ॥

संग सखा सब तज गये, कोउ न निभयो साथ।
कहो नानक यह विपद में, टेक[6] एक रघुनाथ ॥ ५५ ॥

---

१ नेत्र प्रकाश रहित, २ स्थिर, ३ उसे ही, ४ सारा, ५ आश्रय, ६ सहारा।

* यहाँ से गुरु गोविन्द सिंह का उत्तर है।

नाम रह्यो, साधू रह्यो, रह्यो गुरु गोविन्द।
कहो नानक यह जगत में, किन जपयो गुरुमन्त ॥ ५६ ॥

राम नाम उर[1] में गहो[2], जाके सम नहीं कोय।
जिहि सिमरत संकट मिटें, दर्श तुहारो होय ॥ ५७ ॥

[ ५७ ]

रविदास चमार का भजन

रे प्राणी ! क्या तेरा क्या मेरा, जैसे तरवर पँख वसेरा।
जल के भीत पवन का थम्बा रक्त बन्धु का गारा ॥

हाड़ मांस नाड़ी का पिञ्जरा, पंछी बसे बिचारा।
राखो कन्ध, उसारो नीमाँ, साढ़े तिन हथ तेरी सीमाँ ॥

बाँके बाल, पाग सिर टेढ़ो, यह तन होगा भस्म की ढेरी।
ऊँचे मन्दिर, सुन्दर नारी, राम नाम की बाज़ी हारी ॥

मेरी जाति कमीना, बुद्धि हीना, होछा जन्म हमारा।
तुमरी शरणागत में प्रभु जी, कहे रवीदास चमारा ॥

[ ५८ ]

बैरागन भूली आप में और जल में खोजे राम ( टेक )

जल में खोजे राम जाय कर तीर्थ छाने।
ढूण्ड फिरी, खूट नहीं, सुध अपनी आने ॥ १ ॥

फूल माँही ज्यों वास, काठ में अग्नि समानी।
खोदे बिना नहीं मिले, रहे धरती में पानी ॥ २ ॥

---

१ हृदय, २ ग्रहण, ३ धसयो चित्त में खचित हुआ।

जैसे दूध घृत छिपा, छिपी मेहँदी में लाली।
ऐसे पूर्ण ब्रह्म, कहूँ तिल भर नहीं खाली ॥ ३ ॥

पलटू[1] कर सतसंग, बीच में कर ले अपना काम।
वैरागन भूली आप में और जल में खोजे राम ॥ ४ ॥

[ ५९ ]

* राग सिन्दौरा, ताल दीपचन्दी *

गुज़ारी उम्र झगड़ों में बिगाड़ी अपनी हालत है।
हुआ खारिज अपील अपना, अजायब यह वकालत है ॥ १ ॥

मुक़द्दमे ग़ैर लोगों के हज़ारों कर दिये फ़ैसल।
न देखा मिसल अपनी को, अजायब यह अदालत है ॥ २ ॥

दलीलें दे के ग़ैरों पर किया साबित असूल अपना।
दिल अपने का न शक टूटा, अजायब यह दलालत है ॥ ३ ॥

बहुत पढ़ने पढ़ाने से हुआ सब इल्म में कामिल।
न पाया भेद रब्बी का, अजायब यह कमालत है ॥ ४ ॥

बना हाफिज़, पढ़े मसले, सुनाये दूसरों को भी।
बले टूटा न कुफ़्र अपना, अजायब यह मसालत है ॥ ५ ॥

तू कर फ़ैसल हिसाब अपना, तुझे औरों से क्या गोविन्द[2]।
न क़िस्सा तूल दे इतना, फ़ज़ूल ही यह तवालत है ॥ ६ ॥

---

१ कवि का नाम है, २ कवि का नाम है।

* यह कविता स्वामी रामजी के शिष्य स्वामी गोविन्दा की है।

[ ९० ]

राग धनासरी, ताल धुमाली

अजहूँ तोहे मन ! समझ न आई । ( टेक )
कियो न कुछ शुभ कर्म देह धर, हरि की सुध विसराई ॥ १ ॥

दिन खोवत झूठे झगड़ों में, सोवत रैन बिताई ।
देख विचार बहुरि[1] नहिं पैहै, यह अवसर सुखदाई ॥ २ ॥

छल प्रपञ्च फैलाये जगत में, नाना स्वाँग बनाई ।
परधन, पर तियाँ[2] में चित्त राखत, चाहत मान बड़ाई ॥ ३ ॥

अजहों त्याग बलदेव नींद को, आ जा प्रभु शरणाई ।
परम पिता इक वही अगोचर, सब विधि करत सहाई ॥ ४ ॥

[ ९१ ]

राग गौरी, ताल धुमाली

मनुवा ! मोह निद्रा त्याग । ( टेक )
नाम रूपमय यह जग स्वप्ना, क्या सोवे है जाग ॥ १ ॥

जिन विषयों को आज भोग रहियो, कल वह स्वप्न समान ।
इनमें कहा भयो रत मूर्ख, अजहों अचेत अजान ॥ २ ॥

माया का सुख आदि अन्त वत, या में क्यों भरमाया ।
ब्रह्मानन्द अनन्त अनादि, वाको क्यों विसराया ॥ ३ ॥

---

१ बार बार यह समय नहीं मिले है, २ पर दारा ।

मानुष जन्म मेहर अति दुर्लभ, बार बार नहीं पावे।
उठ स्वरूप चिन्तन कर जा रे, बहुरी यहाँ नहीं आवे ॥ ४ ॥

[ ६२ ]

राग गौरी, ताल धुमाली

हरि पर राखो भरोसा भाई। (टेक)
काहे सोच करो दिन राती, रहो चरणन लौं[1] लाई ॥ १ ॥

गर्भ में ली सुधि, अब भी ले है, जब गही[2] बाँह[3] सो अब भी गहे[4] है।
दाँत दिये जिन अन्न भी दे है, कब सुधि है बिसराई ॥ २ ॥

मूरख! कहा सोच से लेगा, और ताप संताप गहेगा[5]।
तन जिन दिया, वह घर धन देगा, रीति सदा चली आई ॥ ३ ॥

तोहे सोच बस अपनो एक का, हरि रक्षक ब्रह्माण्ड अनेक का।
विरला चले मार्ग विवेक का, धीरज मेहर उपजाई ॥ ४ ॥

[ ६३ ]

राग धनासरी, ताल धुमाली

मनुवा! तू क्यों भयो दीवाना। (टेक)
छल प्रपंच करत नित्य मूरख, दुःख को सुख कर माना ॥ १ ॥

माया मोह जन्म के ठगिया, तिन के हाथ विकाना।
मुख ते धर्म धर्म कहरावत, कर्म करत मन माना ॥ २ ॥

---

१ लगन, प्रीति, २ पकड़ी, ३ भुजा, ४ अब भी पकड़े है, ५ सहेगा अर्थात् संतपित होगा।

जो प्रभु घट घट की जाने, ताते करत बहाना।
तेहिं ते तू पूछे मारग,[1] आप ही जौन भुलाना ॥ ३ ॥

या मनुवा के पीछे चल के, सुख का कहां ठिकाना।
जो प्रताप सुखदे[2] को चीन्हें, सोई परम स्याना ॥ ४ ॥

[ ६४ ]

ग़ज़ल

तू को इतना मिटा कि तू न रहे।
और तुझ में दूई[3] की बू न रहे ॥ १ ॥

जुस्तजू[4] भी हजाबे[5]-हसनी है।
जुस्तजू है कि जुस्तजू न रहे ॥ २ ॥

आर्जू[6] भी वसाले[7]-परदा है।
आर्जू है कि आर्जू न रहे ॥ ३ ॥

] ६५ ]

राग जंगल या रागनी पीलू, ताल तीन

दिन नीके[8] बीते जाते हैं। (टेक)

सिमरन कर हरि राम नाम, तज विषे भोग अरु काम।
तेरे संग न चलसी एक दाम, जो देते हैं सो पाते हैं ॥ १ ॥

---

१ जो आप स्वयं भूले हुए हैं उन से तू मार्ग पूछ रहा है, २ जो सुख देने वाले या सुखस्वरुप परमात्मा को पहचाने है वही बुद्धिमान् है, २ द्वैत, ४ जिज्ञासा, ५ पतला पर्दा, ६ इच्छा, ७ मिलने में आवरण, ८ अच्छे।

कौन तुम्हारा, कुटुम्ब परिवारा, किसके हो तुम, कौन तुम्हारा।
तू किसका और कौन तुम्हारा, सब जीते जी के नाते हैं ॥ २ ॥

लाख चौरासी भरम के आया, बड़े भाग से नर-तन पाया।
तां पर भी नहीं करे कमाई, फिर पीछे पछताते हैं ॥ ३ ॥

जो तू चाहे विषय-अभिलाषा, मूरख फँसियो मौत की फाँसा।
क्या देखे स्वानन की आशा, गये फिर नहीं आते हैं ॥ ४ ॥

[ ६६ ]

ग़ज़ल

आदमी को चाहिये दुनिया में रहना किस तरह ?
जिस तरह तालाब के पानी में रहता है कमल ॥ १ ॥

साहिबे-ज़र मुफ़लिसों पर ज़र लुटायें किस तरह ?
जिस तरह सूखी ज़िमीं पर अबर बरसाता है जल ॥ २ ॥

पाके दौलत है बशर को रहना वाजिब किस तरह ?
जिस तरह झुककर रहे वह शाख आये जिसमें फल ॥ ३ ॥

आदमी अपने इरादे का हो पक्का किस तरह ?
जिस तरह क़ानून है तक़दीरे-कुदरत का अटल ॥ ४ ॥

रंजो-ग़म दुनिया के इन्साँ भूल जाये किस तरह ?
जिस तरह वह शख़्स जिसके ज़हन में आये ख़लल ॥ ५ ॥

आदमी जाये मुसीबत के मुक़ाबिल किस तरह ?
जिस तरह है शेर जाता सेले में सीने के बल ॥ ६ ॥

---

१ नदी-जल का वेग।

[ ६७ ]

ग़ज़ल ताल ३

हरि को सिमर प्यारे। उमर विहा[1] रही है।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन में जा रही है॥ (टेक)

दीपक की जोत जावे, नदियों का नीर[2] धावे[3]।
जाती नज़र न आवे, चंचल समा रही है॥ १॥ हरि०

पिछली भलाई कमाई, मानुषा देह पाई।
प्रभु हेत[4] ना लगाई, बिरथा गमा रही है॥ २॥ हरि०

घर माल मीत नारी, दुनिया की मौज[5] भारी।
होवे पलक में न्यारी, दिल को फँसा रही है॥ ३॥ हरि०

क्या नींद में पड़ा है, सिर काल आ खड़ा है।
उठ दिन चढ़ रहा है, रजनी[6] वता रही है॥ ४॥ हरि०

[ ६८ ]

लावनी लँगड़ी

सुन दिल प्यारे! भज निज स्वरूप तू बारंबारा। (टेक)

इस दुनिया में एक रतन[7] है, मिलता बारंबार नहीं।
जैसे फूल गिरा डाली से, फिर होता गुलज़ार नहीं॥

---

१ गुज़र (वीत) रही है, २ जल, ३ दौड़े अर्थात् वहे, ४ कारण (अर्थात् प्रभु के लिये), ५ तरंग. लहर. ६ रात वा प्रभात, ७ मनुष्य-देह से मुराद है।

उसकी क़ीमत है बड़भारी, जानत लोग गँवार[1] नहीं।
परमेश्वर के मिलने का फिर, उसके बिना दुवार नहीं॥
काँच खरीद करे बदले में, उसको देकर मतिमारी। सुन० १॥

इस दुनिया में इक पुतली[2] ने, ऐसा भारी जाल रचा।
स्वर्ग लोक पाताल ज़िमीं पर, कोई न उसके हाथ बचा॥
क्या योगी क्या पीर पैगंबर, सबको उसने दिया नचा।
फँसा नहीं जो उस बंधन में, सोई है गुरुदेव सचा॥
मोक्ष मारग के जाने में, सो ठग जानो लूटन हारा। सुन० २॥

इस दुनिया में एक अचंभा, हमने देखा है जो बड़ा।
एक छोड़ कर चला ज़िमीं को, दूजा करता है झगड़ा॥
वह नहीं मन में समझे मूरख, मैं भी जावनहार खड़ा।
घड़ी पलक का नहीं ठिकाना, किसके भरोसे भूल पड़ा॥
पर आगे जाने का सामाँ कोई विरला करता है प्यारा। सुन० ३॥

इस दुनिया में एक कूप[3] है, जिसका पार कोय नहिं पावे।
तिसके भरने कारण प्राणी, देश देशांतर को जावें॥
ध्यान भजन चिंतन ईश्वर का, उसके कारण बिसरावे।
दीन भया पर घर में जाकर, सेवा कर कर मर जावे॥
वही जो ध्यावे निज स्वरूप को, शोक फिकर तज दे सारा॥ सुन० ४॥

इस दुनिया में एक वृक्ष[4] पर, पक्षी करत बसेरा हैं।
साँझ पड़े जब सब मिल जावें, बिछड़ें होत सवेरा हैं॥

---

१ बेवक़ूफ़, जिसकी बुद्धि नहीं, २ स्त्री से मुराद है, ३ कुआँ, यहाँ मुराद पेट से है, ४ यहाँ मुराद घर, मकान से है।

चार घड़ी के रहने कारण, करते मेरा मेरा हैं।
ऐसी बात न मन में लावें, बस बस गये वड़ेरा हैं॥
क्या ले आया क्या ले जासी, वृथा करत हैं हंकारा॥ सुन० ५॥

इस दुनिया के बीच निरंतर, एक नदी[1] चलती भारी।
दिन दिन पल पल छिन छिन, उसका वेग बड़ा है बलकारी॥
पशु पक्षी नर देव दनुज[2], उसमें बहती दुनिया सारी।
जमे न उसमें पैर किसी का, करके यतन सब पचहारी॥
बिन स्वरूप जाने, किसी का, कभी न होगा निस्तारा॥ सुन० ६॥

इस दुनिया में एक अँधेरा[3] सबकी आँख में जो छाया।
जिसके कारण सूझ पड़े नहीं कौन हूँ मैं कहाँ से आया॥
कौन दिशा में जाना मुझको किससे देखकर ललचाया।
कौन मालिक है इस दुनिया का किसने रची है यह माया॥
निजानन्द पाने बिन कबहूँ मिटे नहीं यह संसारा॥ सुन० ७॥

राग धनासरी, ताल धुमाली

[ ६९ ]

हरि से लगन कठिन है भाई। ( टेक )

जैसे पपीहा प्यासा बूँद का, पिया पिया रट लाई।
प्यासे प्राण तड़पे दिन राती, और नीर[4] ना भाई॥ १॥

---

१ यहाँ मुराद काल भगवान् से है, २ दानव, ३ अज्ञान से मुराद है. ४ जल।

जैसा मृग शब्द-सनेही, शब्द सुनन को जाई।
शब्द सुने और प्राण-दान दे, तिनको[1] नहीं डराई ॥ २ ॥

जैसे सती चढ़े सत ऊपर, पिया की राह मन भाई।
पावक[2] देख डरे कुछ नाहिं, हँसत बैठ सराई[3] ॥ ३ ॥

छोड़ो धन और तन की आशा, निर्भय हो गुण गाई।
कहत कबीर सुनो भई साधो, नाहिं तो जन्म निसाई[4] ॥ ४ ॥

राग गौरी, ताल धुमाली

[ ७० ]

रसना ! रस विषयन का त्याग री ! (टेक)
मोरी मान, विष समान जान के, इन विषयन से भाग री ॥ १ ॥

गज, पतंग, मृग, भँवरा, माछी, रहे विषयन संग लाग री।
इक इक इन्द्रिय-विषय के पाछे, जग से गये अभागे[5] री। ॥ २ ॥

मनुष्य जाति की पाँच इन्द्रिय, पाँच विषयों में रागै[6] री।
कहँा[7] विथा[8] होगी मन मूरख, बुद्धि से कहो जाग री ! ॥ ३ ॥

[ ७१ ]

राग गौरी, ताल तीन

कर प्रभु से प्रीति रे मन ! कर प्रभु से प्रीत। (टेक)

---

१ किञ्चित् मात्र, २ अग्नि, ३ हँसती बैठ कर जल जाती है, ४ नहीं नसेगा, अर्थात् आवागमन न छूटेगा, ५ भाग्यहीन, ६ पाँचों विषयों में रुचि करती हैं, ७ क्या, कैसी, ८ दशा, विपदा।

ऐसो समय बहुर नहीं पटे हो, जाय है अवसर बीत।
तन सुन्दर छबि देख न भूलो, यह वालू की भीत[1] ॥ १ ॥

सुख सम्पति स्वप्ने की बतियाँ[2], जैसे तृण पर शीत[3]।
जाहि[4] कर्म परम पद पावे, सोई कर्म कर मीत ॥ २ ॥

शरण आय, सो सबहीं उबारे[5], यह प्रभु की रीत।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, चलो हो भवदल[6] जीत ॥ ३ ॥

[ ७२ ]

साकी, राग कानंगड़ा

पी ले प्याला, हो मतवाला! प्याला प्रेम हरिरस का रे। (टेक)

बालपना सब खेल गँवाया, तरुण भया नारी वश का रे।
वृद्ध भया, कफ वायु ने घेरा, तन से जाय नहीं खटका रे ॥ १ ॥

नहीं सतसंग न कथा कीरतन, नहीं प्रभु चरणन प्रेम रचा रे।
अबहूँ सोच समझ अज्ञानी, इस जग में नहीं कोई अपना रे ॥ २ ॥

काम क्रोध लोभ ईर्षा, इनमें निशदिन रहत फँसा रे।
भोग विलास वासना जग की, गल बिच यम का फन्द पड़ा रे ॥३॥

देह मोह में क्यों भरमाया, देह खेह यह है किसका रे।
चौरासी से उबरा[7] चाहे, छोड़ कामनी का चसका रे ॥ ४ ॥

---

१ दीवार, २ बातें, ३ ओस, पाला, ४ जिस, ५ तारें, ६ संसार के नाम रूपी दलदल को पार कर, या विषय-दल को जीत, ७ निकला।

नाभ कमल बिच है कस्तूरी, जैसे मृग फिरे बन का रे।
भटक भटक क्यों भटका खावे, घट के पट को दे झटका रे॥ ५॥

वाद विवाद में निशदिन बीते, मानुष जन्म न सार गहा रे।
नर-देहि निष्फल गयी सारी, अवसर पाय न लाभ लहा रे॥ ६॥

मात पिता भाई सुत बन्धु, संग नहीं कोई जाय सका रे।
जब लग जीवे हरिगुण गा ले, धन यौवन दिन है दस का रे॥ ७॥

कर्म धर्म एको नहीं जाना, सार वस्तु नहीं जान पड़ा रे।
बिन सतगुरु इतना दुख पाया, वैद्य मिला नहीं इस तन का रे॥८॥

चार खानि[3] नर भरमत डोले, कबहूँ न सतपथ खोज करा रे।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नख शिख[4] पूर रहा विष का रे॥ ९॥

राग मारू

[ ७२ ]

राम सिमर पछतायेगा, हे मन! राम सिमर। (टेक)
पापी ज्योड़ा[5] लोभ करत है, आज काल उठ जायेगा॥ १॥

लालच लागे जन्म गँवाया, माया भरम भुलायेगा।
धन योवन का गरभ[6] न कीजे, कागज़ ज्यों गल जायेगा॥ २॥

---

१ पकड़ा जाना, २ लिया, पाया, ३ चार योनि, जैसे अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज, ४ नाखून से सिर तक इस मनुष्य का देह विष से भरा हुआ है, जो सत्य-पथ पर नहीं चलता है, ५ जीव, चित्त, ६ अहंकार।

जौं जम आय केस गहे पटके, ता दिन कछु न बसायेगा।
सिमरन भजन दया नहीं कीनी, तौ मुख चोटाँ खायेगा॥ ३॥

धर्मराय जब लेखा माँगे, क्या मुख लै के जायेगा।
कहत कबीर सुनो रे सन्तो, साध संगत तर जायेगा॥ ४॥

राग कालंगड़ा, ताल तीन

[ ७४ ]

मत फिर मनुवा! भूला भूला जग में कैसा नाता रे। (टेक)

माता कहे यह पुत्र हमारा, बहन कहे बिरं मेरा।
भाई कहे यह भुजा हमारी, नार कहे नर मेरा॥ १॥

पेट पकड़ कर माता रोवे, बाँह पकड़ कर भाई।
लपट झपट कर तिरियाँ रोवे, हंसा जाय उड़ाई॥ २॥

जब लग जीवे माता रोवे, बहन रोवे दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवे, फेर करे घर वासा॥ ३॥

चार गज़ी चादर मँगवाई, चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारों कोने आग लगाई, फूँक दयी जैसे होरी॥ ४॥

हाड़ जरे जिस लाह कड़ी की, केस जरे जैसे घास।
सोना ऐसी काया जर गई, कोई न आया पासँ॥ ५॥

---

१ जब, २ कुछ बस न चलेगा, ३ सम्बन्ध, ४ भाई, वीर ५ — के नाम अभिप्राय है, ६ स्त्री, ७ समीप।

नेह स्नेह ढूँढ नहीं पाई, ढूँढ फिरो चहाँ पाला।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तजो जीने की आसा॥ ६।

राग कालंगड़ा, ताल तीन

[ ७५ ]

क्या माँगूँ कुछ थिर न रहाई,
देखत नैन चलो जग जाई॥ १॥

इक लख पूत, सवा लख नाती।
ता रावण-घर दिया न बाती॥ २॥

लङ्का सा कोट, समुद्र सी खाई।
ता रावण की खबर न पाई॥ ३॥

सोने का महल, रूपे का छाजा।
छोड़ चलो नगरी का राजा॥ ४॥

कोई करो महल कोई करो टाटी।
उड़ जाय हंस, पड़ी रहे माटी॥ ५॥

आवत संग न जात संघाती।
कहाँ भयो घर बाँधे हाथी॥ ६॥

कहें कबीर अन्त की बारी।
हाथ झाड़ ज्यों चला जुआरी॥ ७॥

---

स्वेदज है, जो। चहाँ ओर, २ स्थिर, ३ क्या होगा।

राग कालंगड़ा

[ ७६ ]

तन[1] धर सुख्या कोई न देखा, जो देखा सो दुख्या हो।
राजा परजा[2] रंक[3] धनी नर, अधमाधम[4] वा मुख्या[5] हो ॥ १ ॥

घाटे[6] वाढ़े सब जग दुख्या, क्या गृही क्या त्यागी हो।
सुख्या या जग यहीं कुटम्बी, सुख्या नहीं वैरागी हो ॥ २ ॥

योगी दुख्या, जंगम दुख्या, तपस्वी को दुःख दूना हो।
आशा तृष्णा सब को व्यापे, कोई महल नहीं सूनाँ[7] हो ॥ ३ ॥

साँच कहूँ तो कोई न माने, झूठ कहा नहीं जाई हो।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुख्या, जिन यह राह[8] चलाई हो ॥ ४ ॥

अवधू[9] दुख्या, भूपति दुख्या, रंक दुखी विपरीतें[10] हो।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मनुष्य सुखी मन जीते[11] हो ॥ ५ ॥

[ ७७ ]

राग धनासरी, ताल धुमाली

आगे समझ पड़ेगी भाई। ( टेक )

---

१ तनधारी प्राणी, २ प्रजा, ३ निर्धन, गरीब, ४ अति नीच से नीच, ५श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वा ऊँचा से ऊँचा, ६लाभहानि के फेर में, ७ खाली, अर्थात् कोई प्राणी आशा तृष्णा से खाली नहीं, ८ रीति, मार्ग, ९ अवधूत, १० विरोधी दशा के कारण निर्धन दुख्या है, ११ मन के जीतने पर ही मनुष्य सुखी है।

यहाँ अहार उदर भर खायो, बहु विधि माँस बढ़ाई।
तुम पर दया कहाँ ते होगी, तुम्हें दया नहीं आई। १॥

यहां तो परधन लूट लेत हो, गल विच फाँस लगाई।
तिनके पीछे तीन प्यादे, छिन छिन खबर बताई॥ २॥

साध सन्त की निन्दा कीनी, अपना जन्म नसाई[1]।
पैर पैर पर काँटा लगि है, यह फल आगे आई॥ ३॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, दुनिया है दो चित्ताई[2]।
साँच कहे सो मारा जाय, झूठे जग पतियाई[3]॥ ४॥

[ ७८ ]

राग धनासरी, ताल धुमाली

मन ! तू क्यों भूला रे भाई।
तेरी सुध बुध कहां हराई॥ ( टेक )

जैसे पंछी रैन[4] बसेरा, बसे वृक्ष में आई।
भोर[5] भये सब आप आपको, जहां तहां उड़ जाई॥ १॥

स्वप्ने में तोहे राज मिलो है, हाकिम हुक्म दुहाई।
जाग पड़ा जब लाओ न लशकर, पलक खुले सुध पाई॥ २॥

माता पिता बंधु सुत तिरियाँ[6], ना कोई सगा सगाई।
यह तो सब स्वारथ के संगी, झूठी लोक बड़ाई॥ ३॥

---

१ नाश किया, बिगाड़ा, २ दो चित्त रखने का नाम ही दुनिया है, ३ झूठे मनुष्य की दुनिया सन्मान करती है, ४ रात, ५ प्रातःकाल होते ही, ६ स्त्री।

सागर माहिं लहर ऊठत है, गिनती गिनी न जाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो अवधी माहिं समाई॥ ४॥

[ ७९ ]

राग धनासरी, ताल तीन

रे मन! धीरज क्यों न धरे ? (टेक)
शुभ और अशुभ कर्म पूर्वला, रत्ती न घटे न बढ़े॥ १॥

होनहार होय पुनि सोई, चिन्ता काहे करे।
पशु पक्षी जीव कोटी नाना, सब की सुध धरे॥ २॥

गर्भवास में खबर लेत है, बाहिर क्यों विसरे।
मात पिता सुख सम्पति दारा, काहे ज्वाल जरे॥ ३॥

मन तो प्राणपति प्रभु से, भटकत काहे फिरे।
हरि को छोड़ और को धावे, कार्य इक न सरे॥ ४॥

हरि सेवा कर रे मन मूरख, कोटिन व्याधि हरे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज में जीव तरे॥ ५॥

[ ८० ]

राग गौरी, ताल धुमाली

साधो! मन मानत नहीं मोरा रे (टेक)
याको बार बार समझाऊँ, जग में जीता थोड़ा रे॥ १॥

१ समुद, २ ज्वाला अर्थात् माता पिता सुख सम्पति के मोह रूपी अग्नि की ज्वाला में क्यों जलता है, ३ दूसरी ओर दौड़ता है, ४ पूर्ण नहीं होता, ५ सुगमता से।

याका याका गरभ न कीजे, क्या सांवरा क्या गोरा रे।
विन हरि भक्ति तन काम न आवे, कोटि सुगंध चमोरा रे ॥ २ ॥

या माया का गरभ न कीजे, क्या हाथी क्या घोड़ा रे।
जोड़ जोड़ धन बहुत चले गये, सहस्र लाख करोड़ा रे ॥ ३ ॥

दुवधा दुरमति और चतुराई, जन्म गयो नर बौरा रे।
कहैं कबीर चरणन चित राखो, ज्यों सुई में डोरा रे ॥ ४ ॥

[ ८१ ]

राग जयवन्ती ( महल्ला ९ )

रे मन, कौन गति होइ है तेरी। ( टेक )

यह जग में राम नाम, सो तैं नहीं सुन्यो कान,
विषयन सो अति लुभान, मति नाहीं फेरी ॥ १ ॥

मानुष को जन्म लीन, सिमरन न निमष[1] कीन।
दारा-सुख[3] भयो दीन, पगहूँ[4] पड़ी बेरी ॥ २ ॥

नानक जन कहैं पुकार, स्वप्ने ज्यों जग पसार,
सिमरत न क्यों मुरार, माया जाकी चेरी[5] ॥ ३ ॥

[ ८२ ]

राग गौरी वा धनासरी, ताल धुमाली ( महल्ला ९ )

मन रे! कहाँ भयो तैं बौरा[6]! ( टेक )
अहँनिश[7] अवध घटे नहीं जाने, भयो लोभ संग हौरा[8] ॥ १ ॥

---

१ अति लीन, २ एक पलक मात्र, ३ स्त्री का सुख, ४ पाँव में, ५ चेली, सेविका, ६ पागल, ७ रात दिन, ८ छोटा, हलका, तुच्छ।

जो तन तैं[1] अपनो कर मान्यो, अरु सुन्दर ग्रह नारी।
इनमें कछु तेरो रे नाहीं, देखो सोच विचारी ॥ २ ॥

रत्न जन्म अपनो तैं हारयो, गोविन्द गति नहीं जानी।
निमिष[2] न लीन भयो चरनन सों, विरथा[3] अवध[4] सिरानी ॥ ३ ॥

कहो नानक सोई नर सुखिया, राम नाम गुण गावें।
और सकल[6] जग माया मोहया, निर्भय पद नहीं पावे ॥ ४ ॥

[ ८३ ]

राग बसन्त ( महल्ला ९ )

मन कहाँ विसारयो राम नाम।
तन विनसे[5], जम स्यों[8] पड़े काम ॥ १ ॥

यह जग धूएँ का पहाड़।
तैं साचा मानया कैहं[9] विचार ॥ २ ॥

धन दारा संपति ग्रहे।
कछु संग न चाले समझ ले ॥ ३ ॥

इक भक्ति नारायण होय संग।
कहो नानक भज, ताहि[10] एक रंग ॥ ४ ॥

---

१ तूने, २ आँख की झपक मात्र, ३ व्यर्थ, ४ आयु, ५ गलना, व्यतीत होना, ६ सारा, ७ नष्ट हो, ८ यमराज के साथ, ९ किस विचार से, १० उसको।

[ ८४ ]

राग जयतसरी ( महला ९ )

भूल्यो मन ! माया उरझायो । ( टेक )
जो जो कर्म कियो लालच लग, तेहि तेहि आप बँधायो ॥ १ ॥

समझ न पड़ी विषय रस रचयो, यश हरि को विसरायो ।
संग स्वामी, सो जानयों नाहि, वन खोजन को धायो ॥ २ ॥

रत्न नाम घट ही के भीतर, ताको ज्ञान न पायो ।
जन नानक भगवन्त भजन विन, वृथा जन्म गँवायो ॥ ३ ॥

[ ८५ ]

राग जैतसरी ( महला ९ )

मन रे ! साचा गहो विचारा । ( टेक )
राम नाम विन मिथ्या मानो, सगरे यह संसारा ॥ १ ॥

जाको योगी खोजत हारे, पायो नाहि तें पारा ।
सो स्वामी तुम निकट पिछानो, रूप रेख ते न्यारा ॥ २ ॥

पावन[3] नाम जगत में हरि को, कबहूँ नाहिं सँभारा ।
नानक शरण पड़यो जग बंधन, राखो विरद तुम्हारा ॥ ३ ॥

---

१ उस उससे, २ चला, दौड़ा, ३ उसका, ४ ग्रहण करो, ५ सारा, ६ पवित्र करनेवाला, ७ निज धर्म, हे प्रभु ! तुम अपना राखो ।

[ ८६ ]

राग गौरी व धनासरी, ताल धुमालो ( महल्ला ६ )

प्राणी को हरियश मन नहीं आवे। ( टेक )
अहं[1] निश मग्न रहे माया में, कहो कैसे गुण गावे ॥ १ ॥

पूत[2] मीत माया ममता स्यों, यह विधि आप बँधावे।
मृगतृष्णा ज्यों झूठो यह जग, देख तास उठ धावे ॥ २ ॥

भुक्ति मुक्ति का कारण स्वामी, मूढ़ ताहि[3] बिसरावे।
जन नानक कोटन में कोऊ, भजन राम को पावे ॥ ३ ॥

[ ८७ ]

राग गौरी व धनासरी, ताल धुमाली ( महल्ला ६ )

नर अचेत[4]! पाप से डर रे। ( टेक )
दीन दयाल सगल भय भंजन, शरण ताँहि तुम पड़ रे ॥ १ ॥

वेद पुराण जास[5] गुण गावत, ताको नाम हिये[6] मों धर रे।
पावन[7] नाम जगत में हरि को, सिमर सिमर कशमल[8] सब हर रे ॥२॥

मानुष देह बहुर न पावे, कछु उपाय मुक्ति का कर रे।
नानक कहत गाय करुणामय, भवसागर के पार उतर रे ॥ ३ ॥

---

१ दिन रात, २ पुत्र इत्यादि, ३ उसे, ४ बे खबर, ५ जिसका, ६ हृदय में, ७ पवित्र करने वाला, ८ मैल, पाप।

[ ८८ ]

राग सोरठ ( महल्ला ९ )

रे नर ! यह साँची जियँ धार । ( टेक )
सकल जगत है जैसे स्वप्ना, विनसत लगत न बार ॥ १ ॥

बारू[3] भीति बनाई रच पच, रहत नहीं दिन चार ।
तैसे ही यह सुख माया के, उरझ्यो कहाँ गँवार ॥ २ ॥

अजहूँ समझ कछु बिगड़्यो नाहीं, भज ले राम मुरार ।
कहो नानक निज़मत साधन को, भाख्यो तोहि पुकार ॥ ३ ॥

[ ८९ ]

राग सोरठ ( महल्ला ९ )

या जग मीत न देखियो कोई । ( टेक )
सकल जगत अपने सुख लाग्यो, दुख में संग न होई ॥ १ ॥

दारा मीत पूत सम्बन्धी, सगरे धन सों लागे ।
जबहीं निर्धन देख्यो नर को, संग छोड़ सब भागे ॥ २ ॥

कहों कहा इस मन बौरे को, इनसों नेह लगायो ।
दीनानाथ सकल भय भंजन, यश ताको विसरायो ॥ ३ ॥

श्वान पूँछ ज्यों भयो न सूधो, बहुत यत्न मैं कीनो ।
नानक लाज विरद[10] की राखो, नाम तुम्हारो लीनो ॥ ४ ॥

---

१ सच करके, सच्ची बात, २ चित्तमें धार, ३ रेत की दीवार, ४ अभी भी, कहयो, ६ इस जगत में मित्र, ७ पागल, ८ स्नेह, प्रीति, ९ कुत्ते की पूँछ, १० निज धर्म

[ ९० ]

राग बसन्त हिंडोल ( महल्ला १ )

साधो ! यह तन मिथ्या जानो । ( टेक )
या भीतर जो राम बसत है, साचो ताँहि पहिचानो ॥ १ ॥

यह जग है संपति स्वप्ने की, देख कहा ऐडानो[1] ।
संग तिहारे कछू न चाले[2], ताँहि कहा लपटानो ॥ २ ॥

उस्तति निन्दा दोऊ परहँर[3], हरि कीरति उर[4] आनो ।
जन नानक सबही में पूरण, एक पुरुष भगवानो ॥ ३ ॥

[ ९१ ]

राग धनासरी, ताल धुमाली ( महल्ला १ )

साधो यह जग भरम[5] भुलाना । ( टेक )
राम नाम का सुमिरन छोड्या, माया हाथ बिकाना ॥ १ ॥

मात पिता भाई सुत बनिता[6], ताके रस लपटाना ।
योवन धन प्रभुता के मद में, अहनिश[7] रहे दिवाना ॥ २ ॥

दीन दयाल सदा दुख भंजन, तास्यों[8] मन न लगाना ।
जन नानक कोटिन में किनहू, गुरुमुख होय पछाना ॥ ३ ॥

---

१ क्या अहंकार कर रहा है, २ चले, ३ त्यागो, ४ हृदय में धसा' धारण करो, ५ भ्रम, ६ स्त्री, ७ दिन रात, ८ उसमें ।

[ ९२ ]

राग गौरी वा धनासरी, ताल धुमाली ( महल्ला ६ )

साधो ! यह मन गह्यो[1] न जाई। ( टेक )
चंचल तृष्णा संग बसत है, याते[2] थिर[3] न रहाई ॥ १ ॥

कठिन क्रोध घट ही के भीतर, जेहि सुधि सब बिसराई।
रत्न ज्ञान सब को हर लीना, ता स्यों कछु न बसाई ॥ २ ॥

योगी यत्न करत सब हारे, गुणी रहे गुण गाई।
जन नानक हरि भये दयाला, तो सब विधि बन आई ॥ ३ ॥

[ ९३ ]

राग बसन्त ( महल्ला ६ )

कहाँ भूलयो रे! झूठे लोभ लाग, ( टेक )
कछु बिगड्यो नाहीं, अजहूँ[5] जाग ॥ १ ॥

सम स्वप्न के यह जग जान।
बिनसे छिन में, साची मान ॥ २ ॥

संग तेरे हरि बसत नीत[6]।
निश[7] बासर भज ताहि मीत[8] ॥ ३ ॥

---

१ वश में नहीं आता अर्थात् निरोध नहीं होता, अथवा पकड़ा नहीं जाता, २ जिससे, ३ स्थिर, ४ जिससे, ५ अभी भी, ६ नित्य, ७ रात दिन, ८ मित्र।

वार अन्त[1] की होय सहाय।
कहो नानक गुण ताके गाय ॥ ४ ॥

[ ९४ ]

राग सारंग ( महल्ला ६ )

कहाँ मन विषयों[2] स्यों लपटाई। ( टेक )
या जग में कोऊ रहन न पावे, इक आवें इक जाई ॥ १ ॥

काको[3] तन धन, सम्पति काकी, का स्यों नेहुँ[4] लगाई।
जो दीसे[5] सो सगल बिनासे, ज्यों बादर की छाई ॥ २ ॥

तज अभिमान, शरण संतन गहों[6], मुक्ति होइ छिन माहिं।
जन नानक भगवन्त भजन बिन, सुख स्वप्न भी नाहिं ॥ ३ ॥

[ ९५ ]

तू सुमिरन कर ले मेरे मना !
तेरी बीती जाती उम्र हरि नाम बिना। ( टेक )

पंछी पंख बिन, हस्ती दन्त बिन, नारी पुरुष बिना।
वेश्या पुत्र, पिता बिन हीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥

देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेघ बिना।
जैसे पंडित वेद विहीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥

---

१ अन्त समय, २ विषयों में, ३ किसका, ४ स्नेह, प्यार, ५ दिखाई दे ६ पकड़ो, ।

कूप नीर बिन, धेनु खीर बिन, मन्दिर दीप बिना।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना॥

काम क्रोध मद लोभ निहारो, छोड़ विरोध तू संत जना।
कहे नानकशाह सुनो भगवंता, या जग में कोई नहीं अपना॥

[ ९६ ]

राग सोरठ ( महल्ला ९ )

माई! मन मेरो वश नाहिं। ( टेक )
निश बासर[1] विषयन को धावत, कै विधि रोकूँ ताहि॥ १॥

वेद पुराण सिमृति के मत सुन, निमष[2] न हिये[3] बसावे।
पर धन, पर दारा स्यों रचयो, बिरथा[4] जन्म सिरावे[5]॥ २॥

मद माया के भयो बावरो, सूझत ना कछु ज्ञाना।
घट ही भीतर बसत निरञ्जन, ताको मर्म न जाना॥ ३॥

जब ही शरण साधु की आयो, दुर्मति सकल बिनासी।
तब नानक चेत्यो चिन्तामनि, काटी जग की फाँसी॥ ४॥

[ ९७ ]

राग तिलंग ( महल्ला ९ )

जाग ले, रे मना! जाग ले, कहाँ गाफिल सोया। ( टेक )
जो तन उपज्या संग ही, सो भी संग न होया॥ १॥

---

१ नित्य प्रति, रात दिन, २ किञ्चित मात्र, आँख की झपक मात्र, ३ हृदय में, ४ व्यर्थ, ५ नष्ट हुई।

मात पिता सुत बंधु जन, हित[1] जास्यों[2] कीना।
जीव छूटियो जब देह से, डार अग्नि में दीना ॥ २ ॥

जीवित लौं[3] व्यवहार है, जग को तुम जानों।
नानक हरि गुण गाय ले, सब स्वप्न[4] समानों ॥ ३ ॥

[ ९८ ]

राग तिलंग ( महल्ला ६ )

हरियश रे मना ! गाय ले, जो संगी[6] है तेरो। ( टेक )
औसर[5] बीत्यो जात है, कह्यो मान ले मेरो ॥ १ ॥

संपति रथ धन राज स्यों[6] अति नेह[7] लगायो।
काल फाँस जब गले पड़ी, सब भयो परायो ॥ २ ॥

जान बूझ के बावरे[8] ! तैं[9] काज बिगाड्यो।
पाप करत सकुच्यो[10] नहीं, नहीं गर्व निवारियो ॥ ३ ॥

जहि[11] विधि गुरु उपदेशिया, सो सुन रे भाई।
नानक कहत पुकार के, गहो[12] प्रभु शरणाई ॥ ४ ॥

[ ९९ ]

राग धनासरी ( महल्ला ६ )

अब मैं कौन उपाय करूं। ( टेक )
जेहि विधि मन को संशा चूके, भौनिधि पार परूँ ॥ १ ॥

---

१ स्नेह, प्यार, २ जिससे, ३ जीने तक, ४ स्वप्नवत्, ५ आयु, समय, ६ साथ, ७ अत्यन्त प्रेम, स्नेह, ८ पागल, मूर्ख, ९ तूने १० संकोचे नहीं, ११ जिस प्रकार, १२ पकड़ो।

जन्म पाय कछु भलो न कीनो, ताते[1] अधिक डरूँ।
मन, वच, कर्म[2] हरिगुण नहीं गाय, यह जीय[3] सोच धरूँ॥ २

गुरु मति सुन कछु ज्ञान न उपज्यो, पशु ज्यों उदर भरूँ।
कहो नानक प्रभु विरद[4] पछान्यों, तब हौं पतित तरूँ॥ ३॥

[ १०० ]

राग आसा (महला ६)

बिरथा[5] कहूँ कौन[6] स्यों मन की। (टेक)
लोभ ग्रस्यो दशों दिश धावत, आशा लग्यो धन की॥ १

सुख के हेत बहुत दुख पावत, सेव करत जन जन की।
द्वारे द्वारे स्वान ज्यों डोलत, न सुधि राम भजन की॥ २॥

मानुष जन्म अकारथ खोवत, लाज न लोक हसन की।
नानक हरियश क्यों नहीं गावत, कुमति विनासे तन की॥ ३॥

[ १०१ ]

राग सोरठ (महला ६)

मन रे कौन कुमति तैं लीनी। (टेक)
पर दारा निन्दा रस रचयो, राम-भगति नहीं कीनी॥ १॥

मुक्ति पंथ जान्यो तैं नाहीं, धन जोड़न को धाया[7]।
अन्त संग काहू नहिं दीना, बिरथा[8] आप बंधाया॥ २॥

---

१ इससे, २ मन वाणी कर्म से, ३ चित्त में, ४ निज धर्म ईश्वर का दया धर्म, ५ वृथा, ६ किस से, ७ दौड़ा, ८ व्यर्थ।

ना हरि भज्यो, न गुरुजन सेव्यो, नो उपज्यो कछु ज्ञाना।
घट ही माँहि निरञ्जन तेरे, तैं खोजत उद्याना ॥ ३ ॥

बहुत जन्म भरमत तैं हारयो अस्थिर[2] मति नहीं पाई।
मानुष देह पाय पद[3] हरि भज, नानक बात बताई ॥ ४ ॥

[ १०२ ]

राग मारू ( महल्ला ६ )

माई ! मैं मन को, मान त्यागयो। ( टेक )
माया के मद जन्म सिरायो[4], राम भजन नहीं लागयो ॥ १ ॥

यम को डंड पड्यो सिर ऊपर, तब सोवन तैं जागयो।
कहा होत अब के पछतायो, छूटत नाहिं भागयो ॥ २ ॥

यह चिन्ता उपजी घट में जब, गुरुचरणन अनुरागयो।
सुफल जन्म नानक तब हुआ, जो प्रभु यश में पागयो[5] ॥ ३ ॥

[ १०३ ]

राग देव गंधारी ( महल्ला ६ )

सब कुछ जीवित को व्योहार ( टेक )
मात पिता भाई सुत बांधव अरु फिर घर की नार ॥ १ ॥

तन से प्राण होत जब न्यारे टेरत[6] प्रेत पुकार।
आध घड़ी कोऊ नहीं राखे, घर ते देत निकार ॥ २ ॥

---

१ जंगल में, वन में, २ स्थिर बुद्धि, ३ हरि चरण, ४ खोयो, गंवायो वा वितायो, ५ से ६ पाया, ७ तुरन्त, पीछे।

मृग तृष्णा[1] ज्यों जग रचना यह, देखहुँ हृदय विचार।
कहो नानक भज राम नाम नित, जो[2] ते होत उधार॥ ३॥

[ १०४ ]

राग सोरठ ( महल्ला ९ )

रे मन ! राम स्यों[3] कर प्रीत। ( टेक )
श्रवणों[4] गोविंद गुण सुनो अरु गाओ रसना[5] गीत॥ १॥

कर साध संगति सिमर माधो, होय पतित पुनीत।
काल व्याल ज्यों पड्यो डोले, मुख पसारे मीत[6]॥ २॥

आज काल फुनि तोहिं ग्रसिहे, समझ राख्यो चीत[7]।
कहो नानक राम भज ले, जात औसर[8] बीत॥ ३॥

---

१ रेत जो दूर से धूप में जल दिखाई देती है. २ जिस से, ३ साथ, ४ कानों से, ५ जिह्वा से, ६ ऐ मित्र, ७ चित्त में, ८ समय, आयु।

# वैराग्य

[ १०५ ]

राग जंगला, ताल तीन, वा राग सोरठ ( महल्ला ९ )

प्रीतम जान लियो मन माहीं ॥ ( टेक )
अपने सुख से ही जग बाँध्यो, कोउ काहू को नाहीं ॥ १ ॥ प्री०

सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहों दिश[1] घेरे।
विपद[2] पड़ी सब ही संग छाड़त, कोऊ न आवत नेरे ॥ २ ॥ प्री०

घर की नार बहुत हित[3] जासों, रहत सदा सँग लागी।
जब हीं हंस[4] तजी यह काया, प्रेत-प्रेत कह भागी ॥ ३ ॥ प्री०

यह विधि को व्योहार बन्यो है, जासों नेह[5] लगायो।
अंत बार नानक बिन हर जी-कोऊ काम न आयो ॥ ४ ॥ प्री०

---

१ चारों ओर, तरफ़, २ दुःख, आपत्ति, ३ प्यार; स्नेह, ४ जीव; ५ मोह, प्रेम।

[ १०६ ]

राग देव गंधारी ( महल्ला-१ )

* जगत में झूठी देखी प्रीत। ( टेक )
अपने ही सुख स्यों[1] सब लागे, क्या दारा[2] क्या मीत[3] ॥ १ ॥
मेरो मेरो सबहि कहत हैं, हित[4] स्यों बाँध्यो चीत[5] ॥ २ ॥
अन्त काल संगी नहिं कोऊ, यह अचरज है रीत[6] ॥ ३ ॥
मन मूरख अजहूँ[7] नहिं समझत, सिख[8] दे हारियों नीत[9] ॥ ४ ॥
नानक भवजल[10] पार पड़े, जो गावे प्रभु के गीत ॥ ५ ॥

[ १०७ ]

राग धनासरी, ताल धुमाली - महल्ला १ )

साधो रचना राम रचाई ॥ टेक ॥
इक बिनसे[11] इक इस्थिर माने, अचरज लख्यो न जाई ॥ १ ॥

काम क्रोध मोह वश प्राणी, हरि मूरत[12] बिसराई।
झूठा तन साचा कर मान्यो, ज्यों स्वपना[13] रैनाई[14] ॥ २ ॥

---

१ साथ, २ स्त्री, ३ मित्र, ४ स्नेह, स्वार्थ, भलाई, ५ चित्त, ६ व्यवहार, रिवाज, तरीका, ७ अभी तक, ८ शिक्षा देते, ९ नित्य, १० संसार समुद्र, ११ नाश होना, १२ हरि की मूर्ति, ध्यान, १३ स्वप्न, ख्वाब, १४ रात।

* ( नोट ) यही भजन पहिली आवृत्ति में जब छपा था, तो वह लिखित कापी से लेकर दिया गया था। पर अब ग्रन्थ साहिब के साथ मिलाने से इसे दिया गया है, इसलिये पहिले से कुछ भेद इसमें है।

जो दीखे सो सकल[1] विनासे, बादर[2] ज्यों[3] की छाई।
जन नानक जग जान्यो मिथ्या, रह्यो राम शरनाई ॥ ३ ॥

[ १०८ ]

साकी, राग जोगी, ताल धुमाली।

जग में कोई नहीं ज़िन्दे मेरिये[4] ! हरी बिना रखपाले[5] (टेक)

धन जोड़न नूँ बहुत सियानी[6], रैन दिनां[7] यही चिन्ता।
अन्त समय यह सब धन तेरा, कदे[8] न होसी मन्ता[9] ॥ १ ॥ जि०

खावन[10] पीवन दे विच रचगया[11], भूल गया प्रभु अपना।
यह जिस नूं अपना कर जाने, होसी रैन[12] का सुपना ॥ २ ॥ जि०

महल अरु[13] माड़ी, ऊँचे[14] अटारी, है शोभा[15] दिन चारी।
नाम बिना कोई काम न आवे, छूटन अन्त दी वारी ॥ ३ ॥ जि०

जगत जंजाल तेरे गल फांसी, लेसी जान प्यारी।
हरि भजन विना इस जग दे विच, सके न कोई उतारी[16] ॥४॥ जि०

जंगल ढूँढ़न जा न प्यारे, निकट[17] बसे हरि स्वामी।
तू जाने हरि दूर बसे है, वह तो घट-घट अन्तर्यामी ॥५॥ जि०

१ सब नाश होवे, २ बादल, ३ तरह, ४ ऐ जान मेरी ! ५ रक्षा करने वाला, ६ दक्ष, निपुण, चतुर, ७ रात दिन, ८ कभी, ९ अच्छा फल देने वाला, १० खान पान, ११ लग गया, मग्न हो गया, १२ रात्रि का स्वप्न, १३ और, १४ ऊँचा मकान, १५ चार दिन की शोभा है, १६ पार उतारना, १७ समीप।

होय अचीत[1] सोवे सुन मूरख ! जन्म अकारथ[2] जावे।
जीवन सफल तदे[3] ही होवे, भक्ति हृदय बिच आवे ॥ ६ ॥ जि०

भक्ति बिना सुझा[4] अँधराना, देख-देख कर झूरे।
जब मन अन्दर नाम बसे है, नसनें सकल[6] बसूरे[7] ॥ ७ ॥ जि०

अमृत नाम जपे जब प्राणी, तृषा सकल मिट जावे।
तपत हृदय मिट जावे सारी, ठण्ड कलेजे आवे ॥ ८ ॥ जि०

[ १०९ ]

साकी, राग कालंगड़ा

यह जग स्वप्ना है रजनी[8] का, क्या कहे मेरा-मेरा रे। (टेक)

मात तात[9] सुत[10] दारा[11] मनोहर, भाई बन्धु अरु चेरा[12] रे।
आपी अपने स्वारथ के सब, कोई नहीं है तेरा रे ॥ १ ॥ यह०

जिनके हेत[13] करत धन संचय[14], कर-कर पाप घनेरा[15] रे।
जब यमराज पकड़ ले जावे, कोई न संग चलेरा रे ॥ २ ॥ यह०

ऊँचे ऊँचे महल बनाके, देश दिगंतर घेरा रे।
सब ही ठाठ पड़ा रह जावे, होत जंगल में डेरा रे ॥ ३ ॥ यह०

इतर फुलेल मले जिस तन को, अन्त भस्म की ढेरा रे।
ब्रह्मानन्द स्वरूप बिन जाने, फिरत चौरासी फेरा रे ॥ ४ ॥ यह०

---

१ बेख़बर, अचेत, २ व्यर्थ, ३ तब, ४ घोर अन्धकार, ५ दूर भागें, ६ सारे, ७ कष्ट, तकलीफ़, दुःख, ८ रात, ९ पिता, १० बेटा, ११ स्त्री, १२ शिष्य, १३ कारण, १४ एकत्र, जमा करना, १५ बहुत।

[ ११० ]

राग मारू

तू खुश कर नीन्द क्यों सोया। (टेक)

जिन्हाँ[1] घर झूलते हाथी, हजारों लाख थे साथी।
उन्हाँ को खा गयी माटी, तू खुश कर नींद क्यों सोया॥ १॥

नक्कारह कूच का बाजे, कि मारू मौत का बाजे।
ज्यों श्रावण मेघरा गाजे, तू खुश कर नींद क्यों सोया॥ १॥

कहाँ गये ख्वान[2] मद माते, जो सूरज चाँद चमकाते।
न देखे कहाँ जी वह जाते, तू खुश कर नींद क्यों सोया॥ २॥

जिन्हाँ घर लाल और हीरे, सदा मुख पान के बीड़े।
उन्हाँ नूँ खा गये कीड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया॥ ३॥

जिन्हाँ घर पालकी घोड़े, ज़री ज़रबफत के जोड़े।
वही अब मौत ने तोड़े, तू खुश कर नींद क्यों सोया॥ ४॥

जिन्हाँ दे बाल थे काले, मलाइयाँ दूध से पाले।
वह आखिर आग में डाले, तू खुश कर नींद क्यों सोया॥ ५॥

जिन्हाँ संग प्यार था तेरा, उन्हाँ किया खाक में डेरा।
न फिर वह करनगे फेरा, तू खुश कर नींद क्यों सोया॥ ६॥

---

१ जिनके, २ बड़े अहंकार वाले अथवा बड़े मान वाले खान साहिब।

[ १११ ]

रागनी भुंडस, ताल धीमा।

ऐथे[1] रहना नाहिं, मत खरमस्तियाँ कर ओ। (टेक)
तन मद[2], धन मद, और राज मद, पी कर मस्ती न कर ओ॥ १ ॥ ऐ०

कौरव पांडव भोज और विक्रम, दल कहाँ गये किधर ओ॥२॥ ऐ०
रामचंद्र, लङ्केशं[3], विभीषण, लङ्का को गये खाली कर ओ॥३॥ ऐ०
काल वारन्ट निकाल अचानक, तुर्त ले जासी फड़ ओ॥४॥ ऐ०
साथ न जासी संपतें[4] तेरे, ज़बत हो जासी घर ओ॥५॥ ऐ०
मर्घट दे विच मिलसी भूमी, साढ़े तीन हाथ भर ओ॥६॥ ऐ०
यह देह खेह[5] हो जासी पल विच, रूप जोबनजासी[6] जर ओ॥७॥ ऐ०
अमीर कबीरें[7] न बचिया कोई, मौत नूँ दे कर ज़र[8] ओ॥८॥ ऐ०

[ ११२ ]

राग पहाड़ी।

धन जन[9] यौवन संग न जाये प्यारे! यह सब पीछे रह जावें। (टेक)

रैन[10] गँवाई देह निसारे[11], प्यारे खाकर दिवस[12] गँवाये।
मानुष जनम अकारथ खोया, मूर्ख! समझ न आवे॥ १ ॥ धन०

---

१ इस जगह, संसारमें, २ अहंकार, ३ लंका का स्वामी, रावण, ४ धन दौलत, ५ राख, ६ मुरझाना, ७ बड़ा पुरुष, कवि का नाम है, ८ धन दौलत, ९ स्त्री, संबन्धी, १० रात, ११ खोये, १२ दिन।

धन कारण जो होवे दीवाना, चारों दिशा को धावे।
राम नाम कभी न सुमरे, सो अंते[1] पछतावे ॥ २ ॥ धन०

प्रीति सहित मिल आवोरे साधो, ईश्वर के गुण गावें।
जिसके किये सदा शुभ होवे, तिसको काहे भुलावें ॥ ३ ॥ धन०

[ ११३ ]

राग मारू।

इस तन चलना प्यारे ! कि डेरा जंगल में मलना । ( टेक )

सूरत योवन भी चल जाँदा, कोई दिन दा ढोल वजाँदा।
आखर माटी में मलना । कि इस तन चलना० ॥ १ ॥

सब कोई मतलब दा है बेली[2], तेरी जासी जान अकेली।
ओड़क वेला[3] नहीं टलना । कि इस तन चलना० ॥ २ ॥

यह तो चार दिनाँ दा मेला, रहना गुरू न रहना चेला।
इस तन आतिश[4] में जलना । कि इस तन चलना० ॥ ३ ॥

जिस नूँ कहें तू मेरी मेरी, यह नहिं मेरी है ना तेरी।
इसने खाक विचे[5] रलना । कि इस तन चलना० ॥ ४ ॥

यह तन अपना देखन भुलरे, विना ईश्वर के फना[6] है कुलरे।
प्रभु दे भजन विना गलना । कि इस तन चलना० ॥ ५ ॥

---

१ अन्त काल, २ प्यारा, स थी, ३ अन्त समय, ४ अग्नि, ५ खाक के बीच, ६ नाशवान।

मिट्ठा बोल हथ्थों[1] कुच्छ दे लै, नेकी कर ज़िन्दगी दा है वेला।
पिच्छों किसे नहीं घल्लनां। कि इस तन चलनां० ॥ ६ ॥

[ ११५ ]

राग जंगला।

कोइ दम दा इहां गुज़ारा रे। तुम किस पर पाँव पसारा रे॥ (टेक)

इहां पलक झलक दा मेला है। रहना गुरू न रहना चेला है।
कोई पल का यहाँ गुज़ारा रे ॥१॥ कोई दम० ॥

यहाँ रात सराय का रहना है। कछु स्थिर होय न जाना है॥
उठ चलना सांझ सकारा[3] रे ॥२॥ कोई दम० ॥

ज्यों जल के बीच पताशा है। त्यों जग का सभी तमाशा है॥
यह अपनी आँख निहारा रे ॥३॥ कोई दम० ॥

देखन में जो कोई आवे है। सब खाक माहिं मिल जावें है॥
यह सभी काल का चारा रे ॥४॥ कोई दम० ।

यह दृष्यमान सब नाशी[6] है। इस काल के सब घर फाँसी है॥
इस काल सबन को मारा रे ॥५॥ कोई दम० ॥

दर जिन के नौबत बाजे है। वे तख़्त छोड़ कर भाजे हैं॥
लशकर जिनके लाख हज़ारा रे ॥६॥ कोई दम० ॥

---

१ हाथ से, २ भेजना, ३ प्रातः, ४ देखा, ५ मृत्यु का आहार, ६ नाश होने वाला।

[ ११५ ]

ग़ज़ल।

ज़रा टुक सोच ऐ ग़ाफ़िल ! कि दम का क्या ठिकाना है।
निकल जब यह गया तन से, तो सब अपना बिगाना है॥

मुसाफ़िर तू है और दुनियाँ सराय है, भूल मत ग़ाफ़िल।
सफ़र परलोक का आख़िर, तुझे दरपेश आना है॥ १॥ ज़०

लगाता है अबस[1] दौलत पे, क्यों तू दिल को अब नाहक़।
न जावे संग कुछ हरगिज़, यहीं सब छोड़ जाना है॥ २॥ ज़०

न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना[2] अपना।
बख़ूबी ग़ौर कर देखा, तो मतलब का ज़माना है॥ ३॥ ज़०

रहो लग याद में हक़[3] की, अगर अपनी शफ़ा[4] चाहो।
अबस दुनियाँ के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना[5] है॥ ४॥ ज़०

[ ११६ ]

राग देवगंधारी

मान मन ! क्यों अभिमान करे (टेक)
योवन धन क्षणभंगुर तिन पै, काहे मूढ़ मरे॥ १॥ मान०

---

१ व्यर्थ, बेफ़ायदा, २ दोस्त, मित्र, ३ सत्यस्वरूप, परमेश्वर, ४ भलाई बेहतरी, ५ पागल।

जल बिच फेन बुदबुदा जैसे, छिन छिन बन बिगड़े।
त्यों यह देह खेय होय छिन में, बहुरि न दीख पड़े ॥२॥ मान०

मंदिर महल बहल रथ वाहन, यहीं रह जात धरे।
भाई बन्धु कोई संग न लागे, न कोई साखें भरे ॥ ३ ॥ मान०

चाम के देह से नेह लगावे, उस बिन नाहिं टरे।
थूक तो को अरे! अति सुन्दर हरि! ताकी सुध न करे ॥४॥ मान०

हरि चर्चा, संत सेवा अर्चा, इन ते निपट डरे।
कूकर सूकर तुल्य भोग रत अंध होय विचरे ॥ ५ ॥ मान०

[ ११७ ]

राग सावन, ताल दीपचंदी

मना! तैं ने राम न जान्या रे। (टेक)

जैसे मोती ओस का रे, तैसे यह संसार।
देखत ही को झिलमला रे, जात न लागी बार ॥ मना० १

सोने का गढ़ लङ्का[10] बनायो, सोने का दरबार।
रत्ती इक सोना न मिला रे, रावण मरती बार ॥ मना० २

---

१ फिर, २ सवारी, ३ अभिप्राय कि न कोई साथ रहे और न कोई सहायता करे, ४ प्रीति, मोह, ५ पूजा, ६ हे मन, ७ माक, तरेल, शबनम, ८ चमकीला, ९ जाते समय देर नहीं लगती, १० सोने की लंका।

दिन गंवाया[1] खेल में रे, रैन[2] गंवाई सोय।
सूरदास भजो भगवन्ता[3], होनी होय सो होय ॥ मना० ३

[ ११८ ]

ग़ज़ल

दिलो[4]! ग़ाफ़िल न हो यक दम कि दुनिया छोड़ जाना है। } टेक
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़िमीं अन्दर समाना है ॥ }

बदन नाज़ुक गुलों[5] जैसा, जो लेटे सेज फूलों पर।
होवेगा एक दिन मुरदा, यही कीड़ों ने खाना है ॥ १ ॥

न बेली होयगा भाई, न बेटा बाप ना माई।
क्या फिरता है सौदाई, अमल ने काम आना है ॥ २ ॥

प्यारे! नज़र कर देखो, पड़ी जो माड़ियाँ ख़ाली।
गये सब छोड़ फ़ानी देह, दगाबाज़ी को बाना है ॥ ३ ॥

प्यारे नज़र कर देखो, न खेशों[6] में नहीं तेरा।
ज़नो-फ़र्ज़न्द[7] सब कूकें, किसे तुझ को छुड़ाना है ॥ ४ ॥

ग़लत[8] फ़ेहमी यही तेरी, नहीं आराम है इस जाँ[9]।
मुसाफ़िर बेवतन[10] तू है, कहाँ तेरा टिकाना है ॥ ५ ॥

---

१ खोया, २ रात, ३ भगवान को भजो जो होना है सो होने दो (होता रहे) ४ ऐ दिल, ५ पुष्प, फूल, ६ संबन्धीजन, रिश्तेदार, ७ स्त्री, पुत्र, ८ बे समझी, भूल, ९ स्थान, इस संसार में, १० बिना घर के।

[ ११९ ]

राग सावन, ताल दीपचंदी

चपल मन मान कही मेरी, न कर हरि-चिन्तन में देरी। (टेक)

लख चौरासी योनि भुगत के यह मानुष-तन पायो।
मेरी तेरी करते करते नाहक़ जन्म गमायो ॥ १ ॥ च०

मात पिता सुत भ्रात नारि पति देखन ही के नाते।
अंत समय जब जाय अकेला तो कोइ संग नहिं जाते ॥ २ ॥ च०

दुनिया दौलत माल खज़ाने व्यंजन[1] अधिक सुहाने।
प्राण छूटें सब होवें पराये, मूरख मुफ़त लुभाने[2] ॥ ३ ॥ च०

काम क्रोध मद लोभ मोह यह पाँचों बड़े लुटेरे।
इन से बचने के लिये तू हरि चरणन चित दे रे ॥ ४ ॥ च०

योग यज्ञ तप तीरथ संयम साधन वेद बताये।
हरि सुमिरण सम एकहु नाहिं, बड़े भाग्य जो पाये ॥ ५ ॥ च०

[ १२० ]

राग खमाच, ताल दादरा

दुनिया के जंगलों में है यह दिल भटक रहा।
अटका यहाँ जो आज, तो कल वहाँ अटक रहा ॥ १ ॥ दु०

---

१ स्वादिष्ट, भोग-पदार्थ, २ लोभ करे, धन के लोभ में पड़े।

मंदिर में फंस गया कभी, मसजिद में जा फँसा।
छूटा जो यहाँ से आज, तो कल वहाँ अटक रहा ॥ २ ॥

हिन्दू का और किसी को इसलाम का ग़रूर।
ऐसे ही वाहियात में हर इक भटक रहा ॥ ३ ॥

वह हर जगह मौजूद है जिसकी तलाश है।
आँखों के आगे परदा-ए-ग़फ़लत[1] लटक रहा ॥ ४ ॥

गुलज़ार[2] में है, गुल में है, जंगल में, बहर[3] में।
सीने में, सिर में, दिल में, जिगर में, खटक रहा ॥ ५ ॥

ढूँढा है उसको जिसने, उसे आन कर मिला।
अटका जो उसकी राह से, उससे अटक रहा ॥ ६ ॥

सिद्क़[4] और यक़ीन के बिना दिलवर मिले कहाँ।
गो जंगलों में बरसों ही सिर को पटक रहा ॥ ७ ॥

प्यारे! उम्मेद एक पे रख, दिल को साफ़ कर।
क्या विसवसों[5] का काँटा है दिल में खटक रहा है ॥८॥

[ १२१ ]

राग खम्माच।

चंचल मन निश दिन[6] भटकत है।
ऐ जी भटकत है, भटकावत है। टेक ॥

---

१ अज्ञान (अविद्या) का पर्दा, २ बाग़, ३ समुद्र, ४ निश्चय, विश्वास ५ संशय, सन्देह, शक, ६ रात दिन।

ज्यों मर्कट[1] तरु ऊपर चढ़कर।
डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंचल०

रुकत[2] यतन से क्षण विषयन ते।
फिर तिन ही में अटकत है ॥ २ ॥ चंचल०

काँच के हेत लोभ कर मूरख।
चिन्तामणि को पटकत है ॥ ३ ॥ चंचल०

ब्रह्मानन्द समीप छोड़ कर।
तुच्छ विषय-रस गटकत[3] है ॥ ४ ॥ चंचल०

[ १२२ ]

झँझोटी ठुमरी

भजन बिन वृथा जन्म गयो ॥ टेक ॥

बालपनो सब खेल गमायो, योवन काम[4] बह्यो ॥ १ ॥ भ०

बूढ़े रोग ग्रसी सब काया, पर[5]-वश आप भयो ॥ २ ॥ भ०

जप तप तीरथ दान न कीनो, ना हरिनाम लियो ॥ ३ ॥ भ०

ऐ मन मेरे! बिना प्रभु सुमरन, जाकर नरक पयो ॥ ४ ॥ भ०

---

१ कपि, बन्दर, २ रुक कर, रुका हुआ होकर, ३ गट गट पी रहा है, ४ विषय-वासना में लिप्त हो गया, ५ दूसरे के वश में, दूसरे के अधीन।

[ १२३ ]

राग धनासरी

मेरो मन रे, भज ले कृष्ण मुरारी । ( टेक )

चार दिनन के जीवन खातिर रे, फैली जाल पसारी ।
कोई न जावत संग तुम्हारे रे, मात पिता सुत[1] नारी ॥ मेरो०

पाप कपट कर संचित[2] धन को रे, मूरख मौत विसारी ।
ब्रह्मानन्द जन्म यह दुर्लभ, रे देत वृथा किम डारी ॥ मेरो०

[ १२४ ]

राग भैरवी

सुनो नर रे, राम भजन कर लीजे ( टेक )

यह माया बिजली का चमका रे, यामें चित्त न दीजे ।
फूटे घट[3] में जल न रहावे रे, पल पल काया[4] छीजे[5] ॥ भजन०

सब ही ठाठ पड़ा रह जावे रे, चलत नदी जल पीजे ।
ब्रह्मानंद राम-गुण गावो रे, भव-जल[6] पार तरीजे ॥ भजन०

---

१ पुत्र, २ एकत्र, जमा, इकट्ठा, ३ घड़ा, ४ शरीर, ५ मुरझाना, घटना, ६ संसार रूपी समुद्र ।

[ १२५ ]

होरी, राग ज़िला, काफ़ी

जीआ[1] तोकूं समझ न आई, मूरख तैं उमर गँवाई। (टेक)

मात पिता सुत[2] कुटुम्ब क़बीला, धन जोबन ठकुराई[3]।
कोई नहिं तेरो, तू न किसी को, संग रह्यो ललचाई॥
उमर में तैं धूल उड़ाई, जीआ तोकूं समझ न आई॥ १॥

राग द्वेष तूं किनसे करत है, एक ब्रह्म रह्यो छाई।
जैसे स्वान[4] रहे काँच-भुवन[5] में, भौंक भौंक मर जाई॥
ख़बर अपनी नहिं पाई, जीआ तोकूं समझ न आई॥ २॥

लोभ लालच के बीच तू लटकत, भटक रह्यो भरमाई।
तृषा न जायगी मृगजल पीवत, अपनो भरम गँवाई॥
श्याम को जान ले भाई, जीआ तोकूं समझ न आई॥ ३॥

अगम[6] अगोचर[7] अकलंक[8] अरूपी[9], घट घट रहत समाई।
सूरश्याम प्रभु तिहारे भजन बिन, कबहुँ न रूप दिखाई॥
श्याम को औ लखो[10] सदाई[11], जीआ तोकूं समझ न आई॥४॥

---

१ ऐ दिल, मन, २ पुत्र, ३ मिलकीयत, बड़ा पद, ठाकुरपन, ४ कुत्ता, ५ शीशे का महल, ६ जहाँ कोई जा न सके, दुर्गम, अवघट, गहन, ७ इन्द्रियों की पहुँच से परे, इन्द्रियातीत, ८ कलंक रहित, ९ रूप रहित, १० पाओ, समझो, ११ सर्वदा, हमेशा।

[ १२६ ]

राग खम्माच, ताल दादरा।

तर[1] तीव्र भयो वैराग्य तो मान अपमान क्या।
जान्यो अपना आप तो वेद पुराण क्या॥

खुद मस्ती कर मस्त, तो फिर मदरा पान क्या।
किचा देहाध्यास, तो आत्मज्ञान क्या॥

वीतराग[2] जब भये, तो जगत की लोड़ क्या।
तृणवत जान्यो जगत, तो लाख करोड़ क्या॥

चाह रज्जू[3] से बँध्यो, तो फिर मरोड़ क्या।
किचा भ्रान्ति साथ, तो विवाद[4] फिर होर[5] क्या॥

[ १२७ ]

राग सोहनी।

यह पैंठ[6] अजब है दुनिया की और क्या क्या जिन्स इकट्ठी है।
याँ माल किसी का मीठा है और चीज़ किसी की खट्टी है॥
कुछ पकता है, कुछ भुनता है, पकवान मिठाई फट्टी है।
जब देखा खूब तो आखिर को ना चूल्हा भाड़ न भट्टी है॥

---

१ बहुत भारी, २ राग-रहित, ३ इच्छा, वासना की रस्सी, ४ झगड़ा, ५ और अधिक, दूसरी, ६ मंडी।

गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनिया को, यह धोखे की-सी टट्टी है॥ १॥

कोई ताज खरीदे हँस हँस कर, कोई तख़त खड़ा बनवाता है।
कोई रो रो मातम करता है, कोई गोर[1] पड़ा खुदवाता है॥
कोई भाई बाप चचा नाना, कोई बाबा पूत कहाता है।
जब देखा खूब तो आख़िर को, नहीं रिश्ता[2] है नहीं नाता है॥
गुल[3] शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनिया को सब धोखे की-सी टट्टी है॥ २॥

कोई बाल बढ़ाये फिरता है, कोई सिर को घोट मुँड़ाता है।
कोई कपड़े रँगे पहने है, कोई नंग मनंगा आता है॥
कोई पूजा कथा बखाने है, कोई रोता है, कोई गाता है।
जब देखा खूब तो आख़िर को, सब छोड़ अकेला जाता है॥
गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनिया को, सब धोखे की-सी टट्टी है॥ ३॥

कोई टोपी टोप सजाता है, कोई बाँधे फिरे अमामा है।
कोई साफ बरहना[5] फिरता है, नै[6] पगड़ी नै[6] पाजामा है॥
कमखाब गज़ीं और गाढ़े का नित कज़ियाँ[7] है, हंगामा[8] है।
अब देखा खूब तो आख़िर को, न पगड़ी है न जामा है॥

---

१ क़बर, २ सम्बन्ध, ३ शोर शराबा, ४ पगड़ी, ५ नंगा, ६ नहीं, ७ झगड़ा, ८ लड़ाई।

गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुन्या को, सब धोके की सी टट्टी है॥४॥

[ १२८ ]

राग खमाच, ताल दादरा

जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है॥ टेक॥

दुनिया से जब कि औलियाँ[1] अरु अंबियाँ[2] उठे।
अज्सामे[3] पाक उनके इसी ख़ाक में रहे॥
रूहें[4] हैं खूब जान में, रूहों के हैं मज़े।
यह जिस्म से तो अब यही साबित हुआ मुझे॥१॥ जो०

वह शख़्स थे जो सात विलायत के बादशाह।
हशमत[5] में जिनकी अर्श[6] से ऊँची थी बारगाह॥
मरते ही उनके तन हुए गलियों की ख़ाके-राह[7]।
अब उनके हाल की भी यही बात है गवाह॥२॥ जो०

किस किस तरह के हो गये महबूब[8] कजकुलाह[9]।
तन जिनके मिस्ले[10]-फूल थे और मुँह भी रश्के[11]-माह॥

---

१ बड़े बड़े पैग़म्बर, ऋषी, २ नबी, बड़े-बड़े आत्म ज्ञानी महात्मा, ३ पवित्र देह, शरीर, ४ जीवात्मा, ५ इज़्ज़त, मान, विभूति, ६ आकाश, ७ रास्ते की धूल (मिट्टी), ८ प्यारे, माशूक़ ९ टेढ़ी टोपी पहनने वाले, जो सुन्दर पुरुष अपने सौन्दर्य को बढ़ाने के लिये पेहना करते हैं, १० पुष्प-समान, ११ चन्द्रमा से ईर्षा करने वाला, अर्थात् चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर।

जाती है उनकी क़बर पै जिस दम मेरी निगाह[1]।
रोता हूँ अब तो मैं यही कह कह के दिल में आह ॥३॥ जो०

[ १२९ ]

राग सोहनी

साईं की सदा

यह दुनिया जाये-गुज़श्तन[2] है, साईं की है यह सदा[3] बाबा।
यहाँ जो है रूप-बरफतन[4] है, तू इसमें दिल न लगा बाबा } (टेक)

ज्ञानी न रहे, ध्यानी न रहे, जो-जो थे लासानी न रहे।
थे आखिर को फ़ानी[5] न रहे, फ़ानी को कहाँ बक़ा[6] बाबा ॥१॥ यह०

थे कैसे कैसे शाह ज़िमीं[7], थे कैसे कैसे महल[8] संगीन्।
हैं आज कहाँ वह मकानो मकीं[9], न निशान रहा, न पता बाबा ॥२॥ यह०

न वह शूर रहे, न वह वीर रहे, न वह शाह रहे, न वज़ीर रहे।
न अमीर रहे, न फ़क़ीर रहे, मौला का नाम रहा बाबा ॥ ३ ॥ यह०

जो चीज़ यहाँ है फ़ानी है, जो शै[10] है आनी जानी है।
दुनिया वह राम-कहानी है, कुछ हाल हमें न खुला बाबा ॥ ४ ॥ यह०

माल आमाल[11] को लाते हैं, फल साथ अपने ले जाते हैं।
जो देते हैं सो पाते हैं, है यूंही तार लगा बाबा ॥ ५ ॥ यह०

---

१ दृष्टि, २ गुज़रने ( छोड़ने ) का स्थान, ३ आवाज़, पुकार, ४ चले जाने वाला, स्थिर न रहने वाला, ५ नाश होने वाला, ७ स्थिर रहना, ६ पृथिवी के राजा, ८ पत्थर के महल, ९ जगह व स्थान, १० पदार्थ, वस्तु, ११ कर्म।

आने जाने का यहाँ तार लगा, दुनियाँ है इक बाज़ार लगा।
दिल इसमें न तू ज़िनहार[1] लगा, कब निकला वह जो फँसा बाबा ॥६॥ यह०

याँ मर्द वही कहलाते हैं, जो जाकर फिर नहीं आते हैं।
जो आते हैं और जाते हैं, वह मर्द नहीं असलों[2] बाबा ॥ ७ ॥ यह०

क्यों उमर अबस[3] तू ने खोई, कुछ करले अबभी खुदाजोई[4]।
मैं कहता हूँ तुझसे यहाँ कोई, न रहा, न रहा, न रहा, बाबा ॥८॥ यह०

तह कर तह कर बिस्तर अपना, बाँध उठ कर रखतें सफ़र अपना।
दुनिया की सराय को घर अपना, तू ने है ग़लत समझा बाबा ॥९॥ यह०

क्या घोड़े बेच[5] के सोया है, क्यों वक़्त रायगाँ[6] खोया है।
जो सोया है वह रोया है, कहते हैं मर्द-ख़ुदा[7] बाबा ॥ १० ॥ यह०

जितना यह माल ख़ज़ाना है, और तू ने अपना माना है।
सब छोड़ के यहाँ से जाना है, करता है इकट्ठा क्याबाबा ॥११॥ यह०

क्यों दिल दौलत में लगाया है, सच कहता हूँ झूठी माया है।
यह चलती फिरती छाया है, क्या है इतबार[8] इसका बाबा ॥१२॥ यह०

दुनिया न कहो तू मेरी है, ग़ाफ़िल दुनिया कब तेरी है।
साईं की जैसे फेरी है, फिरता है तू इस जा[9] बाबा ॥१३॥ यह०

---

१ कदापि, २ असल, सच्चे, ३ व्यर्थ, बेफ़ायदा, ४ ईश्वर प्राप्ति की जिज्ञासा, ५ अर्थात् बेखबर, घनसुषुप्ति में सोया है, ६ बे फ़ायदा, निष्फल, ७ ज्ञानी, आत्मवेत्ता, ८ भरोसा, ९ जगह, यहाँ।

यह मुल्कोमाल[1], यह जाहोहशम[2], यह ऐशोअक़ारब[3] है जो वहम[4]।
सब जीते जी के हैं हमदम, फिर चलना है तन्हाँ बाबा ॥ १४ ॥ यह०

जो नेक कमाई करते हैं, जो सांसों पार गुज़रते हैं।
जो जीते जी ही मरते हैं, जीना है बस उनका बाबा ॥ १५ ॥ यह०

क्यों मेहर[5] यह आलमे-निस्याँ[6] का दुनियाँ है सौदा नुकसाँ का।
है ज़ौक़[7] तुझे तोई रफ़ा, तुझको दुनियाँ से क्या बाबा ॥ १६ ॥ यह०

[ १३० ]

राग सिंदोरा, ताल दीपचंदी

गुज़ारी उमर झगड़ों में बिगाड़ी अपनी हालत है।
हुआ ख़ारिज अपील अपना, अजायब यह वकालत है ॥

मुक़दमें ग़ैर लोगों के, हज़ारों कर दिये फ़ैसल।
न देखा मिसल अपनी को, अजायब यह अदालत है ॥

दलीलें[8] दे के ग़ैरों पर, किया साबित असूल अपना।
दिल अपने का न शक टूटा, अजायब यह दलालत[9] है ॥

बहुत पढ़ने पढ़ाने से हुआ सब इल्म में कामिल[10]।
न पाया भेद रब्बी[11] का, अजायब यह कमालत है ॥

---

१ पद और मान, २ अपने सम्बन्धी, कुटुम्बी, रिशतेदार और पड़ोसी, ३ साथ प्राप्त हुये, ४ अकेले, ५ कवि-का नाम, ६ भूलने की दशा वा अज्ञानावस्था, ७ रुचि, लग्न, ८ आत्म ज्ञान आत्म-साक्षात्कार, ९ दलीलबाज़ी, १० सम्पन्न, पूरा, ११ मददगार, स्वस्वरूप ( आत्मा )।

बना हाफ़िज़, पढ़े मसले, सुनाये दूसरों को भी।
वले[1] टूटा न कुफ़्र[2] अपना, अजायब यह मसालत[3] है॥

तू कर फ़ैसल हिसाब अपना, तुझे औरों से क्या गोविंद[4]।
न क़िस्सा तूल[5] दे इतना, फ़जूल ही यह तवालत[6] है॥

## भक्ति ( इश्क़ )

[ १३१ ]

राग खम्माच, ताल दादरा

(१) कलीदे-इश्क़[7] को सीने[8] की दीजिये तो सही।
मचा के लूट कभी सैर कीजिये तो सही॥ १॥

(२) करो शहीद ख़ुदी[9] के सवार को रोकर।
यह जिस्म दुलदुले-बेयार[10] कीजिये तो सही॥ २॥

---

[ १३ ]

(१) हार्दिक प्रेम की कुञ्जी तो अपने भीतर के भण्डार को दो और फिर उसकी लूट मचाकर कभी आनन्द तो लो।

(२) देह का सवार जो अहङ्कार है उसको मारकर शहीद तो करो और इस शरीर को सवार-रहित घोड़े (दुलदुल) के समान तो कर देखो।

---

१ किन्तु, लेकिन, २ नास्तिकता, ३ प्रमाण, मसले पढ़ के सुनाना, ४ कवि का नाम, ५ लम्बा, ६ लम्बा ज़िकर बढ़ाना, ७ प्रेम की कुञ्जी, ८ दिल, ९ अहङ्कार, १० उस घोड़े को कहते हैं जो मुसलमानों के हज़रत हसन हुसेन की सवारी में था और युद्ध में अपने सवार हज़रत साहिब के मारे जाने पर ख़ाली घर में आ गया था और उसने इस प्रकार अपने सवार के मारे जाने की सूचना दी थी।

( ३ ) जला के ख़ाना-ओ-अस्बाब[1] मिस्ल नीरो[2] के।
मज़ा सरोद[3] का शोलों[4] का लीजिये तो सही ॥ ३ ॥

( ४ ) है खुम[5] तो मय[6] से लबालब यह तिशना[7] कामी क्यों ?
लो तोड़ मोहरे[8] खुदी मय भी पीजिये तो सही ॥ ४ ॥

( ५ ) उड़ा पतङ्ग मुहब्बत का चर्ख़[9] से भी दूर।
खिरद[10] की डोर को अब छोड़ दीजिये तो सही ॥ ५ ॥

---

( ३ ) नीरो बादशाह के समान अपना घर बार और अस्बाब ( अर्थात्-अहंकार और उसकी सब पूँजी को ) जलाकर ( निज स्वरूप रूपी पर्वत के शिखर पर चढ़कर ) उस अहंकार के जलने का और ( निज स्वरूप के ) राग रङ्ग का आनन्द तो लो।

( ४ ) निजानन्द रूपी शराब से जब दिल का मटका पूर्ण है तब गला प्यासा क्यों है ? इस मटके की मोहर को तोड़कर आनन्द रूपी मद तो पीजिये।

( ५ ) प्रेम का पतङ्ग जब आकाश से भी दूर उड़ जाय, तब बुद्धि रूपी रस्सी को ढीला छोड़ तो दो।

---

१ घरबार व धन दौलत, २ एक राजा का नाम है जिसने अपने देश को आग लगाकर आप एक पर्वत पर चढ़कर राग रङ्ग किया और प्रजा को जलते देखकर प्रसन्न हुआ, ३ राग रङ्ग, ४ अग्नि, ५ मटका ( हृदय रूपी ), ६ प्रेम रूपी शराब, मद, ७ प्यासा गला, ८ अहङ्कार की मोहर, ९ आकाश, १० बुद्धि।

(६) मज़ा दिखायेंगे जो कह दो राम मैं ही हूँ।
ज़मी ज़माँ को भी यूँ 'राम' कीजिये तो सही॥ ६॥

[ १३२ ]

❋ राग भ्याग, ताल दादरा ❋

(१) इश्क़[3] का तूफ़ाँ[4] बपा है, हाजते मयखानां[5] नेस्त[6]।
खूँ शराबो, दिल कबाबो, फ़ुरसते-पैमानाँ[7] नेस्त॥ १॥

(२) सख़्त मखमूरी[8] है तारी[9] ख्वाह कोई क्या कुछ कहे।
पस्त[10] है आलम[11] नज़र में, वहशते-दीवाना[12] नेस्त॥ २॥

---

(६) यदि तुम अपने आप को राम भगवान् कह दो तो हम आप को निजानन्द का साक्षात्कार करावें। इस प्रकार अनुभव करके आप देश (पृथ्वी) और काल सब को स्वाधीन तो कीजिये।

[ १४ ]

(१) प्रेम घटा आई हुई है, अन्य शराबख़ाने की अब ज़रूरत नहीं है। इस समय अपना रुधिर तो शराब होरहा है और चित्त कबाब हो रहा है, अतएव किसी प्याले का अब अवकाश नहीं।

(२) प्रेम मद का नशा अत्यंत चढ़ा हुआ है, इसलिये अब चाहे कोई कुछ कहे, सारा संसार तो तुच्छ हो रहा है। पर यह नशा पागल मनुष्य की पशुवृत्ति के समान नहीं है।

---

१ राम भगवान्, २ आधीन, अनुचर, आज्ञाकारी, ३ प्रेम, ४ घटा, ५ शराबख़ाने की ज़रूरत, ६ नहीं है, ७ प्याला पीने का अवकाश तक नहीं। ८ नशा, ९ छाया हुआ, १० तुच्छ, ११ संसार, १२ पागल पुरुष का वहशीपन (पशुवत व्यवहार)।

(३) अल्विदा[1] ऐ मर्ज़े-दुनिया ! अल्विदा ऐ जिस्मो-जाँ ! !
ऐ अतश[2] ! ऐ जू[3] चलो, ईं[4] जाँ कबूतरख़ाना नेस्त ॥ ३ ॥
(४) क्या तजल्ली[5] है यह नारे-हुस्न[6] शोलाख़ेज़[7] है ।
मार ले पर ही यहाँ पर ताक़ते-परवाना नेस्त ॥ ४ ॥
(५) मेहर[8] हो मह[9] हो दबिस्तां[10] हो गुलिस्ताँ[11] कोहसार[12] ।
मौजज़न[13] अपनी है ख़ूबी, सूरते-बेगाना नेस्त ॥ ५ ॥
(६) लोग बोले गहन[14] ने पकड़ा है सूरज को, ग़लत ।
ख़ुद हैं तारीकी[15] में बरमन[16] साया महजूबाना[17] नेस्त ॥ ६ ॥

---

(३) हे जगत् के रोग ! तू अब रुख़सत हो । हे देह, प्राण ! तुम दोनों भी अब रुख़सत हो । हे भूख प्यास ! तुम दोनों मेरे पास से परे हटो, यह जगह कोई कबूतरख़ाना ( अर्थात् तुम्हारे रहने सहने का घर ) नहीं है ।

(४) आहा ! सौंदर्य की तेज़ ज्वाला कैसी भड़की हुई है । अब किस परवाने की शक्ति है कि जो इसके आगे पर भी मार सके ?

(५) सूर्य हो चाहे चन्द्र, पाठशाला हो चाहे बाग़ और पर्वत, इन सब में अपनी ही सुन्दरता तरंगें मार रही हैं, अन्य किसी रूप की नहीं ।

(६) लोग कहते हैं कि सूर्यको ग्रहण ने पकड़ रक्खा है, पर यह नितान्त झूठ है । क्योंकि स्वयं तो अंधकार में होते हैं और प्रकाश स्वरुप सूर्य को अंधकार में समझने लग जाते हैं । जैसे सूर्य का ग्रहण से पकड़े जाना झूठ है और सूर्य वास्तव में ग्रहण से ऊपर होता है, ऐसे ही मुझे अज्ञान के पर्दे में आसक्त मानना झूठ है और मुझ पर वास्तव में किसी प्रकार का पर्दा ढकने वाला नहीं है ।

---

१ रुख़सत हो, २ प्यास, ३ भूख, क्षुधा, ४ यह जगह, ५ प्रकाश, चमक, ६ सौंदर्य रुप ज्वाला, ७ भड़की हुई, ८ सूर्य, ९ चन्द्र, १० पाठशाला, ११ बाग़, १२ पर्वत व पहाड़ी जगह, १३ तरङ्गमयी वा लहरा रही, १४ ग्रहण, १५ अन्धकार, १६ मुझपर, १७ परदे में छुपे के समान छिपानेवाला ।

(७) उठ मेरी जाँ ! जिस्म से हो ग़र्क़ ज़ाते-राम[1] में ।
जिस्म[2] बद्रीश्वर की मूरत, हरकते-अतफ़ाला[3] नेस्त ॥ ७ ॥

[ १३३ ]

❋ कँजोटी, ताल ठुमरी ❋

भाग[4] तिन्हाँ दे अच्छे, जिन्हाँ नूं राम मिले । (टेक)

(१) जद[5] "मैं" सी ताँ दिलबर नासी ।
"मैं" निकली पिया घट घट वासी ॥
खसम[6] मरे घर वस्ते ! भाग तिन्हाँ ॥ १ ॥

---

(७) हे मेरे प्राणों ! इस देह से उठकर राम के स्वरूप में लीन हो जाओ । और देह ऐसी हो जाय जैसे बद्रीनारायणजी की मूर्ति कि जिसमें बालकवत् चेष्टा भी नहीं है । *

[ १५ ]

(टेक) उनके भाग्य निःसन्देह बड़े अच्छे हैं जिन्हें राम मिल जायं ।
(१) जब तुच्छ अहंकार रूपी 'मैं' भीतर थी तब अपरिच्छिन्न अहंकार रूपी मैं अर्थात् प्यारा आत्मा भीतर अनुभव नहीं होता था । और जब तुच्छ अहंकार रूपी मैं भीतर से निकल गई (अर्थात् जब उसका अभाव हो गया) तब प्यारा (निज स्वरूप) घट २ में बसा अनुभव हुआ ।

---

१ राम का स्वरूप, २ देह, ३ बालकवत् चेष्टा, ४ भाग्य, ५ जब मैं थी, ६ पति, स्वामी, तात्पर्य अहंकार से ।

* यह कविता सन् १९०२ की दीपमाला में हिमालय के बद्रीनारायण के मन्दिर में ग्रहण के समय लिखी गई थी । अतएव इसमें ग्रहण और श्रीबद्रीनारायण जी की मूर्ति का दृष्टान्त आया है ।

( २ ) जद "मैं" मार पिछाँवल सुट्टियाँ[1][2] ।
प्रेम नगर चढ़ सेजे सुत्तियाँ ॥
इशक़ हुलारे[3] दस्से । भाग तिन्हाँ० ॥ २ ॥

( ३ ) चादरफूँक शरह[4] दी सेकाँ[5] ।
अखियाँ खोल दिलवर नूं देखाँ ॥
भरम शुब्हे सब नस्से[6] । भाग तिन्हाँ० ॥ ३ ॥

( ४ ) ढूँड ढूँड के उमर गँवाई ।
जाँ घर अपने झाती पाई ॥
राम सज्जे[7] राम खब्बे[8] । भाग तिन्हाँ० ॥ ४ ॥

---

( २ ) जब इस तुच्छ अहंकारको मारकर पीछे फेंका, तब प्रेमानन्द भोगना नसीब हुआ । फिर तो प्रेम अपना प्रबल वेग दर्शाने लग पड़ा ।

( ३ ) जब मैं कर्म-काण्ड रूपी अज्ञान के पर्दे को ज्ञानाग्नि से जलाकर उसकी आग तापनेलगा, तब निज स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा, तब तो सारे भ्रम संशय स्वतः दूर हो गये ।

( ४ ) इतनी देर तक तो तलाश में आयु खोई पर जब अपने भीतर दृष्टि की तो राम ( निज स्वरूप ) को दायें बायें अर्थात् चारों ओर व्यापक पाया ।

---

१ पिछली ओर, २ फेंका, ३ ज़ोर दिखावे, ४ कर्म-काण्ड, ५ तापी, ६ भागे, ७ दायें, ८ बायें ।

[ १३४ ]

राग भैरवी, ताल दादरा।

अक़्ल के मदरस्से से उठ, इश्क़ के मैकदे[1] में आ।
जामे-शराबे-बेख़ुदी[2], अब तो पीया जो हो सो हो॥ १

लाग[3] की आग लग उठी, पम्बा[4] सां सब जल गया।
रख़्ते-वजूदो-जानो-तन[5], कुच्छ न बचा जो हो सो हो॥ २

हिजर[6] की जब मुसीबतें, अर्ज़[7] कीं उसके रूबरू।
नाज़ो-अदा[8] से मुस्करा[9], कहने लगा जो हो सो हो॥ ३॥

इश्क़[9] में तेरे कोहे-गम[10], सिर पे लिया जो हो सो हो।
ऐशो-निशाते-ज़िन्दगी[11], सब छोड़ दिया जो हो सो हो॥ ४॥

दुनिया के नेको-बद[12] से काम, हम को न्याज़[13] कुच्छ नहीं।
आप[14] से जो गुज़र गया, फिर उसे क्या जो हो सो हो॥ ५

[ १३५ ]

राग भैरवी, ताल दादरा।

ऐ दिल ! तू राहे-इश्क़[15] में मरदाना हो, मरदाना हो।
क़ुर्बान कर अपनी जान को, जानाना[16] हो जानाना हो॥ १॥

---

१ (प्रेम का) शराब खाना, २ बे ख़ुदी की शराब का प्याला, ३ प्रेमकी लग्न (लटक) ४ रुई के फम्बे की तरह, ५ शरीर प्राण और तन रूपी असबाब कुछ न बचा, ६ विरह, ७ नख़रे टख़रे, ८ हँसकर, ९ प्रेम स्नेह, १० शोक का पर्वत, ११ जिन्दगी की प्रसन्नता और आनन्द, १२ अच्छे और बुरे, पुण्य पाप, १३ कवि का नाम, १४ जान हथेली पर रक्खे रखना, अर्थात जो अहंकार को मारे जीते हुए हो, वा अपने आप से गुज़ार चुका हो, १५ प्रेम के मार्ग में, १६ आशिक़ अर्थात् जान देने वाला।

तू हज़रते-इन्सान है, लाज़िम तुझे इर्फ़ान[1] है।
हरगिज़ न तू हैवान सा दीवाना[2] हो दीवाना हो ॥ २ ॥

हर ग़म से तू आज़ाद हो खुर्सन्द[3] हो और शाद[4] हो।
हर दो जहाँ के फ़िक्र से बेगाना[5] हो, बेगाना हो ॥ ३ ॥

कर तर्क ज़ोहद[6] ज़ाहिदाँ[7] ! मजलिस-निशीं[8] रिन्दों का हो।
दीवानगी[9] से दरगुज़र, फ़रज़ाना[10] हो, फ़रज़ाना हो ॥ ४ ॥

मैं तू का मनशा अक़्ल है, लाज़िम है तुझ को क़ादरी[11]।
पी कर शराबे-बेखुदी, मस्ताना हो, मस्ताना हो ॥ ५ ॥

[ १३६ ]

लावनी सवैया।

समझ बूझ[12] दिल खोज प्यारे ! आशिक़ हो कर सोना क्या ॥

जिन नैनों से नींद गंवाई, तकिया लेफ़ बिछौना क्या ॥

रूखा सूखा राम का टुकड़ा, चिकना और सलूना क्या ॥

पाया है तो कर ले शादी[13], पाई पाई पर खोना क्या ॥

कहत कुमाल[14] प्रेम के मार्ग[15], सीस दिया फिर रोना क्या ॥

---

१ आत्म ज्ञान, २ पागल, ३ आनन्द, ४ खुश, प्रसन्न, ५ फ़िक्र रहित हो, निश्चिन्त हो, ६ तप, कर्म-काण्ड, ७ तपी, कर्मकाण्डी, ८ मस्तों की सभा में बैठने वाला बन, ९ पागलपन, १० आत्मवित, अक़्लमन्द, ११ कवि का नाम है, १२ दिल में बिचार करके, १३ खुशी, १४ कवि का नाम, १५ रास्ता।

[ १३७ ]

राग खमाज, ताल दादरा ।

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई ( टेक )

माता छोड़ी, पिता छोड़े, छोड़े सगा सोई ।
साधू संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ॥ अब तो० ॥ १ ॥

संत देख दौड़ आई, जगत देख रोई ।
प्रेम आँसू डार डार, अमर[1] बेल बोई ॥ अब तो० ॥ २ ॥

मारग में तारण[2] मिले, संत राम दोई ।
संत सदा शीश पर, राम हृदय होई ॥ अब तो० ॥ ३ ॥

अंत में से तंत[3] काढ़यो, पिच्छे रही सोई ।
राणे भेज्यो विष का प्याला, पीते मस्त होई ॥ अब तो० ॥ ४ ॥

अब तो बात फैल गयी, जाने सब कोई ।
दास मीरा लाल गिरंधर, होनी सी सो होई ॥ अब तो० ॥ ५ ॥

[ १३८ ]

राग कालंगड़ा ताल धुमाली ।

माई ! मैंने गोविन्द लीना मोल ( टेक )

---

१ सर्वदा रहने वाली, २ पार करने वाले, बचाने वाले, उद्धार करनेवाले, ३ तत्व, सत्य वस्तु से अभिप्राय है ।

कोई कहे हलका, कोई कहे भारी, लिया तराजू तोल ॥ माई० ॥
कोई कहे सस्ता, कोई कहे महँगा, कोई कहे अनमोल ॥ माई० ॥
वृन्दावन की कुंज गली में, लिया वजा के ढोल ॥ माई० ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, पूर्व जन्म के बोल ॥ माई० ॥

[ १३९ ]

राग खमाज, ताल दादरा

राम की दीवानी, मेरा दर्द न जाने कोय । ( टेक )

घायल की गति घायल जाने, जो कोई घायल होय ।
शेषनाग पै सेज पिया की, किस विधि मिलना होय ॥ १ ॥

दर्द की मारी वन वन डोलूँ, वैद मिला नहीं कोय ।
मीरा की पीड़ प्रभु कैसे मिटेगी, वैद सँवलिया होय ॥ २ ॥

[ १४० ]

राग खमाज, ताल दादरा

मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई । ( टेक )

जाके शिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बंधु अपना नहिं कोई ॥ १ ॥

छोड़ दई कुलकी कान, क्या करेगा कोई ।
सन्तन ढिग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ॥ २ ॥

अँसुवन जल सींच सींच, प्रेम बेल बोई।
अब तो बेल फैल गई, आनन्द फल होई॥ ३

आई मैं भक्ति जान, जगत देख मोही।
दास मीरा गिरधर प्रभु, तारो अब मोही॥ ४

[ १४१ ]

राग खमाज, ताल दादरा

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो, दूसरा न कोई॥ } (टेक)

प्रेम की मथनिया माथी, भक्ति से विलोई।
घृत घृत काढ़ लीनो, छाछ पीवे कोई॥ १॥

अँसुवन जल सींच सींच, प्रेम बेल बोई।
छाँड़ दई कुल की रीति, लाज सब वगोई॥ २॥

सन्तन संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई।
दास मीरा लाल गिरधर, होनी सी सो होई॥ ३॥

[ १४२ ]

साकी राग जोगी

राणाजी! मैं सांवरे रंग राती। (टेक)

जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजत पाती।
मेरा पिया मेरे हृदय बसत है, यह कछु कहीं न जाती॥ १॥

झूठा सुहाग जगत का री सजनी ! होय होय मिट जासी।
मैं तो एक अविनाशी वरूँगी, जाहे काल नहीं खासी ॥ २ ॥

और तो प्याला पी पी माती, मैं बिन पिये ही माती।
यह प्याला है प्रेम हरी का, छकी रहूँ दिन राती ॥ ३ ॥

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, खोल मिली हरि से मैं छाती।
कोई कहे खरी कि खोटी, मेरी प्रेम की रीत सुहाती ॥ ४ ॥

[ १४३ ]

साकी, राग जोगी

मैं गिरिधर संग राती[1] गुसैंयाँ, मैं गिरधर संग राती। ( टेक )

पचरंग चूनर रंगा दी सखी मैं झुरमट[2] खेलन जाती।
वा झुरमट मेरा पिया मिलेगा, वा ही को गले लगाती ॥ १ ॥

सुरत[3] नरत का दीवा बना के, मनसा[4] की कर ले बाती।
प्रेम हटी का तेल मंगा ले, जग रह्यो दिन और राती ॥ २ ॥

जिनके पिया परदेश बसत हैं, लिख लिख भेजैं पाती[5]।
मीरा के पिया हृदय बसत हैं, ना कहीं आती न जाती ॥ ३ ॥

[ १४४ ]

साकी, राग जोगी

भज मन चरण कमल अविनासी। ( टेक )
जे तोहे[6] दीखे धरती गगन बिच ते तानी[7] सब उठ जासी ॥ १ ॥

---

१ प्रेम में रती हुई, २ बहुत से प्रेम मयी स्त्रियों के समूह में, ३ सुरति वा ध्यान, ४ मन, ५ पत्र, ६ जो तुझे, ७ वह माया जाल।

कहा भयो तीरथ व्रत कीने, कहा लिये करवट कासी।
घर में वस्तु धरी नहीं सूझे, वन वन फिरत उदासी ॥ २ ॥

कहा भयो जो भगवाँ पहने, घर .त्यज हो संन्यासी।
योगी हुए युक्ति नहीं जानी, उलट जन्म कर फाँसी ॥ ३ ॥

अ़र्ज़[१] करूँ अबला[२] कर[३] जोड़ी, हरि तुम्हारी दासी।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, काटो यम की फाँसी ॥ ४ ॥

[ १४५ ]

देश, ताल देवार।

जूँ हीं आमदे आमदे-इश्क़[४] का मुझे दिल ने मुज़दह[५] सुना दिया।
खिर्दो-हवासो-शकेब[६] ने कहीं कूसे-कूच[७] बजा दिया ॥ १ ॥

जिसे देखना ही मुहाल[८] था, न था जिस का नामो-निशां कहीं।
सो हर एक ज़र्रे में इश्क़ ने मुझे उसका जलवा[९] दिखा दिया ॥२॥

---

पंक्तिवार अर्थ।

(१) जिस समय मेरे अंदर अपने स्वरूप के इश्क़ (प्रेम) के आनेकी खुशख़बरी दिल ने सुनाई, उससमय अक़्ल और होश और सन्तोष ने मेरे अंदर से निकलने का नक़्क़ारा बजादिया (अर्थात् भीतरसे होश-हवास निकलनेलगे)

(२) (प्रेम आने से पहिले) जिसको देखना कठिन था और जिस का नाम और निशान नज़र नहीं आता था, उसका इस इश्क़ (प्रेम) ने हर एक अणु मात्र में भी मुझे दर्शन अब करा दिया।

---

१ क्या हुआ, २ भोली स्त्री, ३ हाथ जोड़कर, ४ प्रेम का आगमन, ५ खुश ख़बरी, ६ अक़्ल, होश और सन्तोष, ७ चलने का नक़्क़ारा, ८ कठिन, ९ दर्शन।

करूँ क्या बियान मैं हम निशीं[1] असर उस की लुतफ़े-निगाह[2] का ।
कि तऽय्युनात[3] की क़ैद से मुझे एक दम में छुड़ा दिया ॥ ३ ॥

वह जो नक़्शे-पा[4] की तरह रही थी नमूद[5] अपने वजूद[6] की ।
सो कशश से दामने-नाज़ुकी[7] उसे भी ज़िमीं से मिटा दिया ॥ ४ ॥

तेरी नासिहा[8] ! यह चुनाँ चुनीं[9], कि है ख़ुद पसन्दी के सबक़ीन्[10] ।
न दिखाई देगी तुझे कहीं, कभी जो किसी ने सुझा दिया ॥ ५ ॥

---

(३) ऐ प्यारे साथी ! मैं उस अपने प्यारे स्वरूप की दृष्टि के आनन्द के प्रभाव को (आत्मानुभव के प्रभाव को) क्या वर्णन करूँ कि उस [अनुभव] ने मुझे सर्व बन्धनों की क़ैद से एक दम में छुड़ा दिया [अर्थात् सर्व बन्धनों से तत्काल मुक्त कर दिया]।

(४) ज़मीन पर पाओं (पाद) के चिह्न की तरह जो अपने तन की प्रतीति थी सो उस स्वरूप [यार] के नाज़ुक पल्ले के आकर्षण [अर्थात् अनुभव के बढ़ने] ने उसको भी पृथ्वी से मिटा दिया।

(५) ऐ उपदेश करने वाले ! तेरी यह 'क्यों कब' अहंकार के कारण से हैं। अगर किसी ने तुझ को सुझा दिया अर्थात् अनुभव करा दिया तो यह क्यों किस तरह (अर्थात् क्यों और कैसे होश उड़ जाते हैं इत्यादि) तुम को भी नहीं दिखाई देंगे।

---

१ साथ बैठने वाला, २ दृष्टि का आनंद या प्रभाव, ३ बंधन, परिच्छिन्नता ४ पाद का चिन्ह, ५ व्यक्ति, प्रतीत, ६ तन, ७ बारीक या पतला पल्ला, ८ उपदेश करने वाले, ९ क्यों, किस तरह, १० नज़दीक, समीप ।

तुझे इश्क़े-दिल से ही काम था, न कि उस्तख़ानों[1] का फूँकना।
ग़ज़ब एक शेर के वास्ते तू ने नैस्तां[2] को जला दिया॥ ६॥

यह निहाल[3] शोलाये-हुस्न[4] का तेरा बढ़ के सर वफ़लक[5] हुआ।
मेरी काये हस्ती[6] ने मुश्तइल[7] हो उसे यह नश्वो-नुमा[8] दिया॥ ७॥

---

( ६ ) इस के दो मतलब हैं:—( १ ) ऐ ब्रह्म साक्षातकार के जिज्ञासू! तुम को दिल में प्रेम भड़काना चाहिये था, न कि अज्ञानी तपस्वियों की तरह हठयोग इत्यादि से तन बदन को सुखाना और अस्तियों को जलाना था। बड़े आश्चर्य की बात है कि तूने एक शेर ( दिल ) के क़ाबू करने के लिये सारे जंगल ( अर्थात इस शरीर को जिस में यह दिल रूपी शेर रहता है ) को व्यर्थ आग लगा दी, मुफ़्त में शरीर को जर्जरी भूत कर दिया।

दूसरा अर्थ ( २ ) ऐ यार! ( प्रेमात्मन् )! तुझे हमारा दिली प्रेम लेना चाहिये था, न कि हड्डियों और शरीर को जलाना और बरबाद करना था। बड़ा आश्चर्य है कि तू ने हमारे दिल लेने के बजाये हमारे शरीर रूपी वन को मुफ़्त में जला दिया।

( ७ ) यह तेरी सुन्दरता की अग्नि ( दमक ) की ताज़ी लाट आकाश तक उपर बढ़ गयी ( भड़क उठी ) और मेरे शरीर रूपी तृण ने उस से जल कर उस आग को और अधिक बढ़ा दिया ( अर्थात् उस अग्नि को और भी ज़्यादा भड़का दिया )।

---

१ हड्डियों, २ जंगल, ३ वृक्ष, बूटा, ४ सुन्दरता की ज्वाला, ५ आकाश तक पहुँच, ६ मेरी स्थिति के तृण अर्थात् मेरी स्थिति रूप तृण ने, ७ जलकर वा भड़ककर, ८ अधिक किया, भड़काया।

[ १४६ ]

सोहनी, ताल तेवरा,

१ ख़बरे-तहय्युरे-इश्क़[1] सुन न जुनूँ रहा न परी रही।
न तो तू रहा, न तो मैं रहा, जो रही सो बेख़बरी रही॥

२ शाहे-बेख़ुदी[2] ने अता[3] किया, मुझे जब लबासे-ब्रेहनगी[4]।
न ख़िरद[5] की बख़्यागिरी[6] रही, न जुनूँ की परदादरी[7]॥

३ वह जो होशो-अक़्लो-हवास थे, तेरी इक निगाह[8] ने उड़ा दिये।
कि शराबे-सदक़दहे-आर्ज़ू[9] ख़ुमे[10] दिलमें थी सो भरी रही॥

---

पंक्तिवार अर्थ

( १ ) इश्क़ की अजीब ख़बर सुनने से न तो दुन्यावी पगलापन रहा न सांसारिक ख़ूबसूरती ( परि ) रही और इस इश्क़ के आने से न तो तू रहा और न मैं रहा जो कुछ रही वह बेख़बरी रही।

( २ ) अहंकार रहित बादशाह ( आत्मा ) ने जब मुझको नंगा लिबास अर्थात् नंगापन बख़्शा ( अर्थात् जब मैं माया के पर्दों से रहित हुआ ) तो बुद्धि का उधेरपन ( काट फाट ) और पगले पन का छुपे रहना न रहा।

( ३ ) ऐ यार ( स्वस्वरूप ) ! वह जो होश अरु अक़्ल अरु हवास थे तेरी दृष्टि मात्र से उड़ गये [अर्थात् तेरे अनुभव से अक़्ल इत्यादि भाग गयीं] और सैकड़ों क़िस्म की ख़्वाहिश रूपी प्यालों की शराब जो दिल रूपी मटके में भरी हुई थी वह ज्यूँ की त्यूँ भरी रही [अर्थात् ख़्वाहिशें पूरे हुये बग़ैर, नष्ट होगईं]।

---

१ इश्क़ की हैरानी की ख़बर सुनकर, २ बेख़ुदी के बादशाह, ३ बख़्शा, ४ नंगेपन का वस्त्र, ५ बुद्धि, अक़्ल, ६ काट फाट, ७ ढाँपे रहना, ८ दृष्टि, ९ सौ (१००) प्यालों की शराब की इच्छा, १० दिल का मटका।

४ चली सिमते-ग़ैब से इक हवा, कि चमन ग़रूर का जल गया।
वले[1] शमा-ए-खाना[2] जला के सब गुले-सुर्ख़सां[3] ही हरी रही॥

५ वह अजब घड़ी थी कि जिस घड़ी, लिया दर्स[4] नुसख़ाए[5]—
इश्क़ का।
कि किताबे-अक़्ल की ताक़ पै, जो धरी थी यूं ही धरी रही॥

६ तेरे जोशे-हैरते-हुस्न[6] का, हुआ इस क़दर से असर यहाँ।
न तो आयीने में जलाँ रही, न परी में जल्वा गरी रही॥

७ किया ख़ाक आतशे-इश्क़[8] ने, दिले-बेन्वाये-सराज[9] को।
न हज़र[10] रहा न ख़तर[11] रहा, जो रही सो बेख़तरी[12] रही॥

---

( ४ ) अव्यक्त देश से ऐसी एक हवा चली कि अहंकार का सारा बाग़ जल गया बल्कि घर ( अंतःकरण ) का दीपक ( ज्ञान ) सब जलाकर आप स्वयं लाल ( अनार के ) फूल की तरह हरा रहा ( ताज़ा रहा )

( ५ ) वह अजीब घड़ी थी कि जिस घड़ी इश्क ( प्रेम ) का सबक़ पढ़ा था कि जिसके आने से अक़्ल की किताब ताक़पर धरी की धरी रही।

( ६ ) ऐ यार ! ( स्वस्वरूप ) ! तेरे सौंदर्य के जोशका प्रभाव इतना हुआ कि शीशे की सफ़ाई अरु ( माया रूपी ) परीकी प्रतीति सभी जाती रही।

( ७ ) इश्क की आग ने सराज ( कवीका नाम है ) को ख़ाक कर दिया। फिर न कोई डर रहा न ख़तरा रहा। जो कुछ रहा वह निर्भयता रही।

---

१ लेकिन २ घर का दीपक, ३ लाल पुष्प की तरह ४ सबक़, ५ प्रेम के नुसखे का, ६ सुंदरता की हैरानी का जोश, ७ साफ़ शफ़ाफ़ पना, ८ प्रेम-अग्नि, ९ कवि के दिल, १० डर, ११ भय, झिझक, १२ निर्भयता, निडरपना।

[ १४७ ]

राग भैरवी, ताल ग़ज़ल

तमाशाये-जहान् है और भरे हैं सब तमाशाई।
न सूरत अपने दिलवर सी, कहीं अब तक नज़र आई ॥ १ ॥

न उसका देखने वाला, न मेरा पूछने वाला।
इधर यह बेकसी[1] अपनी, उधर उसकी वह तनहाई[2] ॥ २ ॥

मुझे यह धुन[3], कि उसके तालिबों[4] में नाम हो जावे।
उसे यह कद[5], कि पहिले देख लो है यह भी सौदाई ॥ ३ ॥

मुझे मतलूब[6] दीदार[7] उसका, इक खि़ल्वत[8] के आलम[9] में।
उसे मंज़ूर, मेरी आज़मायश, मेरी रुसवाई[10] ॥ ४ ॥

मुझे धड़का, कि आज़ुर्दा[11] न हो मुझ से कुछ दिल में।
उसे शिकवा[12], कि तूने क्यों तबीयत अपनी भटकाई ॥ ५ ॥

मैं कहता हूँ कि तेरा हुस्न[13] आलम सोज़[14] है जाना[15]।
वह कहता है, कि क्या हो, गर करूं मैं ज़ुल्फ़-आराई[16] ॥ ६ ॥

मैं कहता हूँ, कि तुझ पर इक ज़माना जान देता है।
वह कहता है, कि हाँ बेइन्तहा हैं मेरे शैदाई[17] ॥ ७ ॥

---

१ कमज़ोरी, लाचारी, २ अकेलापन, ३ लगन, ४ जिज्ञासुओं, ५ ख़याल, तरंग, हठ, ६ ज़रूरत, आवश्यकता ७ दर्शन, ८ एकान्त, ९ अवस्था, समय, १० ख़्वारी, ११ नाराज़, ख़फ़ा, क्रुद्ध, १२ शिकायत, १३ सुन्दरता, १४ जगत व दुनिया को जलाने वाला, १५ ऐ प्यारे, १६ शृंगार करना, अपने नक़्श को सजाना, अपने बालों को सजाना, १७ आसक्त, आशिक़, भक्त।

मैं कहता हूँ, कि दिलबर ! मैं नहीं हूँ ऐ क्या तेरा आशिक़ ?
वह कहता है, कि मैं तो रखता हूँ ऐसी ही रानाई[1] ॥ ८ ॥

मैं कहता हूँ, कि तू नज़रों से मेरी क्यों हुआ ओझल[2] ।
वह कहता है, यही अपनी अदा[3] मुझ को पसंद आई ॥ ९ ॥

मैं कहता हूँ, तेरा यह हुस्न और देखूं न मैं उस को ।
वह कहता है, कि मैं ख़ुद देखता हूँ अपनी ज़ेबाई[4] ॥ १० ॥

मैं कहता हूँ, कि हद पर्दों की आख़िर तावकै[5] परदा ।
वह कहता है, कि कोई जब तक न हो अपना शनासाई[6] ॥ ११ ॥

मैं कहता हूँ, कि अब मुझ को नहीं है ताब[7] फ़ुर्क़त की ।
वह कहता है, कि आशिक़ हो के कैसी ना शिकेबाई[8] ॥ १२ ॥

मैं कहता हूँ, कि सूरत अपनी दिखला दीजिये मुझ को ।
वह कहता है कि सूरत मेरी किस को देगी दिखलाई ? ॥ १३ ॥

मैं कहता हूँ, कि जाना[9] ! अब तो मेरी जान जाती है ।
वह कहता है, कि दिल में याद कर क्योंकर थी वह आई ॥ १४ ॥

मैं कहता हूं, कि इक झलकी है काफ़ी मेरी तसकीं[10] को ।
वह कहता है, कि बामे तूर[11] पर थी क्या निदा[12] आई ॥ १५ ॥

---

१ सुन्दरता, बाँकपन, क़ता वज़ा, २ छुपा, अप्रकट, ३ चेष्टा, चाल, नख़रा-टख़रा, ४ सजावट, ख़ूबसूरती, ५ कब तक, ६ अपने आप को पहिचानने वाला, आत्मवेत्ता, ७ जुदायगी के सहने की शक्ति वा ताक़त, ८ बेसब्री, ९ ऐ प्यारे, १० तसल्ली, सन्तोष ११ तूर के पहाड़ की चोटी पर [ जहाँ मूसा को ज्ञान मिला और जहाँ ईश्वर आग की लाट में मूसा के आगे प्रकट हुआ था ] अर्थात् ज्ञान की शिखर पर, १२ आवाज़, बाणी ।

मैं कहता हूँ, कि मुझ बेसबर को किस तौर सबर आये।
वह कहता है[1], कि मेरी याद की लज्ज़तें नहीं पाई ॥ १६ ॥

मैं कहता हूँ, यह दामे-इश्क़[2] बेढब तू ने फैलाया।
वह कहता है, कि मेरी खुद पसन्दी[3] मेरी खुदराई[4] ॥ १७ ॥

[ १४८ ]

राग परज़, ताल धुमाली।

हमन[5] हैं, इश्क़ के माते[6], हमन को दौलतां क्या रे।
नहीं कुछ माल की परवाह, किसी की मिन्नताँ क्या रे ॥ १ ॥

हमन को खुश्क रोटी बस, कमर को यक लंगोटा बस।
सिरे पै एक टोपी बस, हमन को इज़्ज़तां क्या रे ॥ २ ॥

क़बा[7] शाला वज़ीरों को, ज़री ज़रबफ़्त अमीरों को।
हमन जैसे फ़क़ीरों को, जगत की नेऽमतां[8] क्या रे ॥ ३ ॥

जिन्हों के सुख़न[9] स्याने[10] हैं, उन्हीं को ख़ल्क़[11] माने हैं।
हमन आशिक़-दिवाने हैं, हमन को मजलसां क्या रे ॥ ४ ॥

कियो हम दर्द का खाना, लियो हम भस्म का बाना।
वली[12] बस शौक मन भाना, किसी की मसलहतां[13] क्या रे ॥५॥

---

१ स्वाद, रस, २ प्रेम का जाल, इश्क़ का फन्द, ३ अपनी मर्ज़ी ४ अपनी ही बनाई हुई, अपने आप से वा अपनी सजाई हुई, ५ हम, ६ मस्त ७ अमीरों की पोशाक, ८ जगत के आनंद दायक पदार्थ, ९ वाक्य, उपदेश, बातें, १० बुद्धि युक्त, ठीक, ११ दुनिया, १२ कवि का नाम, १३ सलाह, नसीहत।

[ १४९ ]

राग गारा, ताल दादरा

हम कूये-दरे-यार[1] से क्या टल के जायेंगे।
हम न पत्थर हैं फिसलने कि फिसल जायेंगे ॥ १ ॥

वसले-सनम[2] को छोड़ कर क्या काबे जायेंगे।
वहाँ भी वही सनम[3] है तो क्या मुँह दिखायेंगे ॥ २ ॥

हम अपने कूए-यार[4] को काबा बनायेंगे।
लैला[5] बनेंगे हम, उसे मजनूं[6] बनायेंगे ॥ ३ ॥

ग़ैरों से मत मिलो कि सितमगर[7] बनायेंगे।
हम से मिला करो तुम्हें दिलबर बनायेंगे ॥ ४ ॥

आसन जमाये बैठे हैं, दर से न जायेंगे।
हम कैहकशां[8] बनेंगे, तुझे माहरू[9] बनायेंगे ॥ ५ ॥

[ १५० ]

राग गारा, ताल धुमाली

( वज़न—सब से जहाँ में अच्छा )

कुन्दन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले।
बावर[10] न हो, तो हम को ले आज आज़माले ॥

---

१ प्यारे के द्वार की गली से, २ प्यारे के दर्शन, मिलाप, संग, ३ प्यारा ( अपना स्वरूप ) ४ कूचा, गली, ५ एक प्रिया का नाम, ६ एक प्यारे का नाम है, ७ ज़ालिम, ज़ुल्म करने वाला, ८ दूधिया रास्ता जो रात को आकाश में नज़र आता है, जिसे आकाश गंगा, ( milky path ) भी कहते हैं ९ चन्द्रमुख, चाँद मूरत, १० विश्वास, निश्चय।

जैसे तेरी ख़ुशी हो, सब नाच तू नचाले।
सब छान बीन कर ले, हर तौर[1] दिल जमाले॥ १॥

राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा[2] है। } टेक
याँ यूँ भी वाह वाह है और यूँ भी वाह वाह है॥

या दिल से अब ख़ुश होकर कर हमको प्यार प्यारे!।
या तेग़[3] खैंच ज़ालिम[4]! टुकड़े उड़ा हमारे॥
जीता रखे तू हमको या तन से सिर उतारे।
अब तो फ़क़ीर आशिक़ कहते हैं यूँ पुकारे-राज़ी है० ॥ २॥

अब दर[5] पै अपने हमको रहने दे या उठा दे।
हम इस तरह भी ख़ुश हैं, रख या हना[6] बना दे॥
आशिक़ हैं पर क़लन्दर चाहे जहाँ बिठा दे।
या अर्श[7] पर चढ़ादे या ख़ाक में सुलादे-राज़ी है० ॥ ३॥

[ १५१ ]

राग संधोरा, ताल दीपचन्दी।

(टेक) अरे लोगों! तुम्हें क्या है? या वह जाने या मैं जानूं।

वह दिल मांगे तो हाज़िर है, वह सिर मांगे तो वे सिर हूँ।
जो मुख मोड़ूँ तो काफ़िर हूँ, या वह जाने या मैं जानूं॥ १॥

---

१ हर तरह, तरीक़ा, २ मर्ज़ी ३ तलवार, ४ ज़ुल्म करने वाला, निर्दयी, सताने वाला, अथवा रुद्र रूप, ५ द्वार अर्थात निकट अपने, ६ दूर फेंक दे, ७ आकाश।

वह मेरी बगल छुप रहता, मैं उसके नाज़ सभी सहता।
वह दो बातें मुझे कहता, या वह जाने या मैं जानूं ॥ २ ॥

वह मेरे ख़ून का प्यासा, मैं उस के दर्द का मारा।
दोनों का पन्थ है न्यारा, या वह जाने या मैं जानूं ॥ ३ ॥

मूआ आशिक़ द्वारे पर, अगर वाक़िफ़ नहीं दिलवर।
अरे मुल्ला सपारा पढ़, या वह जाने या मैं जानूं ॥ ४ ॥

[ १५२ ]

राग सिंधोरा, ताल दीपचन्दी।

रहा है होश कुछ बाक़ी उसे भी अब निबेड़े[1] जा।
यही आहंग[3] ऐ मुतरब-पिसर[4]! टुक और छेड़े जा ॥ १ ॥

मुझे इस दर्द में लज़्ज़त[5] है, ऐ जोशे जुनूं[6]! अच्छा।
मेरे ज़ख़्मे-जिगर[7] के हर घड़ी टाँके उधेड़े जा। २ ॥

पंक्तिवार अर्थ।

( १ ) ए प्यारे ! ( आत्मा ) ! अगर कुछ संसार का होश बाक़ी रहा है तो उसे भी अब दूर करदे, ऐ रागी पुत्र ! यही सुर तू छेड़े जा।

( २ ) मुझे इस दर्द में आनन्द है क्योंकि यह दर्द अपने स्वरूप को याद दिलाता है, इसलिये ऐ पागलपन के जोश ! मेरे जिगर के टाँके ( मेरे दिल के घाव ) हर घड़ी उधेड़े ( फोड़े ) जा।

१ नब्रेरे, टखरे; २ मार्ग, ३ राग वा सुर, ४ गाने वाले के पुत्र, ५ आनन्द, स्वाद, ६ पागल पन का जोश, ७ दिल के घाव।

उखड़ना दम, कलेजा मुँह को आना, ज़ार-बेताबी[1]।
यही साहिल[2] पै आना है, लगे हैं पार बेड़े जां ॥ ३ ॥
है नाला-ज़ार[3] ने पाया, सुराग़े-नाका[4]-ए-लैली।
मुबादा[5] कैस[6] आ पहुँचे, हुदी[7] को ज़ोर छेड़े जा ॥ ४ ॥
कहां लज़्ज़त, कहां का दर्द, तूफ़ां कैसा, ज़ख़मी कौन।
हक़ीक़त पर पहुँचते ही मिटे क्या ख़ूब झेड़े[8] जा ॥ ५ ॥
अरे हट नाख़ुदा[9]! पतवार[10]! मुड़ ले, टूट पर तूफ़ां।
अड़ा ड़ा धम, अड़ा ड़ा धम, किनारों[11] को थपेड़े जा ॥ ६ ॥

---

( ३ ) दम उखड़ता है तो उखड़ने दे, कलेजा मुँह को आता है तो आने दे, बेताबी होती है तो हो, क्योंकि हमें इसी (दर्द के) किनारे पर आना है।

( ४ ) क्योंकि मजनूँ के ज़ार ज़ार रोने ने ही लैला के घर का पता पाया, इसलिये ऐ ऊँट वाले! ऊँट को बढ़ाये जा जिससे कहीं मजनूँ न पीछे से आ जाये [ क्योंकि जिस समय मजनूँ ( मन ) लैला ( तत्त्व दृष्टि ) को मिल जाय अर्थात् आत्मानुभव कर ले ] तो फिर।

( ५ ) कहाँ की लज़्ज़त, कहाँ का दर्द, कैसा तूफ़ाँ, कौन ज़ख़मी तत्त्व पर पहुँचते ही ये सब झगड़े मिट जाते हैं।

( ६ ) अरे नाव के मल्लाह [ शरीर के अहंकार ] ! परे हट, पतवार मुड़ता है तो मुड़ने दे, तूफ़ां टूट पड़ता है तो टूटने दे, और तूफ़ाँ के ज़ोर से अगर किनारे टूट कर पानी में अड़ा ड़ा धम अड़ा ड़ा धम करके गिरते हैं तो गिरने दे।

---

१ बेताबी का दर्द, रोना, २ किनारा, ३ रोने का शोर, ४ लैला (माशूक़) के घर का पता, ५ ऐसा न हो, शायद, ६ मजनूँ, ७ ऊँट को ढकेलने की आवाज़ अर्थात् ऊँट को चलाये चल, ८ सब झगड़े, क़ज़िये, ९ बेड़ी का मल्लाह ( मांझी ), १० नाव को मोड़ने ( घुमाने ) की बल्लीं, ११ किनारे।

हैं हम तुम दाख़िले-दफ़्तर, ख़ुमे-मय[1] में है दफ़तर गुम।
न मुजरिम मुद्दई बाक़ी, मिटे क्या ख़ुश बखेड़े जा॥ ७॥

[ १५३ ]

राग गारा, ताल धुमाली।

किस किस अदा[2] से तूने जलवा[3] दिखा के मारा।
आज़ाद हो चले थे, बन्दा[4] बना के मारा॥ १॥

ख़ुद बोल उठा अनल्हक़[5] ख़ुद बन के शरह[6] तूने।
इक मर्द-हक़[7] को नाहक़[8] सूली चढ़ा के मारा॥ २॥

क्यों कोहकन[9] पै तू ने यह संग-रेज़ियां[10] कीं।
ली उस की जाने-शीरीं, तेशा उठा के मारा॥ ३॥

पहिले बना के पुतला, पुतले में जान डाली।
फिर उस को ख़ुद क़ज़ा[11] की सूरत में आ के मारा॥ ४॥

---

( ७ ) क्योंकि अब हम तुम दाख़िले-दफ़्तर हैं और निजानन्द के मटके ( अन्तःकरण ) में दफ़्तर गुम है, अब न कोई ( द्वैतरूप ) मुजरिम है न मुद्दई बाक़ी है। वाह! क्या उत्तम रीति से सब झगड़े निपटे हैं।

---

१ आनन्द रूपी शराब का मटका, २ नख़रे, ३ दर्शन, ४ बद्ध जीव, परिच्छिन्न, अनुचर, ५ शिवोऽहं, ब्रह्मास्मि ६ कर्मकाण्ड वा स्मृतिशास्त्र, ७ ज्ञानवान्, ८ व्यर्थ, बिना अपराध, ९ प्रिया शीरीं के प्यारे फ़रहाद का नाम है, १० पत्थर फेंके, ११ मृत्यु, काल भगवान्।

गरदन में क़ुमरियों[1] की उल्फ़त का तौक़[2] डाला।
बुलबुल को प्यारे! तू ने गुल[3] बन के खुद ही मारा॥ ५॥

आँखों में तेरे ज़ालिम! छुरियां छुपी हुई हैं।
देखा जिधर को तूने पलकें उठा के मारा॥ ६॥

गुञ्चे[4] में आ के महका[5], बुलबुलमें जा के चहका।
इस को हँसा के मारा, उसको रुला के मारा॥ ७॥

[ १५४ ]

*राग तिलंग, ताल दादरा।

इक ही दिल था सो वह भी दिलवर ले गया अब क्या करूं।
दूसरा पाता नहीं, किस को कहूँ अब क्या करूँ॥ १॥

ले चुका था जाने-जानाँ[6] जां को तो पहिले हाथ से।
फिर भी हमले कर रहा, किस को कहूँ अब क्या करूँ॥ २॥

हम तो दर[7] पर मुन्तज़िर थे, तिश्न-ए-दीदार[8] के।
पहुँचते बिसमिल[9] किया किस को कहूँ अब क्या करूं॥३॥

---

*यह कविता श्रीराम के शिष्य स्वामी गोविन्दानन्द की है।

१ बुलबुलों, २ बन्धन, संगल, ३ पुष्प, ४ पुष्पकली, ५ खुशबू दी, ६ जान की जान ( जान से अति प्यारा ) अर्थात् प्राणप्रिय, ७ द्वारपर, ८ दर्शन के प्यासे, ९ ( मिलते ही ) मार दिया या घायल किया।

यादूदाश्त के लिये, रहता था फोटो[1] जिस्मों[2] जां।
वह भी ज़ायल[3] कर दिया, किस को कहूँ अब क्या करूं ॥ ४ ॥

यार के मुँह पर झरोखे[4] से नज़र इक जा पड़ी।
देखते घायल हुआ, किस को कहूँ अब क्या करूं ॥ ५ ॥

आप को भी क़तल कर, फिर आप ही इक रह गये।
वाह नज़ाकत आप की, किस को कहूँ अब क्या करूं ॥ ६ ॥

[ १५५ ]

*राग राम कली।*

सइयो नी! मैं प्रीतम पिया को मनाऊंगी।
इक पल भी उसे न रुसाऊँगी[5] ॥ टेक ॥

नयन हृदय का करूँगी बिछौना।
प्रेम की कलियां बिछाऊँगी ॥ सइयो० ॥ १

तन मन धन की भेंट धरूँगी।
हौं मैं[6] ख़ूब मिटाऊँगी ॥ सइयो० ॥ २ ॥

बिन पिआ दुःख बहुत होवत हैं।
बहु जूनां[7] भरमाऊँगी ॥ सइयो० ॥ ३ ॥

---

१ सूरत, तस्वीर, २ शरीर (देह) अरू प्राण, ३ नष्ट, ४ खिड़की, ५ न अप्रसन्न करूंगी, ६ परिच्छिन्न अहंकार, ७ बहुत योनियों में,।

भेद खेद को दूर छोड़ कर ।
आत्म-भाव रिझाऊँगी[1] ॥ सइयो० ॥ ४ ॥

जे कहा पीया नहीं माने मेरा ।
मैं आप गले लगजाऊँगी ॥ सइयो० ॥ ५ ॥

पिया गले लागी, हुई बड़भागी ।
जन्म मरण छुट जाऊँगी ॥ सइयो० ॥ ६ ॥

पिया गले लागे, सब दुःख भागे ।
मैं पिया-विच लय हो जाऊँगी ॥ सइयो० ॥ ७ ॥

राम पिया मोरे पास बसत हैं ।
मैं आप पिया हो जाऊँगी ॥ सइयो० ॥ ८ ॥

[ १५६ ]

राग परज, ताल रूपक ।

जिस को शोहरत भी तरसती हो, वह रुस्वाई[2] है और ।
होश भी जिस पर फड़क जायें, वह सौदा और है ॥ १ ॥

बन के पर्वानो तेरा आया हूँ मैं, ऐ शमां-ए-तूर[3] ! ।
बात वह फिर छिड़ न जाये, यह तक़ाज़ा[4] और है ॥ २ ॥

---

१ आत्म भाव में प्रसन्न या तृप्त होवूँगी २ अनादर, अपमान, ३ ऐ पहाड़ रूपी अग्नि के दीपक ( आत्म देव ) ४ झगड़ा ।

देखना ! ज़ौक़े-तकल्लुम[1] यहाँ कोई मूसा नहीं ।
जो मेरी आँखों में फिरता है, वह शीशा और है ॥ ३ ॥

यूं तो ऐ सैयाद[2] आज़ादी में हैं लाखों मजे ।
दाम[3] के नीचे फड़कने का तमाशा और है ॥ ४ ॥

जान देता हूँ तड़प कर कूचा-ए-उलफ़त[4] में मैं ।
देख लो तुम भी कोई दम का तमाशा और है ॥ ५ ॥

तेरे ख़ंजर ने जिगर टुकड़े किया, अच्छा किया ।
कुछ मेरे पहलू[5] में लेकिन चिलबला[6] सा और है ॥ ६ ॥

भेस[7] बदले महफ़िले-अग़यार[8] में बैठे हैं हम ।
वह समझते हैं यह कोई ओपरा[9] सा और है ॥ ७ ॥

[ १५७ ]

राग भैरवी, ताल दादरा ।

आशिक़ जहाँ में दौलतो-इक़बाल क्या करे ।
मुलको-मकानो[10] तेग़ो-तबर[11] ढाल क्या करे ॥

---

१ वाणी अर्थात् अहं पद से अपने को पुकारने का शौक़ अथवा आनंद, २ शिकारी, ३ जाल, ४ प्रेम की गली में प्रेम के मार्ग में ५ बग़ल में, अंग में ६ काँटा चुभना, ७ वेष बदले, ८ अपने प्यारे से भिन्न पुरुषों की समाज, ९ अन्य, अपरिचित, १० मुल्क और मकान, ११ तल्वार और ढाल ।

जिसका लगा हो दिल वह ज़रो-माल[1] क्या करे।
दीवानह[2] जाहो-हशमतो[3]-अजलाल क्या करे॥
बेहाल हो रहा हो सो वह हाल क्या करे।
गाहक ही न कुछ लेवे तो दल्लाल क्या करे॥ १ टेक॥

मरने का डर है उन को जो रखते हैं तन में जाँ।
और वह जो मर गये तो उन्हें मौत फिर कहाँ॥
मोहताज[4] पत्थरों[5] को तरसते हैं हर ज़माँ[6]।
और जिन के हाथ काने-जवाहर[7] लगे मियाँ॥
वह फिर इधर उधर के दुरों-लाल[8] क्या करे।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे॥ २॥

पाला है जिन सवारों ने याँ ख़र[9] को आशकार[10]।
कुत्ते की पीठ पर नहीं चढ़ सकते ज़िनहार[11]॥
और जो फलांग मार के हो चर्ख़[12] पर सवार।
वह फ़ीलो-अस्पो-ज़र्दो[13]-सियाह लाल क्या करे॥
दीवाना जाहो-हशमतो-अजलाल क्या करे।
गाहक ही न कुछ लेवे तो दल्लाल क्या करे॥ ३॥

---

१ धन, दौलत, २ ईश्वर का पागल, ( खुद मस्त ), ३ पद, वैभव और मान, मर्तबा, इज़्ज़त, शोहरत, ४ हाजतमंद, दरिद्री, ५ जवाहरात, मोती, ६ हर समय ७ जवाहरात की खान, ८ मोती और लाल, ९ गधा, गर्दभ १० ज़ाहिरा, स्पष्ट, ११ कदापि, १२ आकाश, १३ पीला, लाल, और काला हाथी व घोड़ा।

राग देश, ताल तीन

गुम हुआ जो इश्क़ में, फिर उस को नंगो-नाम[1] क्या।
दैर[2] काबा से ग़रज़ क्या कुफ़र क्या इस्लाम क्या॥ १॥

शेखजी जाते हैं मै-खाना[3] से मुँह को फेर फेर।
देखिये मसजिद में जाकर पायेंगे इनाम क्या॥ २॥

मौलवी साहिब से पूछे तो कोई है जिस्म क्या।
रूह क्या है, दम है क्या, आगाज़[4] क्या, अंजाम[5] क्या॥ ३॥

दम को लय कर सुम्मो-बुक्मम[6] बेखबर सा बैठ रहे।
कूचये-दिलदार[7] में वाइज़[8] से तुम को काम क्या॥ ४॥

यार मेरा मुझ में है, मैं यार में हूँ बिलज़रूर।
वस्ल[9] को यहां दख्ल क्या और हिजर[10] नाफ़र्जाम[11] क्या॥५॥

तुम में मैं और मुझ में तू आँखें मिलाकर देख ले।
और गर देखे न तू तो मुझ पे है इल्ज़ाम क्या॥ ६॥

पुख़्ता[12]-मग़ज़ों के लिये है रहनुमा[13] मेरा सख़ुन[14]।
हाफ़ज़ा[15]! हासिल करेंगे इस से मर्दे-ख़ाम[16] क्या॥

---

१ शर्म, लज्जा, २ मन्दिर, ३ शराब खाना, ४ शुरू आदि, ५ अन्त, ६ चुप चाप, गूँगा, ७ यार की गली अर्थात् साक्षात्कार के मार्ग में, ८ उपदेश ९ मिलाप, मुलाक़ात, दर्शन, १० विरह, वियोग, ११ बद असल, १२ तीव्र बुद्धि वाले, (बहुत समझ वाले,) १३ नेता, लीडर, नायक १४ उपदेश, १५ कवि का नाम, १६ कच्ची समझ वाले, कमअक़्ल या कमज़ोर दिल।

[ १५९ ]

राग भैरवी, ताल रूपक।

जो मस्त हैं अज़ल[1] के उन को शराब क्या है।
मक़बूल-खातरों[2] को बूए-कबाब[3] क्या है॥ १॥

क्यों मुँह छुपाओ हम से, तक़सीर[4] क्या हमारी।
हर दम की हमनशीनी[5], फिर यह हजाब[6] क्या है॥ २॥

हो पास तुम हमारे, हम ढूँढते हैं किस को।
मुँह से उठा दिखाना, ज़ेरे-नक़ाब[7] क्या है॥ ३॥

[ १६० ]

ग़ज़ल सोहनी।

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं, अमृत पिया तो क्या हुआ।
जिन इश्क़ में सिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ॥ टेक

मशहूर हुआ पंथ में साबित न किया आप को।
आलिम अरु फ़ाज़िल होय के, दाना हुआ तो क्या हुआ॥१॥ जिन०

औरों नसीहत है करे, और खुद अमल करता नहीं।
दिल का कुफ़र टूटा नहीं, हाजी[8] हुआ तो क्या हुआ॥२॥ जिन०

---

१ अनादि वस्तु में जो मस्त हैं (अपने स्वरूप करके जो मस्त हैं) २ दिल क़बूल (मंज़ूर) करने वालों को, दिल देने वालों को, ३ कबाब (विषयानन्द) की गन्ध, ४ अपराध, क़सूर, ५ साथ रहना, ६ परदा, ७ परदे के नीचे, ८ हज (तीर्थयात्रा) करने वाला।

देखी गुलिस्ताँ बोस्ताँ, मतलब न पाया शैख़ का।
सारी किताबाँ याद कर, हाफ़िज़ हुआ तो क्या हुआ ॥३॥ जिन०

जब तक पियाला प्रेम का पी कर मगन होता नहीं।
तार मंडल बाजते ज़ाहिर सुना तो क्या हुवा ॥ ४ ॥ जिन०

जब प्रेम के दरियाव में गरक़ाव[1] यह होता नहीं।
गंगा-यमुन गोदावरी नहाता फ़िरा तो क्या हुआ ॥ ५ ॥ जिन०

प्रीतम से किंचित् प्रेम नहीं, प्रीतम पुकारत दिन गया।
मतलूब[2] हासिल ना हुआ, रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ ६॥ जिन०

[ १६१ ]

राग विरवा।

अब मैं अपने राम को रिझाऊँ, वैठे[3] भजन गुण गाऊँ ॥ टेक

डाली छेड़ूँ न पत्ता छेड़ूँ न कोई जीव सताऊँ।
पात-पात में प्रभू बसत हैं, वाहि को सीस[4] नवाऊँ ॥ १ ॥ अब०

गंगा जाऊँ न यमुना जाऊँ, ना कोई तीरथ नहाऊँ।
अठसठ तीरथ घट के भीतर, तिनहि में मल मल नहाऊँ ॥२॥ अब०

औषध खाऊँ न बूटी लाऊँ, ना कोई वैद्य बुलाऊँ।
पूर्ण वैद्य मिले अविनाशी, वाहि को नब्ज़ दिखाऊँ ॥ ३ ॥ अब०

ज्ञान कुठारा कस कर बांधूँ, सुरत कमान चढ़ाऊँ।
पाँचो चोर बसैं घट भीतर, तिन को मार गिराऊँ ॥ ४ ॥ अब०

---

१ लीन, २ इच्छित वस्तु, ३ बैठ, ४ सिर, मस्तक।

योगी होऊं न जटा बढ़ाऊं, न अंग भभूति रमाऊं।
जो रंग रंगे आप विधाता, और क्या रंग चढ़ाऊं ॥ ५ ॥ अव०

चँद सूरज दोऊ सम कर राखो, निज मन सेज बिछाऊं।
कहन कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन[1] मिटाऊं ॥ ६ ॥ अव०

[ १६२ ]

राग सिंधड़ा, ढाई ताल

इश्क़[2] होवे तो हक़ीक़ी इश्क़ होना चाहिये।
इस सिवा जितने हैं आशिक़ उनपे रोना चाहिये ॥ १ ॥

ऐशो-इशरत[3] में गुज़ारा, रोज़ सारा गर्चि तुम।
रात को प्रभु याद करके तब तो सोना चाहिये ॥ २ ॥

बीज बो कर फल उठाया खूब तुमने है यहाँ।
आक़बत[4] के वास्ते भी कुछ तो बोना चाहिये ॥ ३ ॥

यहाँ तो सोये शौक़ से तुम बिस्तरे-कमख्वाब पर।
सफ़र भारी सिर पे है, वहां भी बिछौना चाहिये ॥ ४ ॥

है ग़नीमत[5] उमर यारो ! जान को जानो अज़ीज़।
रायगाँ[6] और मुफ़्त में इस को न खोना चाहिये ॥ ५ ॥

---

१ आना जाना, मरना जीना, २ प्रेम, भक्ति, ३ विषयभोग, विषयानन्द, ४ परलोक, ५ धन्य, ६ व्यर्थ, बे फ़ायदा।

गर्चि दिल्बर साथ है, बिन जुस्तजू[1] मिलता नहीं।
दूध से माखन जो चाहो, तो बिलोना चाहिये ॥ ६ ॥

यादे-हक़[2] दिन रात रख, जंजाल दुनिया छोड़ दे।
कुछ न कुछ तो लुतफ़े[3]-ख़ालिस तुझ में होना चाहिये ॥ ७ ॥

[ १६३ ]

ग़ज़ल सोहनी

प्रीत न की स्वरूप से तो क्या किया, कुछ भी नहीं। (टेक)
जान दिलवर को न दी, फिर क्या दिया, कुछ भी नहीं ॥ १॥ प्री०

मुल्कगीरी[4] में सिकन्दर से हज़ारों मर मिटे
अपने पर क़ब्ज़ा न कीया, क्या लिया, कुछ भी नहीं ॥ २ ॥ प्री०

देवताओं ने सोम रस पीया तो फिर भी क्या हुआ।
प्रेमरस गर ना पिया, तो क्या पिया, कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥ प्री०

हिज्र[5] में दिलवर के हम जो उम्र पाई खिज़र[6] की।
यार अपना ना मिला, तो क्या जिया, कुछ भी नहीं ॥ ४ ॥ प्री०

[ १६४ ]

साज, ताल चंचल।

आऊंगा न जाऊंगा, मरूंगा न जीऊंगा। } टेक
हरि के भजन प्याला प्रेम-रस पीऊंगा ॥ }

---

१ पुरुषार्थ, प्रयत्न ढूंढना, २ ईश्वरस्मरण, ३ शुद्ध आनन्द, या निजानन्द, ४ देश देशान्तरों का विजय करना, ५ विरह, जुदाई, ६ ख़िजर एक मुसलमानों के हज़रत का नाम है जिसकी आयु अनन्त कही जाती है।

कोई जावे मक्के, कोई जावे काशी,
देखो रे लोगो! दोहों गल फाँसी ॥ १ ॥ आऊं गा०

कोई फेरे माला, कोई फेरे तसबीह[1]!
देखो रे साधो! यह दोनों हैं कसबी[2] ॥ २ ॥ आऊं गा०

कोई पूजे मढ़ियां, कोई पूजे गोरां[3] ॥
देखो रे सन्तो! मैं लुट गयी जे चोरां ॥ ३ ॥ आऊं गा०

कहत कबीर[4] सुनो मेरी लोई[5]।
हम नहीं मरना, रोवे न कोई ॥ ४ ॥ आऊं गा०

[ १६५ ]

राग आसा।

खेडन दे दिन चार नी! वतन तुसाडे मुड नहीं आवना। टेक।

चोला चुनड़ी सानु मापियां दितड़ां।
रूप दित्ता करतार नी! वतन तुसाड़े० ॥ १ ॥

---

पंक्तिवार अर्थ।

टेक—मेरे संसार में खेलने के अब दो चार दिन हैं (क्योंकि मुझे ईश्वर का इश्क़ (प्रेम) लग गया है। इस वास्ते ऐ शारीरिक माता पिता! तुम्हारे सांसारिक घर में मेरा अब आना वापिस नहीं होगा।

(१) शारीरिक चोला(शरीर इत्यादि)तो मातापिताने दिया,मगर असली रूप करतार ने दिया है (इस वास्ते मैं ईश्वर की हूँ तुम्हारी नहीं) इसलिये। टेक०

---

१ जपनी, माला, (जो मुसलमान भजन में वर्तते हैं) २ पेशावर, व्यापारी ३ कब्र, ४ कवि का नाम है, ५ कबीर की स्त्री का नाम है।

अम्बड़ भोली कत्तिया लोड़े ।
भठ पइय्यां पूनीयां, भठ पये गोढ़े ।
तकले दे वल्ल चार नी ! वतन तुसाड़े ॥ २ ॥

रल मिल सैय्यां खेडन चल्लीयाँ ।
खेड खिडन्दरी नूं कंडा नी ! पुरया ।
विसर गया घर बार नी ! वतन तुसाड़े० ॥ ३ ॥

[ १६६ ]

राग आसा ।

करसां मैं सोई शृंगार नी, जिस विच पिया मेरे वश आवे । टेक ।

---

( २ ) शारीरिक माता यह चाहती है कि दुनिया रूपी व्यवहार में लगूं, मगर मेरे दिल रूपी तकले ( कला ) के चार वल पड़ गये है ( क्योंकि ईश्वर के प्रेम में मेरा चित्त लगा हुआ है ) इस वास्ते मैं कह रही हूँ कि रूई का कातना, व रूई की पूनियां (अर्थात् सांसारिक व्यवहार) तमाम भाड़ में पड़ें, और मैं तुम्हारे घर में ही नहीं आने लगी ।

( ३ ) जब संसारिक घर से बाहर निकल कर हम सब सहेलियाँ ( सखियाँ ) खेलने को जाने लगीं तो रास्ते में ( प्रेम का ) काँटा मुझे खेलते २ ऐसा चुभा कि घर बार ( दुनिया का सारा काम काज ) मुझे विसर ( भूल ) गया । इस वास्ते ( टेक )

पंक्तिवार अर्थ ।

टेक—अब मैं ऐसा शृंगार ( अपने अन्दर को साफ़ ) करूंगी कि जिससे मेरा पति ( ईश्वर ) मेरे वश में आजावे ।

जिस भूषण विच होवे न दूषन, सोई मेरे दरकार नी। जि० ॥१॥
गजरयां वंगां तों हुन संगां, कचा कच उतार नी। जि० ॥२॥
नामदा नामां, प्रेम दा धागा, पावां गल विच हारनी। जि० ॥३॥
पावांगी लच्छे, मैं निर्लज्जे, झांजर पियादा प्यार नी। जि० ॥४॥
सैह न सकदी मैं सौकन वैरण, झांजर दा छिकार नी। जि० ॥५॥

---

( १ ) जिस भूषण ( अन्दरूनी सजावट ) से कोई दोष न उत्पन्न हो, वही शृंगार ( ज़ेवर ) मैं चाहती हूँ, और वही पहेनूंगी ताकि मेरा ईश्वर ( पति ) मेरे वश में आवे।

( २ ) दुनियावी काँच की चूड़ी जो स्त्री लोग पहेनती हैं उन को पहेनने में मुझे लज्जा आती है। इस लिये मैं इस कच्चे काँच को उतार कर ( ऐसा कोई असली और सुदृढ भूषण पहेनती हूँ ) जिससे मेरा पति ( ईश्वर ) मेरे वश हो जावे।

( ३ ) ईश्वर-नाम का तो नामा ज़ेवर मैं पहेनूंगी, और उस भूषण में प्रेम रूपी धागा डालूंगी। ऐसा सुंदर हार बना कर मैं अपने गलेमें डालूँगीं जिससे मेरा प्यारा ( ईश्वर ) मेरे वश में आ जावे।

( ४ ) पावों में ऐसा लच्छे-रूप ज़ेवर, जो मेरी शर्म उतार दे, मैं पहेनूंगी कि जिस में पिया ( प्यारे ) के प्यार रूपी झाँजरे हों, ताकि मेरा पति ( ईश्वर ) मेरे वश में हो जावे।

( ५ ) मैं ही एक अकेली उसकी प्यारी होना चाहती हूँ, और उसकी दूसरी स्त्री ( सौकन ) देखना मैं स्वीकार नहीं कर सकती, और न किसी दूसरी स्त्री ( सौकन ) के ज़ेवर इत्यादि झाँजरों की झिंकर सुनना सहन कर सकती हूँ। ताकि पिया का मेरे पर ही प्यार हो और वह मेरे वश में ही आया हुआ हो।

[ १६७ ]

राग पीलू, ताल दीप चंदी।

ग़लत है कि दीदार[1] की आर्ज़ू[2] है।
ग़लत है कि मुझ को तेरी जुस्तजू[3] है॥
तेरा जल्वा[4] ऐ जल्वागर[5]! कुबकू[6] है।
हुज़ूरी है हर वक्त तू रूबरू है॥ १॥
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है॥ टेक॥

हर इक गुल में बू हो कि तू ही बसा है।
सदाहाये[7] बुलबुल में तेरी नवा[8] है॥
चमन फ़ैज़े-कुदरत[9] से तेरे हरा है।
बहारे-गुलिस्तां[10] में जल्वा तेरा है॥ २॥ जि०॥

नबातात[11] में तू नमू[12] है शजर[13] की।
जमादात[14] में आबरू[15] बहरो-बर[16] की॥
तू हैवां[17] में ताक़त है सैरो-सफ़र[18] की।
तू इन्सां में कुव्वत है नुतक़ो-नज़र[19] की॥ ३॥ जि०॥

---

१ दर्शन, २ इच्छा, ३ जिज्ञासा, खोज, ४ प्रकाश, तेज, ५ प्रकाशमान, ६ सर्व दिशा में, हर गली में, ७ आवाज़ों में, ८ गीत, सुर, ९ प्रकृति या माया की कृपा से, १० बाग़ की बहार में, ११ बनस्पति, १२ वृद्धि, पालन, पोषण, १३ वृक्ष, झाड़ी, १४ पाषाण, पत्थर, धातु, १५ चमक दमक, १६ पृथ्वी और समुद्र की, १७ पशुओं, १८ चलने फिरने, १९ बुद्धि और ज्ञान-चक्षु।

घटा तू ही उठता है घनघोर हो कर।
छुपा तू ही है वैहेर में शोर हो कर॥
निहा[1] तू हि तूफां में है ज़ोर होकर।
अयां[2] तू हि मौजों[3] में झकझोर हो कर॥ ४॥ जि०

तेरी है सदा[4] राद[5] में गर कड़क है।
तेरी है ज़िया[6] वर्क़[7] में गर चमक है॥
यह क़ौसे-क़ज़ह[8] ही में तेरी झलक है।
जवाहर के रंगों में तेरी डलक[9] है॥ ५॥ जि०

ज़मीं आस्मां तुझ से मामूर[10] हैं सब।
ज़मानो-मकां[11] तुझ से भरपूर हैं सब॥
तजल्ली[12] से कौनो-मकां[13] नूर हैं सब।
निगाहों में मेरी जहाँ तूर[14] हैं सब॥ ६॥ जि०

हसीनों[15] में तू हुस्नो नाज़ो-अदा[16] है।
तू उश्शाक़[17] में इश्क़ो-सिद्क़ो-सफ़ा[18] है॥
मिजाज़ो[19]-हक़ीक़त में जलवा तेरा है।
जहां जाइये एक तू रूनुमा[20] है॥ ७॥ जि०

---

१ छुपा हुआ, २ ज़ाहिर, व्यक्त, ३ लहरों, तरंगों, ४ आवाज, ५ बिजली की गर्ज, ६ रोशनी, ७ बिजली, ८ इन्द्र धनुष, ९ तेज, चमक, १० भरपूर, ११ देश, काल, १२ प्रकाश, तेज, १३ सब स्थान, १४ अग्नि के पर्वत से अभिप्राय है, १५ सुन्दर पुरुष, १६ सौन्दर्यता और नख़रा, हाव भाव १७ भक्त जन, १८ भक्ति व विश्वास, निश्चय और अन्तः करण की शुद्धि, १९ कक और पारमार्थिक प्रेम, २० सामने हाज़िर।

मकां तेरा हर एक ऐ लामकां[1] है।
निशां हर जगह तेरा ऐ बे निशां है॥
न खाली ज़िमीं है न खाली ज़मां[2] है।
कहीं तू निहां[3] है कहीं तू अयां[4] है॥ ८॥ जि०॥

तेरा लामकां नाम ज़ेबा[5] नहीं है।
मकां कौन सा है तू जिस जा[6] नहीं है
कहीं मासिवा[7] मैंने देखा नहीं है।
मुझे ग़ैर[8] का वेह्म होता नहीं है॥ ९॥ जि०

ज़मीं-ओ ज़मां नूर से हैं मुनव्वर[9]।
मकीं-ओ-मकां ज़ात के तेरे मज़्हर[10]॥
जहाँ में दिले-रास्ता[11] है तिरा घर।
इधर और उधर से मैं इस घर में आकर॥ १०॥ जि०

[ १६८ ]

राग गारा, ताल दादरा

हर आन में हर बात में हर ढँग में पहचान।
आशिक़ है तो दिल्बर को हर इक रंग में पहचान। टेक

तनहा न उसे अपने दिले-तंग में पहचान।
हर बाग़ में हर दश्त[12] में हर संग में पहचान॥

---

१ देश रहित, २ काल, ३ छिपा हुआ, ४ प्रकट, व्यक्त, ५ युक्त, उचित, ६ जगह, स्थान, ७ तेरे सिवाय दूसरा, ८ अन्य, ९ प्रकाशमान, १० तुझे ज़ाहिर करने वाले ११ सच्चे पुरुषों का दिल, १२ जंगल, बन।

बेरंग में बारंग में नैरंग[1] में पहचान।
　　हर ताल में हर राग में हर आहंग[2] में पहचान॥
नित रूम में और हिन्द में और जंग में पहचान।
　　आशिक़ है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान॥१॥

मंज़िल[3] में मुक़ामात[4] में फ़रसंग[5] में पहचान।
　　हर राह में हर साथ में हर संग में पहचान॥
हर अज़्म[6] इरादा में, हर उमंग में पहचान।
　　हर धूप में, हर सुलह में, हर जंग में पहचान॥
हर आन में, हर बात में, हर ढंग में पहचान।
　　आशिक़ है तो दिलबर को हर इक रंग में पहचान॥२॥

हँसता है कोई शाद[7] किसी का है बुरा हाल।
　　रोता है कोई होके ग़मो-दर्द में पामाल॥
नाचे है कोई शोख़[8] बजाता है कोई ताल।
　　पहने है कोई चीथड़े ओढ़े है कोई शाल[9]॥
करता है कोई नाज़[10] दिखाता है कोई माल।
　　जब ग़ौर से देखा तो उसी की है यह सब चाल॥३॥टेक॥

[ १६९ ]

राग भैरवी, ताल ग़ज़ल

कहा जो हमने, दर[11] से क्यों उठाते हो?
कहा कि इस लिये, तुम याँ जो ग़ुल[12] मचाते हो॥१॥

---

१ नाना रंग में, २ ध्वनि, ३ पड़ावो, ४ स्थानों में, ५ पत्थर, पाखान, ६ संकल्प, ७ प्रसन्न, ८ आकर्षक मूर्ति, ९ दुशाला, १० नाज़ नख़रा, ११ द्वारे, १२ शोर।

कहा लड़ाते हो क्यों हम से ग़ैरे[1] को हरदम।
कहा कि तुम भी तो हम से निगह[2] लड़ाते हो ॥ २ ॥

कहा जो हाले[3]-दिल अपना, तो उसने हंस हंस कर।
कहा ग़लत है यह बातें जो तुम बनाते हो ॥ ३ ॥

कहा जताते हो क्यों हमको हर रोज़[4] नाज़ो-अदा[5] ?
कहा तुम भी तो चाहत[6] हमें जताते हो ॥ ४ ॥

कहा कि अर्ज़ करें, हम पे जो गुज़रता है।
कहा ख़बर है हमें ! क्यों ज़बां पे लाते हो ॥ ५ ॥

कहा कि रूठे[7] हो क्यों हम से, क्या सबब इसका।
कहा सबब है यही, तुम जो दिल छुपाते हो ॥ ६ ॥

कहा कि हम नहीं आने के यहां, तो उसने नज़ीर[8]।
कहा कि सोचो तो क्या आप से तुम आते हो ॥ ७ ॥

[ १७० ]

राग बिहाग

टुक बूझ कौन छिप आया है ॥ टेक ॥

---

पंक्तिवार अर्थ।

ऐ प्यारे ! ज़रा सोच कि अन्दर अपने कौन छुपा हुआ बैठा है।

---

१ दूसरा अन्य, २ दृष्टि, नज़र, ३ अपने दिल का हाल, ४ प्रति दिन ५ नख़रे टख़रे, ६ इच्छा, ७ गुस्से, ८ कवि का नाम।

इक नुक़ते में जो फेर पड़ा, तब ऐन ग़ैन का नाम धरा।
जब नुक़ता दूर किया तब फिर, ऐनही ऐन कहाया है ॥१॥टुक०

तुसीं इलम कताबां पढ़दे हो, क्यों उलटे माने करदे हो।
बे मूजब[1] एवें लड़दे हो, केहा उलटा वेद पढ़ाया है ॥२॥ टुक०

दूई दूर करो कोई शोर नहीं,हिंदू तुरक सभी कोई होरे[2] नहीं।
सब साध लखो कोई चोर नहीं, घटघटमें आप समाया है ॥३॥टुक०

---

( १ ) एक बिन्दु से ऐन हरफ़ ग़ैन हो जाता ( या ख़ुदा से जुदा हो जाता है ) और जब बिन्दु हटा दे तो वही ऐन का ऐन ही रहता है। इससे तात्पर्य कवि का यह है कि ऐ प्यारे ! तू तो ईश्वर साफ़ शुद्ध अपने आप है, सिर्फ़ जब अज्ञान या मोह की बिन्दु ( पर्दा ) तू अपने पर लगा ( डाल ) लेता है, तो ईश्वर से बन्दा ( जीव ) बन जाता है।

( २ ) ऐ प्यारे ! तुम पुस्तक पोथे बहुत पढ़ते हो और मुफ़त में आपस में बहुत झगड़ते हो ( क्योंकि जितना हम बहिर्मुख झगड़े लड़ाई अथवा अध्ययन में लगे हैं उतना ही हम अपने असली स्वरुप से वे मुख बैठे हुए हैं ), इस वास्ते ऐसे उलटे काम तू क्यों कर रहा है और ऐसी उलटी पढ़ाई क्यों पढ़ रहा है।

( ३ ) यह द्वैत तू दूर कर, तुझसे भिन्न कोई हिंदू तुर्क अन्य नहीं है, मुफ़्त में शोर मत कर क्योंकि यह सब तू ही आप है, और सब को साध ( उत्तम ) देख, क्योंकि तू ही उन सब के घट में ( दिल के अन्दर ) बस रहा है।

---

१ बिना कारण, २ अन्य, दूसरा।

ना मैं मुल्ला ना मैं क़ाज़ी, ना मैं शेख, सय्यद न हाजी।
बुल्हया शौह नाल लाई बाज़ी, अनहद[2] शब्द कहाया है। टुक॰

[ १७१ ]

काफ़ी

इश्क़ दी नवीं ओं नवीं बहार ( टेक )

जां[3] मैं सबक[4] इश्क़ दा पढ़िया।
मसजद कोलों ज्योड़ा[5] डरिया॥
डेरे जा ठाकुर दे वड़िया।
जित्थे वजदे नाद हज़ार॥ १॥ इश्क़ दी...

जां मैं रमज़ इश्क़ दी पाई।
मैना तोती मार गवाई॥
अन्दरों बाहिर होइ सफ़ाई।
जितवल[6] देखां यारो यार॥ २॥ इश्क़ दी...

---

( ४ ) बुल्लाह कवि कहता है कि न मैं अकेला मुल्ला हूँ, न क़ाजी हूँ, और न सय्यद ( मुसलमानों का पीर ) और हाज़ी हूँ, बल्कि मैं ने अपने यार ( आत्म-स्वरूप ) के साथ बाज़ी ( शर्त ) लगाई हुई है ( कि मैं तेरा या तू हूँ, और तू मेरा या मैं है ), ऐसे अनहद शब्द भी कह रहा है।

---

१ यात्री ( यात्रा करने वाला ) २ प्रणव, ओं, ३ जब, ४ पाठ, ५ चित्त, जीव, ६ जिधर।

हीर[1] रांझे दे हो गये मेले[2]।
भुल्ली हीर ढूण्डेन्दी वेले ॥
रांझा यार बुक्कल[3] विच खेले।
सुद्ध न रही और सुरत संभाल ॥ ३ ॥ इश्क़ दी...

वेद कुरान पढ़ पढ़ थक्के।
सजदियां करदियां घिस गये मत्थे ॥
नां[4] रब[5] तीर्थ ना रब मक्के।
जिन पाया तिस नूर[6] जमाल ॥ ४ ॥ इश्क़ दी...

फूक मसले ते[7] भुन्न सुट लोटा।
न फड़ तसबीह आसा सोटा ॥
आशक़ कहंदे दे दे होका।
तरक हलालों[8] खा मुरदार ॥ ५ ॥ इश्क़ दी...

उम्र गंवाई विच मसीतीं।
अन्दर भरया नाल पलीती[9] ॥
कदे नमाज़ वहदत[10] न कीती।
हुन[11] की करना है शोर पुकार ॥ ६ ॥ इश्क़ दी...

इश्क़ भुलाया सजदह[12] तेरा।
हुन क्यों एवें पावें झेड़ा ॥

---

१ एक प्रेमी और प्रीतम का नाम, २ मुलाकात, मिलाप, ३ बगल, ४ नहीं, ५ ईश्वर, ६ प्रकाश स्वरूप, ७ और, ८ जो पशु मुसलमान लोग छुरे से वहमें के साथ अहिस्ता २ काटते हैं, उसे हलाल कहते हैं, ऐसे मारे हुए पशु को छोड़ने और मन को मार कर खाने की शिक्षा यहाँ दी है, ९ मलिन, १० अद्वैत, ११ अब, १२ संध्योपासना वा नमाज़ादि।

बुल्लाह हुन्दा चुप वतेरा।
पर इश्क़ करेन्दा मारो मार ॥ ७ ॥ इश्क़ दी…

[ १७२ ]

काफ़ी

कहो परदा किस तों राखीदा। } टेक
क्यों ओहले[1] बैह बैह झाकीदा ॥

पहिलां आपे साजन साजी दा।
हुन[3] दसदा[4] हैं सबक़ नमाज़ी दा ॥
हुन आया आप नज़ारें नूँ।
विच लैला बन बन झाकीदा ॥ १ ॥ कहो…

शाह शमस[5] दी खल्ल लहायो।
मंसूर[6] नूँ चा सूली दवायो ॥
ज़करिये[7] सर कलवत्तर[8] धरायो।
की लेखा रहया बाक़ी दा ॥ २ ॥ कहो०

हुन साडे[9] वल्ल धाया है।
न रहन्दा छुपा छुपाया है ॥
किते बुल्लाह नाम धराया।
विच ओहला रखया ख़ाकी[10] दा ॥ ३ ॥ कहो०

---

१ कवि का नाम, २ ओट में, ३ अब, ४ बताता है, ५ नाम एक मस्त का, ६ नाम है, ७ नाम है, ८ आरा से सिर कटवायों, ९ हमारी ओर, १० पंच भौतिक देह।

[ १७३ ]

काफ़ी

हुन किस थीं आप छुपाई दा, हुन किस थीं आप छुपाई दा। (टेक)

किते[1] मुल्लाँ हो बुलेंदे हो, किते सन्त फ़र्ज़ा दिसेन्दे हो।
किते राम दोहाई दंदे हो, किते माथे तिलक लगाई दा ॥१॥ हुन०

'मैं' मेरी है कि तेरी है, पर अन्त भस्म की ढेरी है।
ढेरी भस्म की खेरी है, ढेरी नूँ ,नाच नचाई दा ॥२॥ हुन०

किते वेसर चूड़ा पाई दा, किते जोड़ा शान हंडाई दा।
किते आदमहव्वा बनआईदा, किते मैथों भी भुल जाईदा ॥३॥ हुन०

बाहर जाहर डेरा पायो, आपे ढों ढों ढोल बजायो।
जग ते अपना आप लखायो, फिर अबदुल्ला दे घर धाईदा ॥४॥ हुन०

जो याद तुसाँदी करदा है, ओह मोयाँ तो अग्गे मरदा है।
ओह मोया भी तैथों डरदा है, मत मोयाँ नूँ मार खाई दा ॥५॥ हुन०

विंद्रावन में गऊ चरावें, लंका चढ़ के नाद बजावें।
मक्के दा बन हाजी आवें, वाह वा रंग वटाई दा ॥६॥ हुन०

मंसूर तुसाँ वलें[3] आया है, तुसीं सूली पकड़ दवाया है।
मेरा वीर[4] न बावलें[5] जाया है, तुसीं खून देयो मेरे भाई दा ॥७॥ हुन०

---

१ कहीं, २ समझायो, दर्शायो, पहचान करायी, ३ तुम्हारी तरफ़, ४ भाई, ५ बया पिता का पुत्र।

बुल्लाह शौ हुनेसहीसंझातेहो, हर सूरत नाल पछाते हो।
कितेआतेहो किते जातेहो, हुन मैथों भुल न जाईंदा ॥८॥ हुन०

[ १७४ ]

काफ़ी

इलमों बस करीं ओ यार। इक्को अलफ तेरे दरकार। ( टेक )

इलम न आवे विच शुमार इक्को अलफ़ तेरे दरकार।
जाँदी उम्र नहीं इतबार इलमों बस करी ओ यार ॥१॥ इक्के०

पढ़ पढ़ इलम लगावें ढेर क़ुरान किताबाँ चार[3] चोफेर।
कर दे चानन विच अन्हेरे[4] बाझों रहबर खबर न सार ॥२॥इक्के०

पढ़ पढ़ शेख मशायख होया भर भर पेट नींद भर सोया।
जान्दी वार नैन भर रोया डूबा विच उरार[5] न पार ॥३॥ इलमों०

पढ़ पढ़ इलम होया बोराना[6] बे इलमाँ नूँ लुट लुट खाना।
यह की कीता यार! बहाना करें नाहीं कदे इन्कार ॥४॥ इलमों०

पढ़पढ़ नकल नमाज़ गुज़ारे उचियाँ बाँगा, चाँगा मारें।
मिम्बर चढ़ के वाज़ पुकारें तैनूं कीता हिरसँ ख़्वार ॥५॥ इलमों०

पढ़ पढ़ मुल्लाँ होये क़ाज़ी अल्लाह इलमाँ बाझों[8] राज़ी।
होवे हिरस दिनों दिन ताज़ी नफ़ा नीयत विच गुज़ार ॥६॥इलमों०

---

१ कवि का नाम, २ अब, ३ चारों तरफ़, ४ अन्धेरा, ५ वार न पार, ६ पण्डित, ७ लालच, तृष्णा ८ बिना।

पढ़ पढ़ मुसल्ले रोज़ सुनावें खानां शक शुभा दा खावें।
दस्सें[1] होर, ते होर कमावें अंदर खोट बाहिर सच्यार॥७ इल्मों०

पढ़ पढ़ इल्म नजूम विचारे गिनदा रासां बुरज सितारे।
पढ़े अज़ीमतां[3], मंत्र झाड़े अवजद[4] गिने तावीज़ शुमार॥८इल्मों०

इल्मों पये कज़िये होर अखीं वाले अन्धे कोर।
फड़े साध ते छोड़े चोर दोहीं जहानीं होया ख्वार॥ ९ इल्मों०

इल्मों पये हज़ारों फसते राही[5] अटक रहे विच रस्ते।
मारया वजू होया दिल खस्ते पिया[6] विछोड़ेदा सर भार॥१०इल्मों०

इल्मों मियां जी कहावें तम्बा चुकें[7] चुक मंडी जावें।
धेला ले के छुरी चलावें नालें कसाइयां बहुत प्यार॥११इल्मों०

बहुता इल्म अज़ाज़ील[8] पढ़या झुग्गा झांजा उस दा सड़या।
गल विच तौक़[10] लानतदा पढ़या आखिर गया वह बाज़ी हार॥१२इल्मों

जद मैं सवक़ इश्क़[11] दा पढ़या दरया देख वहदत[12] दा डरया।
घुम्मन घेरां दे विच अड़या शाह अनायत[13] कीता पार॥१३॥इल्मों०

[ १७५ ]

काफ़ी

लैली इश्क़ लिया दरगाहों, कपड़े मूल न धोये॥ १॥

---

पंक्तिवार अर्थ

(१) लैलीके भाग्यमें प्रेम था, इसनिमित्त उसे कपड़े धोने व रंगनेनहीं पड़े।

---

१ बतावें, २ अन्य, ३ टोना, यंत्र, ४ अ, इ, क, ख, ५ मार्ग चलने वाले, ६ प्यारे का बिरह, ७ उठा उठा कर, ८ साथ, ९ नाम, १० जन्जीर, ११ पाठ, १२ अद्वैत, १३ बुल्लाह के गुरु का नाम।

रांझन रांझन हीर कुकेन्दी, नैन अंझू भर रोये ॥ २ ॥
गिरधर कह कह मीरां लुट्टी, राना राज दोनों ही खोये ॥ ३ ॥
शीरीं टुट्ट महलों मोई, पते राह सज्जन दे होये ॥ ४ ॥
एदों वध्र करो ते अच्छी, साधो ! रन्नाँ जेहे तो होये ॥ ५ ॥

[ १७६ ]

ग़ज़ल

वही एक शोलह[1] है, तुरबत[2] भी है, और शमा-ए-तुरबत[3] भी।
मज़ा मरने का कुछ परवानहे-आतश[4] बजां तक है ॥ १ ॥

---

( २ ) हीर ( स्त्री ) अपने प्यारे रांझे के लिये नेत्रों से अश्रुपात करते हुए स्थान स्थान कूकती फिरी ;

( ३ ) गिरिधर कहते कहते मीराँ ( स्त्री ) ने अपना पति ( राजा ) और राज्य दोनों ही खो दिये।

( ४ ) शीरीं ( स्त्री ) अपने प्यारे फरहाद के लिये महल पर से गिर कर मर गई। इतने मार्ग अपने प्यारे के पाने में उक्त स्त्रियों ने बर्ते।

( ५ ) इस से बढ़ कर यदि आप मनुष्य लोग करो तो उत्तम, अन्यथा स्त्रियों के समान तो ऐ साधो ! तुम होवो।

पंक्तिवार अर्थ।

( १ ) वही ( निज स्वरूप ) इस देह रूपी क़बर में ज्योति है, वही यह देह रूपी क़बर भी है, और वही इस क़बर पर दीपक भी है। पर इस ज्योति पर नौछावर होने का स्वाद अग्नि पर प्राण देने वाले परवाने ( पतंगा ) तक ही है। अर्थात् मन को इस ज्योति पर नौछावर वही कर सकता है और वही आनन्द इस यज्ञ से लूट सकता है कि जिसका मन उसके प्रेम में पतङ्ग के समान हो गया है।

---

१ लाट, २ क़बर, ३ क़बर का दीपक, ४ आग पर प्राण देने वाला परवाना।

न सीखी तू ने मुर्गे-रंगे[1]-गुल से रमज़े-आज़ादी।
यह क़ैदे-बोस्तां[2] बुलबुल! ख़्याले-आशयां[3] तक है॥ २॥

चमन[4] अफ़रोज़ है सय्याद[5]! मेरी ख़ुशनवाई[6] तक।
रही बिजली की बेताबी, सो मेरे आश्यां तक है॥ ३॥

---

(२). पुष्प के अति प्यारे पक्षी (बुलबुल) से तूने स्वतन्त्रता का रहस्य नहीं सीखा है। वह रहस्य यह है कि बुलबुल बाग़ में क़ैद तब तक होती है जब तक उसे अपना घर (घोंसला) भूले रहता है। घोंसले का ख़याल आते ही बाग़ उससे छूट जाता है, और बाग़ की क़ैद से स्वतन्त्र हो कर वह निज घर में स्थित होती है। इसी प्रकार प्राणी तब तक इस नाम रूप उपाधि में क़ैद रहता है, जब तक वह निज धाम को भूले हुए है। निज धाम वा निज स्वरूप में स्थित होते ही वह इन सब क़ैदों से मुक्त हो जाता है।

(३) बुलबुल कहती है कि ऐ शिकारी (पारधी)! यह बाग़ तो मेरी ख़ुश आवाज़ तक दीप्तमान है। मेरी आवाज़ के बन्द होने पर बाग़ की रौनक़ भी बन्द हो जाती है। और बिजली की बेक़रारी भी मेरे घोंसले तक है। अर्थात् यह पंच भौतिक जगत तो मेरे ही आनन्द से अच्छा लग रहा है। मेरे भीतरी आनन्द के लुप्त होते ही यह जगत भी दुःखरूप हो जाता है। और जब तक निज धाम में स्थिति नहीं होती, तब तक ही विषय-आनन्द की बिजली चमकती रहती है।

---

१ पुष्प के पक्षी (बुलबुल), २ बाग़ की क़ैद, ३ घर के ख़्याल तक, ४ बाग़ रौशन है, ५ शिकारी, ६ मेरी उत्तम आवाज़ पर।

वह मुश्के-खाक हूँ फ़ैज़े परेशानी से सहरा[1] हूँ।
न पूछो मेरी वुसअत[2] की ज़मीं से आस्माँ तक है ॥ ४ ॥
जरस[3] हूँ मैं सदा[4], ख़्वाबीदह[5] है मेरे रगो-पै[6] में।
यह ख़ामोशी मेरी वक़्ते रहीले[7] क़ारवाँ तक है ॥ ५ ॥
सकूने[8] दिल से सामाने-कशूद[9]-कार पैदा कर।
कि उक़्दह[10] ख़ातिरे-गिरदाब[11] का आबे[12]-रवाँ तक है ॥ ६ ॥

(४) मैं वह सूक्ष्म गंध हूँ कि जो एक स्थान में किसी से कैद नहीं हो सकती, बल्कि इसी अत्यन्त सूक्ष्मता और स्वतन्त्रता के कारण मैं गन्धवत् सारे वन में फैला हुआ हूँ। और मेरे फैलने वा मेरी व्यापकता की सीमा केवल जङ्गल तक ही अन्त नहीं होती और न यह पूछो कि इस संसार में मैं कहाँ तक फैला हुआ हूँ, क्योंकि पृथिवी से आकाश तक सर्वत्र मैं ही फैला हुआ (व्यापक) हूँ। अर्थात् यह आत्मा चाहे वह इस मिट्टी के पुतले (भौतिक शरीर) का आत्मा कहलाता है, पर वह केवल इसीका ही आत्मा नहीं है बल्कि इस शरीर के रोमरोम में व्यापक होता हुआ भी अन्य सब शरीरों का आत्मा है, अपनी सूक्ष्मता और अपरिच्छिन्नता वा स्वतंत्रता के कारण वह सारे जगत में फैला हुआ है, इसलिए उसकी सीमा न पूछी जासकती है और न कही जासकती है कि वह कहाँसे कहाँतक है।

(५) मैं स्वयं घन्टा (नाद) हूँ और मेरे नस नाड़ी में उसकी आवाज़ सोई हुई है। और यह ख़ामोशी मेरे प्राण रूपी काफले (समुदाय) की कूच (उत्क्रान्ति) तक है। अर्थात् जब तक मन प्राणादि उपाधियों में आसक्त वा अधीन हुआ है। तब तक निज नाद की आवाज़ सुनाई नहीं देती। तब तक प्राण देह के भीतरही धड़कते हुए रहते है। जब यह समुदाय देहत्याग कर चलने लगता है तब वह प्राणध्वनि बाहिर निकलती दिखाई देती है।

(६) चित्त की स्थिरता से आत्म-साक्षात्कार का साधन उत्पन्न कर, अर्थात् स्थिर चित्त से साक्षात्कार कर, क्योंकि (घूमन घेर) के भीतर की ग्रन्थि तब तक बनी रहती है जब तक कि पानी चलता रहता है। बहाओ के बन्द हो जाने पर भँवर भी स्वतः बन्द हो जाता है।

१ जङ्गल, २ सीमा, ३ घन्टा, ४ अवाज़, ५ सोई हुई, ६ नस नाड़ी में, ७ काफले की कूच तक, ८ चित्त की शांति वा स्थिरता से, ९ साक्षात्कार का सामान, १० रहस्य, ११ भँवर, १२ पानी के चलने तक।

नहीं मिन्नत पज़ीरे-चश्म, रोना शमा-ए-सोज़ा का।
समझ ग़ाफ़िल ! गुदाज़-दिल में आज़ादी कहां तक है॥ ७ ॥

जवानी है तो ज़ौक़े-आरज़ू भी लुतफ़े-अरमां भी।
हमारे घर की आबादी क़यामे-मेहमाँ[3] तक है ॥ ८ ॥

[ १७७ ]

राग खमाज, ताल दादरा

एक ही सागर में कुछ ऐसा पिला दे साक़ियाँ।
बे खबर दुन्या व दीन से तेरा मतवाला तो हो ॥ १ ॥

हाथ खाली मरदुमे[6]-दीदह बुतों से क्या मिलें।
मोतियों की पञ्जहे-मयगाँ[7] में इक माला तो हो ॥ २ ॥

---

( ७ ) जलते दीपकका रोना अर्थात् पिघलना वा चमकना नेत्र पर उसकी कृतज्ञता नहीं है। ऐ अज्ञानी ! तू समझ कि दिल के पिघलने की सीमा कहाँ तक है। अर्थात् दिल के पिघलते पिघलते यदि आत्म-साक्षात्कार हो जाय तो उसका पिघलना सफल,अन्यथा कितनाही क्यों न पिघले, वह सब निष्फल है; ऐसेही नेत्र खुले हों तो दीपक का जलना सफल,अ यथा सब निष्फलहै।

( ८ ) अगर जवानी ( यौवन ) है तो उसके मिलाप की इच्छा का स्वाद भी है और उमंग का आनन्द भी है,और जीव रूपी अतिथिके रहने तक ही हमारे इस देह रूपी घर की आबादी है।

पंक्तिवार अर्थ।

( १ ) ऐ सद्गुरो ! एक ही प्याले में अर्थात् एक ही वाक्य में मुझे आप ऐसा प्रेमरस वा ज्ञानरस पिला दें कि जिस के पी जाने से दीन दुनिया से तो बेख़बर हो जाऊँ और केवल आप का मतवाला हो जाऊँ।

( २ ) खुले नेत्र वालों ( ज्ञान वानों ) से खाली हाथ भला कैसे मिलें, पहिले नेत्रों की पलकों के पञ्जेमें अश्रुरूपी मोतियों की एक सुंदर माला तो पास हो। अर्थात् पहिले नेत्रों में प्रेम वा भक्ति के अश्रुरूपी मोती तो टपकते हों।

---

१ नेत्र की कृतज्ञता, २ जलते दीपक का रोना, ३ अतिथि के रहने तक, ४ प्याला, ५ प्रेम रूपी मदिरा पिलाने वाला, सद्गुरु, ६ खुले नेत्र वाले अर्थात् अनुभवी पुरुष ( ज्ञानवान् ), ७ नेत्रों के पलकों के हाथ में।

नाखुने-ख़ार आके ख़ुद उक़दह[1] तिरा कर देगा वा[2]।
पहिले पाए-शौक़[3] में पैदा कोई छाला तो हो ॥ ३ ॥

[ १७८ ]

राग देश, ताल तीन

देखा न शब[4] जो यार को नूरे-ज़्यां[5] से कार क्या।
मुरदह की क़बरे-तार[6] पै आबो[7]-गियाह से कार[8] क्या ॥ १ ॥

अच्छी है आहे-सर्द ही, ख़ूब है रंगे-ज़र्द ही।
ठीक है दिल में दर्द ही, हम को दवा से कार क्या ॥ २ ॥

---

( ३ ) पाँव का काँटा निकालने का जो नाखुनगीर होता है ऐसा नाखुन रूपी गुरु स्वयं आकर तेरे हृदय की ग्रन्थी खोल देगा। परन्तु पहिले तेरे जिज्ञासा रूपी पाँव में कोई छाला (तीव्र इच्छा) तो हो जिसके दूर करने के लिए काँटे की ज़रूरत पड़ती है।

पंक्तिवार अर्थ।

( १ ) रात को जब अपना प्यारा नहीं देखा तो प्रकाश की ज्योति या दिन के प्रकाश से क्या मतलब ? अर्थात् जब इस अज्ञान रूपी माया के परदे में अपना स्वरुप अनुभव नहीं कर सके, तो यह भौतिक प्रकाश किस काम का ? और इसी प्रकार मरे हुए प्राणी की अन्धेरी क़बर ( समाधि ) पर जल और घास किस काम का ?

( २ ) उस ( निजस्वरूप) के देखने के लिये जो चित्त से सर्द ध.हैं उठ रहीं हैं वे उत्तम हैं, जो रंग पीला पड़ रहा है वह अच्छा है, और दिलमें जो पीड़ा उठ रहा है वह सब ठीक है। ऐसी दशा में औषधि से क्या प्रयोजन ?

---

१ हृदय-ग्रन्थि, रहस्य, २ खोल देगा, ३ जिज्ञासा रूपी पाँव में ४ रात, ५ दिन का प्रकाश या प्रकाश की ज्योति; ६ अन्धेरी क़ब्र, ७ जल-घास, ८ क्या मतलब ।

चाहे कोई भला कहे, ख्वाह पड़ा बुरा कहे।
पल्ला छुटा जो जिस्म से, बीमो-रजा[1] से कार क्या ॥ ३ ॥

अहमक़े[2]-कोर ही को है, उलफ़ते-मासिवाये[3]-हक़ ।
काबा ए-दिल[4] में यह ज़िनो![5] बूए-वफ़ा से कार क्या ॥ ४ ॥

नेकी बदी खुशी ग़मी ज़ीनह[6] थीं बामे-यार[7] का।
ज़ीनह जिलादो अब यहाँ पाँयों-बिया[8] से कार क्या ॥ ५ ॥

इतना लिहाज़ कर लिया, दुनिया तिरा परे भी हट।
नाचूँ हूँ साथ राम के शर्मो-हया से कार क्या ॥ ६ ॥

---

( ३ ) चाहे कोई अच्छा कहे और चाहे कोई बुरा कहे। इस शरीर से हमारा सम्बन्ध वा पल्ला जब छूट गया तो अब भय और आशा से क्या मतलब ?

( ४ ) आत्म-ज्ञान से विमुख वा भीतरी-नेत्र-विहीन ( ऐसे अन्धे ) को ही अपने प्यारे से इतर अर्थात् अनात्म पदार्थों से प्रीति होती है, हाय ! हृदय रूपी मन्दिर में यह व्यभिचार, ऐसे व्यभिचारी को वफ़ा की-गन्ध ( प्रतिज्ञा पूर्ति ) से क्या मतलब ?

( ५ ) पुण्य-पाप, सुख-दुःख, ये सब अपने प्यारे ( स्वरूप ) की छत पर चढ़ने की सीढ़ी थे। पर इस सीढ़ी को जला दो, क्योंकि आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में ऐसी सीढ़ी से क्या प्रयोजन ? अथवा जब साक्षात्कार हो गया तो उस अवस्था से नीचे उतारने वाली सीढ़ी से अब क्या मतलब ?

( ६ ) ऐ दुनिया ! तेरा इतना लिहाज़ ( सन्मान ) तो कर लिया, अर्थात् हम से परे हट। अब तो हम अपने प्यारे ( राम ) के साथ नाच रहे हैं, अब संसार की लज्जा और अपयश से क्या मतलब ?

---

१ भय और आशा, २ अन्धे व अज्ञानी को, ३ अनात्म पदार्थ से प्रीति, ४ हृदय रूपी मन्दिर, ५ व्यभिचार, ६ सीढ़ी, ७ अपने प्यारे की छत पर चढ़ने की, ८ पौड़ियाँ से या सीढ़ी से क्या मतलब।

[ १७९ ]

राग पहाड़ी, ताल चलन्त

फनाह[1] है सब के लिये मुझ पे कुछ नहीं मौक़ूफ़।
यही है फ़िक्र कि अकेला रहेगा तू बाक़ी ॥ १ ॥

कूएं में क़ैद हुए जबकि हज़रते-यूसुफ़।
रही न इश्क़ मजाज़ी की आबरू बाक़ी ॥ २ ॥

ज़बह[2] करे है परों को तो खोल दे सय्याद[3]।
कि रह न जाय तड़पने की आर्ज़ू बाक़ी ॥ ३ ॥

गले लिपट के जो सोया वह रात को गुलरू[4]।
तो भीनी भीनी महीनों रही है बू बाक़ी ॥ ४ ॥

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाक़ी।
रुके न हाथ है जब तक रगे[5]-गलू बाक़ी ॥ ५ ॥

[ १८० ]

करनी का ढंग निराला है, करनी का ढंग निराला है। टेक।
कोई दिगम्बर, कोई पीतम्बर, कोई पहने शाल दुशाला है ॥

---

१ नाश, अन्त, २ क़तल करना, हलाल करना, मारना, ३ शिकारी, यहाँ प्रीतम प्यारे से मतलब है, ४ पुष्पवत् सुन्दर प्यारा, ५ गले की रग व नाड़ी।

कोई अवधूत, कोई संन्यासी, कोई गडुरिया ग्वाला है।
कोई अन्धा कोई लूला लंगड़ा, कोई गोरा कोई काला है॥

कोई भूखा प्यासा व्याकुल है, कोई मद पी पी मतवाला है।
कोई मदकी भंगी चरसी है, कोई पीवे प्रेम-प्याला है॥

जब तक फिरे न मन का मनका, क्या तसबीह क्या माला है।
निस दिन भजे जो हरि को 'अमीचंद', सोई करनी वाला है॥

[ १८१ ]

प्रभु ! तुम कैसे दीन दयाल ( टेक )

मीन रहे पानी के भीतर, पशु फिरें धरती के ऊपर।
पक्षी उड़ें हवा के अन्दर, सब के तुम रखवाल॥ १॥

अजगर नहीं किसी के चाकर, पंछी काम करें नहीं मिल कर।
मनुष्य जाति का तुम पर निर्भर, सब के तुम प्रति पाल॥ २॥

चार पदारथ के तुम दायक, प्रतिपालक, सब विधि सहायक।
हे स्वामी नायकन के नायक ! तुम सम कौन कृपाल॥ ३॥

दया दृष्टि करुणा निधि कीजे, माया मोह कपट हर लीजे।
भक्ति दान मेहर को दीजे, होय अत्यन्त निहाल॥ ४॥

[ १८२ ]

राग मारू ( महल्ला ९ )

हरि को नाम सदा सुख दाई। ( टेक )
जा को सिमर अजामल उधरयो[1], गणिका[2] हूँ गति पाई ॥ १ ॥

पंचाली[3] को राज सभा में राम नाम सुधि आई।
ताको दुःख हरयो करुणामय, अपनी पैज[4] वढ़ाई ॥ २ ॥

जे नर यश-कृपा-निधि गायो, ता को भयो सहाई।
कहो नानक मैं यही भरोसे, गही[5] आन शरणाई ॥ ३ ॥

[ १८३ ]

राग कानड़ा ( महल्ला ५ )

बिसर गई सब तातँ पराई, जब ते साधसंगत मैं पाई ॥ १ ॥
ना कोई बैरी, नहीं बेगाना, सकल संग हम को बन आई ॥ २ ॥
जो प्रभु कीनो, सो भलँ मान्यो, यह सुमति साधु ते पाई ॥ ३ ॥
सब में रम रहया प्रभु एके, पेख पेख नानक बिगसाई[6] ॥ ४ ॥

[ १८४ ]

राग सारंग ( मुहल्ला ५ )

ठाकुर तुम शरणाई आया ( टेक )
उतर गया मेरे मन का संशय, जब से दर्शन पाया ॥ १ ॥

---

१ कल्याण को प्राप्त हुआ, तरा, २ वेश्या का नाम, ३ द्रौपदी, ४ कीर्ति महिमा, ५ पकड़ी, ग्रहण की, ६ उस प्रभु की, ७ इच्छा पराई, ८ भला, अच्छा, ९ आनन्द हुआ।

अन बोलत मेरी बिरथा[1] जानी, अपना नाम जपाया।
दुःख नाठे[2] सुख सहज समाये,अनन्द अनन्द गुणगाया ॥२॥

बाँह पकड़ कढ़ लीनो अपने, गृह अन्ध कूप से माया।
कहो नानक गुरु बन्धन काटे, बिछरत आन मिलाया ॥ ३ ॥

[ १८५ ]

राग बसन्त ( महल्ला ६ )

माई ! मैं धन पायो हरि नाम ( टेक )
मन मेरो धावन[3] से छूटियो, कर बैठो विश्राम ॥ १ ॥

माया ममता तन से भागी, उपज्यो निर्मल ज्ञान।
लोभ मोह यह परस[4] न साके, गही[5] भक्ति भगवान ॥ २ ॥

जन्म जन्म का संशय चूका, रत्न नाम जब पाया।
तृष्णा सकल[6] बिनासी मन से, निज सुखमाँहि समाया ॥३॥

जाको होत दयाल कृपा निधि,सो गोबिंद गुण गावे।
कहो नानक यह विधि[7] की संपे[8], कोऊ गुरमुख पावे ॥ ५ ॥

[ १८६ ]

राग बिलावल (महल्ला ५)

प्रभुजी तू मेरे प्राण अधार[9] ( टेक )
नमस्कार डन्डौत बंदना, अनिक[10] बार जाऊ[11] वारे ॥ १ ॥

---

१ दशा, २ भागे, ३ दौड़ने, भटकने, ४ स्पर्श न कर सके, ५ ग्रहण की, ६सारी, ७ इस प्रकार की, ८ सम्पत्ति, ९ प्राण का आधार, १० अनेक बार।

ऊठत बैठत सोवत जागत, यह मन तुझे चितारे[1]।
सुख दुःख इस मन की बिरथा[2] तुझ ही आगे सारे[3] ॥ २ ॥

तू मेरी ओट[4] बल बुध धन तुम्ही, तुम ही मेरे परवारे।
जो तुम करो सोई भले[5] हमरे, पेखे[6] नानक सुख चरणारे[7] ॥३॥

[ १८७ ]

राग सूही ( महल्ला ४ )

कोई आन मिलावे जी, मेरा प्रीतम प्यारा।
हौं[8] तिस पै आप वचाई[9] ॥
दर्शन हरि-देखन के ताईं ॥ १ ॥ ( टेक )

कृपा करे ताँ सतगुरु मेले ॥
हर हर नाम ध्याई ॥ २ ॥

जे सुख दे ताँ तुझे अराधीं।
दुःख भी तुझे ध्याई ॥ ३ ॥

जे भुख दे ताँ इत[10] ही राज़ी।
दुःख विच सुख मनाई ॥ ४ ॥

तन मन काट काट सब अर्पी।
विच अग्नि आप जलाई ॥ ५ ॥

---

१ चिन्तन करता रहे, २ कहानी, गाथा दशा, ३ खोले, सुनावे, ४ आश्रय ५ भला, कल्याण, ६ देख, ७ तुम्हारे चरणों में, ८ मैं, ९ अर्पण करूँ, १० इसमें भी।

खा फेरी, पानी ढोवाँ[1] ।
जो देवें सो खाई ॥ ६ ॥

नानक गरीब ढह[2] पया द्वारे ।
हरि मेल लेहो, वड़ियाई[3] ॥ ७ ॥

[ १८८ ]

( महल्ला ९ )

चित्त चरण कमल का आश्रा, चित्त चरण कमल संग जोड़िये ।
मन लोचे[4] बुरिआइयाँ, गुरुशब्दी यह मन होड़िये[5] ॥

बांह[6] जिन्हां दी पकड़िये, सिर दीजे बाँह न छोड़िये ।
गुरु तेगबहादर बोलिया, धर पैये धर्म न छोड़िये ॥

[ १८९ ]

राग रामकली (महल्ला ९)

साधो ! कौन जुगत[8] अब कीजे । ( टेक )
जाते[9] दुर्मति सकल विनासे, राम भक्ति मन भीजे[10] ॥ १ ॥

मन माया में उरझ रह्यो है, बूझे ना कछु ज्ञाना ।
कौन नाम जग[11] जाके[12] सिमरे, पावे पद निरवाना ॥ २ ॥

---

१ पानी भरूँ, २ गिर पड़ा, ३ महानता, ४ सोचे, देखे, ५ लगाइये, ६ सिर, ७ अर्पण करें, गिर पड़े, ८ युक्ति, उपाय, ९ जिससे, १० मन भीग जाय अर्थात् भक्तिमय हो जाव, ११ जगत, १२ जिसके ।

भये दयाल कृपाल सन्त जन, तब, यह बात बताई।
सर्व धर्म मानो तैंहि कीये, जहिं प्रभु कीर्ति गाई॥ ३॥

राम नाम नर निशि बासुर[1] में, निमष[2] एक उरधारे[3]।
जम को त्रास[4] मिटे नानक तैंहि[5], अपनो जन्म संघारे॥ ४॥

[ १९० ]

राग सोरठ ( महल्ला ९ )

प्राणी! कौन उपाय करे। ( टेक )
जाते[6] भक्ति राम की पावे, जम को त्रास[7] हरे॥ १॥

कौन कर्म, विद्या कहो कैसी, धर्म कौन पुनि करे।
कौन नाम गुरु जाके सिमरे, भव सागर को तरे॥ २॥

कलु[8] में एक नाम कृपा निधि, जाँहि जपे गति पावे।
और धर्म ताके सम नाहि, यह विधि वेद बतावे॥ ३॥

सुख दुःख रहत सदा निर्लेपी, जा को कहत गुसाई[1]।
सो तुम ही में बसे निरन्तर, नानक दर्पण न्याई[2]॥ ४॥

[ १९१ ]

हरि की गति नहीं कोई जाने। ( टेक )
योगी, यती, तपी, पच हारे, अरु बहु लोग स्याने॥ १॥

---

१ दिनरात, २ पलक मात्र. ३ हृदय में धारण करे. ४ भय. ५ चमत्कार. ६ जिससे, ७ भय, ८ कलियुग

अपनी माया आप पसारे, आपे देखन हारा।
नाना रूप धरे बहु रंगी, सब से रहत न्यारा ॥ २ ॥ हरि०

अमित, अपार, अलख, निरंजन, जिन सब जगत भरमाया।
सकल भरम त्यज नानक, मैं तो चरण ताहिं चित्त लाया ॥ ३ ॥

[ १९२ ]

ऊधो ! सो मूरत हम देखी । ( टेक )
शिव सनकादिक सकल मुनि दुर्लभ, ब्रह्म[1] इन्द्र नहिं पेखी ॥ १ ॥

खोजत फिरत युगो युग योगी, योग युक्ति से न्यारी।
सिद्ध समाधि सकत नहिं दर्शी, मोहिनी मूरत प्यारी ॥ २ ॥

निगम अगम हो विमल-यश गावें, रहत सदा दरबारी।
तिलभर पारावार[2] नहिं पावें, कह कह नेति[3] पुकारी ॥ ३ ॥

नाथ, यति और योगी, जंगम, ढूँढ रहे बन माहीं।
वेष धरे धरती भ्रम हारे, तिनँहों[4] दर्शी नाहीं ॥ ४ ॥
सो हम घर घर नाच नचाई, तनक तनक दधि[5] देके।
रामदास हम रति श्यामरंग, जाहो योग घर ले के ॥ ५ ॥

[ १९३ ]

ऊधो ! कर्मन की गति न्यारी । ( टेक )
सर्व[6] नदियाँ जल भर भर वहियाँ, सागर किस विधि खारी ॥ १ ॥

---

१ब्रह्मा इन्द्र आदि, २ पता, अन्त, ३ यह नहीं, यह नहीं, इसप्रकारका वाक्य जो उपनिषदो में आया है, उससे यहाँ अभिप्राय है, ४ उन्हेंभी दर्शन नहीं हुए, ५ दही, ६मीठे जलकी सब नदियां तो समुद्रमें गिररही हैं पर समुद्रकैसा खारी हैं।

उज्वल पंख दिये बगुले को, कोयल कित[1] गुणकारी[2]।
सुन्दर नयन मृगा को दीने, वन वन फिरत उजारी[3] ॥ २ ॥

मूर्ख मूर्ख राजे कर दीने, पंडित फिरैं भिखारी।
सूर[4] ! प्रभु मिलवे की आशा, छिन छिन बीतत भारी ॥ ३ ॥

[ १९४ ]

सब दिन होत न एक समान। (टेक)

इक दिन राजा हरिश्चन्द्र की सम्पति मेरू[5] समान।
इक दिन जाय श्वपचगृह[6] सेवत, अम्बर[7] हरत मशान[8] ॥ १ ॥

इक दिन राजा राज युधिष्ठिर, अनुचर श्रीभगवान्[9]।
इक दिन द्रौपदी नग्न होत है, चीर दुःशासन तान ॥ २ ॥

इक दिन सीता रुदन करत है, महा विपित[10] उद्यान।
इक दिन राम चन्द्र मिल दोऊ, विचरत पुष्प बिमान ॥ ३ ॥

परकटत है पूर्व की करनी, त्यज मन शोक अजान !
सूरदास गुण कहाँ लग वर्णों, विधि[11] के अनक प्रमाण ॥ ४ ॥

---

१ किस कारण, २ काली है, ३ उजाड़ वनों में वह फिरता हैं, ४ कवि सूरदास से अभिप्राय है। ५ मेरु पर्वत, ६ भङ्गीके घर सेवक, ७ वस्त्र उतारता है ८ शमशान में, ९ एकदिन राजा युधिष्ठर के अनुचर श्रीकृष्ण भगवान् थे १० बड़े भय और विपत्ति पूर्ण वन, ११ जिस विधि भाग्य में लिखा हैं उस विधि के अनेक प्रमाण हैं।

[ १९५ ]

प्रभु ! तुमरो गति कहत न आवे । ( टेक )
ज्यों गूंगा मीठे फल का रस अन्तर्गत ही खावे ॥ १ ॥

परम स्वाद सब ही जो निरन्तर, अमित[1] तोषे[2] उपजावे ।
मन वाणी को अगम अगोचर, सो जाने जो पावे ॥ २ ॥

रूप रेख गुण जाति जुगति बिन, निरालम्ब मन ध्यावे ।
सब बिधि अगम बिचार ही ताते, सूरदास क्या गावे ॥ ३ ॥

[ १९६ ]

प्रभु जी ! मन मायावश कीनो । ( टेक )
लाभ हानि कछु समझत नाहीं, ज्यों पतंग तन दीनो ॥ १ ॥

गृह दीपक, मन तेल, तूल[3] तिया[4], सुत[5] ज्वाला अतिज़ोर ।
मैं मति हीन मरम नहीं जानों, पड़ों[6] अधिक गिरि दौड़ ॥ २ ॥

बहुतक[7] दिवस भये या जग में, भ्रमत फिरे मतिहीन ।
सूर श्याम सुन्दर जो सिमरे, क्यों होवे गतिहीन ॥ ३ ॥

[ १९७ ]

अब मोरी राखो लाज हरी ! ( टेक )
तुम जानत सब अन्तर्यामी करनी कछु न करी ॥ १ ॥

---

१ अगाध, अनन्त, २ तुष्टि, सन्तोश, ३ रुई की बत्ती, ४ स्त्री ५ पुत्र, ६ दौड़ दौड़ कर उस ओर अधिक गिर पड़ता हूँ, ७ बहुत से ।

अवगुण मोसों[1] बिसरत नाहीं, पल छिन घड़ी घड़ी।
जग प्रपञ्च की पोट बांध कर, अपने सीस धरी ॥ २ ॥

दारा धन सुत मोह समुन्दर, सुध बुध सब बिसरी।
सूर पतित को बेग उबारो[2], नय्या जात भरी ॥ ३ ॥

[ १९८ ]

सोई अब कीजिये दीन दयाल। (टेक)
जाते मैं क्षण चरण न छोड़ूं, करुणासागर भक्ति रिसाल ॥ १ ॥

इन्द्रिय अजित[3], बुद्धि विषयारत[4], मन की दिन दिन उलटी चाल।
काम, क्रोध, मद, लोभ, महाभय, निशदिन नाथ भ्रमित बेहाल ॥२॥

योग, यज्ञ, जप, तप, तीर्थ, व्रत, इन में एक हू अंग[5] न भाल[6]।
कहा करूं, कैह[7] भाँत रिझाऊं, तुम को हे कृपाल ॥ ३ ॥

सुन समर्थ सर्वज्ञ कृपानिधि, अशरण शरण हरन जग जाल।
कृपा निधान सूर की यह गति, कासों कहे कृपण यह काल ॥४॥

[ १९९ ]

प्रभु जी ! मेरे अवगुण चित न धरो। (टेक)
समदर्शी प्रभु नाम तिहारो[8], चाहो तो पार करो ॥ १ ॥

---

१ मुझसे, २ संसार समुद्र के वेग से अभी मुझे तारो, अथवा संसार समुद्र से जल्दी तारो, ३ जीती नहीं गई, ४ प्रबल, विषयों में फंसी हुई, ५ एक भी साधन रुप अंग अपने भाग्य में नहीं आया, जन्मलग्न, ६ भाग्य, कपाल, ललाट, ७ किस रीति से, ८ आपका।

इक नदिया, इक नाले कहावत, मैलो ही नीर[1] भरो।
जब मिल कर एक भई वर्णता[2], सुरसरि[3] नाम पड़ो॥ २॥

इक लोहा पूजा में राखो, इक गृह वधिक[4] पड़ो।
गुण अवगुण पारस नहीं जाने, कञ्चन करत खरो॥ ३॥

यह माया भ्रम जाल निवारो, सूर[5] श्याम सगरो।
अब की बेर प्रभु मोको भी तारो, नहीं प्रण जात टरो[6]॥४॥

[ २०० ]

जिनके हृदय हरि नाम बसे, तिन और का नाम लिया न लिया।
जिनके मन प्रभु के रंग रंगे, तिन तन का वस्त्र सिया न लिया॥ १॥

जिनके घर एक सुपूत जिया[7] तिन लाख कुपूत जिया न जिया।
जिनके द्वारे पर गंग बहे, तिन कूप का नीर[8] पिया न पिया॥ २॥

जिन बात करी परमार्थ की, तिन हाथ से दान दिया न दिया।
तुलसी जिन चरण गहे[9] हरि को, तिन अन्य देव सिया[10] न सिया॥३॥

[ २०१ ]

राग खमाच, ताल ठुमरी

तूहीं हैं, मैं नाहीं वे सजनां[11]! तूही हैं, मैं नाहीं (टेक)
जां[12] सोवां, तां[13] तू नाले[14] सोवें, जां वल्लां[15], तां तू राही[16]॥तू०१

---

१ जल, २ एक रंगी, ३ गंगा, ४ कसाई, ५ कवि का नाम, ६ टूटे जाता है ७ जन्म लिया, ८ जल, ९ पकड़े या चरण सेवा की, १० सेवा की, ११ ऐ प्यारे, १२ जब, १३ तब, १४ साथ, १५ जब चलने लगूं, १६ तब तू रास्ते में साथ होता है।

जां बोला तां तू नाले घोलें, चुप करां, मन मांही[1] ॥ तू० २

सहक[2] सहक के मिलिया दिलवर, जिंदड़ी[3] घोल गंवाई[4] ॥ तू० ३

[ २०२ ]

राग सोहनी

जो दिल को तुम पर मिटा चुके हैं,
मज़ाक़े-उल्फ़त[5] उठा चुके हैं।
वह अपनी हस्ती[6] मिटा चुके हैं,
ख़ुदा को ख़ुद ही में पा चुके हैं ॥ १ ॥

न सूये-काबा[7] झुकाते हैं सर,
न जाते हैं बुतकदा[8] के दर[9] पर।
उन्हें हैं दैरो-हरम[10] बराबर,
जो तुम को क़िबला[11] बना चुके हैं ॥२॥

न हमसे प्यारे! छुड़ाओ दामान[12],
न देखो बाग़े-बहारो-रिज़वां[13]।
कब उनको प्यारे हैं हूरो-गिलमां[14],
जो तुम को प्यारा बना चुके हैं ॥ ३ ॥

सुना रही है यह दिल की मस्ती,
मिटा के अपना वजूदे-हस्ती[15]।

---

१ चुप होऊँ तो तू मन भीतर होता है, २ तड़प तड़प के, ३ जान, उसी के पाने में या स्मर्ण में खो दी, ५ प्रेम का स्वाद, लुत्फ़ वा प्रेमानन्द ६ जीवन, अस्तित्व, ७ काबा (ईश्वर के घर) की ओर, ८ मन्दिर, ९ द्वार, १० मन्दिर, मसजिद, ११ काबा वा इष्टदेव, १२ पल्ला, १३ स्वर्ग, १४ अप- और दास (लौण्डे) १५ जीवन या प्राण की स्थिति।

मरेंगे यारो ! तलब[1] में हक़[2] की,
जो नामे-तालिब[3] लिखा चुके हैं ॥ ४ ॥

न बोल सकते थे कुछ ज़ुबाँ से,
न याद उनको है जिस्मो-जाँ[4] से ।
गुज़र गये हैं वह हर मकाँ[5] से,
जो उसके कूचे में आचुके हैं ॥ ५ ॥

गर और अपना भला जो चाहो,
यह राम अपने से कह सुनाओ
भला रखो या बुरा बनाओ,
तुम्हारे अब हम कहा चुके हैं ॥ ६ ॥

---

१ जिज्ञासा, २ सत्य स्वरुप, अपने प्यारे की, ३ जिज्ञासु का नाम, ४ देह-प्राण, ५ स्थान, हद, सीमा ।

# आत्मज्ञान

[ २०३ ]

❀ राग कानड़ा, ताल मुगलई ❀

[ छान्दोग्योपनिषद् के एक श्लोक का भावार्थ ]

कफ़स[1] एक था आईनों[2] से बना।
लटकता गुले-ताज़ह[3] मरकज़[4] में था ॥१॥

था फूल एक, पर अक्स[5] हरतर्फ़ थे।
थे माशूक़ सब बुलबुले-बन्द[6] के ॥ २ ॥

गुले-अक्स[7] की तर्फ़ बुलबुल चली।
चली थी न दम भर कि ठोकर लगी ॥ ३ ॥

---

१ पिंजरा, २ शीशों, ३ ताज़ाह पुष्प, ४ बीच में,वा केन्द्र में,५ प्रति बिम्ब, ६ क़ैद वा घिरा हुआ पक्षी (बुलबुल), ७ पुष्प का प्रतिबिम्ब।

जिसे फूल समझी थी सोया ही था।
यह झपटी तो तड़ शीशा सिर पर लगा॥ ४॥

जो दायें को झाँकी वही गुल खिला।
जो बायें को दौड़ी यही हाल था॥ ५॥

मुक़ाबल उड़ी मुँह की खाई वहाँ।
जो नीचे गिरी चोट आई वहाँ॥ ६॥

क़फ़स के था हर सिम्त[1] शीशा लगा।
खिला फूल था वस्त[2] में वाह वा॥ ७॥

उठा सिर को जिस आन[3] पीछे मुड़ी।
तो खन्दाँ[4] था गुल आँख उससे लड़ी॥ ८॥

झिझकने लगी अब भी धोका न हो।
है सचमुच का गुल तो फ़क़त[5] नाम को॥ ९॥

चली आख़रश[6] करके दिल को दिलेर।
मिला गुल, लगी इक न दम भर की देर॥ १०॥

मिला गुल, हुई मस्तो-दिलशाद[7] थी।
क़फ़स था न शीशे वह आज़ाद थी॥ ११॥

यही हाल इन्सान्! तेरा हुआ।
क़फ़स में है दुनिया के घेरा हुआ॥ १२॥

---

१ प्रत्येक ओर, २ मध्य, ३ जिस समय, ४ खिला हुआ, ५ केवल, ६ अन्त में, ७ स्वतंत्र, प्रसन्न।

भटकता है जिसके लिये दर बदर ।
वह आराम है क़ल्ब[1] में जल्वागर[2] ॥ १३ ॥

[ २०४ ]

❀ ग़ज़ल, राग पीलू ❀

पड़ी जो रही एक मुद्दत[3] ज़मीं में ।
छुरी तेज़ आहन[4] की मिट्टी ने खाई ॥ १ ॥

करे काटना फाँसना किस तरह अब ।
ज़मीं से थी निकली, ज़मीं ने मिलाई ॥ २ ॥

हुआ जब ज़मीं खुद यह लोहा तो बस फिर ।
न आतश[5] सही सिर पै नै[6] चोट आई ॥ ३ ॥

छुरी है यह दिल, इसको रहने दो बे खुद ।
यहाँ तक कि मिट जाय नामे-जुदाई ॥ ४ ॥

पड़ा ही रहे ज़ाते-मुतलक़[7] में बेख़ुद ।
ख़बर तक न लो, है इसी में भलाई ॥ ५ ॥

मेरा तेरा का चीरना फाड़ना सब ।
उड़े हो दुई की न मुतलक़[8] समाई ॥ ६ ॥

न गुस्सा जलाये, मुसीबत की नै चोट ।
मिटे सब तअल्लुक़[9], खुदाई, ख़ुदाई ॥ ७ ॥

---

१ भीतर दिलमें, २ प्रकाशमान, ३ समय, काल, ४ लोहा, ५ अग्नि, ६नहीं, ७ तत्त्व स्वरूप, ८ नितान्त अर्थात् किंचित् भी समाई न हो, ९ सम्बन्ध ।

जिसे मान बैठे थे घर यार ! भाई ।
वह घर से भुलाने की थी एक फाई[1] ॥ ८ ॥

भुला घर को मञ्ज़िल[2] में घर कर लिया जब ।
तो निज बादशाही की कर दी सफ़ाई ॥ ८ ॥

हवा के बगोलों से जब दिल को बाँधा ।
छुटी ना उमेदों की मुँह पर हवाई ॥ १० ॥

केवल, मरदुमे-चश्म[3], सूरज, बते-आब[4] ।
तअल्लुक़ को आलूदगी[5] थी न राई ॥ ११ ॥

जो सच पूछो सैरो-तमाशा भी कब था ।
न थी दूसरी शय[6] न देखी दिखाई ॥ १२ ॥

थी दौलत की दुनिया में जिसकी दुहाई[7] ।
जो खोला गिरह[8] को तो पाई[9] न पाई ॥ १३ ॥

किये हर सेह[10] हालत के गरचिह नज़ारे ।
वले[11] 'राम' तनहा[12] था मुतलक़[13] अकाई ॥१४॥

[ २०५ ]

❀ राग तिलंग, ताल केरवा ❀

कहाँ जाऊँ ? किसे छोड़ूँ ? किसे ले लूँ ? करूँ क्या मैं ? ।
मैं इक तूफ़ाँ क़यामत का हूँ, पुर[14] हैरत तमाशा मैं ॥ १ ॥

---

१ फाँस, बंधन वा फंद, २ मार्ग, पड़ाव, ३ नेत्र की पुतली, ४ जल में रहनेवाली बतख़, ५ आलेप, लेश, ६ वस्तु, ७ शोर, पुकार, ८ गाँठ, ९ एक पैसे का तीसरा भाग, १० तीनों अवस्था, ११ किंतु, १२ अकेला, १३ एकमेवाद्वितीयं, १४ आश्चर्य भरा दृश्य ।

मैं बातन[1], मैं अयाँ[2], ज़ेरो[3]-ज़बर, चप[4]-रास्त, पेशो[5]-पस।
जहाँ मैं, हर मकाँ[6] मैं, ज़माँ[7] हूँगा, सदा था मैं ॥ २ ॥

नहीं कुछ जो नहीं मैं हूँ, इधर मैं हूँ, उधर मैं हूँ।
मैं चाहूँ क्या? किसे ढूँढूँ? सभी में ताना बाना बाना मैं ॥ ३ ॥

वह बहरे-हुस्नो[8]-ख़ूबी हूँ, हुबाब[9] हैं काफ़[10] और कैलाश।
उड़ा इक मौज़[11] से क़तरा, बना तब मिहर[12] आसा मैं ॥ ४ ॥

ज़रो-नेमत[13] मेरी किरणों में धोका था सुराब[14] ऐसा।
तजल्ली नूर[15] है मेरा कि 'राम' अहमद हूँ ईसा मैं ॥ ५ ॥

[ २०६ ]

❀ प्रश्न ❀

मेरा 'राम' आराम है किस जा[16]? देखकर उसको जी[17] करूँ ठण्डा।
क्या वह इस इक शिला पे बैठा है? क्या वह महदूद[18] और यकजा[19] है?

जुमला मोतज़ो

वाह क्या चाँदनी में गंगा है, दूध हीरों के रंग रंगा है।
साफ़ बातन[20] से आबे-सीमीं[21] बर, मीठी मीठी सुरों से गा गा कर।
लुत्फ़-रावी[22] का आज लाती है, यूँ पता 'राम' का सुनाती है ॥

---

१ भीतर, २ बाहर, प्रकट ३ नीचे ऊपर, ४ बायें, दायें, ५ आगे, पीछे, ६ देश, ७ काल, ८ सुन्दरता का समुद्र, ९ बुलबुला, १० कोह काफ़ के पर्वत से आशय है, ११ लहर, तरंग, १२ सूर्य जैसा, १३ धन दौलत, १४ मृगतृष्णा का जल, १५ तेजोमय प्रकाश, १६ स्थान, जगह, १७ चित्त, दिल, १८ परिच्छिन्न, १९ एक देशी, २० भीतर से शुद्ध, २१ चाँदी की सूरतवाला जल, २२ दरिया का नाम है जो लाहौर में बहता है।

[ २०७ ]

❀ उत्तर ❀

देखो मौजूद सब जगह है राम, माह[1] बादल हुआ है उसका धाम।
बल्कि है ठीक ठीक बात तो यह, उसमें है बूदो-बाशे-आलमे[2]-सेह ॥
वह अमूरत है मूरती उसकी, किस तरह हो सके? कहाँ? कैसी?
कुल्ले-शैऽन[3] मुहीत है आकाश, मूरती में न आ सके परकाश।
जो है वस एक ही की मूरत है, जिस तरफ़ झाँकें उसकी सूरत है ॥

[ २०८ ]

❀ राग तिलंग, ताल केरवा ❀

## उत्तर स्वरूप प्रश्न

मस्त ढूंढ़े है होके मतवाला[4], कुछ पता दो कहाँ है मतवाला।
गङ्गी करती फिरे है गङ्गगङ्गगङ्ग, "हाय गंगा का पाऊँ क्योंकर सङ्ग!"
मुख से घूंघट उठा के वह प्यारा, "खोजता है किधर गया प्यारा?"
भाङ्ग पी पी के भङ्ग कहती है, "बूटी शिव की किधर गई है ये!"
मस्ती पूछे है मस्त नैनों से, "हैं कहाँ पर वह नशा के डोरे?"
रात भर ताकता फिरा तारा, फाड़ आँखों को "है कहाँ तारा?"
राम बन बन को छान थक हारा, "मेरा आराम" 'राम' है किस जा[5]?

---

१ चाँद, २ उसमें तीनों लोकों की स्थिति और आश्रय है, ३ समस्त वस्तुओं को घेरे हुए अर्थात् सर्वव्यापक, ४ मस्त, ५ स्थान, जगह।

[ २०९ ]

❀ राग भैरवी, ताल पश्तो ❀

## एक प्यारे के पत्र का उत्तर

सरोदो[1]-रक्सो[2]-शादी[3] दम बदम[4], है,

तफ़क्कुर[5] दूर है और ग़म को रम[6] है।

ग़ज़ब ख़ूबी है, बेरूँ-अज़-रक़म[7] है,

यक़ीनन[8] जान तेरी ही क़सम है।

मुबारक हो तबीयत का यह खिलना,

यह रसभीनी अवस्था जामे[9]-जम है।

मुबारक दे रहा है चाँद झुक कर,

सलामों[10] से कमर में उसकी ख़म[11] है।

पिये जाओ दमा दम जाम[12] भरकर

तुम्हारा आज लाखों पर क़लम है।

गुलों[13] से पुर हुआ है दामने-शौक़[14],

फ़लक[15] ख़ेमा[16] है, कैवाँ[17] पर अलम[18] है।

---

१ राग रङ्ग, २ नाच, ३ तमाशा, खुशी, ४ निरन्तर, ५ सोच, फ़िक्र, ६ दूर भागा हुआ, ७ वर्णन से बाहर, ८ निश्चय पूर्वक, ९ जमशेद बादशाह का प्याला जिससे मस्ती लाई जाती थी, १० नमस्कारों, ११ कुबड़ापन, झुकाव, १२ ( निजानन्द के ) प्याले, १३ पुष्पों से, १४ जिज्ञासा का पल्ला अर्थात् तीव्र जिज्ञासा, १५ आकाश, १६ मण्डप, तम्बू, १७ शनि-तारा, १८ झण्डा।

तेरे दीदों[1] पै भूले से हो शबनम[2],

कभी देखा सुना "सूरज पै नम है" ?

रखें आगे को क्या क्या हम न उम्मेद,

कि मारा गुर्ग[3]-ग़म, पहिला क़दम है।

दिखाया है प्रकृति ने नाच पूरा,

सिले[4] में उड़ गई, ऐ है सितम[5] है।

ग़लत[6] गुफ़्तम, शिकायत की नहीं जा[7],

मिली आ पुरुष में अद्लो करम[8] है।

न कहता था तुम्हें क्या 'राम' पहिले ?

सबाहे[9]-ईद आई, रात कम है।

[ २१० ]

❀ राग शंकराभरण, ताल केरवा ❀

जाँ[10] तू दिल दीयाँ चशमाँ[11] खोलें, हू अल्लाह[12], हू अल्लाह बोलें।

मैं मौला कि मारें चीख, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ १ ॥

---

(१) यदि तू अपने दिल के नेत्र खोले तो ब्रह्मास्मि, ब्रह्मास्मि स्वतः बोलने लग पड़े और यों पुकार उठे कि "मैं ईश्वर हूँ" और "ईश्वर अपने गले की रग से भी अधिक समीप है"

---

१ नेत्रों, २ शीतलता, ठण्डक, गीलापन, ३ चिन्ता का भेड़िया, ४ बदले में, ५ आश्चर्य है, ज़ुल्म है, ६ मैंने ग़लत कहा ७ स्थान, जगह, ८ न्याय और दया (अर्थात् प्रकृति का अपने पुरुष में लय होना ही ठीक न्याय और भगवत-कृपा है); ९ आनन्द की प्रभात, १० जब, ११ नेत्र, १२ मैं ब्रह्म हूँ, शिवोऽहम्।

जाम[1] शरावे[2]-वहदत वाला, पी पी हर दम रहो मतवाला।
पी मैं वारी लाके डीक[3], अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥२॥

गिरजा, तसबीह[4], जंजू तोड़ें, दीन दुनी[5] वल्लों मुँह मोड़ें।
ज़ात पाक[6] नूं ला न लीक[7], अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥३॥

जे तैनूँ राम मिलन दा चा[8], ला लै छाती लग्गा दा।
नाम लोहा दा धरिया पीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥४॥

---

( २ ) अद्वैतामृत रूपी शराब के प्याले को ऐ प्यारे! तू घड़ी घड़ी पी कर मस्त हो और एक घूँट में ही इसे पी डाल ( और याद रख ) कि ईश्वर अपने गले से भी अधिक समीप है।

( ३ ) मतभेद के जोश में आकर जो तू गिरजा, माला और यज्ञोपवीत तोड़ता है, उससे तू दीन और दुनिया से मुख फेरता है, अर्थात् तू लोक परलोक से गिरता है। ऐ प्यारे! अपने शुद्ध पवित्र स्वरूप को धब्बा मत लगा और याद रख कि ईश्वर गले से भी अधिक समीप है।

( ४ ) यदि तुझे राम भगवान् के मिलने की इच्छा वा जिज्ञासा है, तो दिल खोल कर बाज़ी लगा। ( लोहा लोहे के बर्तन से कोई भिन्न नहीं है बल्कि ) लोहा ही दूसरे रूप में आकर पीक आदि नामसे कहलाता है। इसी प्रकार, ईश्वर ही दूसरे रूपों में भिन्न भिन्न नाम से कहलाता है। और वह गले से भी अधिक समीप है।

---

१ प्याला, २ अद्वैत रूपी शराब का, ३ एकदम, ४ स्मरणी, ५ धर्म अर्थ वा लोक परलोक की ओर से, ६ शुद्ध स्वरूप को, ७ धब्बा, ८ जिज्ञासा, शौक, प्रेरणा।

न दुनिया दी खेह उड़ा, हाहाकार न शोर मचा।
छड रोना, हस, गा ते गीत, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ५ ॥

चुक सुट पर्दा दूई[1] वाला, अख्याँ विच्चों कढ छड जाला।
"तूं ही तूं" नहीं होर शरीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥६॥

सुन सुन सुन लै 'राम' दुहाई, बे अन्ता क्यों अन्त है चाई।
मालिके-कुल[2] तूं, मंग न भीख, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक॥७॥

---

(५) न तू सन्सार की राख उड़ा और न हाहाकार का शोर मचा, बल्कि इस रुदन को छोड़कर हँस और आनन्द से गीत गायन कर, और याद रख कि ईश्वर गले से भी अधिक समीप है।

(६) द्वैत पर्दा तू दूर फैंक और दिल के नेत्र के भीतर से मैल को बाहिर निकाल डाल (फिर तू देखेगा कि) सब "तू ही तू" वास्तव में है, और तेरे से भिन्न कोई नहीं है। और ईश्वर इस लिये गले से भी अधिक समीप है। तात्पर्य यह कि जब तक भीतर का नेत्र अर्थात् अन्तर दृष्टि नहीं खुलती, तब तक द्वैत दिखाई देता रहता है। और भीतर का नेत्र खुलते ही अथवा चित्त-शुद्धि के बाद आत्मसाक्षात्कार होने पर ही चारों ओर अपना एक आत्मा ही दिखाई देता है। और तब पता लगता है कि ईश्वर समीप से भी समीपतम है।

(७) ऐ प्यारे! खूब कान लगाकर राम दुहाई (राम की पुकार) तू सुन, अनन्त होते हुए तू अन्तवान् होने की क्यों इच्छा करता है? तू वास्तव में सर्व का मालिक है, इसलिये भीख मत माँग (अर्थात् भिखारी मत बन) और ईश्वर तो गले से भी अधिक समीप है।

---

१ दूसरा. २ सकल सन्सार का स्वामी।

[ २११ ]

⊛ परज, ताल चलन्त ⊛

दरिया से हुबाब[1] की है यह सदा[2] । } टेक
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥ }

मुझ को न समझ अपने से जुदा ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥ १ ॥

जब गुञ्चा[3] चमन[4] में सुबह[5] को खिला ।
झट कान में गुल के यह कहने लगा ॥
हाँ आज यह उक़्दा[6] है हम पै खुला ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥ २ ॥

आईना[7] मुक़ाबले-रुख़[8] जो रक्खा ।
झट बोल उठा यूं अक्स[9] उसका ॥
क्यों देख के हैरां यार हुआ ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥ ३ ॥

दाने ने भला ख़िरमन[10] से कहा ।
चुप रह इस जा[11] नहीं चूनो-चरा[12] ॥
वह्‌दत[13] की झलक कसरत[14] में दिखा ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥ ४ ॥

---

१ बुलबुला, २ आवाज़, ३ पुष्प-कली, ४ बाग़, ५ प्रातः ६ भेद वा गुप्त रहस्य, ७ शीशा, दर्पण, ८ मुख के सामने, ९ प्रतिबिम्ब, १० दानों का ढेर; ११ जगह, स्थान, १२ क्यों और कब, १३ एकत्व, १४ नानत्व ।

नासूत[1] में आ के यही देखा।
है मेरी ही ज़ात[2] से नश्वो-नुमा[3] ॥
जैसे पम्बा[4] से तार का हो रिश्ता[5]।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥ ५ ॥

तू क्यों समझा मुझे ग़ैर[6] बता।
अपना रूखे-ज़ेबा[7] न हम से छिपा ॥
चिक़ पर्दा उठा, टुक सामने आ।
तुम और नहीं, हम और नहीं ॥ ६ ॥

[ २१२ ]

भैरवी, ताल तीन

है दैरो-हरम[8] में वह जल्वा[9]-कुनाँ।
पर अपना तो रखता वह घर ही नहीं ॥

मैं देखूं हूँ सब के है सिर पै वही।
पर अपना तो रखता वह सर ही नहीं ॥

यह सितम[10] है कि उसके हैं चश्म[11] कहाँ ?।
पर ऐसी किसी की नज़र[12] ही नहीं ॥

---

१ जाग्रत अवस्था, २ स्वरूप, निजात्मा, ३ पालना पोसना वा फलना फूलना, ४ रूई का गुफ्फा, ५ सम्बन्ध, ६ अन्य, ७ सुन्दर मुख, ८ मन्दिर और मसजिद, ९ प्रकाशमान, १० आश्चर्य, जुल्म, अन्याय, ११ नेत्र, १२ दृष्टि।

है नूर[1] का उसके ज़हूर[2] खिला।
पर है वह कहाँ यह खबर ही नहीं॥

कोई लाख तरह से भी मारे मुझे।
पर मेरा तो करता यह सर ही नहीं॥

वह मकाँ[3] है मेरा तन्हाई[4] में यां।
शम्सो-क़ुमर[5] का गुज़र ही नहीं॥

न तो आबो-हवा[6], न है आतिश[7] यहां।
कोई मेरे सिवा तो बशर[8] ही नहीं॥

दरे-दिल[9] को हिला, कर दर्शन आ।
कहीं करना तो पड़ता सफ़र ही नहीं॥

जिस के क़ब्ज़े में है गंजे-वहदत[10] का।
कोई उससे तो दौलतवर[11] ही नहीं॥

[ २१३ ]

ग़ज़ल, राग जिला, संघोड़ा।

अगर है शौक़ मिलने का अपस[12] की रमज़[13] पाताजा।
जला कर ख़ुद-नुमाई[14] को भसम तन पै लगाता जा॥ टेक॥

१ ज्योति, प्रकाश; २ प्रकाश, तेज, ३ स्थान, जगह, ४ एकान्त, ५ सूर्य और चन्द्र, ६ जल और वायु, ७ अग्नि, ८ प्राणी, जीव, ९ हृदय या दिल के द्वार, १० एकता का भण्डार, कोष, ११ धनी, १२ अपने आप की, १३ भेद, घुण्डी, १४ अहंकार।

पकड़ कर इश्क़ का झाड़ू, सफा कर दिल के हुज़ड़े[1] को।
दुई[2] की धूल को ले के, मुसल्ले[3] पर उड़ाता जा॥ १॥

मुसल्ला फाड़, तसबीह[4] तोड़, किताबों डाल पानी में।
पकड़ कर दस्त[5] मस्तों का, निजानन्द को तू पाता जा॥२॥ अ०

न जा मसजिद, न कर सिजदा[6], न रख रोज़ा, न मर भूखा।
वुजू का फोड़ दे कूज़ा[7], शराबे-शौक़[8] पीता जा॥ ३॥ अ०

हमेशा खा, हमेशा पी, न ग़फलत से रहो इक दम।
अपस तू खुद खुदा होके, खुदा खुद हो के रहता जा॥ ४॥ अ०

न हो मुल्ला, न हो क़ाज़ी, न खिलक़ा[9] पैहन शेखों का।
नशे में सैर कर अपनी, खुदी को तू जलाता जा॥ ५॥ अ०

कहे मनसूर सुन क़ाज़ी, निवाला[10] कुफर का मत पी।
अनलहक़[11] कहो सबूतों[12] से, तू यही कलमा पकाता जा॥६॥अ०

[ २१४ ]

होली

अब मोहे फिर फिर आवत हाँसी॥ टेक
सुख स्वरूप होय, सुख को ढूँढे, जल में मीन[13] प्यासी॥१॥ अ०

---

१ कोठरी, २ द्वैत, ३ निमाज़ पढ़ने निमित्त जो कपड़ा आगे बिछाया जाता है, ४ माला जाप करने की, ५ हाथ, ६ बन्दगी, पूजा, ७ पूजा वा निमाज़ के समय मुँह धोने का प्याला, ८ ईश्वर जिज्ञासा की मद (शराब), ९ चोग़ा, लम्बा कोट शेखोंवाला, १० घूँट, ग्रास, ११ शिवोऽहं, अहंब्रह्मास्मि, १२ पक्के दिल वा निश्चय से, १३ मछली।

सभी तो हैं आतम चेतन, अज[1] अखंड[2] अविनाशी[3]।
करत नहीं निश्चय स्वरूप का, भाजत मथुरा काशी॥ ३ ॥ अ०

क्षणभंगुरता[4] देख जगत की फिर भी धारत उदासी।
निरभय राम[5], राम कृपा से, काटी लख चौरासी॥ ४॥ अ०

[ २१५ ]

राग धनासरी, ताल दादरा

जिस को हैं कहते खुदा हम ही तो हैं।
मालके-अर्श-ओ-समा[6] हम ही तो हैं॥ १॥

तालबाने-हक़[7] जिसे हैं ढूँढते।
अर्श[8] पर वह दिलरुबा[9] हम ही तो हैं॥ २॥

तूर[10] को सुरमा किया इक[11] आन में।
नूर[12] मूसा को दिया हम ही तो हैं॥ ३॥

तिशना-ए-दीदारे-लब[13] के वास्ते।
चश्मा-ए-आबे-बक़ा[14] हम ही तो हैं॥ ४॥

---

१ जन्म रहित, २ टुकड़ों रहित, ३ नाश रहित, ४ क्षण में नाश होने वाली वस्तु, ५ भय रहित, कवि का भी नाम है, ६ पृथिवी और आकाश के स्वामी, ७ सचाई के जिज्ञासु (चाहने वाले), ८ आकाश, ९ माशूक़, प्यारा, १० पर्वत का नाम, ११ घड़ी, १२ प्रकाश ( अर्थात् जिस परमात्मा ने हज़रत मूसा को तूर पर्वत पर प्रकाश के रूपमें दर्शन दिये वह हम ही हैं ), १३ दर्शन के प्यासों की प्यास बुझाने के वास्ते, १४ स्वाश्वत अमृत का स्रोत।

नार[1] में, माह[2] में, काकब[3] में सदा।
मिहर[4] में जल्वानुमा[5] हम ही तो हैं ॥ ५ ॥

बोस्ताने-नूर[6] से वैहरे-खलील[7]।
नार को गुलशन[8] किया हम ही तो हैं ॥ ६ ॥

नूह[9] की किश्ती को तूफाँ से बचा।
पार बेड़ा कर दिया, हम ही तो हैं ॥ ७ ॥

मर्दो-जन[10], पीरो-जवाँ[11], वैहशो-त्यूर[12]।
औलिया[13]-ओ-अंबिया[14] हम ही तो हैं ॥ ८ ॥

खाको-बादो-आबो-आतिश और खिला[15]।
जुमला मा दर[16], जुमला मा[17], हम ही तो हैं ॥९॥

उक़्दह्-ए वहदत-पसन्दों[18] के लिये।
नाखुने-मुश्किल-कुशा[19] हम ही तो हैं ॥ १० ॥

मुर्गे-दिल[20] बागे-जहाँ में जब कि यह।
दामे-उलफत[21] में फंसा, हम ही तो हैं ॥ ११ ॥

---

१ अग्नि, २ चाँद, ३ सितारे, ४ सूर्य, ५ प्रकट, आसमान, ६ प्रकाश स्वरूप के बाग से, ७ सच्चे आशिक़ के वास्ते, ८ बाग़ अर्थात् (जिस प्यारे ने आग को बाग़ में बदल दिया वह हम ही तो हैं) ९ पैग़म्बर का नाम, १० स्त्री-पुरुष, ११ युवा-बूढ़ा, १२ पशु और पक्षी, १३ अवतार, १४ नबी, १५ पृथिवी, वायु, जल, अग्नि और आकाश, १६ सब मुझमें (हममें), १७ और सब हम, १८ अद्वैत के मसलों (सिद्धांतों) को पसन्द करने वालों के लिये, १९ मुश्किल हल करने वाले साधन, २० दिल का पक्षी, २१ प्रेम जाल।

कौन किस को सिर झुकाता अपने आप ।
जो झुका, जिसको झुका, हम ही तो हैं ॥ १२ ॥

[ १७९ ]

राग पर्ज, ताल केरवा

ख़ुदाई कहता है जिस को आलम[1] ।
सो यह भी है इक ख़्याल मेरा ॥
बदलना सूरत हर एक ढब[2] से ।
हर एक दम में है हाल मेरा ॥ १ ॥

कहीं हूँ ज़ाहिर, कहीं हूं मज़ाहर[3] ।
कहीं हूँ दीदः[4] और कहीं हूँ हैरत[5] ॥
नज़ार है मेरी, नसीब मुझ को ।
हुआ है मिलना मुहाल[6] मेरा ॥ २ ॥

तिलिस्मे[7]-इसरारे-गञ्जे-मख़फ़ी[8] ।
कहूं न सीने[9] को अपने क्योंकर ॥
अयां[10] हुआ हाले-हर दो आलम[11] ।
हुआ जो ज़ाहिर कमाल मेरा ॥ ३ ॥

हजाबे-खुरशीद[12], ज़ाते-मानी[13] ।
हुआ ज़हूरे-नमूदे[14]-सूरत ॥

---

१ जगत, संसार, २ तरीक़ा, ३ दृश्य की कान, बिम्ब, ४ दृष्टि, ५ आश्चर्य, ६ कठिन, ७ जादू, ८ गुह्य भण्डार के भेदों का जादू, ९ दिल, १० ज़ाहिर, खुला, ११ दोनों लोकों का हाल, १२ सूर्य पर पड़दा, १३ अपना स्वरूप, १४ बाह्य नाम रूप का प्रकाश ।

मिटा जो दुनिया से नामे-आदिम।
हुआ है मुझको वसाल[1] मेरा ॥ ४ ॥

हमेशा आँखों को बन्द रखना।
जमाले-मानी[2] का देखना है ॥
जो गोशे-कर[3] है वह है समाअ़त[4]।
जो बे ज़ुबानी है काल[5] मेरा ॥ ५ ॥

अरस्तू, कालू बला की रमज़ें।
न पूछ मुझ से वतन[6] ! तू हरगिज़ ॥
हूं आप मशग़ूल[7], आप शाग़िल[8]।
जवाब ख़ुद है, सवाल मेरा ॥ ६ ॥

[ २१७ ]

राग झंझोटी, ताल दादरा

मैं न बन्दा, न ख़ुदा था, मुझे मालूम न था।
दोनों इल्लत से जुदा था, मुझे मालूम न था ॥ १ ॥

---

पंक्तिवार अर्थ।

( १ ) यह मुझे मालूम नहीं था कि मैं न जीव हूँ न ईश्वर हूँ, और न मुझे यह मालूम था कि मैं इन दोनों उपाधियों से परे हूँ।

---

१ मेरा मिलाप, २ अपने स्वरूप का दर्शन, ३ बन्द कान, ४ आवाज़ सुनना, ५ मेरा कथन, ६ सुक़रात (Socrates) और अफलातून के नाम, ७ गुह्य उपदेश, इशारे, ८ कवि की उपाधि, ९ प्रवृत, १० प्रेरक व काम में लगाने वाला, ११ उपाधि, कारण।

शक्ले-हैरत हुई, आयिना-ए-दिल[1] से पैदा।
मानीये-शाने-सफा[2] था, मुझे मालूम न था ॥ २ ॥

देखता था मैं जिसे हो के नदीदा[3] हर सू[4]।
मेरी आँखों में छुपा था, मुझे मालूम न था ॥ ३ ॥

आप ही आप हूं याँ तालिबो-मतलूब[5] है कौन।
मैं जो आशिक़[6] हूं कहा था, मुझे मालूम न था ॥ ४ ॥

वजह मालूम हुई तुझ से न मिलने की सनम[7]।
मैं ही खुद पर्दा बना था, मुझे मालूम न था ॥ ५ ॥

---

(२) दिल में (अन्तःकरण रूप दर्पण में) आश्चर्य जनक सूरतें प्रकट हुईं, मगर यह मुझे मालूम न था कि इन प्रकट गुणों वा रूपों का असली कारण या बिम्ब मैं ही हूँ।

(३) जिस को मैं अव्यक्त वा अप्रगट देखता था, वह मेरी आँखों में छिपा हुआ है, यह मुझे मालूम न था।

(४) सब कुछ मैं आप ही आप हूँ, जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ मेरे बिना कोई नहीं, मैंने जो कहा था कि मैं आशिक़ अर्थात् इस पर आसक्त वा प्रेमी हूँ, यह मुझे मालूम न था।

(५) ऐ प्यारे! तुझ से न मिलने का कारण जब मालूम हुआ तो पता लगा कि मैं ही स्वयं (इसमें) पर्दा बना हुआ था, पर यह मुझे मालूम न था।

---

१ दिल के शीशे, २ शुद्ध गुणों का वास्तव स्वरूप अथवा प्रतिबिम्ब का असली बिम्ब, ३ अप्रकट, छिपा हुआ, ४ हर तरफ़, सर्व ओर, ५ जिज्ञासु और इच्छित पदार्थ, ६ प्रेमी, ७ ऐ प्यारे।

बाद मुद्दत[1] जो हुआ वस्ल[2], खुला राज़े-वतन[3]।
वासले[4]-हक़ मैं सदा था, मुझे मालूम न था ॥ ६ ॥

[ २१८ ]

राग झंजोटी, ताल दादरा

शम्आ[5] जल्वाफ़ुना[6] था मुझे मालूम न था।
साफ पर्दे में अयाँ[7] था मुझे मालूम न था॥ } टेक

गुल[8] में, बुलबुल में, हर इक शाख में, हर पत्ते में।
जाबजा[9] उस का निशाँ था, मुझे मालूम न था ॥ १ ॥

एक मुद्दत दैहरो[10]-हरम[11] में है ढूँडा नाहक़[12]।
वह दरे-क़ल्ब[13] निहाँ[14] था, मुझे मालूम न था ॥ २ ॥

सच तो यह है कि सिवा ज़ात[15] के जो कुछ था हयात[16]।
वैहम था, शक था, गुमां[17] था, मुझे मालूम न था ॥ ३ ॥

---

( ६ ) चिरकाल पश्चात् जब दर्शन हुए अर्थात् साक्षात्कार हुआ, तब अपने घर का भेद खुल गया, ( वह यह ) कि सत्य स्वरूप को मैं सदैव प्राप्त हुआ हुआ था, पर मुझे मालूम न था।

---

१ काल, २ मेल, मुलाकात, ३ निज धाम का रहस्य, कवि से भी अभिप्राय है, ४ परमात्मा से अभेद, ५ दीपक की लाट ( ज्योति ), ६ प्रकाशमान, ७ ज़ाहर, स्पष्ट, ८ पुष्प, ९ हर स्थान, १० मंदिर, ११ मस्जद, १२ व्यर्थ, १३ दिल के भीतर, १४ छुपा हुवा, १५ स्वरूप वा आत्मा, १६ जीवित, प्राण रखता हुआ, १७ भ्रम।

है ग़लत, हस्ति-ए-मौहूम[1] को जो समझे थे।
हर वतन[2] अपना जहाँ[3] था, मुझे मालूम न था ॥ ४ ॥

[ २१९ ]

काफी, ताल दादरा

मालिके-हर दो जहान्[4], मैं ही तो हूँ, मैं ही तो हूं।
ज़ाहिर-ओ-बातन[5] सभी, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥ १ ॥

लज़्ज़ते दुनिया की मुझ को कुछ नहीं है आर्ज़ू[6]।
दोनों जहान् की नेमतें[7], मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥२॥

हक़े-दुनियाँ[8] का मुझ ही में ख्वाब था मिसले-ख्याल[9]।
बेदार[10] हो देखा ज़रा, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥ ३ ॥

महजूब[11] इस्मो-जिस्म[12] में था हस्ती-ओ-इल्मो-सरूर[13]।
परदहे-जहल[14] उठ गयो, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥ ४ ॥

कुछ नहीं मुझ से सिवा, दुनियाँ, खुदा, रूहें[15] तमाम।
हर जुज़्व-ओ-कुल[16] की असलीयत, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥५॥

चशमाए-उलफतें[17] मुझे हासिल हुआ ला इन्तहा[18]।
मुझसे जुदा हरगिज़ नहीं, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥ ६ ॥

---

१ कल्पित वस्तु, अपने कल्पित देह-प्राण, २ देश, घर, यहाँ कवि के नाम से भी मुराद है, ३ देश, ४ दोनों लोकों का स्वामी, ५ बाहिर भीतर, ६ इच्छा, ७ पदार्थ, ८ जगत की सत्यता, ९ स्वप्न तत्, १० जाग कर, ११ आवृत या ढका हुआ, १२ नाम रूप, १३ सच्चिदानंद, १४ अज्ञान का आवरण वा परदा, १५ जीवात्माएँ, १६ व्यष्टि समष्टि, १७ प्रेम का स्रोत १८ अनन्त।

उड़ गई जड़ से दुई[1], रुख्सत हुई वहदानीयत[2]।
मादूम[3] है दानशे-जहान्[4], मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥७॥

आलमे-दुनिया[5] में हर सू[6] ताबाँ[7] है मेरा ही नूर।
मेहरो-माह[8] में रौशनी, मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं ॥ ८ ॥

[ २२० ]

राग काफी, ताल ग़ज़ल

मुझको देखो। मैं क्या हूं, तन तन्हा[9] आया हूं।
मतला-ए-नूरे-खुदा[10] हूं, तन तन्हा आया हूं ॥ १ ॥

मुझको आशिक़ कहो, माशूक़[11] कहो, इश्क़ कहो।
जा-बजा जल्वानुमा[12] हूं, तन तन्हा आया हूं ॥ २ ॥

मैं ही मसजूदो-मलायक[13] हूं बशक्ले-आदम[14]।
मज़हरे-खासे-खुदा[15] हूं, तन तन्हा आया हूँ ॥ ३ ॥

लामकाँ[16] अपना मकाँ है, सो तमाशा के लिये।
मैं तो पर्दे में छुपा हूँ, तन तन्हा आया हूँ ॥ ४ ॥

---

१ द्वैत, २ अद्वैत, ३ लुप्त, ४ संसार की बुद्धि, ५ संसार, ६ हर तरफ ७ प्रकाशमान, ८ सूर्य-चाँद, ९ अकेला, १० ईश्वर के प्रकाश के प्रकट होने का स्थान (स्रोत), ११ प्रिया, १२ ज़ाहर, प्रगट, १३ मैं देवताओं का पूजनीय हूँ, अर्थात् देवतागण मेरी उपासना करते हैं, १४ पुरुष के रूप में, १५ स्वयं ईश्वर के प्रगट होने का स्थान, १६ देश रहित।

हूँ भी, हाँ भी अनलहक़[1], है यह मञ्ज़ल अपनी।
शम्से-इर्फ़ां[2] की ज़िया[3] हूँ, तन तन्हा आया हूँ ॥ ५ ॥

किस को ढूँढूं, किसे पावूँ, मैं बताओ साहिब।
आप में आप ही छुपा हूँ, तन तन्हा आया हूँ ॥ ६ ॥

[ २२१ ]

राग तिलंग, ताल केरवा

मैं हूँ वह ज़ात नापैदा[4] किनारो-मुत्लक़ो-बेहद[5]।
कि जिस के समझने में अक़्ले-कुल[6] भी तिफ़्ले-नादां[7] है ॥ १ ॥

कोई मुझको खुदा माने, कोई भगवान जाने है।
मेरी हर सिफ़्त बनती है, मेरा हर नाम शायां[8] है ॥ १ ॥

कोई बुतखाना[9] में पूजे, हरम[10] में, कोई गिर्जा में।
मुझे बुतखाना-ओ-मसजिद कलीसा[11], तीनों यकसां है ॥ ३ ॥

कोई सूरत मुझे माने, कोई मुतलक़ पहचाने है।
कोई खालिक़ पुकारे है, कोई कहता यह इन्सां है ॥ ४ ॥

---

१ शिवोऽहं, अहम् ब्रह्मास्मि, "मैं ईश्वर हूँ", २ ज्ञानरूपी सूर्य, ३ प्रकाश, ४ न उत्पन्न होने वाली वस्तु, ५ बिलकुल सीमातीत वा अनन्त, ६ समष्टि बुद्धि, ७ मूर्ख बच्चा, ८ प्रकट, प्रकाशित, ९ मन्दिर, १० काबा ( मसजिद ), ११ गिरिजा घर, १२ सृष्टि का कर्त्ता।

मेरी हस्ती में यकताई[1] दूई[2] हरगिज नहीं बनती।
सिवा मेरे न था होगा न है यह रमज़े-इर्फ़ां[3] है ॥ ५ ॥

[ २२२ ]

राग सिंधोरा, ताल दीपचंदी

न दुश्मन है कोई अपना न साजन[4] ही हमारे हैं।
हमारी ज़ाते-मुतलक़[5] से हुए यह सब पसारे हैं ॥१॥ } टेक

न हम हैं देह मन बुद्धि, नहीं हम जीव नै[6] ईश्वर।
वले[7] इक कुन[8] हमारी से बने यह रूप सारे हैं ॥ २ ॥

हमारी ज़ाते-नूरानी[9], रहे इक हाल पर दायम[10]।
कि जिस की चमक से चमके यह मिहरो-माह[11] सितारे हैं ॥३॥

हर इक हस्ती[12] की है हस्ती[13] हमारी ज़ात पर क़ायम।
हमारी नज़र पड़ने से नज़र आते नज़ारे[14] हैं ॥ ४ ॥

बरंगे-मुख्तलिफ नामो-शकल[15] जो दमक[16] मारे है।
हमारे तूर[17] के शोले[18] से उठते यह शरारे[19] हैं ॥ ५ ॥

---

१ अद्वैत, २ द्वैत, ३ ज्ञानियों का संकेत, ४ मित्र, ५ आत्मा, शुद्ध स्वरूप, ६ नहीं, ७ किन्तु, ८ आज्ञा, हुक्म, संकेत, ९ प्रकाश स्वरूप, १० नित्य, ११ सूर्य और चाँद, १२ वस्तु, १३ अस्तित्व, वस्तुत्व, १४ नाना प्रकार के दृश्य पदार्थ, १५ नाना प्रकार के नाम और रूप, १६ चमके हैं, १७ अपने स्वरूप ( आत्मा ) के अग्नि रूपी पर्वत की, १८ लाट, १९ अंगारे।

[ २२३ ]

राग जंगला, ताल धुमाली

बाग़े-जहां[१] के गुल[२] हैं, या खार[३] हैं तो हम हैं। }
गर यार हैं तो हम हैं, अग़यार[४] हैं तो हम हैं॥१॥ } टेक

दरिया-ए-मार्फ़त[५] के देखा, तो हम हैं साहिल[६]।
गर वार हैं तो हम हैं, घर पार हैं तो हम हैं॥ २॥

वाबस्ता[७] है हमीं से, गर जबर[८] है वगर क़दर[९]।
मजबूर हैं तो हम हैं, मुखतार हैं तो हम हैं॥ ३॥

मेरा ही हुस्न[१०] जग में, हर चंद मौजज़न[११] है।
तिस पर भी तेरे तिशना-ए-दीदार[१२] हैं तो हम हैं॥ ४॥

फैला के दामे-उलफत[१३] घिरते घिराते[१४] हम हैं।
गर सैद[१५] हैं तो हम हैं, सय्याद[१६] हैं तो हम हैं॥ ५॥

अपना ही देखते हैं, हम बन्दोबस्त थारो।
गर दाद[१७] हैं तो हम हैं, फर्याद हैं तो हम हैं॥६॥

---

१ संसार रूपी बाग़ के, २ फूल, ३ काँटा, ४ शत्रु, ५ आत्मज्ञान का दरिया ( समुद्र ), ६ तट ( किनारा ), ७ बन्धा हुआ है, संबन्ध रखता है, ८ जबरदस्ती, ९ और इख़्तयार, ताक़त, बल, १० सौन्दर्य, ११ लैहरें मार रहा है, १२ दर्शन के प्यासे, १३ मोहजाल, १४ फँसते फँसाते, १५ शिकार, १६ शिकारी, १७ न्याय वा न्यायालय।

[ २२४ ]

भैरवी ग़ज़ल ।

दिल को जब ग़ैर[1] से सफ़ा देखा । }
आप को अपना दिलरुबा[2] देखा ॥ १ ॥ } टेक

पी लिया जामे[3] बादहे-ए-वहदत[4] ।
ख़्वेशो-बेगाना[5] आशना[6] देखा ॥ २ ॥

जिस ने है ज़ात अपनी को जाना ।
आप को हक़्[7] से कब जुदा देखा ॥ ३ ॥

रमज़े[8]-रहबर की अपने जब समझा ।
न कोई ग़ैर[9] वा मासिवा देखा ॥ ४ ॥

करके बाज़ार गर्म कसरत[10] का ।
आप को अपने में छुपा देखा ॥ ५ ॥

ग़ैर का इस्म[11] गर्चि है मशहूर ।
न निशां उस का, न पता देखा ॥ ६ ॥

जब से दर्शन है राम का पाया ।
ऐ राम ! क्या कहूँ कि क्या देखा ॥ ७ ॥

---

१ दूसरे से, २ माशूक़ ( प्यारा ), ३ प्याला, ४ अद्वैत रूपी मद (शराब) ५ अपना और पराया, ६ मित्र, ७ सत्य स्वरूप, ८ गुरु के संकेत, ९ अपने से अलग वा भिन्न न देखा, १० नानत्व, ११ नाम ।

[ २२५ ]

भैरवी ग़ज़ल

यार को हम ने जा बजा[1] देखा ।
कहीं बन्दा कहीं ख़ुदा देखा ॥ १ ॥

सूरते-गुल[2] में खिलखिला के हँसा ।
शक्ले-बुलबुल[3] में चहचहा देखा ॥ २ ॥

कहीं है बादशाहे-तख़्ते-निशीं[4] ।
कहीं कासा[5] लिये गदा[6] देखा ॥ ३ ॥

कहीं आबदँ[7] बना, कहीं ज़ाहिद[8] ।
कहीं रिंदों[9] का पेशवा[10] देखा ॥ ४ ॥

करके दावा कहीं अनलहक़[11] का ।
बर सरे-दार[12] वह खिंचा देखा ॥ ५ ॥

देखता आप है, सुने है आप ।
न कोई उस के मासिवा[13] देखा ॥ ६ ॥

बल्कि यह बोलना भी तकल्लुफ़[14] है ।
हमने उसको सुना है या देखा ॥ ७ ॥

---

१ हर जगह, २ पुष्प के रूप में, ३ बुलबुल के रूप में, ४ सिंहासन पर बैठा हुआ महाराजा, ५ भिक्षा-का प्याला, खप्पर, ६ भिक्षु, फ़क़ीर, ७ पूजा पाठी, कर्मकाण्डी, ८ विरक्त, ९ बदमाश, शराबी, १० नेता, सरदार, ११ मैं ख़ुदा हूँ ( शिवोऽहं ), १२ सूली के सिरे पर, १३ अन्य, भिन्न, १४ ज़्यादा, यूँ ही है ।

[ २२६ ]

राग भैरवी, ताल तीन

दिया अपनी खुदी[1] को जो हमने उठा।
वह जो परदा सा बीच में था न रहा[2]॥
रहे परदे में अब न वह परदा निशीं।
कोई दूसरा उस के सिवा न रहा ॥ १ ॥

न थी हाल की जब हमें अपनी खबर।
रहे देखते औरों के ऐबो-हुनर[3] ॥
पड़ी अपनी बुराईयों पर जो नज़र[4]।
तो निगाह[4] में कोई बुरा न रहा ॥ २ ॥

ज़फर[5] आदमी उस को न जानियेगा।
गो[6] हो कैसा ही साहिबे-फ़ैह्मो-ज़का[7] ॥
जिसे[8] ऐश में यादे-खुदा न रही।
जिसे तैश[9] में खौफे-खुदा[10] न रहा ॥ ३ ॥

[ १२७ ]

राग शंकराभरण ताल दादरा।

की करदा नी। की करदा, तुसी पुच्छोखां दिलबर की करदा (टेक)

---

१ अहङ्कार, २ छुपकर परदे में बैठनेवाला या परदा ओढ़े हुए, ३ गुण-दोष, ४ दृष्टि, ५ कवि का नाम, ६ चाहे, यद्यपि, ७ समझदार, तीव्र बुद्धि और विचार वाला, ८ विषयानन्द, भोग विलास, ९ क्रोध, गुस्सा, १० ईश्वर का भय।

इकसे घर विच वसदयां रसदयां, नहीं हुँदा विच परदा। की करदा०॥१

विच मसीत नमाज़ गुज़ारे, बुतखाने जा वड़दा। की करदा०॥ २॥

आप इक्को, कई लाख घराँ अंदर, मालिक हर घर घर दा। की करदा०॥३॥

मैं जितँ वल्ल देखां, उत वल्ल ओही, हर इक दी संगत करदा की करदा॥४॥

---

पंक्तिवार अर्थ।

(१) एकही घर में रहते हुए पर्दा नहीं हुआ करता, मगर मेरा स्वरूप मेरे दिल रूपी घर में रहते हुए परदे में छुपा है, इस लिये ऐ लोगो! तुम इस दिल्बर (प्यारे आत्मा) को पूछो कि तू यह क्या लुकान छिप्पन खेल कर रहा है।

(२) वह कहीं तो मसजिद में छुप कर बैठा रहता है और उस के आगे नमाज़ होती है। और कहीं मन्दिरों में वह दाखिल हुआ है जहाँ उस की पूजा हो रही है; इस लिये ऐ लोगों! तुम दिल्बर को पूछो कि वह क्या कर रहा है।

(३) आप स्वयम् तो एक अद्वितीय है, मगर लाखों घरों (दिलों) के अन्दर प्रविष्ट हुआ हुआ हर एक घर का स्वामी बना हुआ है, इस लिए ऐ लोगो! तुम दर्याफ़्त करो कि यह दिल्बर (प्यारा) क्या क्या कर रहा है।

(४) जिधर मैं देखता हूँ उधर दिल्बर ही नज़र आता है और हर एक के साथ वही (मिला बैठा) नज़र आता है। इस लिये ऐ लोगो! आप दर्याफ़्त करो कि दिल्बर (ईश्वर) यह क्या कर रहा है।

मूसा ते फरऔन बना के, दो होके क्यों लड़दा ? की करदा० ॥ ५॥

[ २२८ ]

राग खमाज, ताल दादरा

बिना ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे ॥ ( टेक )

चाहे धार माला चाहे बान्ध मृग छाला ।
चाहे तिलक छाप चाहे भस्म तू रमावे ॥ १ ॥ बिना०

चाहे रच के मन्दिर मठ, पत्थरों के लावे ठठ ।
चाहे जड़ पदार्थों को सीस नित्य नवावे ॥ २ ॥ बिना०

चाहे बजा गाल चाहे शँख और बजा घड़याल ।
चाहे ढप चाहे ढोल झाँझ तू बजावे ॥ ३ ॥ बिना ज्ञान०

चाहे फिरे तू गया[1], प्रयाग, काशी में जा प्राण त्याग ।
चाहे गंगा यमुना चाहे सागर[2] में नहावे ॥ ४ ॥ बिना ज्ञान०

द्वारका अरु रामेश्वर, बद्रीनाथ पर्वत पर ।
चाहे जगन्नाथ में तू झूठो भात खावे ॥ ५ ॥ बिना ज्ञान०

---

(१) मुसलमानों में हज़रत मूसा और हज़रत फरौन हुए हैं जिन में खूब झगड़ा हुआ था, इन दोनों को बनाकर अर्थात् इस तरह से आप ही दो रूप होकर यह दिलबर क्यों लड़ता और लड़ाता है । इस लिये ऐ लोगो ! आप दर्याफत करो कि यह दिलबर क्या करता है ।

---

१ तीर्थों के नाम हैं, २ गंगा सागर ।

चाहे जटा सीस बढ़ा, जोगी हो, चाहे कान फड़ा।
चाहे यह पाखंड रूप लाख तू बनावे ॥ ६ ॥ विना ज्ञान०

ज्ञानियों का कर ले संग, मूर्खों की तज दे भंग।
फिर तुझे ठीक मुक्ति का साधन आवे ॥ विना ज्ञान०

[ २२९ ]

राग खमाज, ताल दादरा

मक्के गया गल्ल[1] मुक़दी नाहीं, जे[2] न मनो मुकाइये[3]।
गंगा गयां कुच्छ ज्ञान न आवे, भावें[4] सौ सौ टुब्बे लाईये।

गया[5] गयां कुच्छ गति न होवे, भावें लख लख पिंड बट पाईये।
प्रयाग गयां शान्ति न आवे, भावें नैह नैह मूंड मुंडाईये।

बुधाल दास जेहड़ी[6] वस्तु अन्दर होवें, ओहनूं[7] बाहर क्यों।
कर पाईये ॥ १

[ २३० ]

राग ज़िला, वा पीलू, ताल दीपचंदी

क्या खुदा को ढूँडता है यह बड़ी कुछ बात है (टेक)
तू खुदा है तू खुदा है तू खुदा की ज़ात[8] है॥ १ ॥ क्या०

---

१ बात, धंधा, २ अगर, ३ खतम करें, ४ चाहे, ५ तीर्थ का नाम है, ६ जौनसी. ७ उसको. ८ वास्तव स्वरूप।

क्या खुदा को ढूँडता है सदा तो तेरे पास है।
पास है पाता नहीं ज्यों फूलन में वास[1] है॥ २॥ क्या०

फिरे भूला एक मृग कस्तूरी वाकी पास है।
पास है पाता नहीं, फिर फिर सूंघे घास है॥ ३॥ क्या०

तुझ में है इक बोलता वह ही खुदा तूं आप रे।
है नारायण हृदय भीतर तूं तेरो तपास[2] रे॥ ४॥ क्या०

[ २३१ ]

ठुमरी, राग जिला, झंझोटी

जहां देखत वहां रूप हमारो ( टेक )

जड चेतन को भेद न पेखत, आतम एक अखंड निहारो[3]।
क्षति[4] जल तेज पवन आकाशे, कारण सूक्षम स्थूल विचारो॥ ज०

नर नारी पशु पंछी भीतर, मुझ बिन कोई न जागन हारो।
कीट पतंग पिशाच पदारथ, सरुवर तरुवर जंगल पहाड़ो॥ ज०

मैं-सब में सब ही मेरे महिं, नाम रूप निरंजन धारो।
नाथ कृपा नरसिंह भयो अब, व्याप रह्यो हमसे जग सारो॥ ज०

[ २३२ ]

आतम चेतन चमक रह्यो, कर निधड़क दीदार[5]॥ टेक.
तूं परमानन्द आप है, झूटे हैं सुतदार[6]॥ १॥ आ०

---

१ सुगंध, खुशबू, २ खोज, इमतिहान लेना, जाँचना, ३ देखो, ४ ज़मीन, पृथ्वी, ५ दर्शन, ६ स्त्री पुत्र।

चमड़ी में हित[1] जो करें, वही पूरे चमार।
नाशवान जग देख के, समझत नाहिं गंवार ॥ २ ॥ अ०

दुर्लभ नर तन पाय के, क्यों न करत विचार।
तन मंदर अद्भुत बनयो, तूं ठाकर सरदार ॥ ३ ॥ अ०

विषयों में फंस फंस मरे, जान खोय बेकार।
जो सुख चाहें तो त्याग दे, परधन अरु पर नार ॥ ४ ॥ अ०

[ २३३ ]

राग बिहाग, ताल दादरा

मिक़राज़े-मौज[2] दामने-दरया[3] कतर गयी। }
वहदत[4] का बुर्क़ा फट गया, सारी सतर[5] गयी ॥ } टेक

दरयाए-बेखुदी[6] पै जो बादे[7]-खुदी चली।
कसरत[8] की मौज हो के वह सारे पसर[9] गयी॥ १ ॥

इस्मो-सिफत[10] के शौक़ ने ऐसा कीया रज़ील[11]।
गुमनामी[12] बे सफ़ाती[13] की सारी क़दर[14] गयी ॥ २ ॥

---

१ प्यार, २ लैहर की कैंची, ३ दरया के पल्ले ( चादर ), ४ एकता का परदा, ५ भेद, परदा दूर होगया, ६ बे खुदी ( अहंकार रहित ) के समुद्र अथवा धारा पर, ७ अहंकार रूपी वायु, ८ नानत्व की लैहर, ९ सर्व ओर फैल गयी, १० नाम रूप, ११ कमीना, नीच, १२ नाम विहीनता, १३ निर्गुणता, १४ इज़्ज़त।

जामा-ए-वजूद[1] पैहन के बाज़ारे दैहर[2] में।
ज़ातो-सफ़ात[3] अपनी की सारी खबर गयी ॥ ३ ॥

फरज़न्दो-ज़नो-माल[4] की महब्बत में होके ग़र्क़।
इन्सान के वजूद[5] की सारी वक़र[6] गयी ॥ ४ ॥

शहवत[7]-तमा[8]-ओ-ख़शम[9]-ओ-तकब्बर[10] में आ फंसे।
यकाई-ए-ज़ात[11] की जो शरम थी, उतर गई ॥ ५ ॥

यह कर लीया, यह करता हूँ, यह कल करूंगा मैं।
इस फ़िकरो-इन्तज़ार में शामो-सहर[12] गयी ॥ ६ ॥

बाक़ी रही को दिल की सफ़ाई में सर्फ़ कर।
आरायशे-वजूद[13] में सारी गुज़र गई ॥ ७ ॥

भूले थे देख दुन्या की चीज़ों को हम यहां।
हादी[14] ने इक तमांचा दीया होश फिर गई ॥ ८ ॥

ग़फ़लत की नींद में जो तअय्युन[15] की ख्वाब थी।
बेदार[16] जब हुए तो न जाना किधर गयी ॥ ९ ॥

---

१ शारीरक चोला ( शरीर रूपी लिबास ), २ काल ( समय ) के बाज़ार में, ३ असली स्वरूप और उसके गुण, ४ पुत्र, स्त्री और धन, ५ चोला, शरीर, ६ इज़्ज़त, ७ विषय कामना, ८ लालच ९ क्रोध, १० अहंकार, ११ आत्मा की एकता, अभेदता वा अद्वतीयपन, १२ रात्री और दिन, १३ शरीर के सजाने में, १४ रास्ता बताने वाला, शिक्षा देने वाला गुरु, १५ बन्ध उपाधि वा कैद कर देनेवाला स्वप्न, १६ जाग्रत हुई।

माशूक़ की तालाश में फिरते थे दर बदर।
नज़र आया बेनक़ाब[1], दूई की नज़र गयी ॥ १० ॥

दिलदार[2] का वसाल[3] हुआ दिल में जब हसूल[4]।
दिलदार ही नज़र पड़ा दीदा[5] जिधर गयी ॥ ११ ॥

साक़ी[6] ने भर के जाम[7] दीया मार्फ़त[8] का जब।
दिस्तार[9] भूली, होश गया, यादे-सर[10] गयी ॥ १२ ॥

[ २३४ ]

गज़ल भैरवी

है लैहर एक आलम[11] बैहरे-सरूर[12] में।
है बूदो[13]-वाश सारी उसके ज़हूर में ॥ १ ॥

---

पंक्तिवार अर्थ।

( १ ) दुनिया आनन्द के समुद्र में एक लैहर है और इस आनन्दघन समुद्र के भीतर में इस जहान का रहना सहना है।

---

१ जब द्वैत दृष्टि दूर हो गयी तो अपना असली स्वरूप बिना परदे के नज़र आगया, २ प्रिय स्वरूप वा निज स्वरूप, ३ मिलाप, दर्शन, अर्थात अनुभव, ४ प्राप्त, ५ दृष्टि, ६ ( प्रेमी रूपी ) शराब पलाने वाला, ७ ( प्रेम ) पियाला, ८ आत्मक ज्ञान, ९ पगड़ी दुनियां की इज़्ज़त की, १० सिर की यादृदाश्त, अर्थात् अपने शरीर की खबर भी लोप हो गयी, ११ जहान, १२ आनन्द का समुद्र, १३ रहन सहन।

मिटती है लैहर जिस दम वह ही तो बैहर है।
हर चार सू[1] है शोला मत देख तूर[2] में ॥ २ ॥

[ २३५ ]

राग भैरवी, ताल दादरा

चादर से मौज[3] की, न छुपे चेहरा आब[4] का।
बुरका हुबाब[5] का न हो बुरका आब का ॥

अपना ही कुछ तसर्रुफे-अवहाम[6] है कि हम।
चेहरा पे हक़[7] के पाते हैं परदा नक़ाब का ॥

आँखें जो मूँद लीं तो दोपहर में रात है।
इस में क़सूर क्या है भला आफताब[8] का ॥

किस काम की यह हस्ती-ए-मौहूम[9] कायनात।
सैराब[10] कब करे है धोका सुराब[11] का ॥

---

( २ ) जिस समय यह लैहर मिट जाती है, उसी समय वही लैहर समुद्र हो जाती है। चारों तरफ लाट है, पहाड़ में ही मत देख, अर्थात् चारों ओर प्रकाश है सिर्फ तूर के पहाड़ पर ( जहाँ मूसा ने आग की लाट देखी थी वहाँ पर ) ही मत देख।

---

१ तरफ, २ आग का पहाड़, ३ तरंगे, ४ जल, ५ बुलबुल, ६ भ्रम पूर्ण अध्यास, ७ सत्य स्वरूप, ८ सूर्य, ६ कल्पित संसार की स्थिति, १० गीला करना, ११ मृगतृष्णा।

अपना हजाब[1] आप है तू ऐ मियाँ न्याज़[2]।
उठने से तेरे होता है उठना हजाब का॥

[ २३६ ]

गज़ल

हुन[3] मैं लखिया[4] सोहना यार। } टेक
जिस दे हुसन दा गरम बाज़ार॥ }

जद[5] अहद[6] अकल्ला[7] सी[8] न ज़ाहिर कोई तजल्ला[9] सी।
न रब रसूल न अल्ला सी न जब्बार[10] सी न क़हार[11] ॥ १ ॥ टेक

बेचूँ[12] च वेचगूना सी वे शुभह, ते वे नमूना सी।
न कोई रंग रूप नमूना सी हुन गूनाँ गू[13] हज़ार ॥ २ ॥ टेक

प्यारा पहन पोशाकां आया आदम अपना नाम धराया।
अहद ते अहमद बन आया नबियां दा सरदार ॥ ३ ॥ टेक

कुन कहा फैकुन[14] कमाया वे चूनी[15] से चून बनायो।
अहद दे बिच मीम रलाया ताँ[16] कीता एडा[17] पसार ॥ ४ ॥ टेक

तजूँ मसीत तजूँ बुतखाना वर्ती रहां न रोज़ह जाना।
भुल्ल गया वजू नमाज़ दोगाना तैं पर जाँ सुट्टां बलहार ॥ ५ ॥ टेक

---

१ परदा, २ कवि का नाम है, ३ अब, ४ पहचाना, ५ जब, ६ अद्वैत, ७ एकमेव, ८ था, ९ ज्योति, प्रकाश, १० बदला लेनेवाला, सर्व शक्तिमान, ११ क्रोध करने वाला, १२ क्यों कब से रहित, १३ नाना प्रकार, १४ कहा, हो और हो, गया, १५ देश काल रहित से देश काल रूप बन आया, १६ तब, १७ इतना।

पीर पैग़म्बर उस दे बरदे[1] उन्स मलायक[2] सजदह[3] करदे।
सिर क़दमाँ[4] उत्ते धरदे सब से बड़ी सरकार ॥ ६ ॥ टेक

जो कोई उस नूँ लखना चाहे बाहज[5] वसीले लखिया न जाय।
शाह अनायत[6] भेद बताये ताँ सब खुले असरार[7] ॥ ७ ॥ टेक

[ २३७ ]

गज़ल

मेरी बुक्कल[8] दे विच चोर, नी मेरी बुक्कल दे विच चोर (टेक)

कीन्हूँ[9] कूक सुनावा नी! मेरी बुक्कल दे विच चोर।
चोरी चोरी निकल गया, जग विच पै गया शोर ॥ १ ॥ टेक

मुसलमान चितां तों चिड़दे, हिन्दू चिड़दे गोर।
दोनों आपस दे विच लड़दे, पहो दोहांदी खोड़[10] ॥ २ ॥ टेक

किते रामदास किते फतहमहम्मद पहो क़दीमी[11] शोर।
मिट गया जद दोहां दा झगड़ा, निकल पया कोई होर[12] ॥ ३ ॥ टेक

पहो ही हुन तुसी भी आखो, आप गुड्डी आप डोर।
मैं दसनाहां तुसीं पकड़ लियावो, बुल्लेशाह दा चोर ॥ ४ ॥ टेक

---

१-सेवक, २ मनुष्य अरु देवता, ३ प्रणाम करते, ४ चरणों पर, ५ बिना, ६कवि बुल्लाहशाह के गुरु का नाम, ७ रहस्य, भेद, ८ बगल, ९ किसको, १० बुरी आदत, ११ पुराना, १२ दूसरा।

गज़ल

मूँह आई बात न रेहन्दी है ( टेक )

झूठ आखाँ[1] ते कुछ बचदा है सच आखियां भाँबड़ मचदा है।
जो[2] दोहां गल्लां तों जचदा है जच जच के जिव्हा केहन्दी है ॥१॥ टेक

इक लाज़म बात अदब दी है सानूँ बात मालूमी सब दी है।
हर हर विच सूरत रब दी है कहुं ज़ाहिर कहुं छुपेंदी है ॥२॥ टेक

जिस पाया भेद कलन्दर दा राह खोजिया अपने अन्दर दा।
सुख वासी है उस मंदिर दा जित्थे चढ़ दी है न लेहन्दी है ॥३॥ टेक

पेथे दुन्या विच अन्हेरा[3] है अते तिलकन बाज़ी वेढ़ा[4] है।
अन्दर वड़ के देखो केढ़ा[5] है बाहर खफतन पई ढूँढेन्दी है ॥४॥ टेक

किते[6] नाज़ अदा दिखलाई दा किते हो रसूल मिलाई दा।
किते आशक़ बन बन आईदा किते जान जुदाई सैहंदी है ॥५॥ टेक

जदों[7] ज़ाहिर होय नूर होरीं जल गए पहाड़ कोह तूर होरीं।
तदों[8] दार चढ़े मंसूर होरीं ओथे शेखी सेन्डी[9] न तैंडी[10] है॥६॥टेक

---

१ कहूँ, २ चित्त, ३ अंधेरा, ४ तिलकने का मैदान, ५ कौन, ६ कहीं, ७ जब, ८ तब, ९ हमारी, १० तुम्हारी ।

जे ज़ाहिर करां असरार[1] ताईं सब भुल जावन तकरार ताईं।
फिर मारन बुल्हे यार ताईं ऐथे मखफी[2] गल सुहेन्दी है ॥७॥ टेक

असां पढ़्या इल्म तहक़ीक़ी[3] है ओथे इक्को हरफ हक़ीक़ी है।
होर झगड़ा सब वधीकी है ऐवें रौला पा पा वेहन्दी है ॥८॥ टेक

बुल्हाहशाह असां थीं वख[4] नहीं विन शौह थीं दूजा कख[5] नहीं।
पर वेखन[6] वाली अख[7] नहीं ताहीं जाँ पई दुख सेहन्दी है ॥९॥ टे

[ २३९ ]

राग आसावरी, तोल तीन

पास खड़ा नज़रों में न आवे, ऐसा राम हमारा रे
है घट में घट की सब जाने, रहत खलक से न्यारा रे
कोई ध्यावे पीर पैग़म्बर, कोई ठाकुरद्वारा रे
जप तप संयम और व्रत सब कर कर सभे हारा रे
गुरु गम से कोई लक्ष्य न पावे, कहत कबीर विचारा रे

[ २४० ]

ठोकर खा खा ठाकर डिट्ठा, ठाकर ठोकर माँहि ॥

---

१ रहस्य, २ गुप्त बात, ३ तत्व ज्ञान, ४ अलग पृथक, ५ एक तिनका, ६ देखनेवाली, ७ आँख।

ठीकर भजदा टुटदा सड़दा, ठाकर इकसे थाँहि ॥
ठौर ठौर विच ठहरया ठाकर, ठाकर बाहर नाँहि ॥

ठग ठीक ठाकर ही ठाकर, ठाकर ही जहां तहाँहि ॥
ठाकर राम नचावे नाचे, वह जाँदा जहां तहाँहि ॥

[ २४१ ]

गज़ल

अर्ज़ो-समा[1] कहां तेरी वुसअत[2] को पा सके ।
मेरा ही है वह दिल कि जहां तू समा सके ॥ १ ॥

वहदत[3] में तेरे हर्फे-दुई[4] का न आ सके ।
आईना[5] क्या मजाल[6] तुझे मुँह दिखा सके ॥ २ ॥

क़ासिद[7] ! नहीं यह काम तेरा, अपनी राह ले ।
उस का पयाम[8] दिल के सिवा कौन ला सके ॥ ३ ॥

ग़ाफ़िल[9] ! ख़ुदा की याद को मत भूल ज़ीनहार[10] ।
अपने तईं भुला दे अगर तू भुला सके ॥ ४ ॥

---

१ पृथिवी-आकाश २ सीमा ३ अद्वैत ४ द्वैत का वर्ण ५ दर्पण ६ शक्ति ७ ईश्वर का सन्देशा लाने वाला, अभिप्राय पैग़म्बर से है ८ सन्देशा ९ ए अज्ञानी ! बे ख़बर

[ २४२ ]

गज़ल

कब लबासे-दुनयवी[1] में छिपते हैं रौशन-ज़मीर[2]।
जामा-ए-फ़ानूस[3] में भी शोला[4] उरयाँ[5] ही रहा ॥ १ ॥

सब को देखा उस से और उस को न देखा चूँ निगह[6]।
वह रहा आँखों में और आँखों से पिनहाँ[7] ही रहा ॥ २ ॥

मुझ में उस में रब्त[8] है गोया[9] बरंगे-बूये-गुल[10]।
वह रहा आग़ोश[11] में लेकिन गुरेज़ाँ[12] ही रहा ॥ ३ ॥

दीनो-ईमां ढूँढना है ज़ौक़[13] क्या इस वक़्त में।
अब न कुछ दीन[14] ही रहा बाक़ी न ईमां[15] ही रहा ॥ ४ ॥

---

१ भौतिक रूप, वा वेष २ विवेकी वा अनुभवी मनुष्य ३ चिमनी के वेष वा उपाधि में ४ तेज, प्रकाश ५ नग्न, विद्यमान, प्रकट ६ दृष्टि के समान अर्थात् नेत्र वत् ७ छिपा हुआ, अविद्यमान ८ सम्बन्ध ९ मानो, जैसे १० पुष्प के रंग और सुगन्ध में जैसे ११ बग़ल, समीप १२ भागा हुआ, दूर १३ कवि नाम है १४ विश्वास, १५ धर्म ।

# ज्ञानी

## ज्ञानी की आभ्यन्तर दशा

[ २४२ ]

राग भैरवी, ताल रूपक

नसीमे[1]-बहारी चमन[2] सब खिला। अभी छींटे दे देके बादल चला।
गुलों[3] ! बोसा[4] लो, चान्दनी का मिला। जवाँनाज़नी[5] इक सरापा[6] चला।
हुईखुश, मिलातख़लिया[7] क्याभला। क़रीबआई, घूरी हँसी खिलखिला।
न जादूसे लेकिन ज़रा वह हिला। निगह[8] से दिया काम[9] को झट जला।
सकी जब न सूरज में दीवा जला। परी बन गई ख़ुद मुजस्सम[10] हया।

---

१ बसन्त ऋतु की मन्द मन्द स्पन्द ( ठण्डी वायू ) २ बाग़, ३ पुष्प, ४ चुम्बन, ५ युवा बाँकी स्त्री ( कामिनी ), ६ अति सुन्दर, ७ एकांत ८ दृष्टि ९ कामवृत्ति ( विषय वासना ) १० लज्जावती अर्थात् जब ज्ञानी रूप सूर्य में वह कामिनी अपना विषय-वासना रूपी दीपक न जला सकी, अर्थात् जब ज्ञानवान उस कामिनी के सौंदर्य रूप फंदे में न आ सका, तब वह बाँकी कामिनी स्वयं अति लज्जित हो गई।

कि सब हुस्नकी[1] जान मैं ही तो हूं।
मेहर-ओ-माह[2] के प्राण मैं ही तो हूं॥ १

हज़ारों जमा पूजा सेवा को थे थे राजे चँवर मोरछल कर रहे।
थे दीवान धोते क़दम[3] शौक से थे ख़िदमत में हाज़र मदहख़्वाँ[4] खड़े।
ऋषी तुम हो अवतार सबसे बड़े यह सब देख बोला लगा क़हक़हे[5]।

बड़ा ही नहीं बल्कि छोटा भी हूँ।
न महदूद[6] कीजियेगा सब मैं ही हूं॥ २॥

बुरे तौर थे लोग सब छेड़ते ठठोली से थे फबतियाँ[7] घड़ रहे।
तड़ातड़ तड़ातड़ वह पत्थर जड़े लहू के निशाँ सिरपै रुलपै[8] पड़े।
पया[9] पै थे ज़ख़्म और सदमे[10] कड़े थे दीदे[11] अजब मुस्कराहट[12] भरे।

कि इस खेल की जान मैं ही तो हूं।
यह लीला के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ३॥

समय नीम[13] शब, माह[14] था जनवरी हिमालयकी बर्फ़ें, स्याह रात थी।
बरफ को लगी उस घड़ी इक झड़ी थमी बर्फ़बारी[15] तो आँधी चली।
बदन की तो गत[16] बेदमजनूँ सी थी पै दिल में थी ताकत, लबोंपर हँसी

कि सर्दी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनसार[17] के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ४॥

---

१ सौंदर्य २ सूर्य चंद्र, ३ चरण, पाद, ४ स्तुति करने वाले, ५ हँसकर बोला, ६ परिच्छिन्न न कीजिएगा, ७ बातें बना रहे व हँसी उड़ा रहे, ८ मुख, ९ लगातार, निरन्तर, १० कठोर चोट, ११ नेत्र, १२ प्रसन्नता भरे, हँसी परोये हुये, १३ अर्ध रात्रि, १४ मास, १५ बर्फ़ की वर्षा, १६ दशा, १७ पञ्च-भूत जिन्हें फ़ारसी में चार तत्व कहते हैं।

समय दोपहर माह था जून का जगह[1] की जो पूछो, ख़ते-उस्तवा।
तमाज़त[2] ने लू की दिया सब जला हरारत[3] से था रेग[4] भी भूनता।
बदन मोम सा था पिघलता पड़ा पै लब से था ख़न्दा[5] परोया हुआ।

कि गर्मी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासार के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ५॥

बियाबान[6] तनहा लक़ोदक़ ग़ज़ब इधर मेदा[7] ख़ाली उधर ख़ुश्क लब।
उठाई निगह सामने, पे अजब लड़ी आँख इक शेरे-ग़ुर्रा[8] से तब।
यह तेज़ी से घूरा, गया शेर दब जलाले[9]-जमालीथा चितवन[10] में अब।

कि शेरों की भी जान मैं ही तो हूँ।
सभी ख़ल्क़[11] के प्राण मैं ही तो हूँ॥ ६॥

बला मंझधारा में किश्ती घिरी यह कहता था तूफ़ां कि हूं आख़री।
थपेड़ों से झटपट चटाँ वह चिरी उधर बिजली भी वह गिरी, वह गिरी।
था थामे हुये बाँस[12] ज्यूं बाँसरी तबस्सम[13] में जुरअत[14] भरी थी निरी।

कि तूफ़ाँ की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासार के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ७॥

---

१ पृथिवी का मध्य भाग जहाँ अति गरमी होती है, २ गरमी, ३ धूप की तेज़ी से, ४ रेत, ५ हँसी परोई हुई, ६ बड़ा भारी भयानक ग़ुञ्जान वन, ७ पेट, ८ चिंघारने वाला व घूरने वाला शेर, ९ निजानन्द का तेज, १० दृष्टि, ११ सृष्टि. १२ यहाँ अभिप्राय बेड़ी को चलाने वाले चप्पे से है, १३ मुस्कराहट. हँसी, १४ दलेरी, उत्साह, शूर वीरता व निर्भयता।

चरून दर्दो-पेचश से सीमाब[1] था तपे-सख़्तो-रेज़श से बेताब[2] था।
नशा ज्ञान का ज्यूँ[3] मये[4]-नाब था वह गाता था गोया[5] मरज़ख्वाब था।
मिटा जिस्म जो नक़्श बर आब[6] था न बिगड़ा मेरा कुछ कि ख़ुद आब था।

जहाँ भरके अबदाने[7]-ख़ूबाँ में हूं।
मैं हूं 'राम' हर एक को जाँ में हूं ॥ ८ ॥

[ २४४ ]

## ज्ञानी की दृष्टि

राग कालिंगड़ा, ताल केरवा

जो ख़ुदा को देखना हो, मैं तो देखता हूं तुमको। } टेक
मैं तो देखता हूं तुम को, जो ख़ुदा को देखना हो ॥ }

यह हजाबे-साज़ो-सामाँ[8], यह नक़ाबे-यासो-हिरमाँ[9]।
यह ग़लाफ़े-नंगो[9]-नामूस[10], वह दमाग़ो-दिल का फ़ानूस।
वह मनो-तुमा[11] का पर्दा, वह लबासे-चुस्त[12] कर्दा।
वह हया[13] की सब्ज़ काई, वह फ़नाह सियाह रज़ाई।
यह लफ़ाफ़ा जामा[14] बुर्क़ा, यह उतार सितर[15] मुझको।
जो बरहना[16] करके झाँका, तो तुम हो सफ़ा ख़ुदा हो ॥१॥ टेक

---

१ पारा के समान क्षुब्ध (तड़प रहा) था, २ तड़प रहा था, ३ सदृश, ४ अंगूर की शराब, ५ मानो, ६ जल पर चित्र के समान था, ७ सुन्दर देहों में, ८ (वह साज़ और समान का) पर्दा, ९ निराशा की आड़ व पर्दा, १० लज्जा व मान अथवा लज्जा निर्लज्जता का पर्दा, ११ मैं, तू, १२ चुस्त करने वाला वस्त्र, १३ लज्जा, १४ वस्त्र, १५ चादर, १६ नङ्गा।

ऐ नसीमे-शौक़[1] ! जा के, वह उड़ादे ज़ुल्फ रुख[2] से।
ऐ सबा-ए-इल्म[3] ! जा कर, दे हटा वह ख्वाबे[4]-चादर।
अरे बादे-तुन्दमस्ती[5] ! दे मिटा अबर[6] की हस्ती।
ऐ नज़ार के ज्ञान गोले, यह फसील झट गिरादे।
कि हो जहलॉ भस्म इक दम, जलेवेह्म हो यह आलम[8]।
जो हो चार सू[9] तरन्नुम[10], कि हैं हम खुदा, खुदा हम ॥२॥ टेक

न यह तेग़[11] में है ताकत, न यह तोप में लियाकत।
न है बर्क़[12] में यह यारा, न है ज़ाहर ही का चारा।
न यह कारे-तुन्द[13] तूफ़ाँ, न है ज़ोर शेरे[14]-गुर्रान्।
कोई जज़बह[15] है न शहवत[16], कोई ताना:नै[17] शरारत।
जो तुझे हलाने आयें
जो तुझे हलाने आयें, तो हो राख भस्म हो जायें।
वह खुदाई[18] दीदे खोलो, कि हों दूर सब बलायें॥३॥ टेक

वह पहाड़ी नाले चमचम, वह बहारी अबर छम छम।
वह चमकते चाँद तारे, हैं तेरे ही रूप प्यारे।
दिले-अन्दलीब[19] में खूँ, रुखे[20]-गुल का रंगे-गुलगूँ[21]।

---

१ जिज्ञासा की पवन, २ आत्मस्वरूप के ऊपर से माया रूपी ज़ुल्फ वा काला पर्दा परे हटा दे, ३ ऐ ज्ञान की वायू ( लटक ), ४ स्वप्न रूपी चादर, ५ ऐ निजानन्द की घटा, ६ ( पर्दा रूपी ) बादल, ७ अज्ञान, ८ संसार, ९ चारों ओर १० ( आनन्द की ) फुहार, मन्द मन्द वर्षा, ११ तलवार १२ बिजली, १३ भारी घटा का काम, १४ चिंघाड़ने वाला वा भयानक शेर, १५ चित्त की उमंग वा जोश, १६ विषय भोग वा विषय वासना, १७ न कोई १८ ब्रह्म दृष्टि या दिव्य नेत्र, १९ बुलबुल पक्षी का दिल, २० पुष्प की सूरत, २१ लाल रङ्ग वा गुलाबी रंग।

यह शफ़क़ के सुर्ख इशवे[1][2], हैं तेरे ही लाल पट्ठे।
है तुम्हारा धाम तो 'राम' ज़रा घर को मुँह तो मोड़ो।
कि रहीम, राम हो तुम, तुम ही तो खुद खुदा हो ॥४॥ टेक

[ २४५ ]

## रौशनी की घातें

अथवा

## ( जनूने नूर )

राग देश, ताल धमार

मैं पड़ा था पहलू[3] में राम के, दोनों एक नींद में लेटे थे।
मेरा सीना[4] सीने पै उसके था, मेरा साँस उसका तो साँस था॥

आई चुपके चुपके से रौशनी, दिये बोसे[5] दीदों[6] पै नाज़ से।
लम्बी पतली लाल सी उङ्गलियों से, खुशी से गुदगुदा दिया?॥

कुछ तुमको आज दिखाऊँगी ( मैं दिखाऊँगी )
ऐसा कहके हाथ खुला दिया।
यह जगा दिया कि सुला दिया, जाने किस बला में फँसा दिया।
ऐ लो! क्या ही नक़्शा जमा दिया, कैसा रंग जादू रचा दिया॥

---

१ उदय अस्त के समय आकाश में जो लाली होती है, साँझ, २ नखरे, नाज़ और अदा, ३ पास, एक ओर, समीप, ४ छाती, ५ चुंबन, ६ नेत्र।

चली निखर कर हमें साथ ले, करी सैर हाथों में हाथ दे।
मचे खेल आँखों में आँख दे, गुल[1] वलवला[2] सा बपा दिया॥

इक शोर ग़ौग़ा[3] उठा दिया, निज धाम को तो भुला दिया।
मुँह राम से तो मुड़ा दिया, आरामे-जाँ[4] को मिटा दिया॥

थक हारकर झख मारकर, हर मू[5] से बोला पुकार कर।
अरी नाबकार[6] रौशनी! अरी चकमा[7] तू ने भला दिया॥

खन्दाँ[8]! किरणें[9] तेरी सफ़ेद हैं, बालों में रंग भरे है तू।
गुलगूना[10] मुँह पै मले है तू, नटनी ने रूप बटा लिया॥

रुख़[11] देखिये तो है फ़क़[12] तेरा, दिल गर्दशों[13] से है शक़[14] तेरा।
तू उड़ती पैया से धूल है, रथ राम ने जो चला दिया॥

कहो किस जवानी के ज़ोर पर तूने हमको आ के उठा दिया।
यूँ[15] कहके क़िस्सा समेटकर, दिल जाँ में यार लपेट कर।
फिर लम्बी तानों में पड़ गया, गोया[16] ग़ैरे-राम[17] जला दिया॥

अभी रात भर भी न बीती थी कि लो रौशनी को हवा लगी।
नये नख़रे ठख़रे से प्यार से, मेरे चश्मे-ख़ाना[18] को वा[19] किया॥

---

१ शोर, २ हल चल, ३ शोर, हुल्लड़, धूम, ४ जीवन के चैन को, ५ बाल, रोम, ६ नाकारी, बेहूदह, नटखटी, ७ धोखा, ८ ऐ निर्लज्ज, ९ किरणों से अभिप्राय बाल हैं, १० उबटना, ११ मुख, १२ पीला, मुरझाया हुआ, १३ काल चक्र से, १४ फटा हुआ, टूटा हुआ, १५ ऐसे, १६ मानो १७ राम से भिन्न को, १८ मेरे भीतर के नेत्र वा मेरी भीतरी दृष्टि, १९ खोल दिया।

कुछ आज तुमको दिखाऊँगी, ( मैं दिखाऊँगी ),
ऐसा कहके हाय ! नचा दिया ।
कहूँ क्या ? जी ! भरें में आ गये, कैसा सब्ज़ बाग़ दिखा दिया ॥

लड़ भिड़ के आख़र शाम को, कह अलविदा सब काम को ।
आग़ोश[२] में ले राम को, तन उसके मन में छिपा दिया ॥

लेकिन फिर आई रौशनी, लो ! दम दिलासा चल गया ।
और फिर वही शैतानियाँ, वैसी ही कारस्तानियाँ[३],
हँसने में और खसने में फिर दिन भर को यूँ ही बिता दिया ॥

बेहूदा टालमटोल, जी[४] यारों का फिर उकता गया ।
हम सो गये जाग उट्ठे फिर, यूँ ही अलाहज़्ज़ल[५] क़यास,
वादह[६] न अपना रौशनी ने एक दिन ईफ़ा[७] किया ॥

थकने न पाई रौशनी, मामूल पर हाज़र थी यह ।
उमरों पै उमरें हो गईं, इसका त्वातर[८] दौर था ॥

किस धुन में सब इक़रार थे, क्यों दिन बदिन यह मदार[९] थे ।
किस बात के दर पै थी यह ? मस्तों-खराबे-मैं[१०] थी यह ?
यह तो मुइम्मा[११] न खुला, सदियों का अर्सा[१२] होगया ॥

---

१ पेच, दाओ, २ बग़ल, ३ चालाकियाँ, ४ चित्त, ५ इत्यादि, ६ इक़रार, ७ पूरा किया, ८ निरन्तर, ९ टिकाव, ठहराव, १० प्रेममद, आनन्दित, ११ रहस्य, १२ काल समय ।

हर बात जो समझी अजब, पास जा देखा तो तब।
खाली सुहाना ढोल था, धोका था फितना[1] गोल था॥

सब गुङ्गो-कर[2] अशजार[3] थे, चपो-रास्त[4] सब अग्यार[5] थे।
सब यार दिल पर बार थे, और वे ठिकाना कार था॥

अपना तो हर शब[6] रूठ जाना, रौशनी का फिर मनाना।
आज और कल और रोज़ो-शब की क़ैद ही में तलमलाना,
सब मेहनतें तो थीं फज़ूल, और कार नाहमवार था॥

यह रौशनी का साथ चलना, अपना न हरगिज़ उसको तकना।
वह रौशनी के जाँ[7] की हसरत[8], हमको न परवा बल्कि नफ़रत,
सूदो-ज़ियां[9] बीमो-रजा[10] की रगड़ कारे-ज़ार[11] था॥

यूं हि रफता रफता पड़े कभी, कभी उठ खड़े थे मरे कभी।
कभी शिकमे-मादर[12] घर हुआ, कभी ज़न[13] से बोसो-किनार[14] था॥

बढ़ना कभी, घटना कभी, मद्दो-जज़र[15] दुश्वार था।
गर्दा इन्तज़ारी-कशाकशी[16], दिन रात सीनह-फ़िगार[17] था॥

क्या ज़िन्दगी यह है बगोले की तरह पेचाँ[18] रहे?
और कोरे-सग[19] बन कर शिकारे-बाद[20] में हैराँ रहे?

---

१ चालाक भूत वा शैतान, २ गूँगे बहरे, ३ वृक्ष, ४ दायें बायें, ५ अन्य लोग, अनात्म-पदार्थ, ६ रात्रि, ७ चित्त, ८ शोक, ९ लाभ-हानि, १० भय-निर्भय, ११ युद्ध, १२ माता का पेट वा गर्भ, १३ स्त्री, १४ चुम्बन, प्यार, १५ घटाव-बढ़ाव, ऊँच-नीच, १६ खैंचा तानी, १७ घायल चित्त, १८ पेच खाती रहे, १९ अन्धा कुत्ता, २० पवन के शिकार।

लो आख़रश आया वह-दिन, इक़रार पूरा हो गया।
सदियों की मंज़ल कट गई, सब कार पूरा हो गया॥

हाँ! रौशनी है सुर्खरू, तेरा वादह आज वफ़ा[1] हुआ।
तेरे सदक़े सदक़े मैं नाज़नी! कुल भेद[2] आज फिदा हुआ॥

उमरों का उक़दह[2] हल हुआ, क़ुफ़लो-गिरह[3] सब खुल गये।
सब कयज़ो-तङ्गी उड़ गई, पाप और शुभे सब धुल गये।
सब ख्वाबे-दूई[4] मिट गया, दीदे[5] अजब यह खुल गये॥

ऐ रौशनी! ऐ रौशनी! खुश हो मैं तेरा यार हूँ।
खाविन्द[6] घर वाला हूँ मैं, पुश्तो-पनाहे-सरकार[7] हूँ॥

वह राम जो माबूद[8] था, साया था मेरे नूर[9] का॥
क्या रौशनी, क्या राम, इक-शोलह[10] है मेरे तूर[11] का।

इन आँसुओं के तार के सिहरे से चिहरा खिल उठा।
क्या लुत्फ शादी मर्ग[12] है, हर शै[13] से शादी वाह! वाह!

हाँ! मुबारकबाद[14], ऐ साँप, सग! ऐ ज़ाग[15], माही[16], चील, गिद्!
इस जिस्म से कर लो ज़ियाफत, पेट भर भर वाह! वाह!!

---

१ पूरा, २ घुण्डी खुल गई, मुशकल हल हो गई, ३ ताला और गाँठ, ४ द्वैत रूपी स्वप्ना, ५ नेत्र, ६ पति, स्वामिन्, ७ आधार, आश्रय, ८ पूजनीय, ९ प्रकाश, १० ज्वाला, ११ अग्नि का पर्वत, १२ प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु का आनन्द, १३ प्रत्येक पदार्थ, १४ प्रसन्न हो, १५ काग, १६ मच्छी।

आनन्द के चश्मे के नाके[1] पर यह जिस्म[2] इक बन्द था।
वह बह गया बन्दे-खुर्दी[3], दरया बहा है वाह! वाह!!

सब फर्श फ़र्श और गर्श के इमराज़[4] यकदम उड़ गये।
हल फिर गया जेरो[5]-जबर पर और सुहागा वाह! वाह!!

दुन्या के दल बादल उठे थे, नज़रे-गलत अन्दाज़[6] से।
लो इक निगाह से चुक गया सारा सियापा वाह! वाह!!

तन नूर से भरपूर हो, मामूर[7] हो, मसरूर[8] हो।
वह उड़ गया, जाता रहा, पुर नूर हो, काफ़ूर हो॥

अब शब कहाँ? और दिन कहाँ? फ़र्दा[9] है ने इमरोज़[10] है।
है इक सरूरे-लातग़य्यर[11], पेश है ने[12] सोज़[13] है॥

उठना कहाँ? सोना कहाँ? आना कहाँ? जाना कहाँ?
मुझ बहरे-नूरो-सरूर[14] में, खाना कहां? पाना कहां?

मैं नूर हूँ, मैं नूर हूँ, मैं नूर का भी नूर हूँ।
तारों में हूँ, सूर्य में हूँ, नज़दीक से नज़दीक हूँ और दूर से भी दूर हूँ॥

मैं मादनो-मख़ज़न[15] हूं, मैं मम्बा[16] हूँ चश्मए-नूर का।
आरामगह[17], आरामदेह[18] हूं, रौशनी का नूर का॥

---

१ मुख, द्वार, २ शरीर, ३ अहंकार रूपी बन्धन, ४ रोग, ५ ऊँच-नीच, बड़े, छोटे, ६ गलत ढंग से, ७ पूर्ण, ८ खुश, प्रसन्न, ९ कल, १० आज, ११ विकार रहित आनन्द, १२ नहीं, १३ जलन, दुःख, १४ आनन्द और प्रकाश के समुद्र में, १५ खान और भण्डार, १६ निकास, १७ आराम का स्थान, १८ आराम देनेवाला।

मेरी तजल्ली[1] है यह नूरे-अक़्ल[2]-ओ-नूरे-अनसरी[3] ।
मुझ से दरख़शाँ[4] हैं यह कुल अजरामे[5]-चर्खे-चम्बरी[6] ॥

हाँ ! ऐ मुबारक रौशनी ! ऐ नूरे-जाँ[7] ! ऐ प्यारी "मैं" ।
तू राम और मैं एक हैं, हाँ एक हैं, हाँ एक हैं ॥

हर चश्म[8], हर शै[9], हर बशर[10], हर फ़ैहम[11], हर मफ़हूम[12] मैं ।
नाज़र नज़र मन्ज़ूर[13] मैं, आलिम[14] हूँ मैं, मालूम मैं ॥

हर आँख मेरी आँख है, हर एक दिल है दिल मेरा ।
हाँ ! बुलबुलो-गुल, मिहरो-माह[15] की आँख में है तिल मेरा ॥

वहशत[16] भरे आहू[17] का दिल, शेरे-बबर का क़ैहर[18] का ।
दिल आशक़े-बेदिल का प्यारे, यार का और दैहर[19] का ॥

अमृत भरे स्वामी का दिल, और मार[20] पुर अज़ ज़हर का ।
यह सब तजल्ली[21] है मेरी, या लहर मेरे बहर का ॥

इक बुलबुला है मुझ में सब, ईजादे[22]-नौ, ईज़ादे[23]-नौ ।
है इक भँवर मुझ में यह मर्गे-नागहाँ[24] और ज़ादे[25]-नौ ॥

---

१ तेज, २ बुद्धि का तेज, ३ पँच भौतिक तेज, ४ चमकीले, ५ तारा गण, ६ गोल आकाश वा आकाश मण्डल के, ७ प्राण के तेज, ८ चक्षु, ९ वस्तु, १० जीव-जन्तु, ११ समझ, ज्ञान, १२ समझा हुआ, ज्ञात, १३ द्रष्टा, दर्शन, दृश्य, १४ ज्ञानी, १५ सूर्य-चाँद, १६ घबराहट भरे, १७ मृग, १८ आफ़त का, १९ काल का, २० ज़हरीले साँप का, २१ प्रकाश, २२ नई ईजाद, २३ नई उन्नति, २४ अचानक मृत्यु, २५ नई उत्पत्ति ।

सोये पड़े बच्चे को वह जाली उठाकर घूरना।
आहिस्ता से मक्खी उड़ाना, तिफ़्ल[1] का वह बसूरना॥

वह दो बजे शब को शफ़ाख़ाना में तिशनह[2] मरीज़ को।
उठ कर पिलाना सोडावाटर, क़ाट अपनी नींद को॥

वह मस्त हो नंगे नहाना, कूद पड़ना गङ्ग में।
छींटे उड़ाना, गुल मचाना, ग़ोते खाना रङ्ग में॥

वह मां से लड़ना, ज़िद में अड़ना, मचलना, पड़ी रगड़ना।
वालिद से पिटना और चल्लाते हुए आँखों को मलना॥

कालेज के साइंस रूम में, गैसों से शीशे फोड़ना।
बारूद और गोलों से सफ दर सफ़[3] सिपाहें तोड़ना॥

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ, यह हम ही हैं।

गर्मी का मौसम, सुबहदम, साअत[4] है दो या तीन का।
खिड़की में दीवा देखते हो टमटमाता टीन का?॥

दीवे पे परवाने हैं गिरते, बेख़ुदी में बार बार।
बेचारह लड़का कर रहा है इल्म[5] पर जाँ को निसार॥

बेचारे तालिबे-इल्म[6] के चहरे की ज़र्दी है मेरी।
बेनीन्द लम्बे साँस और आहों की सर्दी है मेरी॥

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ, यह हम ही हैं।

---

१ बच्चा, २ प्यासा, ३ पंक्तिवार, ४ घड़ी, ५ विद्या, ६ विद्यार्थी।

है लहलहाता खेत, पुर्वा चल रही है ठुम ठुमक।
गाढ़े की धोती, लाल चीरा चौधरी की लट लटक॥

जोशे-ज्वानी! मस्त, अलगोज़ा बजाना उछलना।
मुगदर घुमाना, कुश्ती लड़ना, पिछड़ना और कुचलना॥

छकड़ा लदा है बोझ से, हिचकोले खाता बार बार।
वह टाँग पर धर टाँग पड़ना, बोझ ऊपर हो स्वार॥

शिद्दत[1] की गर्मी, चील अंडे के समय, सरे-दोपहर।
जा खेत में हल का चलाना, अर्क़[2] में हो तरबतर॥

और सर पै लोटा छाछ का, कुछ रोटियाँ, कुछ साग धर।
भत्ता उठा कुत्ते को ले, औरत[3] का आना ऐंठ कर॥

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ, यह हम ही हैं।

दुलहन का दिल से पास आना, ऊपर से रुकना, झिजक जाना।
शर्मो-हया का इश्क़ के चुङ्गाल में रह रह के आना॥

वह माहे-गुलरू[4] के गले में डाल बाहें प्यार से।
ठण्डे चश्मों के किनारे, बोसहबाज़ी[5] यार से॥

हाँ! और वह चुपके से छिप कर, आड़ में अशजार[6] के।
बेदाम खुफ़िया पुलिस बनना, राम की सरकार के॥

---

१ अत्यन्त गर्मी, २ पसीने से मुराद है, ३ स्त्री, ४ चन्द्रमुख प्रिया, ५ चुम्बन का लेना, ६ वृक्ष।

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ, यह हम ही है।
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ॥

वह इस तरफ खा खा के मरना, उस तरफ फाकों से गुम।
वह बिलबलाना जेल में, जंगल में फिरना सुम बकुम[1] ॥

और वह गद्देले कुर्सियाँ, तकिये बिछौने, बग्गियाँ।
सब मादरे-सुस्ती बवासीरो-ज़ुकाम और हिचकियां ॥

यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है।

वह रेल में या तार घर में, महल कुवारिनटीन में।
रूस, अफ्रीका, ईरां में, जापान में या चीन में ॥

सिसकना, दुःखड़े सुनाना, खून बहाना ज़ार ज़ार।
वह खिलखिलाना कहकहों और चहचहों में बार बार ॥

वह वक्त पर बारश न लाना, हिन्द में या सिन्ध।
फिर राम को गाली सुनाना, तंग होकर हिन्द में ॥

वह धूप से सब को मिसाले-मुर्ग बिरयाँ[2] भूनना।
बादल की साढ़ी को किनारी चान्दनी से गून्दना ॥

चुप होके खानी गालियाँ, साले से उस शिशुपाल से[3]।
खुश हो सलीबो-दार[4] पर, चढ़ना मुबारक हाल से ॥

---

१ बैहरे ( ओले ) और गूँगे, २ भूने हुए पक्षी के सदृश, ३ इस सा पंक्ति से कृष्ण भगवान् का गाली खाना अभिप्रेत है, ४ सूली।

यह कुल तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है।
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूँ, यह हम ही हैं॥

मोहताज[1] के, बीमार के, पापी के और नादार[2] के।
हमलब-ओ-हमबग़ल[3] हूँ, हमराज[4] हूँ बेयार का॥

सुनसान शब[5] दर्या किनारे हैं खड़े डटकर तो हम।
और क़ैदे-तख़्तो-ताज में गर हैं पड़े जकड़े तो हम॥

सस्ते से सस्ते हैं तो हम, महँगे से महँगे हैं तो हम।
ताज़ा से ताजा हैं तो हम, सब से पुराने हैं तो हम॥

वाहद[6] हूँ, मुझ को मेरा ही सिजदा[7] सलाम है।
मेरी नमस्ते मुझ को है और राम राम है॥

जानते हो? आशक़-ओ-माशूक़[8] जब होते हैं एक।
वे शुभा[9] मेरी ही छाती पर वहम[10] सोते हैं नेक॥

पुण्य में और पाप में, हर बाल साँस और माँस में।
दूर कर आँखों से परदा, देख जल्वा[11] घास में॥

कुछ सुना तुम ने? अजब चालें मेरी चालाकियाँ।
बे हजाबाना[12] करशमे, लाधड़क बे बाकियाँ[13]॥

---

१ भूखा, २ निर्धन, ३ नितान्त समीप, ४ भेद जानने वाला, ५ रात्रि, ६ अद्वैत, एक अकेला, ७ झुकना, प्रणाम, ८ प्रेमी और प्रिया, उपासक और उपास्य, ९ निःसन्देह, १० एकत्र, ११ दर्शन, १२ पर्दा रहित करामात, १३ निर्भयता, निडरपना।

हाँ, करोड़ों ऐब, जुर्म, अफ़आले-नेक[1], अमाले-ज़िश्त[2]।
मुझमें मुतसव्वर[3] हैं दोज़ख, मैकदह[4], मसजिद, बहिश्त॥

मार देना, झूठ बकना, चोर-यारी और सितम्[5]।
कुल जहाँ के ऐब रिन्दाना[6] पड़े करते हैं हम॥

ऐ ज़मीन् के बादशाहो! पण्डितो, परहेज़गारो[7]!
ऐ पुलिस! ऐ मुदई, हाकिम, वकील, ऐ मेरे यारो!

लो बता देते हैं तुम को राज़े-खुफिया[8] आज हम।
अपने मुँह से आप ही इक़रार खुद करते हैं हम॥

"ख्वाह चोरी से कि यारी से सब खपा लेता हूं मैं।
सब की मलकीयत को, मक़बूज़ात[9] को और शान को"॥

यह सितम, यारो! कि हरगिज़ भी तो सह सकता नहीं।
ग़ैरे-खुद[10] के ज़िक्र को, या नाम को, कि निशान को॥

खुदकुशी[11] करते हैं सब क़ानून, तनकीह-ओ-जरह।
दूर ही से देख पाते हैं जो मुझ तूफ़ान को॥

कुल जहाँ बस एक खर्राटा है मस्ती में मेरा।
ऐ ग़ज़ब[12]! सच कर दिखाता हूँ मैं इस बोहतान[13] को॥

---

१ पुण्य कर्म, २ पाप कर्म, ३ कल्पित, ४ शराब खाना, ५ आश्चर्य, ज़ुल्म, ६ निर्भय वा निडर होकर, ७ व्रत और तप करने वाले, ८ गुह्य, भेद, ९ अधिकार, संपत्ति, १० अपने से अतिरिक्त वा भिन्न, ११ आत्मघात १२ आश्चर्य, १३ झूठ।

क्या मज़ा हो, लो भला दौड़ो, मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई।
रिन्दमस्तों का शहनशाह हूँ मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई॥

सीना ज़ोरी[1] और चोरी, छेड़-छाड़, अटखेलियाँ।
चुटकियाँ सीना में भरता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥

खा के माखन, दिल चुराकर, वह गया, मैं वह गया।
मार कर मैं हाथ हाथों पर यह जाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥

रात दिन छुप कर तुम्हारे बाग़ में बैठा हूँ मैं।
बाँसुरी में गा बुलाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥

आइयेगा, लो उड़ा दीजियेगा मेरे जिस्म[2] को।
नाम मिट जाने से मिलता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥

दस्तो-पा[3], गोशो-दीदा[4], मिस्ले-दस्ताना[5] उतार।
हुलिया सूरत को मिटाता हूँ, मुझे पकड़ो कोई॥

साँप जैसे कैंचली को, फैंक नामो-नङ्ग[6] को।
बे खिलह[7] के वश में आता हूँ, मुझे पकड़ो कोई।

नठ गया, वह नठ गया! नठ कर भला जाय कहाँ।
मुँह तो फेरो! यह खड़ा हूँ, लो! मुझे पकड़ो कोई॥

---

१ ज़बर दस्ती, २ शरीर, ३ हाथ पाँव, ४ कान और आँख, ५ दस्ताना की तरह, ६ लज्जा और निर्लज्जा, ७ हथ्यार रहित।

आते आते मुझ तलक, मैं ही तो तुम हो जाओगे।
आप को जकड़ो! अगर चाहो मुझे पकड़ो कोई॥

आतशे-सोज़ा[1] हूं, मुझ में पुण्य क्या और पाप क्या।
कौन पकड़ेगा मुझे? और हाँ! मेरा पकड़ेगा क्या?॥

[ २४६ ]

## ज्ञानी की ललकार

( अर्थात् दुन्या की छत पर से ललकार )

❀ १० राग आनन्द भैरवी, ताल धमाली ❀

बादशाह दुन्या के हैं मोहरे मेरी शतरंज के।
दिललगी की चाल हैं सब रंग सुलह-ओ-जंग के॥

रक़्से-शादी[2] से मेरे जब काँप उठती है ज़मीन्।
देख कर मैं खिलखिलाता क़हक़हाता[3] हूँ वहीं॥

खुश खड़ा दुन्या की छत पर हूँ तमाशा देखता।
गह[4] बगह देता लगा हूं, वैहशियों[5] की सी सदा[6]॥

---

१ सब कुछ जलादेने वाली अग्नि, २ प्रसन्नता के नृत्य से, ३ खिल कर हँसना, ४ कभी कभी, ५ वनचरों, ६ आवाज़, घोषणा।

ऐ मुकाली[1] रेल गाड़ी ! उड़ गई । ऐ सिर[2] जली ।
ऐ खरे-दज्जाल[3] ! नख़रा बाज़ीयों में जू[4] परी ॥

भोले भाले आदमी भर भर के लम्बे पेट में ।
ले डकारें[5] लोटती है रेत में या खेत में ॥

छोड़ धोका बाज़ीयाँ और साफ़ कह, सच मुच बता ।
मंज़ले-मक़सूद[6] तक कोई हुआ तुझ से रसा[7] ॥

पेट में तेरे पड़ा जो वह गया ! लो वह गया ! ।
लैक[8] हाय ! मंज़ले-मक़सूद पीछे रह गया ॥

ऐ जवान् बावू ! यह गरमी क्यों ? ज़रा थमकर चलो ।
बैग ले कर हाथ में सरपट न यूं जलदी करो ॥

दौड़ते क्या हो बराते-नूर[9] के मिलने को तुम ? ।
वह न बाहर है, ज़रा पीछे हटो, बातन[10] को तुम ॥

क्यों हो मुजरम[11] ! पेहकारों की खुशामद में पड़े ?
यह कचैहरी वह नहीं, तुमको रिहाई[12] दे सके ॥

---

१ काले मुखवाली, २ जले हुए सिरवाली, अर्थात सिर से धुवाँ निकालने वाली ३ एक गधा को कहते हैं जो हज़रत ईसा के शत्रु के तले रहता था और जिस का पेट अत्यन्त लम्बा था और बाक़ी अंग बहुत छोटे, सो रेल को उस गधे के दृष्टान्त से दर्शाया है, ४ परी के समान, ५ सीटी अथवा चीख से अभिप्राय है, ६ अन्तिम लक्ष्य स्थान, वा असली घर, ७ पहुँचा, ८ किंतु, ९ तेज के पुञ्ज या प्रकाश के विवाह में, १० भीतर, ११ अपराधि, १२ छुटकारा, मुक्ति ।

पैहन कर पोशाक गैहने बुर्क़ा[1] ओढ़े नाज़[1] से ।
चोरी चोरी गुलबदन[2] मिलने चली है यार से ॥

ऐ मुहब्बत से भरी ! ऐ प्यारी बीबी खूबरू[3] ! ।
चौंक मत, घबरा नहीं, सुन कर मेरी ललकार[4] को ॥

निकल भागा दिल तेरा, पैरोंसे बढ़ कर दौड़ में ।
दिल हरम[5] है यार का, साकन हो, गिर नै[6] दौड़ में ॥

हो खड़ी जा ! बुर्क़ा जामा और बदन तक दे उतार ।
बे हया हो, एक दम में, लो अभी मिलता है यार ॥

दौड़ क़ासद[8] ! पर लगा कर, उड़ मेरी जाँ ! पेच खाकर ।
हर दिलो[9]-हर जाँ में जाकर, बैठ जम कर घर बना कर ॥

"मैं खुदा हूँ", "मैं खुदा हूँ" राज़[10] जाँ में फूंक दे ।
हर रगो-रेशे[11] में घुस कर मस्ती-ओ-मुल[12] झोंक दे ॥

ग़ैरबीनी[13], ग़ैरदानी[14] और ग़ुलामी बंदगी ( को ) ।
मार गोले दे धड़ा धड़, एक ही एक फूक दे ॥

---

१ नखरे से, २ पुष्प के बदन वाली, अति कोमल; यहाँ वृत्ति से अभिप्राय है, ३ अति सुन्दर, ४ आवाज़, ध्वनि, ५ मन्दिर, ६ नहीं, ७ स्थित, ८ संदेशा ले जाने वाला, ९ प्रत्येक चित्त और प्राण में, १० गुह्य भेद, रहस्य, ११ प्रत्येक नस और पठ्ठे में, १२ मस्ती (निजानन्द) और शराब ( ज्ञानामृत ), १३ द्वैत दृष्टि, द्वैत भावना ।

रौशनी पर कर स्वारी, आँख से कर नूर-बारी[1]।
हर दिलो-दीदा[2] में जा झंडा अलफ[3] का ठोंक दे ॥

[ २४७ ]

## ज्ञानी का गङ्गा-स्नान

❀ राग जंगला, ताल तीन ❀

गंगा ! तैथों[4] सद[5] बलिहारे[6] जाऊँ (टेक)

हाड चाम सब बार के फूँकूं।
यही फूल पताशे लाऊँ ॥ १ ॥ गंगा०

मन तेरे बन्दरन को दे दूं।
बुद्धि धारा में बहाऊँ ॥ २ ॥ गंगा०

चित्त तेरी मच्छली चब जावें।
अहङ्क[7] गिर[8]-गुहा में दबाऊँ ॥ ३ ॥ गंगा०

पाप पुण्य सभी सुलगा कर।
यह तेरी जोत जगाऊँ ॥ ४ ॥ गंगा०

तुझ में पडूं तो तू बन जाऊँ।
ऐसी डुबकी लगाऊँ ॥ ५ ॥ गंगा०

---

१ नेत्र से आनन्द रूपी प्रकाश की वर्षा, २ प्रत्येक दिल और नेत्र, ३ यों तो मुराद अद्वैत के झंडा से है, पर रसाला अलफ (मासिक पत्र) जो ब्रह्मलीन स्वामी राम ने गृहस्थाश्रम के समय केवल अद्वैत प्रतिपादन करने निमित्त निकाला था, उस से भी अभिप्राय है, ४ तुझ पर, ५ सौ बार, ६ सदके जाऊं, कुर्बान जाऊं ७ अहंकार, ८ पर्वत की गुफा।

पण्हे जल थल पवन दशों[1] दिक् ।
अपने रूप बनाऊँ ॥ ६ ॥ गंगा०

रमण करूँ सत[2] धारा माँहि ।
नहीं तो नाम न राम धराऊँ ॥ ७ ॥ गंगा०

[ २४८ ]

## राम की गंगा-स्तुति

❀ राग सिन्धड़ा, ताल तीन ❀

नदीयाँ दी सरदार ! गङ्गा रानी ! ।
छींटे जल दे देन वहार, गंगा रानी ! ॥
सानू[3] रख जिन्दड़ी[4] दे नाल, गंगा रानी ।
कदे[5] वार, कदे पार, गंगा रानी ! ॥
सौ सौ गोते गिन गिन मार, गंगा रानी ! ।
तेरीयां लैहरां राम अस्वार, गंगा रानी ! ।

[ २४९ ]

## कश्मीर में अमर नाथ की यात्रा

### ( १ ) पहाड़ों की सैर

❀ राग पहाड़ी, ताल चलन्त ❀

पहाड़ों का यूं लम्बी[6] तानें यह सोना ।
वह गुञ्जा[7] दरख्तों का दोशाला[8] होना ॥

---

१ दशों ओर अर्थात् सर्व ओर, २ सप्त धारा वा सत्य की धारा, ३ हमें, ४ प्राण, ५ कभी, ६ बेखबर सोना, ७ घने, ८ पोशाक ओढ़े हुए अर्थात् सरसब्ज़ ।

वह दामन[1] में सब्ज़ा का मखमल बिछौना।
नदी का बिछौने की झालर परोना॥
यह राहत-मुजस्सम[2], यह आराम मैं हूँ।
कहाँ कोहो[3]-दरया, यहाँ मैं ही मैं हूँ॥ १॥

( २ ) पर्वत पर बादल और वर्षा

यह पर्वत की छाती पै बादल का फिरना।
वह दम भर में अबरों[4] से पर्वत का घिरना॥
गरजना, चमकना, कड़कना, निखरना[5]।
छमाछम, छमाछम, यह बून्दों का गिरना॥
अरूसे-फ़लक[6] का वह हँसना, यह रोना।
मेरे ही लिये है फ़क़त[7] जान खोना॥ २॥

( ३ ) कोसों तक क़ुद्रती गुलज़ार का चले जाना
रंगा रंग के फूल हर चार सू[8] शिगुफ़ता[9]

यह वादी[10] का रंगी[11] गुलों[12] से लहकना।
फ़ज़ा[13] का यह बू से सिरापा[14] महकना॥
यह बुलबुल सा[15] खंदाँ-लबों[16] का चहकना।
वह आवाज़े-नै[17] का वहर[18]-सू लपकना॥

---

१ पर्वत की तलेटी, किनारह, पर्वत तलेटी का जङ्गल, मैदान २ शान्तमूर्ति वा शान्तस्वरूप, ३ पर्वत और दरया, ४ बादल, ५ बादल साफ होना, ६ आकाश की दुलहन, मुराद इंद्र से है, ७ केवल, ८ चारों ओर, ९ खिले हुए, १० घाटी, ११ भाँति भाँति के, १२ पुष्पों, १३ खुला मैदान, १४ सिर से पाओं तक अर्थात् एक सिरे से दूसरे सिरे तक सुगंधि देना, १५ बुलबुल पक्षी के सदृश समान, खिड़े १६ हँसते हुए होंट, १७ बाँसुरी के आवाज़, १८ सर्व ओर।

गुलों की यह कसरत[1], अरम[2] रूब्रू[3] है।
यह मेरी ही रंगत है, मेरी ही बू है ॥ ३ ॥

## ( ४ ) एक और दिलकश मुक़ाम

जो जू[4] और चशमा है, नग़मा[5] सरा है।
किस अन्दाज़[6] से आब[7] बल खा रहा है ॥
यह तख़्तों पै तख़्ते हैं, रेशम बिछा है।
सुहाना[8] समा, मन लुभाना[9] समा है ॥
जिधर देखता हूं, जहाँ देखता हूँ।
मैं अपनी ही ताब[10] और शाँ[11] देखता हूँ ॥ ४ ॥

## ( ५ ) झरनों की बहार

नहीं चादरें, नाचती सीम-तन[12] हैं।
यह आवाज़ ? पाज़ेब[13] हैं नारहज़न[14] हैं ॥

---

१ अधिकता, २ स्वर्ग का बाग़, ३ सामने, ४ नैहर, ५ आवाज़ दे रहा है, बोलता है, ६ ढङ्ग, ७ जल, ८ दिलपसंद ९ मन को मोह लेने वाला, १० चमक, दकम, प्रकाश, तेज, ११ दबदबा, वैभव, मान, शक्ल, सूरत, १२ चाँदी के बदन वाली ( अर्थात् यह जल की धारा नहीं बल्कि सफेद शरीर वाली चादरें हैं जो नाच कर रही है ), १३ पाओं का एक ज़ेवर होता है जो चलते समय सुन्दर आवाज़ देता है, १४ आवाज़ दे रही वा शोर कर रही हैं।

फुहारों के दाने, ज़मुर्रद[1]-फ़िगन हैं।
सफ़ाई आहा! रूये[2]-मह पुर[3]-शिकन हैं॥
सबा[4] हूं मैं, गुल चूमता, बोसा लेता।
मैं शमशाद[5] हूँ, झूम कर दाद[6] देता॥ ५॥

## ( ६ ) कुद्रती महफ़ल

मेरे सामने एक मैहफ़ल सजी है।
हैं सब सीम-सर[7] पीर[8], पुरसब्ज़[9] जी[10] है॥
शजर[11] क्या हैं, मीना[12] पै मीना धरी है।
न झरनों का झरना है, कुलकुल[13] लगी है॥
लुंढाये यह शीशे कि वैह निकलीं नैहरें।
है मस्ती-मुजस्सम[14] यह, या अपनी लैहरें॥ ६॥

## ( ७ ) श्रीनगर से अनन्त नाग को किश्ती में जाना

रवां[15] आबे[16]-दरया है, फ़राती दवान्[17] है।
सबा[18] नुज़हत-आगीं[19], सुबहदम[20]-व-ज़ान्[21] है॥

---

१ एक प्रकार का मोती है, मुराद यह है कि फुहारें जो अपनी बूँदे बाहर फैंक रही हैं वह मानो अति सुन्दर मोती बाहर डाल रही हैं, २ चन्द्र मुख, ३ बल डाले हुए है (अर्थात चंद्र भी इस सफाई से ईर्ष्या वा लज्जा कर रहा है) ४ प्रातःकाल की आनंद दायक वायू, ५ सरू वृक्ष को कहते हैं, ६ सरहाना करता उत्तर देता, ७ चाँदी के सिरवाले अर्थात् सफेद बाल वा सिरवाले, अभिप्राय बर्फ़ के पर्वतों से है, ८ वृद्ध, ९ हरा भरा, प्रसन्न, १० चित्त, ११ वृक्ष, १२ एक प्रकार का हरे (सब्ज़) रंग का पत्थर, १३ सुराही या बोतल से जल निकालते समय जो शब्द होता है, १४ निजानंद स्वरूप, १५ चलरहा है, १६ दरयाका बल, १७ भाग रही अर्थात् वैह रही है, १८ प्रातःकाल की पवा, १९ तरो ताज़गी से भरी हुई शुद्ध पवित्र वायू, २० प्रातःकाल, २१ बाँगदे रही है, अर्थात प्रातःकाल की वायू तरोताज़गी से भरी हुई सरसर चल रही है।

यह लैहरों पै सूरज का जल्वा[1] अयाँ[2] है।
बलन्दी पै बरफ इक तजल्ली-फशाँ[3] है॥
ज़हूर[4] अपने ही नूर[5] का तूर[6] पर है।
पदीद[7] अपनी ही दीद[8] कुल[9] बैहरो-बर[10] है॥ ७॥

## (८) झील डल में इर्द गिर्द के पर्वतों का प्रतिबिम्ब पड़ना, वायु से जल का हिलना, और इसी कारण से वायु के झकोरों से बड़े भारी पर्वतों का हिलते दिखाई देना

डलकता है डल[11], दीदा[12]-ए-मह-लक़ा सा।
धड़कता है दिल आयीना[13] पुर सफा का॥
हिलाता है कोहों[14] को सदमा[15] हवा का।
खिले हैं कँवल फूल, है इक बला का॥
यह सूरज की किरणों के चप्पे लगे हैं।
अजब नाओ भी हम हैं, खुद खे[16] रहे हैं॥ ८॥

## (९) श्री अमर नाथ की चढ़ाई

चढ़ाई मुसीबत[17], उतरना यह मुशकल।
फिसलनी बरफ तिस पें आफत यह बादल॥

---

१ प्रकाश, तेज, २ प्रकट, भासमान ३ चमक मार रही है, ४ प्रकाश दृश्य, ५ तेज, ६ पर्वत से मुराद है, ७ दृश्य, सृष्टि, ८ दृष्टि; ९ समस्त, १० पृथ्वि और समुद्र वा जल थल, ११ सरोवर का नाम, १२ चन्द्र मुख प्रिया के नेत्र समान, १३ शुद्ध साफ शीशे की तरह; १४ पर्वतों, १५ चोट, टक्कर, १६ चला रहे हैं, ठेल रहे हैं, १७ कष्ट भरी, कठिनता पूर्ण।

क़यामत[1] यह सरदी कि बचना है बातल[2] ।
यह बू बूटियों की, कि घबरा गया दिल ॥
यह दिल लेना, जाँ लेना, किसकी अदा[3] है ? ।
मेरी जाँ की जाँ, जिस पै शोख़ी फ़िदा[4] है ॥ ९ ॥

## ( १० ) पर्वत पर पूर्णिमा की रात्रि

अजब लुतफ़[5] है कोह[6] पर चाँदना का ।
यह नेचर[7] ने ओढ़ा है जाली दुपट्टा ॥
दिखाता है आधा, छिपाता है आधा ।
दुपट्टे ने जोबन[8] कीया है दोबाला[9] ॥
नशे में जवानी[10] के माशूके-नेचर[11] ।
है लिपटी हुई राम से मस्त हो कर ॥ १० ॥

## ( ११ ) अमर नाथ का अति विशाल खुदाई हाल[12] जिसे लोग गुफा कहते हैं

बरफ़ जिस में सुस्ती है जड़ता है, ला-शै[13] ।
अमर-लिंग इस्तादा[14] चेतन की जा[15] है ॥
मिले यार, हुआ वस्ल[16], सब फ़ासला[17] तै ।
यही रूप दायम[18] अमर-नाथ का है ॥

---

१ अत्यन्त भारी, २ झूठ अर्थात् असम्भव, ३ नखरा, काम, वारे, सदके है, ५ आनन्द, ६ पर्वत, ७ कुदरत प्रकृति; ८ सौंदर्य, ...
१० यौवन, ११ प्रकृति (कुदरत) रूपी प्रिया, १२ बड़ा खुला कमरा, १३ कुच्छ चीज़ नहीं, अवस्तु मात्र, १४ खड़ा हुआ, १५ स्थान, स्थिति है, १६ मिलाप, मेल, अभेदता. १७ सब अंतर, फ़र्क दूर हुआ, मिट गया, १८ नित्य सर्वदा रहनेवाला ।

वह आये उपासक, तअय्युन[1] मिटा सब।
रहा राम[2] ही राम "मैं" "तू" मिटा जब ॥

[ २५० ]

## निवास-स्थान की रात्रि

* राग आसा, ताल दादरा *

अर्थात् उत्तराखंड में गंगातट पर एकाँत निवास स्थान की प्रथम रात्रि

रात का वक़्त[3] है बियाबाँ[4] है।
खुश-वज़ा[5] पर्वतों में मैदाँ है ॥ १ ॥

आस्माँ[6] का बतायें क्या हम हाल।
मोतियों से भरा हुआ है थाल ॥ २ ॥

चाँद है मोतियों में लाल धरा।
अबर है थाल पर रुमाल पड़ा ॥ ३ ॥

---

१ भेद भाव, उपाधि, अन्तर, क़ैद, परिछिन्नता, २ ईश्वर, कवि के नाम से भी मुराद है, ३ समय, ४ मैदान, ५ उत्तम बनावट वा ढंग, वाले पर्वत, ६ आकाश, ७ बादल।

* स्वामी राम जब अपने कुटुम्ब के साथ उत्तराखंड में पहुँचे, वहाँ रियासत टिहरी की राजधानी के समीप गंगातट पर एक सुन्दर एकांत स्थान ( सेठ मुरली धर का बागीचा ) पाया, जिसे राम ने एकांत निवासार्थ चुना, उस स्थान पर प्रथम रात्रि के समय की शोभा राम वर्णन करते हैं।

सिर पर अपने उठा के ऐसा थाल ।
रक़्स[1] करती है नेचरे-ख़ुशहाल[2] ॥ ४ ॥

बाद[3] को क्या मज़े की सूझी है ।
राम के दिल की बात बूझी है ॥ ५ ॥

पास जो वैह रही है गंगा जी ।
अबख़रे[4] उस के लद लदाते ही ॥ ६ ॥

ला रही है लपक कर राम के पास ।
क्या ही ठंडक भरी है गंगा-बास[5] ? ॥ ७ ॥

फ़ख़रे-ख़िदमत[6] से बाद है ख़ुरसंद[7] ।
जा मिली बादलों से हो के बलन्द ॥ ८ ॥

अब तो अठखेलियां ही करती है ।
दामने-अबर[8] को लो उलटती है॥ ९ ॥

लो उड़ाया वह पर्दा-ओ, रुमाल ।
आस्माँ दिखाया है माला माल ॥ १० ॥

शाद[9] नेचर[10] है जगमगाती है ।
आँख हर चार सू[11] फिराती है ॥ ११ ॥

---

१ नाचती है, २ सुखी, वा सुख स्वरूप प्रकृति, ३ वायु, ४ जलकी भाप, धूआँ, ५ गङ्गा जलकी सुगंध, ६ सेवा के मान से, ७ प्रसन्न, खुश, ८ बादल का पल्ला, किनारा, सिरा, ९ खुश, प्रसन्न, १० प्रकृति, ११ चारों ओर ।

क्या कहूँ चाँदनी में गंगा है।
दूध हीरों के रंग रंगा है ॥ १२ ॥

वाह ! जंगल में आज है मंगल[1]।
सैर कर इस तरफ़ की चल ! चल ! चल! ॥ १३ ॥

[ २५१ ]

## निवास स्थान की बहार ( ऋतु इत्यादि ) का वर्णन

⊛ राग आसा, ताल दादरा ⊛

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है ( टेक )

गंगा का है किनार[2], अजब सब्ज़ा-ज़ार है।
बादल की है बहार हवा ख़ुशगवार[3] है ॥
क्या ख़ुशनमा पहाड़ पै वह चश्मा[4]-सार है।
गंगा ध्वनी सुरीली है, क्या लुतफ़[6]-दार है ॥ आ० १

बाहर निगाह[7] कीजिये तो गुलज़ार है खिला।
अंदर सरूर[8] की तो भला हद कहाँ दिला[9] ॥
कालिज क़दीम का यह सरे-मू[10] नहीं हिला।
पढ़ाता मारफ़त[11] का सबक़ मेरा यार है ॥ आ० २

---

१ आनन्द, २ तट, किनारा, ३ मनोहर, आनन्द दायक, ४ रमनीय, ५ धारा बहती है, ६ आनन्द दायक, ७ दृष्टि, ८ आनन्द, ९ ऐ दिल, १० बाल बाँका नहीं हुआ ( अर्थात् बढ़ाना बंद नहीं हुआ ) ११ आत्मज्ञान।

वक़्ते-सुबहे[1]-ईद तमाशा त्यार है।
गलगूना[2] मुँह पै मल के खड़ा गुलऽज़ार[3] है॥
शाहे-फ़लक[4] से या जो हुई आँखचार[5] है।
मारे शरम के चेहरा बना सुरख़-नार[6] है॥ आ० ३

क़तरे हैं ओस के कि दुरों[7] की क़तार है।
किरणों की उन में, वल[8] वे, नज़ाकत[9] यह तार है॥
मुर्ग़ाने-खुश-नवां[10], तुम्हें काहे की आर[11] है।
गाओ बजाओ, शब[12] का मिटा दिल से बार[13] है॥ आ० ४

माशूक़[14] क़द दरख़्तों पै बेलों का हार है।
नै[15] नै ग़लत है, ज़ुल्फ़ का पेचाँ[16] यह मार[17] है॥
वाह वा! सजे सजाये हैं, कैसा शृंगार है।
अशजार[18] में चमकता है, खुश आबशार[19] है॥ आ० ५

अशजार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त वार हैं।
हर रंग के गुलों से चमन लाला-ज़ार[20] है॥
भँवरे जो गूंजते हैं, पड़े ज़ार नगार[21] हैं।
आनन्द से भरी यह सदा[22] ओङ्कार है॥ आ० ६

---

१ आनन्द की प्रातःकाल का समय, २ उबटना, ( उगाल ) ३ फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला प्यारा, ४ सूर्य, ५ परस्पर दर्शन, परस्पर मेल, ६ आग की तरह लाल, ७ मोतियों, ८ बलिक, ९ कोमलता, वा नाज़क सा धागा, १० अच्छा गानेवाले पक्षी, ११ शरम, लज्जा, १२ रात्रि, १३ बोझ ( अर्थात् रात गयी और प्रातःकाल हुआ ), १४ प्रेम मूर्ति वा प्यारी के क़द समान, १५ नहीं, नहीं, १६ पेचदार, १७ साँप, १८ दरख़्तों, १९ झरना, २० सुरख़ रंग, २१ सुनैहरी रंग जिन के परों पर होते हैं, २२ ध्वनि वा आवाज़।

गंगा के रू-सफा[1] से फिसलती न गर[2] नज़र[3] ।
लैहरों पे अक़्स[4] मिह्र[5] का क्यों बेक़रार[6] है ॥
विष्णु के शिव के घर का असासा[7] यह गंग है ।
यहाँ मौसमे-ख़िज़ाँ[8] में भी फसले-बहार[9] है ॥ आ० ७

साक़ी[10] वह मै[11] पिलाता है, तुर्शी[12] को हार है ।
वाह क्या मज़े का खाने को ग़म का शिकार है ॥
दिलदारे[13]-खुश-अदा तो सदा हमकनार[14] है ।
दर्शन शराबे-नाब[15], सखुन[16] दिल के पार है ॥ आ० ८

मस्ती मुदाम[17]-कार, यही रोज़गार है ।
गुलबीन्[18] निगाह[19] पड़ते ही फिर किस का खार[20] है ॥
क्यों ग़म से तू निज़ार[21] है क्यों दिलफ़गार[22] है ।
जब राम क़ल्ब[23] में तेरे खुद यारे-ग़ार[24] है ॥ आ० ९

[ २५२ ]

## ज्ञानी का घर ( वा महफ़ल )

❀ राग पहाड़ी, ताल धुमाली ❀

सिर पर आकाश का मंडल है, धरती पे सुहानी[25] मखमल है ।
दिन को सूरज की महफल है, शब[26] को तारों की सभा बाबा ॥

---

१ शुद्ध रूप, २ अगर, ३ दृष्टि, ४ प्रतिबिम्ब, साया, ५ सूर्य, ६ चञ्चल, अस्थिर, ७ संपत्ति, माल, ८ ज्येष्ठ आषाढ़ की रीति जब पत्ते झरने लगते हैं, ९ बसंत ऋतु, १० आनंद रूपी शराब पिलानेवाला, अर्थात् ब्रह्मवित गुरू, ११ प्रेममद, १२ खटाई अर्थात् विषय-वासना, १३ अच्छे नखरे टखरे करनेवाला प्यारा, १४ साथ, १५ अंगूर की शराब, १६ बात चीत, १७ नित्य रहनेवाली, १८ पुष्प (गुण) देखनेवाली, १९ दृष्टि, २० काँटा (अवगुण), २१ दुबला पतला, दुर्बल, २२ घायल चित्त, ज़खमी दिल, २३ अंतःकरण २४ ग़ारका यार अर्थात् सच्चा प्यारा व अन्तर्यामी २५ दिल को भानेवाली २६ रात ।

जब झूम के यहां घन[1] आते हैं, मस्ती का रंग जमाते हैं।
चश्मे तंबूर बजाते हैं, गाती है मल्हार[2] हवा बाबा॥

याँ पँछी मिल कर गाते हैं, पीतम[3] के संदेसं सुनाते हैं।
याँ रूप अनूप दिखाते हैं, फल फूल और बर्गे-गुल[4] बाबा॥

धन दौलत आनी जानी है, यह दुन्या राम कहानी है।
यह आलम आलम-फ़ानी[5] है, बाक़ी है ज़ाते-ख़ुदा[6] बाबा॥

[ २५३ ]

## ज्ञानी को स्वप्न।

### घर में घर कर

※ राग कल्याण, ताल तीन ※

कल ख्वाब एक देखा, मैं काम कर रहा था।
बैलों को हाँकता था, और हल चला रहा था॥

मेहनत से सेर[7] होकर, वर्जिश से शेर होकर।
यह जी[8] में अपने आई, "बस यार अब चलो घर॥

घर के लिये थी मेहनत, घर के लिये थे बाहर।
झट पट स्नान करके, पोशाक कर के दूर पर॥

---

१ बादलों के समूह, २ वह राग जिस के गाने से वर्षा हो, ३ प्यारे, ४ घास की पत्ती, ५ नाशवान् जगत्, ६ सत्यस्वरूप परमात्म-देव, ७ रज कर, तृप्त, ८ चित्त।

घर की तरफ़ मैं लपका, पा[1] शौक़ से उठा कर।
तेज़ी से डग[2] बढ़ाकर, जल्दी में गड़बड़ा कर॥

कि लो दौड़ धूप ही ने यह मचा दिया तहय्यर[3]।
वह ख्वाब[4] झट उड़ाया, यह पाओं घर में आया॥

बेदार[5] खुद को पाया, ले यार घर में घर कर।
सुपने के घर को दौड़ा, घर जागने में आया॥

क्या खूब था तमाशा, यह ख्वाब कैसा आया।
बन बन में राम ढूंडा, मैं राम खुद बन आया॥

मैं घर जो खोजता था, मेरा ही था वह साया।
अब सब घरों का हूँ घर, ऐ राम! घर में घर कर॥

[ २५४ ]

## ज्ञानी की सैर (१)

* राग बिहाग, ताल तीन *

मैं सैर करने निकला, ओढ़े अबर[6] की चादर।
पर्वत में चल रहा था, हवा के बाजुओं[7] पर॥

मतवाला[8] झूमता था, हर तरफ घूमता था।
झरने नदी-ओ-नाले, पैहचान कर पुकारे॥

---

१ पाँव, २ क़दम, पग, ३ हैरानगी, हल चल, व्याकुलता, आश्चर्य ४ स्वप्न, ५ जागा हुआ ६ बादल, ७ पंख, पर, ८ मस्त।

नेचर[1] से गूंज उट्ठी, उस वेद की ध्वनी की।
"तत्त्वमसि[2], त्वमसि", तू ही है जान सब की॥

यह नज़ारा[3] प्यारा प्यारा, तेरा ही है पसारा[4]।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है॥

सीनों में फिर हमारे, है मुनअकस[5] तो तू है।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है॥

यह सुन जो मैं ने झाँका, नीचे को सीधा बाँका।
हर आबशारो[6]-चशमा, गुलो-बर्ग[7] का कृशमा॥

अल्वाने-नौ दर नौ[8], अशखासे-जिन्स[9] हर नौ[10]।
हर रंग में तो मैं था, हर संग[11] में तो मैं था॥

माँ[12] मामता[13] की मारी, जाती है वारी न्यारी।
शौहर[14] को पाके दुलहन[15], सौंपे है अपना तन मन॥

मुद्दत का बिछड़ा बच्चा, रोता है माँ को मिलता।
बे इख़्तयार मेरा, दिलो-जाँ वेह ही निकला॥

वह गदाज़े-फरहत आमेज़[16], वह दर्दे-दिल दिलावेज़[17]।
पुर सोज़[18] राहते-जाँ[19], लज़्ज़त भरे वह अरमाँ[20]॥

---

१ प्रकृति, क़ुदरत, २ वह (ब्रह्म) तू है, तू है, ३ दृश्य, ४ फैलाओ, तेरी ही है यह सृष्टि, ५ प्रतिबिम्बित, ६ झरना, ७ पुष्प और पत्ते का जादू, ८ प्रकार प्रकार के, भाँति-भाँति के रंग, ९ पदार्थ, १० हर तरह के, ११ पत्थर अथवा साथी, १२ माता, १३ मोह, १४ पति १५ पत्नी, १६ दिल का आनन्दमय पिघलना, १७ दिलपसन्द दर्द, अर्थात् वह दुख जो दिल को भावे, १८ प्रभाव पूर्ण, १९ ज़िन्दगी का आराम, २० अफसोस, आर्ज़ू, पछतावा।

वैह निकले जेबे-दिल[1] से, वसले-रवां[2] में बदले।
मेंह बरसा मोतीयों का, तूफान आँसूओं का,
झिम ! झिम !! झिम !!

[ २५५ ]

## ज्ञानी की सैर ( २ )

❀ राग कल्याण, ताल तीन ❀

यह सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं।
और सूरत अजब है जलवा[3] कि राम मुझ में, मैं राम में हूँ ॥१॥

मुरक्क़ाये-हुस्नो-इश्क़[4] हूं मैं, मुझी में राज़ो-न्याज़[5] सब हैं।
हूँ अपनी सूरत पै आप शैदा[6], कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥२॥

ज़माना आयीना[7] राम का है, हर एक सूरत से है वह पैदा।
जो चशमे-हक़बीं[8] खुली तो देखा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥३॥

वह मुझ से हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है ?
हुबाबो-दर्या[9] का है तमाशा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥४॥

---

१ दिल की जेब अर्थात् हृदय की कोठड़ी से, २ वह सब ( दर्द इत्यादि ) निजानन्द का अनुभव वैह निकला, अर्थात् वह सब दुख दर्द आत्म-साक्षात्कार में बदल गये, ३ दर्शन, जाहर, प्रकट, ४ सुन्दरता और प्रेम की पुस्तक तसवीरा। ५ गुह्य रहस्य और प्रेम वा मिलाप की इच्छा, ६ आशक़, आसक्त, ७ शीशा, ८ तत्वदृष्टि का नेत्र, ९ बुलबुला और दरया।

सबब बताऊँ मैं वज्द[1] का क्या ? है क्या जो दरपर्दा[2] देखता हूँ।
सदा[3] यह हर साज़ से है पैदा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूँ ॥५॥

बसा है दिल में मेरे वह दिलबर, है आयीना में खुद आयीना-गर[4]।
अजब तहय्यर[5] हुआ यह कैसा ? कि यार मुझ में, मैं यार में हूँ ॥६॥

मुक़ाम पूछो तो लामकाँ[6] था, न राम ही था न मैं वहाँ था।
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम मुझ में, मैं राम में हूँ ॥७॥

अललत्वातर[7] है पाक[8] जल्वा, कि दिल बना तूरे-बर्क़-सीना[9]।
तड़प के दिल यूं पुकार उट्ठा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूँ ॥८॥

जहाज़ दरया में और दरया जहाज़ में भी तो देखिये आज।
यह जिस्म[10] क़श्ती[11] है राम दरया, है राम मुझमें, मैं राम में हूँ ॥९॥

[ २५६ ]

## ज्ञानी के बाह्याभ्यन्तर वर्षा

(यह कविता रियासत टिहरी के वासिष्ठाश्रम अर्थात् बघून वन में उन दिनों लिखी गई थी जबकि राम से अन्तमें अपना नाम देना भी छूट गया था)

❀ राग विहाग, ताल दादरा ❀

"चार तरफ़ से अबर[12] की वाह ! उठी थी क्या घटा !।
बिजली की जगमगाहटें, राद[13] रहा था कड़कड़ा ॥ १ ॥

---

१ अत्यन्तानंद, विस्मय, २ पर्दे के पीछे, ३ ध्वनि, आवाज़, ४ शीशा बनानेवाला, सिकन्दर से अभिप्राय है, ५ आश्चर्य, ६ देश रहित, ७ लगातार, निरन्तर, ८ शुद्ध दर्शन, ९ भीतर की बिजली का अग्नि-पर्वत, १० शरीर, ११ [illegible] १२ [illegible] १३ बिजली की कड़क।

बरसे था मेंह भी झूम-झूम, छाजो उमड़[1] उमड़ पड़ा।
झोंके हवा के ले गये होशे-बदन[2] को वह उड़ा॥ २॥

हर रगो-जाँ[3] में नूर था, नगमा[4] था ज़ोर शोर का।
अब्र-बरो से था सिवाय दिल में सरूर[5] बरसता॥ ३॥

आबे-ह्यात[6] की झड़ी, ज़ोर जो रोज़ो-शब[7] पड़ी।
फिकरो-ख्याल[8] बेह गये, टूटी दुई[9] की झोंपड़ी॥ ४॥

[ २५७ ]

## राम से मुबारक बादी

❀ राग भैरवी, ताल चलन्त ❀

नज़र आया है हर सू[10] मह[11]-जमाल अपना मुबारक[12] हो।
"वह मैं हूँ" इस खुशी में दिल का भर आना मुबारक हो॥१॥

यह उरयानी[13] रुखे-खुरशीद[14] की खुद पर्दा हायल[15] थी।
हुआ अब फाश[16] पर्दा, सितर[17] उड़ जाना मुबारक हो॥ २॥

---

१ मतलब इस मुहावरे का यह है कि बड़े ज़ोर से वर्षा हुई, २ शरीर के होश, ३ प्राण के नस नस में, ४ आवाज़, ५ आनन्द, ६ अमृत वर्षा, ७ दिन रात जो ज़ोर से पड़ी, ८ चिन्ता और शोक, ९ द्वैत की झोंपड़ी जो दिल में स्थित थी सब बेह गयी, १० हर तरफ, ११ चन्द्रमुख या चन्द्र जैसा सौन्दर्य, १२ बिधाई, खुशी, १३ नंगा पन, स्पष्ट प्रकट होना, १४ सूर्य-मुख अर्थात् अपने प्रकाश स्वरूप आत्मा की, १५ ढके हुए

यह जिस्मो[1]-इस्म का काँटा जो बे ढब सा खटकता था।
खलिश[2] सब मिट गई, काँटा निकल जाना मुबारक हो ॥ ३ ॥

तमसख़र[3] से हुए थे क़ैद साढ़े तीन हाथों में।
मले[4] अब वुसते-फिकरो-तख़य्यल[5] से भी बढ़ जाना मुबारक हो ॥४॥

अजब तसख़ीरे-आलमगीर[6] लाई सल्तनते-आली[7]।
महो-माही[8] का फरमाँ[9] को बजा[10] लाना मुबारक हो ॥ ५ ॥

न खदशा[11] हर्ज का मुतलक़[12], न अंदेशा-खलल[13] बाक़ी।
फुरेरे[14] का बलंदी पर यह लैहराना मुबारक हो ॥ ६ ॥

तअल्लक़[15] से बरी[16] होना हरूफे[17]-राम की मानन्द[18]।
हर इक पैहलू[19] से नुक़ते-दाग़[20] मिट जाना मुबारक हो ॥ ७ ॥

[ २५७ ]

## ज्ञानी का आशीर्वाद

❀ राग भैरवी, ताल दादरा ❀

बदले है कोई आन[21] में अब रंगे-ज़माना[22] ( टेक )
आता है अमन[23] जाता है अब जंगे-ज़मान[24] ॥ १ ॥

---

१ नाम और-रूप, २ खटका, झगड़ा, चोट, ३ ठट्टे से, हँसी से, ४ किन्तु ५ फिकर और ख्याल अर्थात् सोच विचार की सीमा वा अन्दाज़ ६ समस्त संसार को जीतने वाली विजय, ७ भारी राज्य, ८ चन्द्र-सूर्य वा लोक परलोक, ९ आज्ञा, १० आज्ञा मानना, ११ डर, १२ बिलकुल, नितान्त; १३ फसाद, वा बिगाड़ का फिक्र, १४ झंडा, १५ सम्बन्ध वा आसक्ति, १६ मुक्त, निरासक्त, १७ राम के वर्ण, ( र, आ, म ), १८ सदृश, १९ तरफ, २० बिंदु का २१ घड़ी, २२ समय का रंग ढंग, २३ सुख चैन, २४ युद्ध का समय।

१९

ऐ जैहल[1] ! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हसद[2] ।<br>
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे-ज़माना[3] ॥ २ ॥

ग़म दूर, मिटा रश्क[4], न गुस्सा, न तमन्ना ।<br>
पलटेगा घड़ी पल में नया ढंगे-ज़माना ॥ ३ ॥

आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक ।<br>
दिलशाद[5] है क्या खूब उड़ा तंगे-ज़माना[6] ॥ ४ ॥

"लो[7] काठ की हँडिया से निभे भी तो कहाँ तक ।<br>
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संगे-ज़माना" ॥ ५ ॥

आती है जहाँ में शाहे-मशरक़[8] की सवारी ।<br>
मिटता है सियाही का अभी ज़ंगे-ज़माना[9] ॥ ६ ॥

वह ही जो इधर खार[10] उधर है गुले-खन्दाँ[11] ।<br>
हो दंग जो यूं जान ले नैरंगे-ज़माना[12] ॥ ७ ॥

देता है तुम्हें राम भरा जाम[13], यह पी लो ।<br>
सुन्वायगा आहंग[14] नये-चंगे-ज़माना[15] ॥ ८ ॥

---

१ अविद्या, २ ईर्ष्या, ३ निर्लज्जता का समय, ४ ईर्ष्या, द्वेष, ५ प्रसन्न चित्त, ६ समय की तंगी, मुसीबत, ७ काठ की हण्डिया को अग्नि पर रखने से क्या लाभ होगा. यदि कुछ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का ग़म रूपी पत्थर रख कर इसे फूँक दो, ८ सूर्य, ज्ञान के सूर्य से तात्पर्य है, ९ समय का कलङ्क, दाग़, ज़ंगार, अज्ञान, १० काँटा, ११ खिला हुआ पुष्प, १२ समय की विचित्रता, १३ निजानन्द की मस्ती का वा प्रेम का प्याला, १४ स्वर, १५ समय के बाजे का ।

[ २५९ ]

## बीमारी में राम की अवस्था

॥ राग भैरवी, ताल झूल ॥

वाह वा, ऐ तप व रेज़श ! वाह वा ।
ख़्वाजा[1], ऐ दर्दो-पेचश ! वाह वा ॥ १ ॥

ऐ बलाये-नागहानी[2] ! वाह वा ।
वैलकम[3], ऐ मर्गे-जवानी[4] ! वाह वा ॥ २ ॥

यह भँवर, यह क़ैहर[5] बरपा ! वाह वा ।
वैहरे-मिहरे-राम[6] में क्या वाह वा ॥ ३ ॥

खाँड का कुत्ता गधा चूहा बिला[7] ।
मुँह में डालो, ज़ायक़ा[8] है खाँड का ॥ ४ ॥

पगड़ी, पाजामा, दुपट्टा, अंगरखा ।
ग़ौर से देखा तो सब कुछ सूत था ॥ ५ ॥

दामनी तोड़ी व माला को घड़ा ।
पर निगाहे-हक़[9] में है वही तिला[10] ॥ ७ ॥

---

१ बहुत अच्छा, बहुत ख़ूब, २ अचानक आने वाली आफ़त, ३ तुझे स्वागत हो, ४ तरुणाई अर्थात् युवावस्था में मृत्यु, ५ ईश्वरीय कोप वा रोष, ६ सूर्य रूपी राम के समुद्र में, अर्थात् राम के प्रकाश स्वरूप सिन्धु में यह सब नाम रूप प्रपञ्च मानो भँवर और लहरें हैं, ७ बिल्ली का पुरुष, ८ स्वाद, ९ तत्वदृष्टि, १० स्वर्ण, सोना ।

मोत्याबिन्द दिल की आँखों से हटा।
मर्ज़ो-सहित[1], पेन[2] राहते-राम[3] था ॥ ७ ॥

[ २६० ]

## राम का नाच

❀ राग नट-नारायण, ताल दीपचंदी ❀

नाचूं मैं नटराज रे ! नाचूं मैं महाराज ! ( टेक )

सूरज नाचूं, तारे नाचूं, नाचूं बन महताब[4] रे ! ॥ १ ॥ नाचूं०

तन तेरे में मन हो नाचूं, नाचूं नाड़ी नाड़ रे ! ॥ २ ॥ नाचूं०

बादर[5] नाचूं, वायू नाचूं, नाचूं नदी अरु नाव[6] रे ! ॥ ३ ॥ नाचूं०

ज़र्रह[7] नाचूं, समुद्र नाचूं, नाचूं मोघरां काज रे ! ॥ ४ ॥ नाचूं०

मधुआं लब बदमस्ती वाला, नाचूं पी पी आज रे ! ॥ ५ ॥ नाचूं०

घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूं पापा दाज रे ! ॥ ६ ॥ नाचूं०

राग गीत सब होवत हरदम, नाचूं पूरा साज रे ! ॥ ७ ॥ नाचूं०

राम ही नाचत, राम ही बाजत, नाचूं हो निर्लाज रे ! ॥ ८ ॥ नाचूं०

---

१ रोग और निरोग, २ ठीक, निश्चय पूर्वक, ३ राम की शान्त दशा, आनन्दावस्था, ४ चाँद, ५ बादल, ६ जहाज़, बेड़ी, किश्ती, ७ परमाणु, अणु,

[ २६१ ]

## ज्ञानी की होरी

॥ रागनी जै जै वन्ती, ताल चाचर, वा एमन कल्याण, ताल चलन्त ॥

उड़ा रहा हूँ मैं रंग भर भर, तरह तरह की यह सारी दुन्या।
वेह[1] खूब होली मचा रखी थी, पै अब तो हो ली[2] यह सारी दुन्या ॥१॥

मैं साँस लेता हूँ रंग खुलते हैं, चाहूँ दम में अभी उड़ा दूं।
अजब तमाशा है रंग रलियाँ, है खेल जादू यह सारी दुन्या ॥ २ ॥

पड़ा हूँ मस्ती में ग़र्क़ बेखुद, न ग़ैर[3] आया चला न ठैहरा।
नशे में खर्राटा सा लीया था, जो शोर बर्पा है सारी दुन्या ॥ ३ ॥

भरी है खूबी हर इक खराबी में, ज़र्रह ज़र्रह है मिहर[4] आसा।
लड़ाई शिकवे में भी मज़े हैं, यह ख्वाब चोखा है सारी दुन्या ॥ ४ ॥

लफाफा देखा जो लम्बा चौड़ा, हुआ तहय्युर, कि क्या ही होगा।
जो फाड़ देखा, ओहो ! कहूँ क्या ! हुई ही कब थी यह सारी दुन्या ॥ ५ ॥

यह राम सुनियेगा क्या कहानी, शुरु न इसका, खतम न हो यह।
जो सत्य पूछो ! है रामँ ही राम ॥ यह मैहज़[5] धोखा है सारी दुन्या ॥ ६ ॥

---

१ क्या खूब, २ हो गई, खतम हो गई, ३ दूसरा, अन्य, ४ सूर्य जैसा,

[ २६२ ]

## ज्ञानी की उदारता और बेपरवाही

राग पीलू, ताल दीपचंदी

न है कुच्छ तमन्ना[1] न कुच्छ जुस्तजू[2] है।
कि वहदत[3] में साक़ी[4] न साग़र[5] न बू है ॥ १ ॥

मिली दिल को आँख जभी मार्फ़त[6] की।
जिधर देखता हूँ सनम[7] रूबरू[8] है ॥ २ ॥

गुलिस्ताँ[9] में जा कर हर इक गुल[10] को देखा।
तो मेरी ही रंगत-ओ-मेरी ही बू है ॥ ३ ॥

मेरा तेरा उठा हुए एक ही सब।
रही कुच्छ न हसरत[11] न कुच्छ आर्जू[12] है ॥ ४ ॥

[ २६३ ]

## ज्ञानी का प्रण

❀ राग जंगला, ताल चलन्त ❀

हम रूखे टूकड़े खायेंगे। भारत पर वारे जायेंगे

---

१ इच्छा, २ जिज्ञासा, ३ एकता, ४ आनन्द रूपी शराब पिलाने वाला, ५ पियाला, ६ आत्म-ज्ञान की, ७ प्यारा ( अपना स्वरूप ) ८ सन्मुख, ९ बाग़ १०-पुष्प ११ शोक-अफ़सोस, १२ आशा ख़्वाहिश।

हम सूखे चने चबायेंगे। भारत की बात बनायेंगे॥
हम नंगे उम्र वितायेंगे। भारत पर जान मिटायेंगे॥
सूलों पर दौड़े जायेंगे। काँटों को राख बनायेंगे॥
हम दर दर धक्के खायेंगे। आनंद की झलक दिखायेंगे॥
सब रिश्ते नाते तोड़ेंगे। दिल इक आत्म-संग जोड़ेंगे॥
सब विषयोंसे मुँह मोड़ेंगे। सिर सब पापों का फोड़ेंगे॥

[ २६४ ]

## ज्ञानी का निश्चय-व-हिम्मत

❀ राग परज, ताल ग़ज़ल ❀

गर्चि कुतब[1] जगह से टले तो टल जाये।
गर्चि बैहर[2] भी जुगनू[3] की दुम से जल जाये॥

हिमालय बाद[4] की ठोकर से गो फिसल जाये।
और आफताब[5] भी क़ब्ले-अरूज[6] ढल[7] जाये॥

मगर न- साहबे-हिम्मत[8] का हौसला टूटे।
कभी न भूले से अपनी जबीं[9] पर बल आये॥

---

१ ध्रुव तारा, २ समुद्र, ३ रात को चमकने वाला कीड़ा जो उड़ता भी है ४ वायू, ५ सूर्य, ६ सूर्य उदय (चढ़ने) से पहिले, ७ अस्त हो जाय, ८ हिम्मत वाला पुरुष, धैर्यवान, ९ पेशानी, मस्तक।

## † ज्ञानी की अभेदता का स्वरूप

❀ ग़ज़ल ❀

बन के गेसूए[1] रुखे-हस्ती पे निखर जाता हूँ।
शानहे[2]-मौजे[3]-सर सर से सँवर जाता हूँ॥ १॥

सैर करता हुआ जिस दम लबे-जू[4] आता हूँ।
बालियाँ नहर को गिरदाब[5] की पहनाता हूँ॥ २॥

---

† यह कविता श्री स्वामी राम ने अपने एकान्त स्थान वासिष्ठाश्रम से लिख कर रावलपिंडी की सनातन धर्म सभा को उन के पत्र के उत्तर में भेजी थी जो तत्पश्चात् अनेक पत्रों में प्रकाशित हुई, इसके लक्ष्यार्थ गूढ़ होने से प्रत्येक पद का भावार्थ दिया जाता है:—

( १ ) अस्तित्व वा वस्तु के मुख पर मैं ज़ुलफ अर्थात् तम रूपी पर्दा बनकर बिखर जाता हूँ, और उस ज़ुलफ को वायु रूपी तरंग की कङ्घी से सँवारे जाता हूँ, अर्थात् उस तम या ज़ुलफ को मैं इच्छा रूपी घटा की सर सर ध्वनि करती हुई लहर की कङ्घी से सँवारता हूँ वा उस के अंग में फिरता हूँ।

( २ ) टहलता हुआ जिस समय मैं नहर के तट पर आता हूँ, तो मैं भँवर की बालियाँ नहर को पहनाता हूँ, अर्थात् नहर में जो भँवर पड़ते हैं वह भी मेरे ही कारण से होते हैं।

---

१ ज़ुल्फ, सिर का बाल, २ कंघी, ३ तरंग, ४ नहर का तट, ५ भँवर।

सर प सब्ज़ा के खड़े हो के कहा क़ुम[1] मैं ने।
गुञ्चहे-गुल[2] को दिया ज़ौक़े-तबस्सुम[3] मैं ने ॥ ३ ॥

है मुझे दामने-कोह[4] सार में सुनने का मज़ा।
आबशारों[5] के वह ख़ुशनग़मह[6] तरानह[7] की सदा[8] ॥ ४ ॥

वह सरे-कोह[9] से थम थम के उतरना मेरा।
गह[10] मशरक़[11] कभी मग़रब[12] को यह फिरना मेरा ॥ ५ ॥

हर घड़ी पल में नया रूप बदलना मेरा।
जामहे-सूरते-नौ[13] पहन निकलना मेरा ॥ ६ ॥

हाथ पर दूध की ठलिया को उठाते आना।
गह हँसते हुए गह आँखें दिखाते आना ॥ ७ ॥

---

( ३ ) हरयाली पर खड़े होकर जो मैं ने 'क़ुम' कहा अर्थात् 'यह हो' ऐसी आज्ञा जब मैंने दी, तो उस समय पुष्प की कली को खिड़ने का आनंद दिया। अर्थात् पुष्पकी कली भी मेरी उपस्थितिसे मेरे संकेत पर खिलने लग गई।

( ४ ) मुझे पर्वत की तलेटी पर झरनों के सुन्दर राग और सुरों के सुनने का बहुत स्वाद वा आनन्द आता है।

( ५ ) वह झरनों के रूप में पर्वत की चोटी से मेरा थम थम के उतरना, और कभी पूर्व और कभी पश्चिम की ओर मेरा इस प्रकार फिरना।

( ६ ) प्रति घड़ी और पल में मेरा नया नया रूप बदलना और ( झरनों के रूप ) नये नये रूप के वस्त्र पहन कर मेरा निकलना।

( ७ ) कभी दूध की ठलिया हाथ पर उठाते आना, कभी हँसते हुए और कभी आँखें दिखाते आना।

---

१ ईश्वराज्ञा, कहा, ऐसा हो, २ पुष्प की कली ३ खिड़ने का आनन्द, ४ पर्वत की तलेटी, ५ झरना, ६ सुन्दर ध्वनि, ७ सुर, अलाप, ८ आवाज़, ९ पर्वत की चोटी, १० कभी, ११ पूर्व १२ पश्चिम, १३ नये रूप का वस्त्र।

दौड़ते दूर से वह अश्क[1] बहाते आना।
और थम थम के उतरते हुए गाते आना ॥ ८ ॥

क़ौन कह सकता है क्या मेरा निशाँ, मेरा पता।
हश्र[2] ढाती है यह अलबेली[3] ख़रामी की अदा[4] ॥ ९ ॥

मुझ से चलने में न होगा कोई ग़ाफ़िल बढ़ कर।
गिर पड़े हैं मेरे दामन[5] की गिरह खुलके गुहर[6] ॥ १० ॥

---

( ८ ) दौड़ कर दूर से अश्रुपात करते आना और धीमे धीमे नीचे उतरते हुए गाते आना।

( ९ ) मेरे इन पारस्परिक भिन्न और नाना रूपों को देख कर कौन मेरा, ठीक-ठीक निशान वा पता दे सकता है बल्कि मेरी यह अलबलल्ली ( बच्चों की सी ) चालें क़्यामत ढाती अर्थात् प्रलय लाती हैं।

( १० ) चलने में मुझ से बढ़ कर कोई भी आलसी वा सुस्त न होगा ( अर्थात् मैं नितान्त अचल हूँ ) और मेरा चलना मानो ऐसा है कि जैसे मेरे वस्त्र के पल्ले में जो मोती बंधे हुए थे उस पल्ले की गाँठ के खुल जाने से मोतियों का गिर पड़ना। तात्पर्य यह कि मैं स्वयं तो चलने का कोई संकल्प न करता हूँ और न रखता हूँ, अलबत्त किसी के अदृष्ट उदय होने पर मेरे भीतर यदि फुरना उठ जाय और उस फुरने से मेरे अचल रहने की ग्रन्थी खुल जाय, तो मैं मोतियों के गिरने के समान चल भी आता हूँ।

---

१ अश्रु, २ क़्यामत ढाती है अर्थात् प्रलय लाती है, ३ अलबलल्ली चाल वा बच्चों की सी चाल, ४ नख़रा, ५ पल्ला, ६ मोती।

[ २६६ ]

## ज्ञानी की समदृष्टि

राग सोरठ ( महल्ला ९ )

जो नर दुःख में दुःख नहीं माने। (टेक)
सुख स्नेह अरु भय नहीं जाके, कञ्चन माटी माने ॥ १ ॥

नह निन्दा नह उस्तति जाके लोभ मोह अभिमाना।
हर्ष शोक से रहे न्यारो, नाँहि मान अपमाना ॥ २ ॥

आशा, मनशा, सकल त्यागे, जग से रहे निराशा।
काम क्रोध जेहिं परसे[1] नाहिं, तें[2] घट ब्रह्म निवासा ॥ ३ ॥

गुरु कृपा जेहिं[3] नर को कीनो, तेहिं[4] यह जुगत[5] पिछानी।
नानक लीन भयो गोबिंद स्यों, ज्यों पानी संग पानी ॥ ४ ॥

[ २६७ ]

## मुक्त के चिन्ह

राग गौड़ी वा धनासरी, ताल धुमाली ( महल्ला ९ )

साधो ! राम शरण विश्रामा। ( टेक )
वेद पुराण पढ़े को यह गुण, सिमरे हरि को नामा ॥ १ ॥

लोभ मोह माया ममता पुनि, अरु विषयन की सेवा।
हर्ष शोक परसे[6] जाहि नाहीं, सो मूरत है देवा ॥ २ ॥

---

१ स्पर्श करे, २ उस, ३ जिस, ४ तिसने, ५ यक्ति ६ जिसे स्पर्श न करे।

स्वर्ग नरक अमृत विष, ये सब, त्यों कञ्चन अरु पैसा।
उस्तति निन्दा यह सम जाके, लोभ मोह पुनि तैसा ॥ ३ ॥

दुःख सुख यह बाँधे जाहि नाहीं, तैं तुम जानो ज्ञानी।
नानक मुक्त तांहि तुम मानो, यह विधि को जो प्राणी ॥ ४ ॥

[ २६८ ]

## ज्ञानी की व्यापक दृष्टि

गज़ल, राग पीलू

जिधर देखता हूँ, जहाँ देखता हूँ।
मैं अपना ही जल्वेह[1] अयाँ[2] देखता हूँ ॥ १ ॥

न तन देखता हूं, न जाँ देखता हूं।
खुद ही को निहाँ[3] और अयाँ[4] देखता हूं ॥ २ ॥

यह जो कुछ कि पैदा है सब ही तो मैं हूं।
मैं कुल बहरे-हस्ती[5] इक शाँ देखता हूं ॥ ३ ॥

अगर कोई अपने बिना जगत जाने।
तो उस को मैं धोखा[6] रसां देखता हूं ॥ ४ ॥

मैं अब कहूं किस से यह राज़ो-हक़ीक़त[7]।
यह आलम[8] सरापा गुमाँ[9] देखता हूं ॥ ५ ॥

---

१ प्रकाश, विभूति, २ प्रकट, व्यक्त, ३ गुप्त, छुपा हुआ, अव्यक्त, ४ स्पष्ट, प्रकट, व्यक्त, ५ अस्तित्व का समुद्र, ६ धोखा खाया हुआ, ७ असली रहस्य, भेद, ८ समस्त संसार, ९ भ्रम मात्र, भ्रम रूप।

## त्याग

( २६९ )

❀ काफी दीपचन्दी ❀

मेरा मन लगा फ़क़ीरी में ( टेक )

डंडा कूंडा लिया बगल में, चारों चक जागीरी में ॥ मे० १

मंग तंग के टुकड़ा खाँदे, चाल चलें अमीरी में ॥ मे० २

जो सुख देखियो राम संगत में, नहीं है वज़ीरी में ॥ मे० ३

[ २७० ]

❀ जङ्गल का जोगी ( योगी )

❀ राग भैरवी, ताल तीन ❀

हर हर ओ३म्, हर हर ओ३म् ( टेक )

---

❀ यह कविता सन् १९०६ में टिहरी के वाशिष्ठाश्रम के बन में उन दिनों कही थी जब राम ने अन्त में अपना नाम देने का स्वभाव भी छोड़ गया था।

जङ्गल में जोगी बसता है, गह[1] रोता है गह[1] हसता है।
दिल उसका कहीं न फँसता है, तन मन में चैन बरसता है ॥ १ ॥

हर हर ओम्, हर हर ओम्

खुश फिरता नंग मनंगा है, नैनों में बैहती गंगा है।
जो आ जाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा है ॥ हर० २

गाता मौलौ[2] मतवाला[3] है, जब देखो भोला भाला है।
मन मनका उसकी माला है, तन उस का एक शिवाला है ॥ हर० ३

नहीं परवाह मरने जीने की, है याद न खाने पीने की।
कुछ दिन की सुद्धि न महीने की, है पवन रुमाल पसीने की ॥ हर० ४

पास हँस के पंछी[4] आते हैं, और दरया गीत सुनाते हैं।
बादल अशनान कराते हैं, बृछ[5] उसके रिशते नाते हैं ॥ हर० ५

गुलनार[6] शफ़क़[7] वह रंग भरी, जोगी के आगे है जो खड़ी।
जोगी की निगह[8] हैरान् गैहरी, को तकती रह रह कर है परी ॥ हर० ६

वह चाँद चटकता गुल[9] जो खिला, इस मिहर[10] की जोत से फूल झड़ा।
फव्वारह फरहत[11] का उछला, फुहार[12] का जग पर नूर[13] पड़ा ॥ हर० ७

---

१ कभी, २ ब्रह्मज्ञानी, आत्मवेत्ता, ३ मस्त, ४ पक्षी, ५ वृक्ष, दरख्त, ६ अनार के रंग वाली, ७ लाली जो आकाश में सूर्य के उदय व अस्त समय होती है, ८ दृष्टि, ९ पुष्प, १० सूर्य, ११ खुशी, आनन्द, १२ बुछाड़, बाछड़,

[ २७१ ]

॥ राग पीलू, ताल दीप चन्दी; वा राग भैरों, ताल शूल ॥

अल्वदा[1], मेरी रियाज़ी[2] ! अल्वदा ।
अल्वदा, ए प्यारी रावी[3] ! अल्वदा ॥ १ ॥

अल्वदा, ऐ ऐहले-खाना[4] ! अल्वदा ।
अल्वदा, मासूमे-नादां[5] ! अल्वदा ॥ २ ॥

अल्वदा, ऐ दोस्तो-दुश्मन[6] ! अल्वदा ।
अल्वदा, ऐ शीतो-ओशन[7] ! अल्वदा ॥ ३ ॥

अल्वदा, ऐ क़ुतबो-तद्रीस[8] ! अल्वदा ।
अल्वदा, ऐ ख़ुबसो-तक़दीस[9] ! अल्वदा ॥ ४ ॥

अल्वदा, ऐ दिल[10] ! ख़ुदा ! ले अल्वदा ।
अल्वदा, राम ! अल्वदा[11], ऐ अल्वदा ॥ ५ ॥

[ २७२ ]

† त्याग का फल

[ महाभारत के कुछ श्लोकों का भावार्थ ]

---

१ रुख़सत हो, तुझे नमस्कार हो, २ गणित शास्त्र ३ रावी दरया का नाम है जो लाहौर में बहता है । ४ घर के लोगो, ५ नादान बच्चे, ६ मित्र-शत्रु, ७ सरदी गरमी, ८ पुस्तक और पाठशाला, ९ अच्छा, बुरा, १० ऐ चित्त ! तुझको भी रुख़सत हो, ऐ ख़ुदा ( ईश्वर ) तुझ को भी रुख़सत ( नमस्कार ) हो, ११ ऐ रुख़सत के शब्द तुझ को भी रुख़सत हो ।

† यह कविता भी राम भगवान से सन् १९०६ में उन दिनों में बही थी जब अन्तमें अपना नाम देना भी उन से छूट गया था ।

राग भैरवी, ताल दादरा, या

॥ राग जंगला, ताल धुमाली, वा राग विहाग, ताल चलंत ॥

अपने मज़े की ख़ातर गुल[1] छोड़ ही दीये जब।
रूये-ज़मीं[2] के गुलशन मेरे ही बन गये सब ॥ १ ॥

जितने ज़ुबाँ[3] के रस थे कुल तर्क कर दिये जब।
बस ज़ायक़े जहां[4] के मेरे ही बन गये सब ॥ २ ॥

ख़ुद के लिये जो मुझ से दीदों[5] की दीद[6] छूटी।
ख़ुद हुसन[7] के तमाशे मेरे ही बन गये सब ॥ ३ ॥

अपने लिये जो छोड़ी ख्वाहश[8] हवाखोरी की।
बादे-सबा[9] के झोंके मेरे ही बन गये सब ॥ ४ ॥

निज[10] की ग़रज़ से छोड़ा सुनने की आरज़ू[11] को।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब ॥ ५ ॥

जब बेहतरी के अपनी फ़िक्रो-ख़याल[12] छूटे।
फ़िक्रो-खयाले-रंगी[13] मेरे ही बन गये सब ॥ ६ ॥

आहा ! अजब तमाशा, मेरा नहीं है कुछ भी।
दावा नहीं ज़रा भी इस जिस्मो-इस्म[14] पर ही ॥ ७ ॥

यह दस्तो-पा[15] हैं सब के, आँखें यह हैं तो सब की।
दुन्या के जिस्म[16] लेकिन, मेरे ही बन गये सब ॥ ८ ॥

---

१ पुष्प, फूल, २ पृथिवी भर के बाग़ ३ जिह्वा, ४ संसार भर के, ५ नेत्रों की, ६ दृष्टि, ७ सौंदर्य, ८ इच्छा, ९ पवों वायु, १० अपनी वा स्वार्थ दृष्टि से ११ आशा, १२ शोक, चिन्ता, १३ आनन्द दायक या भाँति भाँति के विचार, १४ नाम रूप, १५ हाथ पैर, १६ शरीर।

राग शंकराभरण, ताल घुमाली

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है।
जो घर रक्खे सो घर घर में रोवे है॥ टेक

जो राज तजे, वह महाराज करे है।
धन तजे तो फिर दौलत से घर भरे है॥
सुख तजे तो फिर औरों का दुःख हरे[1] है।
जो जान तजे वह कभी नहीं मरे है॥
जो पलंग तजे वह फूलों पै सोवे है।
जो घर रक्खे वह घर घर में रोवे है॥ १॥

जो परदारा[2] को तजे, वह पावे रानी।
अरु झूठ बचन दे त्याग, सिद्ध हो वाणी॥
जो दुर्बुद्धि को तजे, वही है ज्ञानी।
मन से त्यागी हो, ऋद्धि[3] मिले मन मानी॥
जो सर्व तजे उसी का सब कुछ होवे है।
जो घर रक्खे सो घर घर में रोवे है॥ २॥

जो इच्छा नहीं करे, वह इच्छा पावे।
अरु स्वाद तजे फिर अमृत भोजन खावे॥
नहिं माँगे तो फल पावे जो मन भावे।
हैं त्याग में तीनों लोक, वेद यही गावे॥

---

१ दूर करे है, २ दूसरे पुरुष की स्त्री, ३ ऋद्धि सिद्धि।

जो मैला होकर रहे, वह दिल धोवे है।
जो घर[1] रक्खे वह घर घर में रोवे है ॥ ३ ॥

[ २७४ ]

लावनी, राग धनासरी, ताल धुमाली

नहीं मिले हर धन त्यागे, नहीं मिले राम जान तजे। } टेक
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ }

सुत-दारा[2] या कुटुम्ब त्यागे, या अपना घर बार तजे।
नहीं मिले है प्रभु कदापि, जग का सब व्यवहार तजे ॥
कंद मूल फल खाय रहे, और अन्न का भी आहार तजे।
वस्त्र त्यागे नग्न हो रहे, और पराई नार तजे ॥
तो भी हर नहीं मिले यह त्यागे, चाहे अपने प्राण तजे।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ १ ॥

तजे पलङ्ग फूलों का और हीरे मोती लाल तजे।
ज़ात की इज़्ज़त, नाम और तेज और कुल की सारी चाल तजे ॥
वन में निशिदिन[3] विचरे और दुनिया का जंजाल तजे।
देह को अपनी चाहे जलावे, शरीर की भी खाल तजे ॥
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तौ भी, चाहे वह अपनी शान तजे।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥ २ ॥

रहे मौन बोले नहीं मुखसे, अपनी सारी बात तजे।
बालपन से योग ले चाहे तात[4] तजे या मात तजे ॥

---

१ घर से अभिप्राय वही परिच्छिन्न घर वा अहंकार से है, २ पुत्र स्त्री, ३ दिन रात, सदा, ४ पिता।

शिखा-सूत्र त्याग जो करदे और अपनी उत्तम ज़ात तजे।
कभी जीव को न मारे और घात तजे अपघात[1] तजे॥
इतना तजे तो क्या होवे जो देह का नहीं गुमान तजे।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे॥ ३॥

रहे रात दिन खड़ा न सोवे, पृथ्वी का भी शयन[2] तजे।
कष्ट उठावे रहे बेचैन, सुख और सारी चैन तजे॥
मीठा हो कर बोले सब से, कड़वे अपने बैन[3] तजे।
इतना त्यागे और देह अभिमान नहीं दिन रैन[4] तजे॥
बनारसी उसे मिले नहीं हर, चाहे सकल जहान तजे।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे॥ ४॥

( २७५ )

राग सोहनी, ताल गज़ल

फ़क़ीरी खुदा को प्यारी है, अमीरी कौन विचारी है। (टेक)

बदन पर ख़ाक, सो है अकसीर[5], फ़क़ीरों की है यही जागीर।
हाथ बाँधे हैं खड़े अमीर, बादशाह हो या हो वज़ीर।
सदा[6] यह सच हमारी है, गदा[7] की खुदा से यारी है॥ १॥

है उन का नाम सुनो दरवेश[8], कोई नहीं पावे उन से पेश।
खुदा से मिले रहें हमेश, कोई नहीं जाने उन का भेष।
कभी तो गिरिया-ओ-ज़ारी[9] है, कभी चश्मों[10] में खुमारी[11] है॥ २॥

---

१ हत्या, धोखा, २ सोना, बिछौना, ३ शब्द, वाणी, वाक्य, ४ रात, ५ रसायन, सब से बढ़ कर दारू, ६ आवाज़, ध्वनी, ७ फ़क़ीर ८ फ़क़ीर, ९ रोना पीटना, १० नेत्र, आँख, ११ मस्ती।

है उन का रुतबा बहुत बलन्द, खुदा के तयीं हुआ पसन्द।
बादशाह से भी है दोचन्द, उन्हें मत बुरा कहो हर चंद।
उन की दिल पर सवारी है, ऐसी कहीं नहीं तय्यारी है॥ ३॥

चीथड़े शाल से हैं आला[1], चश्म हरताल से हैं आला।
चने भी दाल से हैं आला, चलन हर चाल से है आला।
ज़ख्म जो दिल पर कारी[2] है, वही खुद मरहम विचारी है॥ ४॥

पाओं में पड़ा जो है छाला, वह है मोतयों से भी आला।
हाथ में फूटा सा प्याला, जामे-जमशेद[3] से भी आला।
अगर कोई हफत-हज़ारी[4] है, वह भी उन का भिखारी है॥ ५॥

मकाँ लामकाँ[5] फक़ीरों का, निशाँ बे निशाँ फक़ीरों का।
फ़क़र[6] है निहाँ[7] फक़ीरों का, खुदा है ईमान फक़ीरों का।
ताक़त सबर वह भारी है, मौत भी उन से हारी है॥ ६॥

बढ़ गये बाल तो क्या परवाह, उतर गयी खाल तो क्या परवाह।
आ गया माल तो क्या परवाह, हुए कङ्गाल तो क्या परवाह।
खुदा ही जनाब[8] बारी है, फक़र को यही क़रारी[9] है॥ ७॥

---

१ उत्तम, २ सख्त, भारी, ३ जमशेद बादशाह का प्याला, ४ एक पद वा खिताब होता है जिस से सात हज़ार सिपाहियों का अफसर अभिप्रेत है ५ देश रहित, ६ त्याग दशा वा त्यागपन, ७ गुप्त, छुपा हुआ, गुह्य, ८ महान, ९ स्थिति, धैर्य्य, निष्ठा।

[ २७६ ]

आनन्द भैरवी, ताल ग़ज़ल

न ग़म दुन्या का है मुझ को, न दुन्या से किनारा[1] है।
न लेना है, न देना है, न हीला[2] है, न चारा[3] है॥ १॥

न अपने से मुहब्बत है, न नफ़रत ग़ैरों[4] से मुझ को।
सभों को ज़ाते-हक़[5] देखूं, यही मेरा नज़ारा है॥ २॥

न शाही में मैं शैदा[6] हूं, गदाई[7] में न ग़म मुझ को।
जो मिल जावे सोई अच्छा, यही मेरा गुज़ारा है॥ ३॥

न कुफ़्र इस्लाम से फ़ारिग़, न मिल्लत[8] से ग़रज़ मुझ को।
न हिन्दु गिबरो[9]-मुसलिम हूँ, सभों से पंथ न्यारा है॥ ४॥

[ २७७ ]

## जोगी ( साधू ) का सच्चा रूप ( चरित्र )

ग़ज़ल

प्यारे! क्या कहूँ अहवाल[10] की अपने परेशानी?।
लगा ढलने मेरी आँखों से इक दिन खुद ब खुद पानी।
यकायक आ पड़ी उस दम, मेरे दिल पर यह हैरानी।

---

१ पृथकता, उदासीनता, अलहदगी, २ बहाना, ३ उपाय, दारू, इलाज, ४ दूसरों से, ५ ब्रह्म स्वरूप, ६ आसक्त, मोहित, ७ फ़क़ीरी, ८ मत, मतान्तर, ९ आग पूजने वाला पारसी, १० दशा, अवस्था।

कि जिस की हो रही है यह जो हर.इक जा[1] सनाख्वानी[2]।
किसी सूरत से उस को देखिये "कैसा है वह जानी[3]" ॥१॥

चढ़ा इस फ़िक्र का दरिया, भरा इस जोश में आकर।
कि इक इक लैहर उस की ने, ले उड़ाया हुवा ऊपर।
क़रारो-होशो-अक़्लो-सबरो-दानिश[4] बह गये यकसर[5]।
अकेला रह गया आजिज़, ग़रीबो-बेकसो-बेपर[6]।
लगा रोने कि इस मुश्किल की हो अब कैसे आसानी? ॥२॥

यह सूरत थी, कि जी[7] में इश्क़ ने यह बात ला डाली।
मँगा थोड़ा सा गेरू और वहीं कफ़नी रँगा डाली।
बिना मुद्रे गले के बीच सेली[8] बरमला डाली।
लगा मुँह पर भबूत और शक्ल जोगी की बना डाली।
हुआ अवधूत जोगी, जोगियों में आप गुरु-ज्ञानी ॥३॥

उठाई चाह[9] की झोली, प्याला चश्म[10] का खप्पर।
बना कर इश्क़ का कण्ठा, तलब[11] का सिर पै रख चक्कर।
मुण्डासा[12] गेरुआ बान्धा, रक्खा त्रिशूल कान्धे पर।
लगा जोगी हो फिरने ढूँढता उस यार को घर घर।
दुकाँ बाज़ार-ओ-कूचा ढूँढने की दिल में फ़िर ठानी ॥४॥

लगी थी दिल में इक आतिश[13], धूआँ उठता था आहों का।
तमाशे के लिये हलका[13] बन्धा था साथ लोगों का।

---

१ जगह, देश, २ स्तुति, ३ प्यारा, दिलवर ४ स्थिरता, धैर्य, बुद्धि, सन्तोष और समझ, ५ इकट्ठे, एक साथ, ६ असहाय, अधीन और निर्बल वा लाचार, ७ दिल, ८ साधु वेष, कन्था ९ इच्छा, १० नेत्र, चक्षु, ११ जिज्ञासा, १२ सिर पर फ़क़ीरी पगड़ी, १३ आग, १४ घेरा (पुरुषों का समुह), जमाअ़त।

तलब थी यार की और गरम था बाज़ार बातों का।
न कुछ सिर की खबर थी और न था कुछ होश-पाओं का।
न कुछ भोजन का अन्देशा[1] न कुछ फिकरे-अमल[2]-पानी ॥ ५ ॥

फिर इस जोग का ठैहरा अजब कुछ आन कर नक़्शा।
जो आया सामने मेरे, तो कहता उस से सुनता जा।
"कहो प्यारे! हमारे यार को तुम ने कहीं देखा?"।
जो कुछ मतलब की वह बोला, तो उससे और कुछ पूछा।
वगरें[3] यूँ ही लगा कहने, तो फिर देना अनाकानी[4] ॥ ६ ॥

कभी माला से कहता था, लगा कर जप से "ऐ माला।
हुआ हूँ जब से मैं जोगी, तू ही उस यार को बतला"।
कभी घबरा के हँसता था, कभी ले स्वाँस रोता था।
लबों से आह, आँखों से बहा पड़ता था दरिया सा।
अजब जंजाल में चक्कर के डाले है परेशानी ॥ ७ ॥

कोई कहता था "बाबाजी! इधर आओ, इधर बैठो।
पड़े फिरते हो ऐसे रात दिन, टुक बैठो, सस्ताओ।
जो कुछ दरकार हो मेवा मिठाई हुक्म फरमाओ"।
न कहना उस से "लो आओ", न कहना उससे "मत लाओ"।
खबर हरगिज़ न थी कुछ उस घड़ी अपनी, न बेगानी[5] ॥ ८ ॥

बड़ी दुवधा में था उस दम, कहाँ जाऊँ? कहाँ देखूँ?।
किसे देखूँ? किसे पूछूँ? किधर जाऊँ? कहाँ ढूँढूँ?।
करूँ तद्बीर क्या? जिस से मैं उस दिलदार को पाऊँ।

---

१ ख्याल, सोच, फिक्र, २ भाँग गाँजे की चिन्ता को फिक्रे-अमल-पानी कहते हैं, ३ और अगर, ४ टाल मटोल करना, ५ दूसरे की।

निशाँ हरगिज़ न मिलता था, पड़ा फिरता था जूँ मजनूँ[1]।
अजब दरिया-ए-हैरत की हुई थी आ के तुग़यानी[2] ॥ ९ ॥

उसी को ढूँढता फिरता हुआ मसजिद में जा पहुँचा।
जो देखा वाँ[3] भी है रोज़ो-नमाज़ों का ही इक चर्चा।
कोई जुब्बे[4] में अटका है, कोई दाढ़ी में है उलझा।
तसल्ली कुछ न पाई जब, तो आखिर वाँ से घबराया।
चला रोता हुआ बाहर व अहवाले-परेशानी[5] ॥ १० ॥

यही दिल ने कहा "टुक मदरसे को झांकिए चल कर।
भला शायद उसी में हो नज़र आजाये वह दिलबर"।
गया जब वहां तो देखी, वाह वा! कुछ और भी बदतर[6]।
किताबें खुल रहीं हैं, मच रहा है शोरो-गुल यक्सर।
हर इक मसले पै फ़ाज़िल कर रहे हैं बैहसे-नफसानी[7] ॥ ११ ॥

चला जब वहां से घबरा कर, तो फिर यह आ गयी जीं[8] में।
कि यह जगह तो देखी, अब चलो टुक दैर[9] भी देखें।
गया जब वाँ तो देखा मूर्ति और घंटों की झिङ्कारें।
पुकारा तब तो रोकर "आह! किस पत्थर से सिर मारें?"।
कहीं मिलता नहीं वह शोख़, काफिर दुश्मने-जानी ॥ १२ ॥

कहा दिल ने कि "अब टुक तीरथों की सैर भी कीजे।
भला वह दिलरुबा[10] शायद उसी जगह पै मिल जावे"।

---

१ मजनू (आदर्श आशिक़) की तरह, २ घटा, तूफान, ३ वहां, ४ चोगा, लबादा, फक़ीरों का लिबास, ५ परेशानी की अवस्था में, उद्विग्न, ६ और भी बुरी अवस्था, ७ व्यक्तिगत वाद विवाद, वा अपने अपने ख्याल पर झगड़ा, ८ चित्त, ९ मन्दिर, १० प्यारा, माशूक़।

बहुत तीरथ मनाये और किये दर्शन भी बहुतेरे।
तसल्ली कुछ न पाई तब तो हो लाचार फिर वाँ से।
मुहब्बत छोड़ कर बस्ती की, ली राहे-बियाबानी[1] ॥ १३ ॥

गया जब दश्तो-स्वहरा[2] में, तो रोया आह! क्या करिये?
कहां तक हिज्र[3] में उस शोख़ के रो रो के दिन भरिये?
किधर जाईये, और किस के ऊपर आश्रय धरिये?।
यही बेहतर है अब तो डूबिये या ज़हर खा मरिये।
भला जी जान के जाने में शायद आ मिले जानी ॥ १४ ॥

रहा कितने दिनों रोता फिरा हर दश्त में नालाँ[4]।
ग़रीबो-बेकसो-तन्हा मुसाफिर बेवतन हैरान्।
पहाड़ों से भी सिर पटका, फिरा शहरों में हो गिरयां[5]।
फिरा भूखा प्यासा ढूँढता दिलबर को सरगर्दान्[6]।
न खाने को मिला दाना, न पीने को मिला पानी ॥ १५ ॥

पड़ा था रेत में और धूप में सूरज से जलता था।
लगीं थीं दिल की आँखें यार से, और जी निकलता था।
उसी के देखने के ध्यान में हर दम निकलता था।
वले महबूब[7] से कुछ हाय! मेरा बस न चलता था।
पड़े बहते थे आँसू लालगूं[8] लाले-बदख़शानी[9] ॥ १६ ॥

---

१ जंगल का मार्ग, २ बन और जंगल वा उजाड़, ३ विरह, वियोग, ४ रोते हुए, ५ रोता हुआ, रुदन करता हुआ, ६ परेशान्, हैरान्, अशान्त, ७ प्यारा माशूक़ ( अन्तरात्मा ) ८ लाल ( सुर्ख़ ) पुष्प की तरह, ९ बदख़शां देश का जवाहर, हीरा।

जब इस अहवाल को पहुँचा, तो वह महबूब बे परवाह।
वहीं सौ बेक़रारी से मेरी बालीन्[1] पै आ पहुँचा।
उठा कर सिर मेरा ज़ानू[2] पै अपने रख के फ़रमाया।
कहा "ले देख ले जो देखना है अब मुझे इस जा[3]"।
अयाँ[4] हैं इस घड़ी करते तेरे पै भेदे-पिन्हानी[5] ॥ १७ ॥

यह सुन रख "पहले हम आशिक़ को अपने आज़माते हैं।
'जलाते हैं', 'सताते हैं', 'रुलाते हैं', 'बुलाते हैं'।
हर इक अहवाल में जब खूब साबित[6] उस को पाते हैं।
उसी से आ के मिलते हैं, उसी को मुँह दिखाते हैं।
उसे पूरा समझते हैं हम अपने ध्यान का ध्यानी" ॥ १८ ॥

सदा[7] महबूब की आई, ज्यूँ ही कानों में वाँ[8] मेरे।
बदन में आ गया जी और वहीं दुःख दर्द सब हरे[9]।
फिर आँखें खोल कर दिलबर के मुँह पर टुक नज़र करके।
ज़मीनो-आसमान्[10] चौदह तबक़[11] के खुल गये परदे।
मिटी इक आन में सब कुछ खराबी और परेशानी ॥ १९ ॥

हुई जब आ के यकताई[12], दूई[13] का उठ गया पर्दा।
जो कुछ वहमो-गुमाँ[14] थे, उड़ गये इक दम में हो पारा[15]।
नज़ीर[16] उस दिन से हमने फिर जो देखा खूब हर इक जा।

---

१ सिरहाना, तकिया, २ घुटने, ३ जगह. ४ प्रकट करना, खोल देना, ५ गुह्य, छुपा रहस्य, ६ पक्का, पुख्ता, ठीक, सच्चा, ७ आवाज़, ८ वहाँ; उस स्थान पर, ९ दूर हो गये, नष्ट हो गये, १० पृथिवी और आकाश, ११ चौदह लोक, १२ अभेदता, १३ द्वैत, १४ धोखा और भ्रम, १५ पारा धातु जैसे हवा में रखने से धूप से उड़ जाता है, वैसे प्यारे के दर्शन के तेज से धोखा वा भ्रम इत्यादि सब दूर उड़ गये, १६ कवि का नाम।

तुही देखा, तुही समझा, तुही जाना, तुही पाया।
बराबर हो गये हिन्दू मुसलमाँ गिबरो-नुसरानी[1] ॥२०॥

[ २७८ ]

राग सोहनी, ताल दीपचन्दी

हर आन हँसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए, फिर क्या दिलगीरी[3] है बाबा॥ टेक

हैं आशिक़ और माशूक़[4] जहाँ, वहाँ शाह वज़ीरी है बाबा।
न रोना है, न धोना है, न दरदे-असीरी[5] है बाबा॥
दिन रात बहारें चोहलें हैं, अरु इश्क़-सफ़ीरी[6] है बाबा।
जो आशिक़ होय सो जाने है, यह भेद फ़क़ीरी है बाबा ॥१॥ हर०

हैं चाह फ़क़त इक दिल्बर की, फिर और किसी की चाह नहीं।
इक राह उसी से रखते हैं, फिर और किसी से राह नहीं॥
यां[7] जितना रंज-तरद्दुद[8] है, हम एक से भी आगह[9] नहीं।
कुछ मरने का संदेह[10] नहीं, कुछ जीने की परवाह नहीं ॥२॥ हर०

कुछ ज़ुल्म नहीं, कुछ ज़ोर नहीं, कुछ दाद[11] नहीं, फ़र्याद नहीं।
कुछ क़ैद नहीं, कुछ बन्द नहीं, कुछ जबर[12] नहीं, आज़ाद नहीं॥
शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आबाद नहीं।
हैं जितनी बातें दुन्या की, सब भूल गये, कुछ याद नहीं॥३॥ हर०

---

१ पारसी लोग व ईसाई लोग, २ समय, ३ उदासी, ४ प्रेमी और प्यारा दिलबर, ५ क़ैद होने का दर्द, ६ जैसे बुलबुल पक्षी पुष्पकाप्रेमी (आशिक़) है और प्रेममें बोलता रहता है, ऐसेही अपने दिलबर के नाम रटनेवाला इश्क़ (प्रेम) ७ इस संसारमें, ८ चिन्ता, ९ परिचित, सचेत, १० डर, ११ न्याय, इन्साफ़ १२ सख़्ती, मजबूरी।

जिस सिम्त[1] नज़र भर देखे हैं, उस दिलबर की फुलवारी है।
कहीं सब्ज़े की हरयाली है, कहीं फूलों की गुलकारी[2] है॥
दिन रात मगन खुश बैठे हैं, अरु आस[3] उसी की भारी है॥
बस आप ही वह दातारी[4] है, अरु आप ही वह भंडारी है ॥४॥ हर०

नित्य इशरत[5] है, नित्य फरहत[6] है, नित्य राहत[7] है, नित्य शादी[8] है।
नित्य[9] मेहरो-करम[10] है दिल्बर[11] का, नित्य खूबी खूब मुरादी[12] है॥
जब उमड़ा दरिया उलफत[13] का, हर चार तरफ आबादी है।
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारिक-बादी है ॥५॥ हर०

है तन तो गुल के रंग बना, अरु मुँह पर हर दम लाली है।
जुज़[14] ऐशो-तरब[15] कुछ और नहीं, जिस दिन से सुरत[16] संभाली है॥
होंठों में राग तमाशे का, अरु गत पर बजती ताली है।
हर रोज़ बसन्त अरु होली है, और हर इक रात दिवाली है॥६॥हर०

हम आशिक़ जिस सनम[17] के हैं, वह दिल्बर सबसे आला[18] है॥
उस ने ही हम को जाँ[19] बख्शा, उस ने ही हमको पाला है॥
दिल अपना भोला भाला है, और इश्क़ बड़ा मतवाला है॥
क्या कहिये और नज़ीर[20] आगे! अब कौन समझने वाला है ॥७॥ हर०

---

१ तरफ, ओर, २ बेल बूटों को लगाना, ३ आशा, ४ सब कुच्छ देने वाला, सब का दाता, ५ विषयानन्द, रंग रलियाँ, ६ खुशी, आनन्द, ७ आराम चैन, ८ आनन्द, खुशी, ९ सर्वदा, हमेशा, १० अनुग्रह और कृपा, ११ प्यारा, १२ आशापूर्ति सत्य संकल्प, १३ प्रेम, १४ बिना, सिवाये, १५ खुश दिली, आनन्द, राग रंग, १६ होश, १७ प्यारा, १८ उत्तम, १९ प्राण, ज़िन्दगी, २० दृष्टान्त, मिसाल, कवि का नाम भी है।

[ २७८ ]

राग यमन कल्यान, ताल चलन्त

न बाप बेटा, न दोस्त दुश्मन, न आशिक़[1] और सनम किसी के।
अजब तरह की हुई फ़राग़त[2], न कोई हमारा, न हम किसी के। टेक

न कोई तालिब[3] हुआ हमारा, न हम ने दिल से किसी को चाहा।
न हम ने देखी ख़ुशी की लैहरें, न दर्दों-ग़म से कभी कराहा[4]।
न हम ने बोया, न हमने काटा, न हमने जोता, न हमने गाहा।
उठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उस के उठते ही फिर
अहाहा ॥ १ ॥ टेक

यह बात कल की है जो हमारा, कोई था अपना, कोई बेगाना।
कहें थे नाते, कहें थे पोते, कहें थे दादा, कहें थे नाना।
किसी पै पटका, किसी पै कूटा, किसी पै पीसा, किसी पै छाना ॥
उठा जो दिल से भरम का थाना[5], तो फिर अभी से यह हम
ने जाना ॥ २ ॥ टेक

अभी हमारी बड़ी दुकान थी, अभी हमारा बड़ा क़सब था।
कहीं ख़ुशामद, कहीं दरामद, कहीं त्वाज़ो[6], कहीं अदब[7] था।
बड़ी थी ज़ात और बड़ी सफ़ात और बड़ा हसब[8] और बड़ा नसब[9] था।
ख़ुदी[10] के मिटते ही फिर जो देखा, न कुछ हसब था न कुछ
नसब था ॥ ३ ॥ टेक

---

१ प्यारा, माशूक़, २ फ़ुरसत, ३ जिज्ञासु, चाहने वाला, ४ नफ़रत, ५ ढेर, अस्तित्व ६ अनेक सत्कार, ७ ख़ातिरदारी, ८ कुल, उच्च पद से भी अभिप्राय है, ९ कुल, ख़ान्दान, नसल, १० अहंकार।

अभी यह ढब था किसी से लड़िये, किसी के पाओं पे जाके पड़िये।
किसी से हक़[1] पर फिसाद करिये, किसी से नाहक़ लड़ाई लड़िये।
अभी यह धुन[2] थी दिल अपने में "कहीं बिगड़िये, कहीं झगड़िये"।
दुई के उठते ही फिर जो देखा, कि अब जो लड़िये तो किस से लड़िये॥ ४ ॥ टेक

[ २७९ ]

ॐ राग धनासरी, ताल धुमाली ॐ

वाह वाह रे मौज फकीरां दी[3]। (टेक)

कभी चबावें चना चबीना, कभी लपट लैं खीरां दी॥ वाह वाह रे० १।

कभी तो ओढ़ें शाल दुशाला, कभी गुदड़िया लीड़ां दी॥ वाह वाह रे० २

कभी तो सोवें रंग महल में, कभी गली अहीराँ[4] दी॥ वाह वाह रे० ३।

मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चलें अमीराँ दी॥ वाह वाह रे० ४.

---

१ सच्चाई, २ विचार, ख्याल, ३ की, ४ छोटी जाति के लोग।

[ २८० ]

राग पहाड़ी, ताल दादरा।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं। (टेक)

जो फ़क़र[1] में पूरे हैं, वह हर हाल में खुश हैं।
हर काम में, हर दाम[2] में, हर चाल में खुश हैं॥
गर माल दिया यार ने, तो माल में खुश हैं।
बेज़र[3] जो किया, तो उसी अहवाल[4] में खुश हैं।
इफ़लास[5] में, इद्बार[6] में, अक़बाल[7] में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥ १॥

चेहरे पे है मलाल[8] न जिगर में असरे-ग़म[9]।
माथे पे कहीं चीन[10], न अब्रू[11] में कहीं ख़म[12]।
शिकवा[13] न ज़ुबाँ पर, न कभी चश्म[14] हुई नम[15]।
ग़म में भी वही ऐश[16], अलम[17] में भी वही दम।
हर बात, हर औक़ात[18], हर अफ़्आल[19] में खुश हैं॥ २॥ पूरे०

गर यार की मर्ज़ी हुई, सिर जोड़ के बैठे।
घर बार छुड़ाया, तो वहीं छोड़ के बैठे।

---

१ त्याग, फ़क़ीरी, २ मूल्य, स्थिति वा चाल, ३ निर्धन, ग़रीब, ४ अवस्था, हालत, ५ ग़रीबी, निर्धनता ६ घर-बार के फ़िकरों का भार, ७ जगत का वैभव, मान प्रतिष्ठा, ८ रंज, उदासी, ९ फ़िक्र, ग़म का प्रभाव, १० बल, वट, त्योरी, ११ भ्रू, भृकुटि, १२ टेढ़ापन, तिर्छापन, १३ उलाहना, शिकायत, १४ नेत्र, १५ भीगे हुए, आँसू भरना, अश्रुपात, १६ प्रसन्नता, खुशदिली, १७ रंज, दुःखावस्था, १८ समय, काल, १९ काम।

मोड़ा उन्हें जिधर, वहीं मुँह मोड़ के बैठे।
गुदड़ी जो सिलाई, तो वुही ओढ़ के बैठे।
और शाल उढ़ाई, तो उसी शाल में खुश हैं ॥ ३ ॥ पूरे०

गर उस ने दिया ग़म, तो उसी ग़म में रहे खुश।
मातम[१] जो दिया, तो उसी मातम में रहे खुश।
खाने को मिला कम, तो उसी कम में रहे खुश।
जिस तरह रक्खा उसने, उस आलम[२] में रहे खुश।
दुःख दर्द में, आफ़ात[३] में, जंजाल में खुश हैं ॥ ४ ॥ पूरे०

जीने का न अन्दोह[४] है, न मरने का ज़रा ग़म।
यक्साँ है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आलम।
वाक़िफ़ न बरस से, न महीने से वह इक दम।
शब[५] की न मुसीबत, न कभी रोज़[६] का मातम।
दिन रात, घड़ी पहर, महो-साल[७] में खुश हैं ॥ ५ ॥ पूरे०

गर उसने उढ़ाया, तो लिया ओढ़-दोशाला[८]।
कम्बल जो दिया तो वुही काँधे पै सँभाला।
चादर जो उढ़ाई तो वुही हो गयी बाला[९]।
बंधवाई लंगोटी तो वुही हँस के कहा, "ला"।
पोशाक में, दस्तार[१०] में, रूमाल में खुश है ॥ ६ ॥ पूरे०

गर खाट बिछाने को मिली, खाट में सोये।
दुकाँ में सुलाया, तो जा हाट में सोये।

---

१ रोना, पीटना, २ अवस्था, हालत, ३ मुसीबत, दुख, विपत्ति, ४ ग़म, शोक, ५ रात्रि, ६ दिन, ७ मास और वर्ष, ८ सुन्दर वस्त्र, ९ सुन्दर १० पगड़ी।

रस्ते में कहा "सो", तो जा बाट में सोये।
गर टाट बिछाने को दिया, टाट में सोये।
और खाल बिछादी, तो उसी खाल में खुश हैं॥ ७॥ पूरे०

पानी जो मिला, पी लिया जिस तौर का पाया।
रोटी जो मिली, तो किया रोटी में गुज़ारा।
दी भूख, गर यार ने, तो भूख को मारा।
दिल शाद रहे, करके कड़ाके पै कड़ाका।
औ[1] छाल चबाई, तो उसी छाल में खुश हैं॥ ८॥ पूरे०

गर उस ने कहा "सैर करो जा के जहाँ की"।
तो फिरने लगे जंगलो-बर[2] मार के झाँकी।
कुछ दश्तो-वियाबाँ[3] में खबर तन की न जाँ की।
और फिर जो कहा "सैर करो हुस्ने-बुताँ[4] की"।
तो चश्मो-रुखो-जुल्फो-खत्तो-खाल[5] में खुश हैं॥ ९॥ पूरे०

कुछ उन को तलब[6] घर की, न बाहिर से उन्हें काम।
तकिया की न ख्वाहिश, न बिस्तर से उन्हें काम।
अस्थल[7] की हवस[8] दिल में, न मन्दिर से उन्हें काम।
मुफलिस[9] से न मतलब, न तवङ्गर[10] से उन्हें काम।
मैदान में, बाज़ार में, चौपाल[11] में खुश हैं॥ १०॥ पूरे०

---

१ निराहार, २ वन और देश वा बस्ती, ३ जंगल और उजाड़, ४ सुन्दर प्यारों की सुंदरता, ५ नेत्र, मुख, बाल और वज़ा क़ता में, ६ आवश्यकता, जिज्ञासा, ७ फ़क़ीरों के रहने की जगह, ( खानक़ाह, ) ८ लालच, इच्छा, शौक़, ९ निर्धन, ग़रीब, १० धनी, अमीर, ११ मंडप।

[ २८१ ]

राग बिलावल, ताल रूपक

गर है फ़क़ीर तो तू न रख यहां किसी से मेल ।
न तूँबड़ी न बेल[1], पड़ा अपने सिर पै खेल ॥ (टेक)

जितने तू देखता है यह फल फूल पात बेल ।
सब अपने अपने काम की हैं कर रहे झमेल ।
नाता है यां सो नाथ, जो रिश्ता[2] है सो नकेल ।
जो ग़म पड़े तो उसको तू अपने ही तन पर झेल ॥ १ गर है०

जब तू हुआ फ़क़ीर, तो नाता किसी से क्या ।
छोड़ा कुटुम्ब तने फिर रहा रिश्ता किसीसे क्या ।
मतलब भला फ़क़ीर को बाबा किसी से क्या ।
दिल्बर को अपने छोड़ के मिलना किसी से क्या ॥ २ गर है०

तेरी न यह ज़मीन है, न तेरो यह आस्मान् ।
तेरा न घर, न बार, न तेरा यह जिस्मो-जाँ[3] ।
उस के सिवाय कि जिस पै हुआ तू फ़कीर यां ।
कोई तेरा रफ़ीक़्[4], न साथी, न मिहरबान् ॥ ३ गर है०

---

१ फ़क़ीर के पात्रोंके नाम हैं, २ सम्बन्ध, ३ शरीर और प्राण, ४ मित्र, दोस्त ।

यह उलफतें[1] कि साथ तेरे आठ पहर हैं।
यह उलफतें नहीं हैं, मेरी जां! यह क़हर[2] हैं।
जितने यह शहर देखे हैं, जादू के शहर हैं।
जितनी मिठाईयां हैं, मेरी जां! यह ज़हर है ॥ ४ ॥ गर है०

खूबां[3] के यह जो चाँद से मुँह पर खिले हैं बाल।
मारा है तेरे वास्ते सय्याद[4] ने यह जाल।
यह बाल बाल अब है तेरी जान का बबाल[5]।
फंसियो खुदा के वास्ते इस में न देख भाल ॥ ५ ॥ गर है०

जिस का तू है फक़ीर, उसी को समझ तू यार।
मांगे तो मांग उस से, क्या नक़द क्या उधार।
देवे तो ले वही, जो न देवे तो दम न मार।
इसके सिवा किसी से न रख अपना कारो-बार ॥ ६ ॥ गर है०

क्या फायदा अगर तू हुआ नाम को फक़ीर।
हो कर फकीर तो भी रहा चाल में असीर[6]।
ऐसा ही था तो फकर को नाहक़ किया असीर।
हम तो इसी सखुन[7] के हैं क़ायल मियां नज़ीर[8] ॥ ७ ॥ गर है०

[ २८२ ]

राग जंगला।

गाज मूल न आइया, नाम धरायो फकीर ॥ टेक

पंक्तिवार अर्थ।

(टेक) फक़ीर (विरक्त) नाम धरा कर तुझे इन कामों से लज्जा नहीं आती।

१ ममताएँ, स्नेह, २ आपत्ति, ज़ुल्म, क्रोध, ३ सुन्दर मुख पुरुष वा स्त्री, ४ शिकारी, ५ दुःख, आपत्ति, ६ क़ैद, बद्ध, ७ वाक्य, इक़रार, वादा, ८ कवि का नाम है।

रातीं रातीं बदियां करेंदा, दिन नूं सदावें पीर ॥ १ ॥ ला०

अपना भार चाय न सकदा, लोकां बधावे धीर ॥ २ ॥ ला०

कुड़म कुटुंब दी फाही फस्या, गलविच पा लिया लीर ॥ ३ ॥ ला०

आखिर नतीजा मिलेगा प्यारे ! रोवेंगा नीरो-नीर ॥ ४ ॥ ला०

[ २८३ ]

राग राम कली ( पादशाही १० )

रे मन ! ऐसो कर संन्यासा । ( टेक )
वन[1] से सदन[2] सबे कर समझो, मन हीं माँहि उदासा ॥ १ ॥

---

( १ ) रात के समय छुप कर तू बुराईयां करता है और दिन को महात्मा या गुरू कहलाता है, इस से तुझे लज्जा नहीं आती ।

( २ ) अपने अन्दर तो शोक व चिंता का इतना बोझ धरा हुआ है कि उसको तू उठा ही नहीं सकता, पर लोगों को धीरज दिला रहा है । इस बात से तुझे लज्जा नहीं आती ।

( ३ ) कई तरह के चेलों का कुटुम्ब बनाकर आप तो उस में फंसा हुआ है और अपने गले में भगवे रंग के कपड़े पहिन कर अपने को संन्यासी वा त्यागी बता रहा है ।

( ४ ) खैर, इन सारी करतूतों का तुझ को अन्त में खूब नतीजा मिलेगा और फिर फूट फूट तुझ को रोना पड़ेगा ।

---

१ वन समान. ( २ ) मन्दिर ।

जत की जटा, योग के मञ्जन, नेम के नाखन बढ़ायो।
ज्ञान गुरु आत्मा उपदेशो. नाम बभूत लगायो ॥ २ ॥

अल्प अहार, स्वल्प सी निद्रा, दया, क्षमा, तन प्रीत।
शील, सन्तोष, सदा निरबाहियो[1], है वह त्रिगुणातीत ॥ ३ ॥

काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, हठ, मोह न मन स्यों ल्यावे।
तबहि आत्म-तत्व को दर्शै, परम पुरुष को पावे ॥ ४ ॥

[ २८४ ]

राग वसन्त

कत[2] जाइये रे, घर लागो रंग।
मेरा चित्त न चले मन भयो पंग[3] ॥ १ ॥

एक दिवस मन भई उमंग।
घस चन्दन चोआ बहु सुगंध ॥

पूजन चाली ब्रह्म ठाई[4]।
सो ब्रह्म बतायो गुरु मनही माँहि॥

जहाँ जाइये तहाँ जल पखान[5]।
तू पूर रहयो है सब समान ॥

वेद पुरान सब देखे जोई।
उहाँ तौ जाइये, जौ इहाँ न होई ॥

---

१ धारण करना, २ कहाँ, ३ पिंगला, ४ काशी में ब्रह्म मंदिर का नाम, ५ पत्थर की मूर्ति।

सतगुरु मैं बलिहारी तेरा।
जिन सकल[1] विकल[2] भ्रम काटे मेरा ॥

रामानन्द स्वामी रमत[3] ब्रह्म।
गुरु का शब्द काटे कोट करम ॥

[ २८५ ]

राग धनासरी ( महल्ला १ )

काहे रे बन खोजन जाई ( टेक )
सर्व निवासी, सदा अलेखा[4], तोहि[5] संग रहत सदाई ॥ १ ॥

पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, दर्पण माहिं ज्यों छाई।
तैसे ही हर बसत निरन्तर, घट ही में खोजो भाई ॥ २ ॥

बाहिर भीतर एको मानो, यह गुरु ज्ञान बताई।
जन नानक बिन आपा[6] चीने, मिटे न भ्रम की काई ॥ २ ॥

---

१ सारा, २ व्याकुल करने वाला, ३ रम रहा है, ४ जो लख्या अर्थात् देखा न जाय, ५ तेरे साथ, ६ अपने आपको पहचाने बिना।

# निजानन्द

[ २८६ ]

❀ राग भांड, ताल दादरा ❀

आप में यार देख कर, आईना[1] पुर सफा कि यूं।
मारे खुशी के क्या कहूँ, शशदर[2] सा रह गया कि यूं॥ १॥

( १ )

( १ ) जैसे साफ पानी में वस्तु पूरी तरह नज़र आती है, इस तरह अपने भीतर अपना प्यारा (प्रियात्मा) देख कर मैं ऐसा चकित हो गया कि खुशी के मारे मुख से कुछ बोल न सका।

१ साफ दर्पण, २ आश्चर्य।

रो के जो इल्तमास[1] की, दिल से न भूलयो कभी।
पर्दा हटा दूई मिटा, उसने भुला दिया कि यूं ॥ २ ॥

मैं ने कहा कि रंजो-ग़म[2], मिटते हैं किस तरह कहो।
सीना[3] लगा के सीने से, माह[4] ने बता दिया कि यूं ॥ ३ ॥

गरमी हो इस बला की हाय, भुनते हों जिससे मर्दो-ज़न[5]।
अपनी ही आबो-ताब[6] है, ख़ुद ही हुँ देखता कि यूं ॥ ४ ॥

दुन्या-ओ-आक़बत[7] बना, वाह वा जो जहल[8] ने किया।
तारों सा मिहरे-राम[9] ने, पल में उड़ा दिया कि यूं ॥ ५ ॥

---

( १ ) जब मैंने उस प्यारे से रो कर प्रार्थना की "कि मुझे कभी न भूलना" तो उसने द्वैत का पर्दा बीच में से हटा दिया और मेरे से अभेद होकर अर्थात् मेरा ही स्वरूप बन कर झट मुझे भुला दिया ( क्योंकि परस्पर एक दूसरे का स्मरण तो द्वैत में ही हो सकता है )।

( ३ ) मैंने उस प्यारे से कहा कि "शोक-चिन्ता कैसे मिटते हैं?" तो उसने छाती से छाती मिला कर ( अर्थात् पूर्ण अभेद हो कर ) कहा कि ऐसे मिटते हैं, और तरह से नहीं।

( ४ ) गरमी इतनी भारी ( तीक्ष्ण ) हो कि दाने की तरह पुरुष-स्त्री भुन रहे हों, परन्तु मुझे ऐसा भान होता है कि यह सब मेरा ही तेज़ और ताप है और मैं ही स्वयं भुना जा रहा हूँ।

( ५ ) लोक और परलोक जो कुछ अज्ञान से बना था, राम ने उसे पल में ऐसे उड़ा दिया जैसे सूर्य तारों को उड़ा देता है।

---

१ प्रार्थना, २ दुःख, पीड़ा, ३ छाती, ४ चन्द्र मुख प्यारे ने, ५ स्त्री-पुरुष, ६ चमक और दमक, ७ लोक और परलोक, ८ अविद्या, अज्ञान, ९ सूर्य रूपी राम, ।

[ २८७ ]

❀ ग़ज़ल, ताल दादरा ❀

हस्ती-ओ[1]-इल्म हूँ, मस्ती हूँ, नहीं नाम मेरा।
किबरयाई[2]-ओ-खुदाई, है फ़क़त[3] काम मेरा॥ १॥

चश्मे-लैला[4] हूं, दिलो-कैस[5], व दस्ते-फरहाद[6]।
बोसा[7] देना हो तो दे लो, है लबे-जाम[8] मेरा॥ २॥

गोशे-गुल[9] हूँ, रुखे-यूसफ[10] दमे-ईसा[11], सरे-सरमद[12]।
तेरे सीने[13] में बसूं हूँ, है वही धाम[14] मेरा॥ ३॥

हलके-मंसूर[15], तने-शम्स[16], व इल्मे-उलमा[17]।
वाह वा बैहर[18] हूँ और बुदबुदा[19] इक राप मेरा॥ ४॥

---

१ सच्चिदानन्द हूँ, २ स्वात्म अभिमान का महात्म्य और ईश्वरता, ३ केवल, ४ प्रिया लैली की आँख, ५ प्रिय मजनू का चित्त, अर्थात लैली मजनू दो आशिक़ माशूक़ पंजाब देश में हुए है, और मजनू का चित्त अपनी प्रिया लैली की चक्ष (वा दृष्टि) पर अत्यन्त आसक्त था. इस लिये लैली की चक्षु का उदाहरण यहाँ दिया है, ६ (प्रिया शीरीं का प्यारा आशक़) फरहाद का हाथ (जिसने पर्वत को फोड़ डाला था), ७ चुम्बन देना अर्थात् चूमना हो तो चूमलो, ८ मेरा मुँह रूपी प्याला तेरे पास है, ९ फूल का कान, १० यूसफ का मुख, ११ ईसा का स्वास (प्राण फूँकना) १२ सरमद का सिर, १३ हृदय, १४ घर, १५ मंसूर (ब्रह्म-ज्ञानी) का कंठ, जो सूली पर चढ़ाया गया, १६ शम्सतब्रेज़ का तन (शरीर) जिस की खाल उतारी गई, १७ विद्वानों की विद्या, १८ समुद्र, १९ बुलबुला।

[ २८८ ]

❀ राग ज़िला, ताल दादरा ❀

क्या पेशवाई[1] बाजा है, अनाहद[2] शब्द है आज ।
वैलकम[3] को कैसी रौशनी, समदान्या[4] है आज ॥ १ ॥

चक्कर से इस जहानके फिरे असल घर को हम ।
फुट-बाल सब ज़मीन है, पा[5] पर फ़िदा[6] है आज ॥ २ ॥

( २ )

( १ ) स्वागत करने वाला प्रणव ध्वनि का बाजा क्या उत्तम बज रहा है, और स्वागत के वास्ते कैसा उत्तम वा स्वच्छ प्रकाश जगमगा रहा है । अभिप्राय यह है कि:—प्रणव-उच्चारण अर्थात् अहंग्रह उपासना से आत्म-साक्षात्कार होता है, और साक्षात्कार से पहिले चारों ओर भीतर प्रकाश ही प्रकाश भान होता है, इस लिये साक्षात्कार के थोड़ा पहिले की अवस्था को दर्शाते समय प्रणव ध्वनि और प्रकाश उस ( अनुभव ) का स्वागत करने वाले वर्णन हुए हैं ।

( २ ) इस संसार-चक्कर से निकल कर हम जब अपने असली धाम ( निज स्वरूप ) की ओर मुड़े, तो पृथ्वि हमारे लिये एक फुटबाल अर्थात् खेल का गेंद हो गई और अब वह हमारे चरणों पर वारे जाती है । अभिप्राय यह कि जब वृत्ति आत्मस्वरूप से विमुख थी और संसार वा संसार के विषयों में आसक्त थी, तो संसार दूर भागता था, जब वृत्ति संसार से मुँह मोड़कर अंतर्मुख हुई, तो संसार हमारे चरणोंपर गिरने लग पड़ा ।

१ आगे चल कर लेने वाला ( अर्थात स्वागत का बाजा ), २ अनहद ध्वनी, ॐ ( प्रणव ), ३ मुबारकबादी ( स्वागत ), ४ उत्तम, शुद्ध, पवित्र ५ पाद, पावों, ६ प्राण दिये हुए, अर्पित ।

चक्कर में है जहान, मैं मर्कज़[1] हूँ मिह्र[2] साँ।
धोके से लोग कहते हैं, सूरज चढ़ा है आज ॥ ३ ॥

शहज़ादे[3] का जलूस[4] है, अब तख़्ते-ज़ात[5] पर।
हर ज़र्रह[6] सदक़ा[7] जाता है, नग़मा-सरा[8] है आज ॥ ४ ॥

---

( ३ ) संसार तो चक्कर में है, और सूर्यवत् मैं उस चक्कर का केन्द्र हूँ पर लोग धोके से कहते हैं कि आज सूर्य चढ़ा है (यद्यपि वास्तव में सूर्य तो नित्य स्थित रहता है)। अभिप्रायः—लोग इस भूल में हैं कि ईश्वर कहीं बाहिर है और उस के ढूँढने में चक्कर लगाते फिरते हैं, पर आत्मदेव सूर्यवत् सब का केन्द्र हुआ सब के भीतर स्थित है, केवल अज्ञान के बादल से आच्छादित है, और उस के दूर हटने पर वह नित्य उपस्थित आत्मा वा आत्म-ज्ञान विद्यमान होता है, परन्तु लोग धोखे से यह कहते हैं कि हमने उसे ढूँढ पाया है।

( ४ ) युवराज अर्थात् सूर्य का अपने स्वराज्य की गद्दी पर बैठने का शुभ समा अब हो रहा है, अर्थात् उदयकाल अब हो रहा है, इस वास्ते एक एक परमाणु उस पर प्राण दे रहा वा कुर्बान जा रहा है। अभिप्रायः—वृत्ति का अपने परम स्वरूप में लय होने का अब समय आ रहा है, इस लिये प्रत्येक परमाणु उस ज्ञानी पर वारे न्यारे जा रहा है।

---

१ केन्द्र, २ सूर्य के समान, ३ युवराज, ४ राज तिलक, ५ स्वराज्य की गद्दी, ६ परमाणु, ७ वारे जाता, प्राण देता वा कुर्बान होता है, ८ आवाज़ देता है, गीत गा रहा है,

हर बर्गो-मिहरो-माह[1] का रक़्सो-सरोद[2] है।
आराम अमन चैन का तूफ़ाँ बपा है आज ॥ ५ ॥
किस शोख़े-चश्म[3] की है यह आमद[4] कि नूरे-बर्क़[5]।
दीदों[6] को फाड़ फाड़ के राह देखता है आज ॥ ६ ॥
आता करम-फ़शाँ[7], शाहे-अबर-दस्त[8] है।
बारश की राह[9] पानी छिड़कता ख़ुदा है आज ॥ ७ ॥

( ५ ) इस समय प्रत्येक पत्ता, सूर्य और चन्द्र का नाच-राग हो रहा है, और सुख आनन्द, शान्ति का समूह बेह रहा है। अभिप्राय यह है कि-इस आत्म-साक्षात्कार पर प्रत्येक पत्ता, चन्द्र और सूर्य प्रसन्नता में नृत्य कर रहे हैं, और चारों ओर प्रसन्नता, शांति और सुख का समुद्र बह रहा है।

( ६ ) किस तीक्ष्ण-दृष्टि प्यारे का यह आगमन है कि जिसकी इंतज़ार में बिजली का तेज आँखे फाड़ फाड़ कर देख रहा है! अभिप्राय यह कि—ऐसा आनन्द का समय देख कर साधारण मनुष्य के चित्त में संशय उठ पड़ता है कि ऐसा कौन प्रभाव शाली अब आ रहा है जिस की प्रतीक्षा में विद्युत भी आँखें फाड़ फाड़ देख रहा अर्थात् घोर प्रकाश कर रहा है।

( ७ ) जिसके हाथ में बादल हैं वा जिस का हाथ बादल के समान कृपा-दृष्टि करने वाला है, ऐसा कृपालु महाराजाधिराज ( सूर्य ) आ रहा है और वर्षा के स्थान पर आनन्द रूपी जल की वृष्टि कर रहा है। अभिप्राय यह है कि—जो कृपा का अधिष्ठान वा समुद्र है, ऐसे प्रकाश स्वरूप आत्मा का अनुभव हो रहा है और बादल के स्थान पर अब ईश्वर स्वयं आनन्द की वृष्टि कर रहा है।

१ प्रत्येक पत्ते, चन्द्र और सूर्य का, २ नाच, राग, ३ तीक्ष्णदृष्टि वाला प्यारा, ( आत्मा ), ४ आगमन, ५ बिजली का तेज वा प्रकाश, ६ आँखों को, ७ कृपालु, कृपा वृष्टि करने वाला, ८ वह बादशाह जिसके हाथ में बादल हो अर्थात् सूर्य, वा जिसका हाथ बादल के समान कृपावृष्टि करता हो, ९ वर्षा के स्थानपर।

झुक झुक सलाम करता है अब चाँदे-ईद है।
इक़बाल[1] राम राम का खुद हो रहा है आज॥ ८॥

[ २८९ ]

❀ राग ज़िला, ताल दादरा ❀

गुल[2] को शमीम[3], आब[4] गौहर[5] और ज़र[6] को मैं।
देता बहादरी हूँ बला शेरे-नर[7] का मैं॥ १॥

शाहों को रौब[8] और हसीनों[9] को हुसनो-नाज़[10]।
देता हूँ जबकि देखूं उठा कर नज़र[11] को मैं॥ २॥

सूरज को सोना चाँद को चाँदी तो दे चुके।
फिर भी तवायफ[12] करते हैं देखूं जिधर को मैं॥ ३॥

---

(८) ईद का जो चाँद अर्थात् द्वितीया का चन्द्र निकला है, वह मानो राम को नमस्कार झुक झुक कर कर रहा है। इस प्रकार राम अपना स्वागत (मान-प्रतिष्ठा) स्वयं आप हो रहा है। अभिप्राय यह कि:—इस साक्षात्कार के बाद तो द्वितीय का चाँद जिस के आगे लोग झुकते हैं, वह स्वयं उस आत्माज्ञानी के आगे झुक झुक कर नमस्कार करता है। इस प्रकार राम स्वयं अपना स्वागत (यश) आप हो रहा है।

---

१ स्वागत, प्रताप, प्रभाव, २ पुष्प, ३ सुगन्ध, ४ चमक, ५ मोती, ६ स्वर्ण, ७ नर शेर, सिंह, ८ दबदबा, प्रभाव, ९ सुन्दर लोग वा सुन्दरियों को, १० सौन्दर्य और नखरा; ११ दृष्टि, १२ मुजरा, नाच।

अब्रूए[1]-कैहकशां[2] भी अनोखा[3] कमन्द है।
बे कैद हो असीर जो देखूं इधर को मैं ॥ ४ ॥

तारे झमक झमक के बुलाते हैं राम को।
आँखों में उन की रहता हूं, जाऊँ किधर को मैं ॥ ५ ॥

[ २९० ]

❀ राग भैरवी, ताल चलन्त ❀

यह इधर से मिहर[5] आ चमका, अहाहाहा, अहाहाहा।
उधर मह[6] बीम[7] से लपका, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ १ ॥

हवा अटखेलियां करती है मेरे इक इशारे से।
है कोड़ा[8] मौत पर मेरा, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ २ ॥

अक़ाई[9] ज़ात[10] में मेरी आसखों रंग हैं पैदा।
मज़े करता हूँ मैं क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ३ ॥

कहूं क्या हाल इस दिल का कि शादी[11] मौजें[12] मारे है।
है इक उमड़ा हुआ दरया, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ४ ॥

यह जिस्मे-राम[13] ऐ बदगो[14]! तसव्वर[15] मैहज़[16] है तेरा।
हमारा बिगड़ता है क्या, अहाहाहा[17], अहाहाहा ॥ ५ ॥

---

१ आँखों की भवें, २ आकाश में एक लम्बी सफेदी जो रात्रि के समय नज़र आती है जिस को ( Milky Path ) दूधिया रास्ता वा आकाश गंगा कहते हैं, ३ विचित्र, ४ क़ैद, बद्ध, आसक्त, ५ सूर्य, ६ चाँद, ७ भय, ८ चाबुक, ९ एक, अद्वैत, १० वास्तव स्वरूप, ११ खुशी, आनन्द, १२ लैहरें मारना १३ राम का शरीर, १४ बुरा बोलने वाले या ताना मारने वाले; अभिप्राय भेद वादी से है, १५ भ्रम, कल्पना, १६ केवल, १७ आश्चर्य और हर्ष का वाचक शब्द है।

[ २९१ ]

❀ ग़ज़ल, ताल पश्तो ❀

पीता हूँ नूर[1] हर दम, जामे-सरूर[2] पै हम। }
है आस्माँ[3] प्याला, वह शराबे-नूर[4] वाला॥ } टेक

है जी[5] में अपने आता, दूं जो है जिस को भाता।
हाथी, गुलाम, घोड़े, ज़ेवर, ज़मीन, जोड़े॥
ले जो है जिस को भाता, मांगे विग़ैर दाता॥ पीता हूँ० १

हर क़ौम की दुआयें[6], हर मत की इल्तजायें[7]।
आती हैं पास मेरे, क्या देर क्या सवेरे॥
जैसे अड़ाती गायें जंगल से घर को आयें॥ पीता हूँ० २

सब ख़्वाहशें, नमाज़ें, गुण, कर्म, और मुरादें।
हाथों में हूं फिराता, दुन्या हूँ यूं बनाता॥
मेमार[8] जैसे ईंटें, हाथों में है घुमाता॥ पीता हूँ० ३

दुन्या के सब बखेड़े, झगड़े, फसाद झेड़े।
दिल में नहीं अड़कते, न निगह को बदल सकते॥
गोया गुलाल हैं यह, सुर्मा मसाल[9] हैं यह॥ पीता हूँ० ४

नेचर[10] के लाज़[11] सारे, अहकाम[12] हैं हमारे।
क्या मिहर[13] क्या सतारे, हैं मानते इशारे॥
हैं दस्तो-पा[14] हर इक के, मर्ज़ी पे मेरी चलते॥ पीता हूँ० ५

---

१ प्रकाश, २ आनन्द का प्याला, ३ आकाश, ४ प्रकाश रूपी मदिरा या ज्ञानामृत, ५ दिल, ६ प्रार्थनायें, ७ निवेदन वा दरख़्वास्तें, ८ मकान बनाने वाला, ९ आँखों में सुर्मे की तरह, १० प्रकृति (क़ुद्रत), ११ नियम, क़ानून, १२ आज्ञा, हुक्म, उपदेश, १३ सूर्य, १४ हाथ और पाओं।

कशशे-सिक़ल[1] की क़ुद्रत, मेरी है मिहरो-उलफ़त[2]।
है निगह[3] तेज़ मेरी, इक नूर की अन्धेरी ॥
बिजली शफ़क़[4] अङ्गारे, सीने[5] के हैं शरारे। पीता हूँ० ६

मैं खेलता हूं होली, दुन्या से गेन्द गोली।
ख्वाह इस तरफ को फैंकू, ख्वाह उस तरफ़ चला दूं ॥
पीता हूँ जाम[6] हर दम, नाचूं मुदाम[7] धम धम ॥
दिन रात है तरन्नम[8], हूँ शाहे-राम बेग़म[9] ॥ पीता हूँ० ७

[ २९२ ]

❀ ग़ज़ल, ताल क़वाली ❀

हुबाबे-जिस्म[10] लाखों मर मिटे, पैदा हुए मुझ में।
सदा हूँ बेहरे-वाहद[11], लैहर है धोखा फ़रावाँ[12] का ॥ १ ॥

---

( १ ) मुझ में बुदबुदा रूपी शरीर लाखों मर मिटे और उत्पन्न हो गये, पर मैं नित्य अद्वैत रूपी समुद्र ही हूँ, और मुझ में नानत्व-रूपी लैहरें केवल धोखा हैं।

---

१ आकर्षण-शक्ति, (Law of gravitation), २ कृपा ( मिहरबानी ) और प्यार, ३ दृष्टि, ४ दोनों काल के मिलते समय आकाश में जो लाली होती है, ५ दिल, ६ प्रेम-प्याला, ७ नित्य, हमेशा, ८ आनंद से आँसुओं का धीमे धीमे टपकना वा बरसना, ९ बेग़म राम बादशाह हूँ, १० देह का बुदबुदा अर्थात् देह वा शरीर रूपी बुदबुदा, ११ अद्वैत का समुद्र अथवा अद्वैत रूप समुद्र, १२ नानत्व, अगणित, ज़्यादा, अर्थात् द्वैत केवल धोखा है।

मेरा सीना[1] है मशरक़[2] आफ़तावे-ज़ाते-ताबाँ[3] का।
तलूए-सुबहे-शादाँ[4], वाशुद[5] है मेरे मिश्गाँ[6] का ॥ २ ॥

ज़ुबाँ अपनी बहारे-ईद[7] का मुयदह[8] सुनाती है।
दुरों[9] के जगमगाने से हुआ आलम[10] चरागाँ का ॥ ३ ॥

सरापा-नूर[11] पेशानी[12] पै मेरी मह[13] दरख़शाँ[14]।
कि झूमर[15] है जबीं[16] सीमीं पै गिर्जाये-ज़िमिस्ताँ[17] का ॥ ४ ॥

---

( २ ) मेरा जो हृदय है वह पूर्व है जहाँ से ( प्रकाशस्वरूप आत्मा का ) सूर्य प्रगट होता है, और मेरे हृदय-नेत्र की पलकों का खुलना ही आनन्द की प्रातःकाल का चढ़ना है। अर्थात् आत्मा के साक्षात्कार का स्थान हृदय है और हृदय-नेत्र के खुलते ही प्रसन्नता उदय होती है।

( ३ ) मेरी वाणी आनन्द की बहार की खुशखबरी सुनाती है और उक्त वाणी से शब्द रूपी मोतियों के झरने से दीपमाला का समय बन्ध गया, अर्थात् ज्ञान का प्रकाश चारों ओर हो गया है।

( ४ ) मेरी चमकीली ललाट ( पेशानी ) पर अर्थात् पर्वतों की शिखर पर चाँद ऐसे चमक रहा है कि मानो पार्वती के चान्दी रूप चमकीले माथे पर झूमर लटक रहा है।

---

१ हृदय, २ पूर्व, ३ प्रकाशस्वरूप आत्मा ( सूर्य ) का पूर्व अर्थात् हृदय स्थान है, ४ आनन्द की प्रातः का उदय स्थान, ५ खुलना, ६ आँख अर्थात् ज्ञान नेत्र की पलकें, ७ ईद अर्थात् निजानन्द की बहार, ८ खुशखबरी, आनन्द की सूचना ९मोती, यहाँ अभिप्राय शब्दों से है, १०(ज्ञानरूपी) दीपकों का लोक अर्थात् चारों ओर ज्ञानका प्रकाश ही प्रकाश हो गया, ११ प्रकाशमान् व प्रकाश से पूर्ण, १२ माथा, बरफों से अभिप्राय है १३चाँद, १४ प्रकाशमान, १५ माथे पर लटकने वाला ज़ेवर (गहना), १६ चाँदी जैसी चमकीली पेशानी (बर्फ़) पर, १७ शीत स्वरूप पार्वती ( उमा )।

खुशी से जान जामे[1] में नहीं फूली समाती अब।
गुलों[2] के बार[3] से टूटा, यह लो दामाँ[4] बियावाँ का ॥ ५ ॥

चमन में दौर[5] है जारी, तरब[6] का, चहचहाने का।
चहकने में हुआ तबदील, शेवन[7] मुर्ग़-नालाँ[8] का ॥ ६ ॥

निगाहे[9]-मस्त ने जब राम की आमद[10] की सुन पाई।
है मजमा[11] सैद[12] होने को यहाँ वहशी ग़ज़ालाँ का ॥ ७ ॥

---

( ५ ) आनंद इतना बढ़ गया कि प्राण भी अब तन के भीतर फूले नहीं समाते, अथवा राम को पर्वतों में एक स्थान पर अब स्थित होने नही देते। बल्कि जैसे पुष्पों के बोझ से वन का पल्ला टूट गया कहलाता है, या पुष्प अपनी अधिकता के कारण वन से बाहिर उड़ आते हैं, वैसे ही राम भी इस निजानन्द के बढ़ने से पर्वतों से नीचे उतरा कि उतरा।

( ६ ) इस संसार रूपी उपवन में आनन्द के चैहचहाने का समय जारी है और इस ( चहचहावट ) से पक्षियों का रोना भी चहकने में बदल गया है।

( ७ ) मस्त पुरुष की दृष्टि ने जब राम के आने की खबर सुनी तो दर्शन की प्रतीक्षा ( इन्तज़ार ) लोग ऐसे करने लगे कि मानो जंगली मृगों का समूह देखने को उत्सक है (अर्थात् जैसे मृग जल की इन्तज़ार में टिकटिकी बान्धे रहते हैं, वैसे सर्व लोग राम की इन्तज़ार में लगे है)।

---

१ भीतर के खाने रूपी पल्ले में, २ पुष्प, फूल, ३ बोझ, ४ पल्ला, मुराद जंगल का तट वा किनारा, ५ समय का चक्कर, ६ खुशी, ७ रुदन, शोक, खेद, विलाप, ८ रोते हुए पक्षियों का, ९ मस्त पुरुष की दृष्टि, १० आगमन, ११ समूह हजूम, १२ शकार होने, लट्टू होने अर्थात् वारे जाने को, ११ जंगली मृगों का

[ २९३ ]

❀ ग़ज़ल ❀

मुझ बैहरे-खुशी[1] की लैहरों पर दुन्या की किशती रहती है।
अज़ सैले-सरूर[2] धड़कती है छाती और किशती बहती है॥
मुझमें ! मुझमें !! मुझमें !!! (टेक)

गुल[3] खिलते हैं, गाते हैं रो रो बुलबुल,
क्या हसते हैं नाले[4] नदियाँ।
रंगे-शफ़क़[5] घुलता है, बादे-सबा[6] चलती है,
गिरता है छमछम बाराँ[7]। मुझमें ! मुझमें !! मुझमें !!! ॥ १ ॥

करते हैं अंजम[8] जगमग, जलता है सूरज धक धक,
सजते हैं बागो-बियाबाँ[9]।
बसते हैं नंदन पैरस, पुजते हैं काशी मक्का,
बनते हैं जिन्नतो-रिज़वाँ[10]। मुझमें ! मुझमें !! मुझमें !!! ॥ २ ॥

उड़ती हैं रेलें फर फर, बैहती हैं बोटें[11] झर झर,
आती है आँधी सर सर।
लड़ती हैं फौजें मर मर, फिरते हैं जोगी दर दर,
होती है पूजा हर हर, मुझमें ! मुझमें !! मुझमें !!! ॥ ३ ॥

---

१ खुशी का समुद्र, २ आनन्द के तीव्र तूफान (बहाओ) से, ३ पुष्प, ४ धारा, चश्मे, ५ प्रातःकाल और सायंकाल को आकाश में जो लाली बादलों में होती है, ६ पूर्वी-वायू, ७ वर्षा, ८ तारे, ९ बाग़ और जंगल, १० स्वर्ग और स्वर्ग का अध्यक्ष, ११ बेड़ी, किश्ती।

चरख[1] का रंग रसीला, नीला नीला, हर तरफ दमकता है,
कैलास झलकता है, बैहर[2] डलकता है, चाँद चमकता है।
मुझमें ! मुझमें !! मुझमें !!! ॥ ४ ॥

आज़ादी है, आज़ादी है, आज़ादी मेरे हाँ।
गुन्जायशो-जा[3] सब के लिये बेहद्दो-पाँया[4] ॥
सब वेद और दर्शन, सब मज़हब, कुरआन,
अञ्जील और त्रैपटका[5]।
बुद्ध, शंकर, ईसा और अहमद, था रहना सहना इन सबका
मुझ में । मुझ में!! मुझमें !!! मुझमें !!!! ॥ ५ ॥

थे कपल, कनाद और अफलातूं, अस्पैंसर, कैंट, और हैमिलटन[6]।
श्री राम, युद्धिष्ठिर, असकन्दर, बिक्रम, क़ैसर, अलज़बथ, अकबर।
मुझमें ! मुझमें !! मुझमें !!! मुझमें !!!! ॥ ६

मैदाने-अबद[7] और रोज़े-अज़ल[8],
कुल माज़ी, हाल और मुस्तकबल[9]।
चीज़ों का बेहद रद्दो बदल[10], और तख्ता-ए-दैहर[11] का है हल चल,
मुझमें । मुझमें !! मुझमें !!! मुझमें !!!! ॥ ७ ॥

---

१ आकाश, २ समुद्र, ३ स्थान की गुंजायश (विशालता), ४ बेशुमार, अथाह, ५ बुद्ध मत की पुस्तक, ६ यूरप के विज्ञान शास्त्रियों के ये नाम हैं, ७ अमर स्थान, ८ अनादि काल, ९ भूत वर्तमान और भविष्य, १० बदलते रहना, विकार, ११ समय का पलड़ा।

हूँ रिश्ता-ए-वहदत दर कसरत[2], हूँ इल्लतो-सिहत[3] और राहत[4]।
हर विद्या, इल्म, हुनर, हिकमत; हर खूबी, दौलत और बरकत।
हर नेमत, इज़्ज़त और लज़्ज़त; हर कशिश का मर्कज़[5]; हर ताक़त।
हर मतलब, कारण, कारज सब; क्यों, किस जा[6], कैसे, क्योंकर, कब।
मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! मुझ में!!!! ॥ ८॥

हूँ आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, ज़ाहिर, बातिन[7], मैं ही मैं।
माशूक़[8] और आशिक़[9], शाइर[10], मज़मून, बुलबुल, गुलशन[11]* मैं ही मैं ॥ ९॥

---

* यह उक्त कविता हिन्दी या उर्दू कविता के ढंग पर नहीं है, यह अमरीका देश के व्हाल्टव्हिट मैनियन ढंग पर बही हुई है, और उन दिनों में लिखि गई थी जबकि राम से अन्त में अपना नाम देना बंद हो गया था। जिन पाठकों को व्हाल्ट व्हिट मेनियन ढंग से परिचय न हो वे "Leaves of grass by Whalt Whitman" (घास की पत्तियाँ) ऐसे नाम की पुस्तक देखें।

(सम्पादक)

---

१ एकता का सम्बन्ध वा धागा, २ अनेकता, नानत्व, ३ कारण, सुख, वा निरोगिता, ४ आराम, ५ केन्द्र, ६ किस स्थान, ७ अन्दर, ८ प्रिया, इष्ट ९ प्रेमी आसक्त वा भक्त, १० कवि, ११ बाग।

( २९४ )

❋ ग़ज़ल, ताल पशतो ❋

ठंडक भरी है दिल में, आनन्द बह रहा है।
अमृत बरस रहा है, झिम! झिम!! झिम!!! ( टेक )

फैली सुबहे[1]-शादी, क्या चैन की घड़ी है।
सुख के छुटे फ़व्वारे, फ़रहत[2] चटक रही है॥
क्या नूर[3] की झड़ी है, झिम। झिम!! झिम!!!

शबनमें[4] के दल ने चाहा, पामाल[5] करदें गुल[6] को।
सब फिक्र मिलकर आये, कि निढ़ाल करदें दिलको।
आया सबा[7] का झौंका, वह सबाये[8]-रौशनी का।
झड़ती है शबनमे राम, झिम। झिम!! झिम!!!

डर कर खड़ा हूँ खौफ से खाली जहान में।
तसकीने[9]-दिल भरी है मेरे दिल में जान में॥

---

१ आनन्द की प्रातः, २ खुशी, आनन्द, ३ प्रकाश, ४ ओस, ५ अधीन कर दें, ६ पुष्प, ७ पर्वा वायु अर्थात् वह वायु जो पूरब से चल रही हो, अथवा वह पवन जो प्रातः काल चलती है; ८ प्रकाश रूपी वायु, यहाँ अभिप्राय सूर्य से है, ९ दिल में चैन, शान्ति, आराम।

(नोट—यह कविता अंगरेज़ी कविता Drizzle Drizzle के अनुवाद के रूप में है और उन्हीं दिनों लिखी गई जब कि अन्त में अपना नाम देने का स्वभाव राम से छूट गया था।)

सू घें ज़माँ[1], मकाँ[2], मेरे पाओं मिसले-सगं[3]।
मैं कैसे आसकूं हूँ क़ैदे-बियान[4] में॥
ठंडक भरी है दिल में, आनन्द बेह रहा है
अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम !! झिम !!!

[ २९५ ]

ॐ ग़ज़ल, ताल क़वाली ॐ

जब उमड़ा दरया उल्फ़त[5] का, हर चार तरफ़ आबादी है।
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारिकबादी है।
खुश[6] खंदः है रंगीं गुल का, खुश शादी शाद मुरादी है।
बन सूरज आप दरख़्शाँ[7] है, खुद जंगल है, खुद वादी[8] है।
नित राहत है, नित फ़रहत है, नित रंग, नये आज़ादी है १॥टेक॥

---

( १० )

( १ ) जब प्रेम का समुद्र बैहने लग पड़ा तो हर तरफ प्रेम की बस्ती नज़र आने लग पड़ी। अब सुन्दर पुष्प की तरह हसना और खिलना रहता है, नित्य चित्त को प्रसन्नता और आनन्द है। आप ही सूर्य बन कर चमक रहा है और आप ही जंगल बस्ती बन रहा है, अहा ! कैसा नित्य आनन्द है, नित्य शान्ति है, नित्य सर्व प्रकार की खुशी और आज़ादी हो रही है।

---

१ देश, २ काल, ३ कुत्ते के समान, ४ बयान के बन्धन में, ५ प्रेम, ६ अच्छा खिला हुवा, ७ प्रकाशमान, ८ आबाद स्थान।

हर रग रेशे में, हरमू[1] में, अमृत भर भर भरपूर हुआ।
सब कुलफत[2] दूरी दूर हुई, मन शादी[3] मर्ग से चूर हुआ।
हर बर्ग[4] बधाइयाँ[5] देता है, हर ज़र्रह[6] ज़र्रह तूर[7] हुआ।
जो है सो है अपना मज़हर[8], ख्वाह आबी[9] नारी[10] बादी[11] है।
क्या ठंडक है, क्या राहत[12] है, क्या शादी[13] है, आज़ादी है॥ २॥

रिम झिम, रिम झिम आँसू बरसें यह अबर[14] बहारें देता है।
क्या खूब मज़े की बारिश में वह लुत्फ़ वसल[15] का लेता है।
किश्ती मौजों में डूबे है, बदमस्त उसे कब खेता[16] है।
यह ग़र्क़ाबी[17] है जी[18] उठना, मत झिजको, उफ़ बरबादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है आज़ादी है॥ ३॥

मातम, रंजूरी[19], बीमारी, ग़लती, कमज़ोरी, नादारी[20]।
ठोकर ऊँचा नीचा, मिहनत जाती (हैं) उस पर जाँ वारी।
इन सब की मददों के बाइस[21], चशमा मस्ती का है जारी।
गुम शीरें[22], कि शीरीं तुफां में, कोह[23] और तेशा फरहादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है॥४॥

---

१ सिर का बाल, २ जुदाई का कष्ट, दुःख, ३ आनन्द के अनन्त बढ़ने से जो मृत्यु होती है, ४ प्रत्येक पत्ता, ५ स्वस्ति वचन, ६ परमाणु, ७ अग्नि का पर्वत, ८ झाँकी का स्थान, ज़ाहर होनेका स्थान, ९ पानी से उत्पत्ति वाला, अग्नि से उत्पत्ति वाला १० वायु से उत्पत्ति वाला, ११ आराम, १२ प्रसन्नता, खुशी, १४ बादल, १५ अभेदता, एकता, १६ चलाता है, १७ डूब जाना, १७ ज़िन्दा हो जाना वा जीवित होना, १९ रोना पीटना, शोक चिन्ता, २० निर्धनता, जिस समय पास कुछ न हो, २१ कारण, २२ मीठी नदी जो अपनी प्रिया ( शीरीं ) के इश्क़ ( प्रेम ) में फरहाद पहाड़ पर से तोड़ कर मैदानों में लाया था, २३ पर्वत।

## पंक्तिवार अर्थ

(२) हर रग और नाड़ी में तथा रोम रोम में आनन्द रूपी अमृत भरा हुआ है। जुदाई के सब दुःख और कष्ट दूर हो गये और मन ( अहंकार के ) मरने ( मौत ) की खुशी से चूर हो गया है, अब प्रत्येक पत्ता बधाइयाँ ( स्वस्ति ) दे रहा है, और क्योंकि परमाणु मात्र भी इस ज्ञानाग्नि से अग्नि के पर्वत की तरह प्रकाश-मान हो गया। अब जो है सो सब अपना ही झाँकी-स्थान या ज़ाहर करने का स्थान है। ख्वाह वह पानी का जीव है, ख्वाह अग्नि का और ख्वाह हवा का जीव है ( यह समस्त वास्तव में मुझ को ही ज़ाहिर करने वाले हैं )।

(३) आनन्द की वर्षा से आँसू रिम झिम बरस रहे हैं, और यह आनन्द का बादल क्या अच्छी बहार दे रहा है। इस ज़ोर की वर्षा में वह ( चित्त ) क्या खूब अभेदता ( एकता ) का आनन्द ले रहा है। ( शरीर रूपी ) किश्ती तो आनन्द की लहरों में डूबने लग रही है, मगर वह सच्चा (आनन्दमें) उन्मत्त इसे कब लेता है? ( वह तो शरीर का ख्याल नहीं करता ) क्योंकि उसके लिए यह (देहाध्यास का) डूबना वास्तवमें जी उठना है,इसलिये ऐ प्यारो ! इस मौत से मत झिझको ( क्योंकि झिझकने में अपनी बरबादी है )। इस मृत्यु में तो क्या ही ठंडक है, क्या ही आरामहै, और क्या ही आनंद और क्या ही स्वतंत्रता है, इसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता।

(४) रोना पीटना, शोक चिन्ता, बीमारी, ग़लती, कमज़ोरी, निर्धनता, नीच ऊँच, ठोकर अरु पुरुषार्थ, इन सब पर प्राण वारे जा रहे हैं। और इन सब की सहायता से मस्ती का समुद्र बह रहा है। प्रिया शीरीन् के इश्क़ में फहाद का तेशा पर्वत और शीरीं लोप हो रहे हैं। इस लोप होने में क्या शांति है, क्या आराम है, क्या आनन्द और क्या ही आज़ादी हो रही है।

इस मरने में क्या लज़्ज़त है, जिस मुँह को चाट[1] लगे इसकी।
थूके है शाहंशाही पर, सब नेमत दौलत हो फीकी।
मय[2] चाहिये ? दिल सिर दे फूँको, और आग जलावो भट्टी की।
क्या सस्ता बादा[3] बिकता है, "ले लो" का शोर मुनादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है ॥ ५ ॥

इल्लत[4] मालूल[5] में मत डूबो, सब कारण कार्य्य तुम ही हो।
तुम ही दफतर से खारिज हो, और लेते चारज तुम ही हो।
तुम ही मसरूफ बने बैठे, और होते हारिज़[6] तुम ही हो।
तू दावर[7] है, तू वुकला[8] है, तू पापी तू फर्यादी है।
नित फरहत है, नित राहत है, नित रंग नये आज़ादी है ॥ ६ ॥

दिन शब[9] का झगड़ा न देखा, गो सूरज का चिट्टा सिर है।
जब खुलती दीदये-रौशन[10] है, हंगामाये-ख्वाब[11] कहाँ फिर है ?।
आनन्द सरूर[12] समुद्र है जिसका आग़ाज़[13], न आखिर है।
सब राम पसारा दुन्या का, जादूगार की उस्तादी है।
नित फरहत है, नित राहत है, नित रंग नये आज़ादी है ॥ ७ ॥

---

पंक्तिवार अर्थ

( ५ ) इस मरने में क्या ही आनन्द ( लज़्ज़त ) है, जिस मुँह को इस लज़्ज़त की चटक ( स्वाद ) लग गयी वह शाहंशाही पर थूकता है, और सर्व धन दौलत ( वैभव ) फीका हो जाता है।

---

१ चटक, स्वाद, लज़्जत, २ शराब ३ आनन्द रूपी शराब ४ कारण, ५ कार्य्य ६ किसी काम में हरज करने वाले, ७ न्याय कारी, मुंसिफ, जज, ८ वकील, ९ रात, १० ज्ञान चक्षु, ११ स्वप्न की दुन्या, स्वप्न का झगड़ा, फिसाद, १२ आनन्द, खुशी, १३ आदि, शुरू।

## यमनोत्री

इस शिखर पर माश की दाल नहीं गलती और न दुन्या की दाल ही गलती है। अत्यंत गरम २ चश्मासार, कुद्रती लालाज़ारें, आवशारों

अगर आप को (आनन्द की) शराब चाहिये, तो दिल और सिर को फूंक कर (इस शराब के वास्ते) उसकी भट्टी जला दो। वाह! (निजानन्द की) शराब (अपने सिर के इवज़) क्या सस्ती बिक रही है, और (कबीर की तरह) "ले लो" "ले लो" का शोर हो रहा है। इस शराब से क्या शान्ति, आराम, आनन्द, और आज़ादी है।

(६) हेतु (कारण) और फल (कार्य्य) में मत डूबो, क्योंकि सब कारण कार्य्य तुम ही हो, और जो दफतर से खारिज होता है अथवा जो नौकर होता है, वह सब तुम आप हो। तुम ही सब काम में प्रवृत्त होते हो। तुम ही उस में विक्षेप डालने वाले होते हो। तुम ही न्यायकारी, तुम ही वकील और तुम ही पापी और फरयादी होते हो। आहा! नित्य चैन है, नित्य शाँती है और नित्य राग रंग और आज़ादी है

(७) सूर्य यद्यपि आप सफेद है, मगर दिन रात का झगड़ा अर्थात् श्वेत काले का भेद उसमें नहीं देखा जाता, क्योंकि दिन रात तो पृथ्वी के घूमने पर निर्भर है। ऐसेही जब आँख खुलती है तो स्वप्न फिर बाकी नहीं रहता, बल्कि चारों ओर अनन्त और नित्य आनन्द का समुद्र उमडता दिखाई देता है। यह संसार ठीक राम का पसारा है, और जादूगर (राम) की उस्तादी है। इसलिये यहाँ नित्य चैन है, शाँति है, और नित्य राग रंग और नयी आज़ादी है।

---

६ स्रोत, ७ सुन्दर फुलवाड़ी।

(झरनों) की बहार, चमकदार चाँदी को शर्माने वाले श्वेत दोपट्टे (झाग, फेन) और उनके नीचे आकाश की रंगत को लजानेवाला यमुना रानी का गात (तन) बात-बात में कश्मीर को मात करते हैं। आबशार (झरने) तो तरंगे-बेखुदी (निराभिमानता की लटक) में नृत्य कर रहे हैं। यमुना रानी साज़ बजा रही है। राम शाहंशाह गा रहा है:—

[ २९६ ]

❀ ग़ज़ल, ताल क़वाली ❀

हिप हिप हुर्रे। हिप हिप हुर्रे॥ (टेक)

अब देवन के घर शादी[1] है, लो! राम का दर्शन पाया है।
पा-कोबाँ[2] नाचते आते हैं, हिप हिप[3] हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥ १॥

खुश खुर्रम[4] मिल मिल गाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे।
है मंगल साज़ बजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥ २॥

सब ख़्वाहिश मतलब हासिल हैं, सब खूबों[5] से मैं वासिल[6] हूँ।
क्यों हम से भेद छुपाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥ ३॥

हर इक का अन्तर आत्म हूँ, मैं सब का आक़ा[7] साहिब हूं।
मुझ पाये दुःखड़े जाते हैं। हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥ ४॥

सब आँखों में मैं देखूँ हूँ, सब कानों में मैं सुनता हूँ।
दिल बरकत मुझ से पाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥ ५॥

---

१ खुशी, २ पाओं के बल नाचते आते हैं, ३ अंगरेजी भाषा में अति प्रसन्नता का बोधक यह शब्द है, ४ आनन्द, मस्त हो कर, ५ सुन्दर लोग, ६ अभेद, मिला हुआ, ७ मालिक, ८ कभी।

गह इश्वा[1] सीमींवर[2] का हूँ, गह नारह[3] शेर-बबर[4] का हूँ।
हम क्या क्या स्वाँग बनाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥६॥

मैं कृष्ण बना, मैं कंस बना, मैं राम बना, मैं रावण था।
हां वेद अंग क़ममें खाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥७॥

मैं अन्तर्यामी साकिन[5] हूं, हर पुतली नाच नचाता हूँ।
हम सूत्रतार[6] हिलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥८॥

सब ऋषियों के आयीनहे[7]-दिल में, मेरा नूर[8] दरख़शां[9] था।
मुझ ही से शाइर[10] लाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥९॥

मैं ख़ालिक़[11], मालिक, दाता हूँ, चशमक[12] से दैहर[13] बनाता हूँ।
क्या नक़शे रंग जमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१०॥

इक कुन[14] से दुन्या पैदा कर, इस मन्दिर में खुद रहता हूँ।
हम तनहा शैहर बसाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥११॥

वह मिसरी हूँ जिस के बाइस[15] दुन्या की इशरत[16] शीरीं[17] है।
गुल[18] मुझ से रंग सजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१२॥

---

१ नाज़, नख़रा, २ चाँदी जैसी सूरत वाली प्यारी, ३ गर्ज, ४ बबर शेर, (सिंह); ५ स्थिर, ६ सूत्रधारी की तरह पुतली तार हिलाते हैं, ७ अन्तःकरण रूपी शीशा, ८ प्रकाश, ९ चमकता था, १० कवि (अर्थात् मेरे आत्म स्वरूप से यह सब कवितादि निकलती है), ११ सृष्टि के रचने वाला, १२ आँख की झपक में, १३ युग, समय, १४ आज्ञा, हुक्म वा संकेत १५ सबब, कारण, १६ विषय-आनन्द, विषयभोग के पदार्थ, १७ मीठी, १८ पुष्प।

मसजूद[1] हूँ, क़िबला[2], काबा हूँ, माबूद[3] अज़ाँ[4] नाक़ूस[5] का हूँ ।
सब मुझ को कूक बुलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥ १३ ॥

कुल आलम[6] मेरा साया है, हर आन बदलता आया है ।
ज़िल्लँ क़ामत[8] गिर्द घुमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१४॥

यह जगत हमारी किरणें हैं, फैलीं हर सू[9] मुझ मर्कज़[10] से ।
शाँ बूक़लमूँ[11] दिखलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥ १५ ॥

मैं हस्ती[12] सब अशया[13] की हूँ, मैं जान मलायक[14] कुल की हूँ ।
मुझ बिन बेबूद[15] कहाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥ १६ ॥

बेजानों में हम सोते हैं, हैवान्[16] में चलते फिरते हैं ।
इन्सान् में नींद जगाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥ १७ ॥

संसार तजल्ली[17] है मेरी, सब अन्दर बाहर मैं ही हूँ ।
हम क्या शोले[18] भड़काते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥ १८ ॥

जादूगर हूँ, जादू हूँ खुद, और आप तमाशा-बीं[19] मैं हूँ ।
हम जादू खेल रचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥ १९ ॥

---

१ उपास्य, पूजा किया गया, २ जिसकी तरफ मुँह करके ईश्वर-पूजा (ध्यान) की जाती है, ३ पूज्यदेव, ४ बाँग, ५ शंख-ध्वनि, ६ सब संसार, ७ छाया, प्रतिबिम्ब, ८ बिम्ब, ९ तरफ, १० केन्द्र, ११ नाना प्रकार के, १२ अस्तित्व, जान सब की, १३ वस्तु, १४ सारे फरिश्तों (देवताओं) की १५ न होना, अविद्यमान् १६ पशुओं, १७ तेज, चमक, १८ अग्नि की लाटें, अंगारे, १९ तमाशा देखने वाला ।

है मस्त पड़ा महिमा में अपनी, कुछ भी ग़ैर[1] अज़ राम नहीं।
सब कल्पित धूम मचाते हैं, छिप छिप हुर्रे, छिप छिप हुर्रे ॥ २० ॥

[ २९७ ]

❀ ग़ज़ल वा राग खमाच, ताल दादरा ❀

चलना सबा[2] का ठुम ठुमक, लाता प्यामे-यार[3] है। *
टुक आँख कब लगने मिली, तीरे-निगह[4] तय्यार है ॥ १ ॥

---

( १ ) प्रातःकाल की वायू का ठुमक ठुमक चलना ही अपने प्यारे यार ( स्वरूप ) का सँदेशा ला रहा है और ज़रा सी आँख भी लगने नहीं देता, क्योंकि आँख जब ज़रा लग जाती है ( सोने लगता हूँ ) तो झट उस प्यारे ( स्वरूप ) की दृष्टि ( प्रकाश ) का तीर लगना आरम्भ हो जाता है जिससे मैं सोने न पाऊँ, ( अर्थात् उसे भूल न जाऊँ )।

---

१ राम से अतिरिक्त, २ प्रातःकाल की वायू, ३ ईश्वर (प्यारे) का संदेश ४ दृष्टि का तीर।

*—यह कविता राम महाराज से उस समय लिखी गयी थी जिन दिनों वह नितान्त अकेले, टिहरी नगर से छे मील की दूरी पर, गोदी सिरायीं ग्राम के समीप एक वमरोगी नाम की गुहा ( गुफा ) में कुछ दिन से चुप चाप रहे और वहाँ निजानन्द की मस्ती से बेहोश हुए दुन्या से बेखबर बहुत काल गंगा तट पर लेटें रहे थे। तत्पश्चात् होश में आने से और नारायण ( लेखक ) के पहुँचने पर यह ( कविता ) अत्यन्त मस्ती के साथ सुनायी और फिर नारायण के साथ बात चीत की गई।

होशो-ख़िरद[1] से इत्तफ़ाक़न, आँख ग़र दो चार है।
बस यार की फिर छेड़-खानी का गर्म बाज़ार है॥ २ ॥

मालूम होता है हमें, मतलब का हम से प्यार है।
सख़्ती से क्यों छीने है दिल, क्या यूं हमें इन्कार है? ॥ ३ ॥

लिखने की नैं[2], पढ़ने की फ़ुरसत, काम की, नै काज की।
हम को निकम्मा कर दिया, वह आप तो बेकार है॥ ४ ॥

पैहरा मुहब्बत का जो आये, हमबग़ल होता है वह।
ग़ुस्सा तबीयत का निकालें? रूबरू दिलदार है॥ ५ ॥

---

( २ ) अगर अकस्मात् अक़्ल और होशमें आने लगता हूँ, वा मन बुद्धि का संग करने लगता हूँ, तो उसीसमय प्यारा छेड़खानी करनेलग जाताहै, ताकि फिर बेहोश और आत्मानन्दसे पागल होजाऊँ, अर्थात् मैं पुनः दुन्या का न रहूँ, सिर्फ़ प्यारे ( स्वस्वरूप ) का ही हो जाऊँ ( इस छेड़खानी से )।

( ३ ) ऐसा मालूम होता है कि प्यारे का हम से एक मतलब ( स्वार्थ ) के कारण प्यार है, और वह मतलब हमारा दिल लेना है। भला—सख़्ती से वह क्यों दिल छीनता है, क्या वैसे हमको इनकार है? ( अर्थात् जब पहिले से ही हम प्यारे के हवाले दिल करने को तैयार बैठे हैं, तो फिर वह सख़्ती से क्यों छीनना चाहता है? )।

( ४ ) दिल को प्यारे के अर्पण करने से न लिखने की फ़ुर्सत रही, और न किसी काम काज की। आप तो वह बेकार ( अकर्ता ) था ही, अब हम को भी वैसा ही बेकार कर दिया है।

( ५ ) जब प्रेम का समय आता है तो वह ( प्यारा ) झट हमबग़ल ( संग वा मूर्तिमान् ) हो जाता है, ऐसी दशा में हम किस पर ग़ुस्सा निकालें, क्योंकि सामने तो वह स्वयं खड़ा है।

---

१ होश और अक़्ल, २ नहीं।

सोने पै हाज़िर ख्वाब में, जागे पै ख़ाको-आब[1] में।
हँसने में हँस मिलता है, मिल रोता है लूलू वार है ॥ ६ ॥

गह बर्क़-वश[2] खंदाँ[3] बना, गह अबरतर[4] गिरयाँ[5] बना।
हर सूरतो हर रंग में पैदा बुते-अय्यार[6] है ॥ ७ ॥

दौलत ग़नीमत जान दर्दे-इश्क़ की, मत खो उसे।
मालो-मता[7], घर-बार, ज़र[8] सदक़े[9] मुबारिक नार[10] है ॥ ८ ॥

---

( ६ ) सोते समय वह हाज़िर है, जाग्रत में पृथ्वी जल के रूप में साथ है, हँसते समय वह साथ मिल कर हँसता है और रोते समय वह ( अभेद हुआ ) साथ रोता है, अर्थात् सब दशा में वह ही स्वयं मौजूद है।

( ७ ) कभी चमकती हुई बिजली के रूप में हँसता है और कभी बर्षते हुये घने बादलों के रूप में रोता है,इस प्रकार प्रत्येक रूप और रंग में वही प्यारा प्रकट हुआ दिखाई देता है।

( ८ ) ऐ प्यारे जिज्ञासु ! इश्क़ ( प्रेम ) के धन को उत्तम जान, इसको मत खो, बल्कि इस प्रेम की आग पर सारा घर-बार और धन-दौलतको वार दो।

---

१ पृथिवी और जल, २ कभी बिजली की मानन्द, ३ हंसता था, ४ बादल की तरह तरबतर; ५ रोते हुए, ६ तसवीर जिससे यार का अन्दाज़ा लगाया जावे, अथवा अपने प्यारे के साक्षात्कार की कसौटी, ७ माल अरु असबाब, ८ धन ९ नौछावर कर दो, १० मुबारिक आग, धन्य प्रेमाग्नि पर।

मंज़ूर नालायक़ को होता है, इलाजे-दर्दे-इशक़[1]।
जब इशक़ ही माशूक़ हो, क्या सिहत में बीमार है ॥ ९ ॥

क्या इन्तज़ारो-क्या मुसीबत, क्या बला, क्या खारे-दश्त[2]।
शोला[3] मुबारिक जब भड़क उट्ठा, तो सब गुलनार[4] है ॥ १० ॥

दौलत नहीं, ताक़त नहीं, तालीम नै[5], तकरीम[6] नै।
शाहे-ग़नी[7] को तो फ़क़त, इर्फ़ाने-हक़[8] दरकार है ॥ ११ ॥

उमरों की उम्मीदें उड़ा, छोटी बड़ी सब ख्वाहिशें।
दीदार[9] का लीजिये मज़ा, जब उड़ गयी दीवार है ॥ १२ ॥

---

( ९ ) इस प्रेम के दर्द का इलाज करना तो अज्ञानी पुरुष को ही मंज़ूर होता है, क्योंकि जब प्रेम ही माशूक़ ( इष्ट देव ) हो, तो क्या ऐसी निरोगता में भी बीमार है ? ।

(१०) इन्तज़ार, मुसीबत, बला और जंगल का काँटा यह सब उसी समय जलकर फूल(आग का पुष्प) होगये, जिस समय ज्ञानाग्नि अन्दर प्रज्वलित हुई।

(११) दौलत, बल, विद्या और इज़्ज़त तो नहीं चाहिये, उस ( अनन्य भक्त वा ब्रह्मवित् ) बेपरवाह बादशाह को तो केवल आत्मज्ञान ( ब्रह्म विद्या ) की ही आवश्यकता है।

(१२) कई वर्षों की आशाएँ, जो स्वरूप के अनुभव में पर्दे वा ओट का काम कर रही हैं, इन सब छोटी बड़ी आशाओं को ( आत्मज्ञान से ) जला दो, और जब इस तरह से इच्छाओं की दीवार उड़ जावे तो फिर प्यारे ( स्वस्वरूप ) के दर्शन का आनन्द लो।

---

१ इश्क़ के दर्द (पीड़ा) का इलाज (औषध), २ जंगल के काँटे, ३ प्रेमाग्नि वा ज्ञानाग्निकी शुभ ज्वाला, ४ अनार का फूल, यहाँ अग्निके पुष्प से मुराद है, ५ नहीं, ६ मान प्रतिष्ठा, ७ सखीदिल बादशाह, ८ आत्मज्ञान, ९ दर्शन।

मंसूर से पूछी किसी ने, कूचये-जानाँ[1] की राह।
खुब साफ दिल में राह बतलाती ज़ुबाने-दार[2] है॥ १३॥

इस जिस्म से जाँ कूद कर, गंगाये-वहदत[3] में पड़ी।
कर लें महोछा जान्वर, लो वह पड़ा मुरदार है॥ १४॥

तशरीफ लाता है जुनूं, चशमो-सिरो-दिल फर्शे-राह।
पैहलू[4] में मत रखना खिरद[5] को, रांड यह बदकार[6] है॥ १५॥

---

(१३) मंसूर एक मस्त ब्रह्मवेता का नाम है, जब वह सूली पर चढ़ाया गया तो उस समय एक पुरुष ने उस से प्यारे की गली अर्थात् स्वस्वरूप के अनुभव करने का रास्ता पूछा। मंसूर तो चुप रहा क्योंकि वह सूली पर उस समय था, परन्तु सूली की नोक अर्थात सिरे ने (जिसको ज़ुबानेदार कहते है) मंसूर के दिल में साफ खुबकर बतला दिया, कि यह रास्ता है, अर्थात् प्यारे के अनुभव का केवल दिल के भीतर जाना ही रास्ता है।

(१४) इस शरीर से शारीरिक प्राण कूदकर तो अद्वैत की गंगा में पड़ गये हैं, अब इस मृतक शरीर ( मुर्दे ) को ( प्रारब्धभोग रूपी ) पक्षी आयें और महोत्सव कर लें ( क्योंकि साधू के मरने के पश्चात भण्डारा अर्थात भोजन दिया जाता है और मस्त पुरुष अपने शरीर को ही सब के अर्पण करना भण्डारा समझता है, इस लिए राम जब मस्त हुए तो शरीर को मृतक देखकर भण्डारे के वास्ते पक्षीयों को बुलाते हैं।

(१५) जब इस निजानन्द के कारण पागलपन आने लगे तो उस समय अपने पास द्वैत दर्शाने वाली संसार की अक़ल न रक्खो, बलकि अपने दिल और आँखों के द्वारा उस बेसुद्धि को आने दो।

---

१ अपने प्राण प्यारे अर्थात् परमात्मा के घर का रास्ता, २ सूली की नोक से अभिप्राय है, ३ एकता की गंगा, अद्वैत रुपी समुद्र, ४ अपने समीप, ५ बुद्धि ६ बुरी, दुराचार परायण।

पल्ला छुटा इस जिस्म से, सिर से टली अपने बला।
वैल्कम ! ऐ तेग़े-खूँ चकाँ[1], क्या मर्ग[2] लज़्ज़तदार है ॥ १६ ॥

यह जिस्मो-जाँ नौकर को दे, ठेका सदा का भर दिया।
तू जान तेरा काम रे, क्या हम को इस से कार है ॥ १७ ॥

खुश हो के करता काम है, नौकर मेरा चाकर मेरा।
हो राम बैठा बादशाह, हुश्यार खिदमतगार है ॥ १८ ॥

सोता नहीं यह रात दिन, क्या उड़ गयी दीदों[3] से नींद।
ग़फ़लत[4] नहीं दम भर इसे, यह हर घड़ी बेदार[5] है ॥ १९ ॥

---

(१६) जब राम अति मस्त हुए, तो बोल उठे कि "इस शरीर से अब सम्बन्ध छूट गया है, इस लिये इस की ज़िम्मेदारी की सिर से बला टल गयी। अब तो राम खून पीने वाली तलवार ( मुसीबत ) को भी स्वागत करता है क्योंकि राम को यह मौत बड़ा स्वाद देती (वा स्वादिष्ट ) है।

(१७) यह देह-प्राण तो अपने नौकर ( ईश्वर ) के हवाले कर के उस से नित्य का ठेका ले लिया है, अब ऐ प्यारे ( स्वस्वरूप ) ! तू जान तेरा काम, हम को इस ( शरीर ) से क्या मतलब है ?

(१८) नौकर बड़ा खुश हो के काम कर रहा है, राम अब बादशाह हो बैठा है, क्योंकि खिदमतगार ( सेवक ) बड़ा हुश्यार मिला हुआ है।

(१९) नौकर ऐसा अच्छा है कि रात दिन ज़रा भी सोता नहीं, मानों उसकी आँखों में नींद ही नहीं, और दम भर भी इस को सुस्ती नहीं, वह हर घड़ी जागता ही रहता है।

---

१ खून चखाने वाली अर्थात् खून करने वाली तलवार, २ मृत्यु, ३ आँखों ४ सुस्ती, आलस्य, सोना, ५ जागा हुआ।

नौकर मेरा यह कौन है ? आक़ा[1] हूँ इस का कौन राम ?
ख़ादिम[2] हूँ मैं या बादशाह ? यह क्या अजब इसरार[3] है ॥ २० ॥

वाहिद[4]-मुजर्रद[5], लाशरीको[6], ग़ैर सानी[7], बे बदल[8]।
आक़ा कहां ख़ादिम कहां ? यह क्या लग्व गुफ़तार है ॥ २१ ॥

तन्हास्तम[9], तन्हास्तम, दर बैहरो-बर[10] यकतास्तम[11]।
नुतक़ो-ज़ुबां[12] का राम तक आ पहुँचना दुशवार[13] है ॥ २२ ॥

ऐ बादशाहाने-जहां ! ऐ अन्जुमे[14]-हफ़्त आसमान ! ।
तुम सब पै हूँ मैं हुक्मरान, सब से बड़ी सरकार है ॥ २३ ॥

---

(२०) ऐ राम ! मेरा नौकर कौन है ? और मालिक उसका कौन है ? मैं क्या मालिक हूँ या नौकर हूँ ? यह क्या आश्चर्य जनक रहस्य है (कुछ नहीं कहा जा सकता है)।

(२१) मैं तो अकेला, अद्वैत, नित्य, असंग, और निर्विकार हूँ, मालिक और नौकर का भाव कहां ? यह क्या ग़लत बोल चाल है।

(२२) मैं अकेला हूँ, मैं अकेला हूँ, पृथिव जल पर मैं ही अकेला हूँ, वाणी और वाक्-इन्द्रियं का मुझ तक पहुँचना कठिन है (अर्थात् वाणी इत्यादि मुझे वर्णन नहीं कर सकती हैं)।

(२३) ऐ दुन्या के बादशाहो ! और ऐ सातों आसमानो के तारो ! मैं तुम सब पै राज्य करता हूँ। मेरा राज्य सब से बड़ा है।

---

१ मालिक, २ नौकर, सेवक, ३ रहस्य, गुह्य भेद, ४ एकमेवाद्वितीयम्, ५ संग रहित वा अकेला, ६ सम्बन्ध वा दृष्टान्त रहित, ७ अद्वितीय, ८ निर्विकार, ९ मैं अकेला हूँ, १० पृथिवी समुद्र अर्थात् जल थल पर, ११ अकेला हूँ, १२ वाक्इन्द्रिय, वा वाणी, १३ कठिन, १४ ऐ सातो आकाशों के तारों।

जादू-निगाहे[1]-यार हूं, नशा लबे-मै-गूं[2] हूं मैं।
आबे-ह्याते-रुख[3] हूं मैं, अबरू मेरी तलवार है॥ २४॥
यह काकुले-जुलमाते-माया[4], पेच-पेचां[5] है वले[6]।
सांधे को जल्वा-ए-राम[7] है, उलटे को डसता मार[8] है॥ २५॥

[ २९८ ]

❀ राग भैरवी, ताल कैहरवा ❀

बिछड़ती दुलहन[9] वतन[10] से है जब, खड़े हैं रोम और गला रुके है।
कि फिर न आने की है कोई ढब[11], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥१॥

---

(२४) मैं अपने प्यारे ( स्वरूप ) की जादूभरी दृष्टि हूँ, निजानंद भरी मस्ती की शराब का नशा मैं हूँ अमृत स्वरूप मैं हूँ, भवें (माया) मेरी तलवार है।

(२५) यह मेरी माया की जुल्फें ( अविद्या के पदार्थ ) पेचदार ( आकर्षक ) तो हैं, मगर जो मुझे ( मेरे असली स्वरूप की ओर ) सीधा आन कर देखता है, उस को तो वास्तविक राम के दर्शन हो जाते हैं, और जो उलटा (पीछे को) होकर (मेरी माया रूपी काली जुल्फों को) देखता है, उसको ("राम" शब्द का उलटा शब्द "मार") अविद्या का साँप काट डालता है।

( १ ) जब लड़की पति के साथ बिवाही जाकर अपने माता पिता के घर से अलग होने लगती है, तो लड़की और माता पिता के रोमाँच हो जाते हैं और आश्चर्य दशा व्याप्त होने से गला रुक जाता है। लड़की को फिर घर वापस आने की अथवा माता पिता के घर का ही बने रहने की कोई आशा मालूम नहीं देती, इस वास्ते सर्वदा की जुदाई होते देखकर माता पिता और लड़की के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक आता है।

---

१ प्यारे की जादू भरी दृष्टि, २ आनन्द रुपी शराब की क़िसम वाले नशे को पीनेवाला, ३ अमृत की ओर जाने वाला मार्ग वा अमृत स्वरूप, ४ (माया रुपी) काली घंघोर जुल्फें, ५ पेचदार, ६ लेकिन, ७ राम का दर्शन, ८ साँप (सर्प), ९ विवाहित लड़की, १० घर ११ उपाय, रास्ता, तरीक़ा।

यह दीनो दुन्या[1] तुम्हें मुबारिक, हमारा दुलहा[2] हमें सलामत।
पै[3] याद रखना, यह आखिरी छब, खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥ २ ॥

है मौत दुन्या में बस ग़नीमत[4] ख़रीदो राहत[5] को मौत के भाओ।
न करना चूं तक, यही है मज़हब[6], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ३ ॥

---

( २ ) ( लड़की फिर मन में यह कहने लगती है ) कि मातपिता ! यह घर और आप की दुन्या तो आपको मुबारिक हो और मेरा पति मुझे, पर यह ( जुदा होते समय की ) आख़री छब ( अवस्था ) आप ज़रूर याद रखें, "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है" ॥ ऐसे ही जब मनुष्य की वृत्ति रूपी लड़की ( अपने ) पति ( स्वस्वरूप ) के साथ विवाही जाती अर्थात आत्मा से तदाकार होती है, तो उसके मात-पिता ( अहंकार और बुद्धि ) के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और गला मारे बेबसी के रुकता जाता है, और उस वृत्ति को अब वापिस आते न देख कर इन्द्रियों में रोमाँच हो जाता है। उस समय वृत्ति भी अपने संबन्धीयों से यह कहती मालूम देती हैं। कि ऐ अहंकार रूपी पिता ! और बुद्धि रूपी माता ! यह दुन्या अब तुम्हें मुबारिक हो और हमें हमारा दुलहा ( स्वस्वरूप ) सलामत हो।

( ३ ) ( अहंकार की ) यह मौत दुन्या में अति उत्तम है, और इस मौत के दाम पर आनन्द को ख़रीदो, इस में चूँ-चरा ( क्यों, कैसे ) न करना ही धर्म है। यद्यपि इस ( मौत ) को ख़रीदते समय रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

---

१ धर्म और संसार, अर्थात् आपका लोक परलोक २ पति, ३ परंतु, ४ उत्तम, ५ आराम, ६ धर्म।

जिसे हो समझे कि जाग्रत है, यह ख्वावे-ग़फ़लत है सख़्त पे जाँ !
कलोरोफ़ारम हैं सब मतालब², खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ४ ॥

ठगों को कपड़े उतार दे दो, लुटा दो अस्वावो-मालो-ज़र सब।
खुशी से गर्दन पे तेग़³ धर तब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ५ ॥

जो आरज़ू⁴ को हैं दिल में रखते, हैं बोसा⁵ दीवाना सग⁶ को देते।
यह फूटी क़िसमत को देख जब कब, खड़े हैं रोम और गला रुके हैं ॥ ६ ॥

कहा जो उस⁷ ने उड़ा दो टुकड़े, जिगर के टुकड़ों के प्यारे अर्जुन।
यह सुन के नादाँ⁸ के खुश्क हैं लब, खड़े हैं रोम और गला रुके हैं॥७॥

---

( ४ ) ऐ प्यारे ! जिसे आप जाग्रत समझ रहे हो, वह तो घोर स्वप्न अर्थात् सुपुप्ति है, क्योंकि यह सब विषय के पदार्थ तो कलोरोफ़ारम दवाई की तरह हैं जिसको सूंघने ( अर्थात् भोगने ) से सब रोम खड़े हो जाते हैं, और गला रुक जाता है।

( ५ ) ठगों को कपड़े उतार कर देदो और माल असबाब सब लुटा दो और ( अहंकारकी ) गर्दन पर खुशी से तल्वार रखदो, चाहे तब रोम खड़े हों और गला रुक जावे ( मगर जब तक आनन्द से अपने आप अहंकार को नहीं मारोगे, तब तक किसी प्रकार का भला आप का नहीं होगा)।

( ६ ) जो इच्छा मात्र को दिल में रखते हैं वह पागल कुत्ते को चुम्मा (बोसा) देते हैं, ऐसी फूटी प्रारब्ध को देख कर रोमाँच हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

( ७ ) जब उस( कृष्ण ) ने अर्जुन को कहा, कि सर्व संबन्धियों को टुकड़े टुकड़े कर दो, यह सुन कर उस अज्ञानी ( अर्जुन ) के खुशक होंट हो जाते हैं, और रोमाँच होते तथा गला रुक जाता है।

---

१ सुपुप्ति अवस्था है, २ इच्छायें, स्वार्थ, मतलब, ३ तलवार ४ इच्छा, ५ चूमना, ६ पगला कुत्ता, ७ यहाँ कृष्ण से अभिप्राय है, ८ मूर्ख अर्जुन।

लहू का दरया जो चीरते हैं, हैं तख़्त पाते वही हक़ीक़ी[1]।
तअल्लक़ों[2] को जला भी दो सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥८॥

है रात काली घटा भियानक, ग़ज़ब दरिन्दे[3] हैं, वाये जंगल।
अकेला रोता है तिफ़ल[4] या रब, ! खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥९॥

गुलों[5] के बिस्तर पे ख़्वाब ऐसा, कि दिल में दीदों[6] में ख़ार[7] भर दे।
है सीना[8] क्यों हाथ से गया दब, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥१०॥

---

(८) (फिर कृष्ण जी कहते हैं कि ऐ प्यारे अर्जुन !) जो पुरुष लहू का दरया (अर्थात् सम्बन्धीयों को) चीरते हैं (अर्थात् मारते हैं), वह ही (स्वराज्य) असली तख़्त पाते हैं, इसलिये ऐ प्यारे ! सर्व सांसारिक सम्बन्धों को जला भी दो, पर यह सुन कर उस अर्जुन के रोमाँच होते हैं, और गला रुकता जाता है।

(९,१०) (ऐसा स्वप्न आ रहा है कि) रात काली है, घनघोर घटा छा रही है, क्रूर वा रुधिर के प्यासे पशू (शेर इत्यादि) सामने हैं और बड़ा भारी जंगल है, उस वन में लड़का अकेला रोता है। ऐसा देख कर रोमाँच हो रहे हैं, गला रुक रहा है। मगर पुष्पों के बिस्तर पर ऐसा भयानक स्वप्न आ रहा है कि जो दिल में और आँखों में काँटे भर दे, परंतु ऐ प्यारे! अपने हाथ से तेरी छाती क्यों दब गयी ? कि जिस के कारण ऐसा भयभीत स्वप्न आ रहा है, और रोमांच होते जाते हैं तथा गला रुक जाता है।

---

१ सच्चा या असली स्वराज्य, २ सम्बन्धों को, ३ पशू, ४ बच्चा, ५ फूलों के, ६ आँखों में, ७ काँटे, ८ छाती।

न बाक़ी छोड़ेंगे इल्म कोई, थे इस इरादे से जम के बैठे।
है पिछला लिक्खा पढ़ा भी ग़ायब[1], खड़े हैं रोम और गला रुके हैं॥११॥

है बैठा पट्ठों में कच्चा पारा, रही न हिलने की ताबो-ताक़त[2]।
न असर करता है नैश-अक़रब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके हैं॥१२॥

पीये निगाहों के जाम[4] रज कर, न सिर की सुद्ध बुद्ध रही न तन की।
न दिन ही सूझे है, नै[5] तो अब शब[6], खड़े हैं रोम और गला रुके हैं॥१३॥

---

(११) हम इस विचार (संकल्प) से (गंगा किनारे) जम कर बैठे थे कि अब बाक़ी कोई विद्या नहीं छोड़ेंगे, मगर अब तो पिछला लिखा पढ़ा भी गुम हो गया है; रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है।

(१२) पट्ठों में ऐसा कच्चा पारा बैठ गया है (मस्ती का इतना जोश चढ़ गया) कि हिलने की भी ताक़त नहीं रही, और न अब बिच्छू का डंक ही कुछ असर करता है, बल्कि ऐसी हालत हो रही है "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुक जाता है"।

(१३) प्यारे की दृष्टि (दर्शन) रूपी अनुभव के प्याले ऐसे रिझ कर पिये हैं कि अपने सिर और तन की भी सुद्धिबुद्धि नहीं रही। अब न तो दिन सूझता है और न रात ही नज़र आती है, बलकि रोमाँच हो रहे हैं, और गला रुके जाता है।

---

१ भूल गया, २ हिम्मत और बल, ३ बिछूछू का डँक ४ प्याले, ५ नहीं ६ रात।

हवासे-खमसा[1] के बन्द थे दर[2], किधर से क़ाबिज़ हुआ है आकर।
बला का नश्शा, सितम[3] तऽज्जुब, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥१४॥

यह कैसी आँधी है जोशे-मस्ती की, कैसा तूफ़ाँ सरूर[4] का है।
रही ज़मीं मह[5] न मेहरो-कौकब[6], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥१५॥

थीं मन के मन्दिर में रक़्सँ करतीं, तरह तरह की सी ख़्वाहिशें मिल;
चिराग़े-ख़ाना[8] से जल गया सब; खड़े हैं रोम और गला रुके है॥१६॥

---

(१४) पाँचों ज्ञान-इन्द्रियों के द्वार तो बन्द थे, मगर मालूम नहीं कि किस तरफ़ से यह (मस्ती का जोश) अन्दर आकर क़ाबिज़ हो गया है, जो बला का नशा है और सितम ढा रहा है, जिससे रोमाँच खड़े हो रहे हैं, और गला रुके जा रहा है।

(१५) यह ज्ञान की मस्ती की कैसी घटा आ रही है और निजानन्द का जाश कैसे बढ़ रहा है कि पृथ्वी, चाँद, सूर्य, तारे की भी सुद्धि बुद्धि नहीं रही, अर्थात् द्वैत बिलकुल भासमान नहीं हो रही, बलकि रोंगटे खड़े है और गला रुका हुआ है।

(१६) मन रूपी मन्दिर में जो नाना प्रकार की इच्छायें नाच रही थीं, वह घर के दीपक से (आत्मानुभव से) सब जल गयीं, अर्थात् अपने अन्दर ज्ञान-अग्नि ऐसे प्रज्वलित हुई कि सर्व प्रकार के संकल्प जल गये और रोंगटे खड़े हो गये और गला रुक गया।

---

१ पाँचों ज्ञान-इन्द्रियों के, २ द्वार, ३ बड़े ग़जब का आश्चर्य, ४ आनंद, ५ चाँद, ६ सूर्य और तारे, ७ नाच करती; ८ घर का दीपक, निजात्मा के प्रकाश से।

है चोड़ चौपट यह खेल दुन्या, लपेट गंगा में इस को फैंका।
मरा है फ़ीला[1], उड़ा है अशहब[2], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥१७॥

पड़ा है छाती पे धर के छाती, कहां की दुई[3] कहां की वहदत[4]।
है किसको ताक़त बियान की अब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥१८॥

यह जिस्मे-फ़र्ज़ी[5] की मौत का अब, मज़ा समेटे से नहीं समिटता।
उठाना दुभर[6] है वेहमे-क़ालिब[7], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥१९॥

कलेजे ठंडक है, जी[8] में राहत[9], भरा है शादी[10] से सीनाये-राम[11]।
हैं नैन[12] अमृत से पुर लबा लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥२०॥

---

(१७) यह दुन्या शतरञ्ज के खेल की तरह है, इस (शतरञ्ज रूपी खेल) को लपेट कर अब गंगा में फैंक दिया, वह फ़ीला मरा और वह घोड़ा मरा, यह देख कर रोम खड़े हो रहे हैं, अरु गला रुक रहा है।

(१८) अब प्यारा छाती पर छाती धर कर पड़ा है, अब तो कहाँ की द्वैत और कहाँ की एकता है! किस को बताने की अब ताक़त है, केवल रोंगटे खड़े हैं और गला रुके हैं।

(१९) (यह जो आनन्द आ रहा है यह क्या है?) यह संकल्पमयी (भासमान) शरीर की मौत का आनन्द है जो समेटे से भी नहीं सिमटता है। अब तो (इस आनन्द के भड़कने से) यह पंचभौतिक शरीर उठाना भी कठिन हो गया है, क्योंकि आनन्द के मारे रोम खड़े हैं और गला रुक रहाहै।

(२०) कलेजे(हृदय)में शान्ति है और दिल में अब चैन है, खुशीसे रामका हृदय भरा हुआहै, और नैन (आनन्दके) अमृतसे लबालब भरे हुये हैं, अर्थात् आनंदके मारे आँसू टपक रहे हैं, और रोम खड़ेहैं तथा गला रुक रहा है।

---

१ हाथी, २ घोड़ा, ३ द्वैत, ४ एकता, ५कल्पित शरीर, ६कठिन, मुशकिल, ७शरीर का भ्रम, ८ चितमें, ९ सुख,चैन, १० खुशी, ११ राम का हृदय, १२ नेत्र।

[ २९९ ]

ग़ज़ल भैरवी, ताल पश्तो

कैसे रंग लागे, खूब भाग जागे, हरी गयी[1] सब भूख और नंग[2] मेरी।
चूड़े साँच स्वरूप[3] के चढ़े हम को, टूट पड़ी जब काँच की वंग[4] मेरी॥
तारों संग[5] आकाश में लशकती[6] है, बिन डोर अब उड़ी पतंग[7] मेरी।
झड़ी नूर[8] की बरसने लगी ज़ोरों[9], चंद सूर में एक तरंग मेरी॥

[ ३०० ]

❀ ग़ज़ल क़व्वाली ❀

बिठा कर आप पैहलू[10] में, हमें आँखें दिखाता है।
सुना बैठेंगे हम सच्ची, फ़क़ीरों को सताता है॥ १॥

अरे दुन्या के बाशिन्दो[11]! डरो मत बीम[12] को छोड़ो।
यह शीरीं-रू[13] तो मिसरी है, भवें नाहक़[14] चढ़ाता है॥ २॥

---

( १ ) राम का शरीर जब रोगी हुआ था तो राम अपने ( प्रेमात्मा ) स्वरूप से यूं कहते हैं:—ऐ प्यारे ( प्रेमात्मा ) अपने समीप बिठला कर हमें आँखें दिखलाता है, यह याद रख, हम सच्ची कह बैठेंगे, क्या फ़क़ीरों को सताता है ?

( २ ) ऐ संसारी लोगो! मत डरो, भय को छोड़ दो, क्योंकि यह मधुर मुख वास्तव में मिसरी रूप है, परन्तु भवें व्यर्थ चढ़ा लेता है ( अर्थात् ऊपर ऊपर से कोप में आ जाता है और वह भी व्यर्थ )।

---

१उड़ गई, दूर होगई, २ शरम, ३ सत्यस्वरूप, ४पहनने का कड़ा, यहाँ अभिप्राय अहंकार से है, ५ साथ, ६ चमकती, ७यहाँ वृत्ति से अभिप्राय है, ८प्रकाश की वर्षा, ९ ज़ोर से, १० अपने पास, ११ संसार में बसने वालो, जगत्-निवासी, १२ डर, भय, १३ मधुर मुख, मीठे बोल वाला १४ व्यर्थ।

यह सलवटें डालना चेहरे पे गंगाजी से सीखा है।
है अन्दर से महा शीतल, यह ऊपर से डराता है ॥ ३ ॥

बनावट की जबीं पुरचीन[1] है उलफ़त[3] से मुलब्ब[4] दिल।
बनावट चालबाज़ी से यह क्यों भरें में लाता है ॥ ४ ॥

अगर है ज़र्रे ज़र्रे में, बलकि लाखवें जुज़ में।
तो जुज़्व[6] ओ-कुल भी सब वह है, दिगर[7] झट उड़ ही जाता है॥५॥

निगाहे-ग़ौर रख क़ायम ज़रा बुरक़ा[8] को ताके जा।
यह बुरक़ा साफ़ उड़ता है, वह प्यारा नज़र आता है ॥ ६ ॥

---

(३) चेहरे पर बल डालना ने (त्योरी चढ़ाना) यह हमारे प्यारे स्वरूप ने गंगा जी से सीखा है (क्योंकि बैठते समय गंगा के जल पर भँवर पड़ते हैं मगर अन्दर से जल बिलकुल ठंडा होता है, ऐसे ही यह प्यारा) अन्दर से महा शीतल है और ऊपर से डराता है।

(४) प्यारे की बलों से भरी ललाट केवल बनावटी है क्योंकि दिल उस का प्रेम से लबालब भरा हुआ है, मगर मालूम नहीं कि यह बनावटी चालबाज़ी से लोगों को भरें में क्यों ले आता है।

(५) अगर परमाणु मात्र में यह है और उस के लाखवें भाग में भी वह है, तब व्यष्टि और समष्टि भी वह ही सब है, उस से अतिरिक्त अन्य कुछ रह ही नहीं सकता।

(६) निरन्तर विचार-दृष्टि से (इस माया के) पर्दे को देखते जा, इस विवेक से यह पर्दा साफ़ उड़ जाता है और वह प्यारा (आत्मा) दृष्टि गोचर होता है।

---

१ माथे पर बल, त्यूरी, २ बल वा त्यूरी से भरी पेशानी वा माथा, ३ प्रेम, ४ लबालब भरा हुआ, ५ परमाणु मात्र, ६ व्यष्टि और समष्टि, ७ दूसरा, ८ पर्दा।

तलातम[1]-खेज़ बेहरे-हुस्नो[2]-खूबी है अहाहाहा।
हवास-ओ-होश की किश्ती को दम भर में बहाता है ॥७॥

हसीनों[3]! हुस्न-ओ-ख़ूबी है मेरी ज़ुल्फ़े-सियाह[4] का ज़िल[5]।
अबस[6] साया-परस्तों[7] का पड़ा दिल तलमलाता है ॥ ८॥

अरे शोहरत! अरे रुसवाई! अरे तोहमत[8]! अरे अज़मत[9]।
मरो लड़ लड़ के तुम अब राम तो पल्ला[10] छुड़ाता है ॥ ९॥

---

(७) अहाहाहा अपने सौन्दर्य का समुद्र क्या लहरें मार रहा है, जो होश और हवास की नौका को दम भर में बहा ले जाता है, अर्थात् मन बुद्धि जिसे देख कर चकित हो जाते हैं।

(८) ऐ प्यारे सुन्दर पुरुषों! (यह याद रखो) तुम्हारी खूबसूरती (सुन्दरता) जो है वह मेरी काली ज़ुल्फ़ (माया) ही की केवल छाया (प्रतिबिम्ब) है, परछाईं (साया) को पूजने वालों का (रूप से मोहित वा माया-आसक्त पुरुषों का) चित्त व्यर्थ तलमलाता (टमटमाता) है।

(९) ऐ यश! और अपयश! ऐ कलङ्क! ऐ बड़प्पन! तुम सब अब लड़ लड़ के मरो, राम तो तुम सब से साफ पल्ला छुड़ाता है (तुम से पृथक होता है)।

---

१ लैहरें मारने वाला, २ सौन्दर्यता का समुद्र, ३ सुन्दर पुरुषों, ४ काली ज़ुल्फ अर्थात् माया, ५ छाया, प्रतिबिम्ब, ६ व्यर्थ है, ७ छाया से मोहित होने वाले, यहाँ अभिप्राय मायासक्त से है, ८ कलंक, ९ बुज़ुर्गी, बड़ाई, १० अलग होता है।

[ २०१ ]

ॐ ग़ज़ल केहरवा ॐ

( यह कविता पंजाबी भाषा में है इस में राम महाराज ईश्वर को सेवक का पद देकर पुरुष को उपदेश कर रहे हैं )

वाह वा कामां[1] रे नौकर मेरा, सुगर सियाना[2] रे नौकर मेरा (टेक)

ख़िद्मत करदयाँ करे न डरदा, रोज़े-अज़ल[3] तों सेवा करदा।
लूं लूं[4] दे विच रेहंदा बरदा[5], हर-शै-समाना[6] रे नौकर मेरा ॥१॥

जद मौला[7] मौलापन[8] छडदा, नौकर नखरे टखरे फड़दा।
फिर भी टहल[9] ओह पूरी करदा, हर नाच नचाना रे[10] नौकर मेरा॥२॥

[ ६१ ]

(टेक) वाह वाह काम करने वाले नौकर मेरे, शाबाश। वाह रे बुद्धिमान् नौकर मेरे, शाबाश।

(१) मेरा नौकर ईश्वर सेवा करने से कभी भी नहीं डरता है और अनादि काल से सेवा करता चला आता है। और ( यह ऐसा नौकर है कि ) मेरे रोम रोम में बसता है और सर्व वस्तु में रम रहा है।

(२) जब ईश्वर अपने ईश्वरपन को छोड़ता है, अर्थात् जब यह पुरुष अपनी ब्रह्मदृष्टि को त्यागता है, तब ईश्वर रूपी नौकर भी उस समय नखरे टखरे करने लग पड़ता है, पर तौ भी वह सेवा पूरी करता है। वाह वाह! हर तरह के नाच नाचने वाला (काम करने वाला) मेरा नौकर है।

१ काम करने वाला, २ बड़ा बुद्धिमान, अक़लमन्द, ३ अनादि काल से. ४ रोम रोम में, ५ नौकर, ६ प्रत्येक वस्तु में समाने वाला, सर्वव्यापक ७ ईश्वर. ८ ईश्वरपन, ऐश्वर्य, ९ सेवा, १० हरनाच नाचनेवाला और नचाने वाला।

बादशाही छड अर्दल[1] मल्ली, पर यह शाह कोलों कद् चल्ली।
नौकर नूं[2] उठ चौरी झल्ली[2], हाय वीवा[3] राना रे नौकर मेरा ॥ ३ ॥

बे समझी दा झगड़ा पाया, नौकर तो इतबार[4] उठाया।
विच दलीलाँ वक़्त गँवाया, विन्हें[5] ग़ज़ब निशाना रे नौकर मेरा॥४॥

लाया अपने घर विच डेरा, राम अकेला सूरज जेड़ा।
नूर जलाल[6] है नौकर मेरा, दिगर[7] न जाना रे नौकर मेरा ॥ ५ ॥
सुघड़ सियाना रे नौकर मेरा, वाह वाह कमाँ रे नौकर मेरा ( टेक )

---

( ३ ) जब इस ने अद्वैत तत्त्व-दृष्टि छोड़ कर द्वैत-दृष्टि ( मैं पापी, मैं पापात्मा वाली दृष्टि ) पकड़ी, अर्थात् ईश्वरपना छोड़ कर उसकी चपरास इख़्तयार करी और बजाये उस से सेवा कराने के उस की ख़ुद सेवा करनी शुरू की ( उसे चँवर करना शुरू किया ), तो शाह ( सब के मालिक पुरुष ) से ऐसा कब तक सहन हो सकता था। निदान ( ईश्वर ) उसे चोटें दे दे कर उस से यह ख़राब दृष्टि छुड़ा देता है ) इस वास्ते मेरा यह नौकर ( ईश्वर ) बड़ा अच्छा और योग्य है।

( ४ ) जो पुरुष अपने नौकर ( ईश्वर ) पर अपना विश्वास नहीं रखता, वह मूर्खता से उलट अपने घर में झगड़ा डाल लेता है, और तरह तरह की दलीलों में व्यर्थ समय खो बैठता है। अरे प्यारे ! मेरा नौकर तो हर काम में ग़ज़ब का निशाना लगाता है।

( ५ ) राम बादशाह ने, जो अकेला सूर्य है, जब अपने असली घर (स्वस्वरूप) में स्थिती की, तो अपना नौकर स्वयं तेजोमय ज्योति पाया, अन्य कोई नौकर नज़र न आया।

अरे ! यह मेरा नौकर बड़ा बुद्धिमान् है। वाह वाह काम करनेवाले मेरे नौकर !

---

१ चपड़ास, २ चँवर करी, ३ भोला भाला, नेक, ४ विश्वास, यकीन, ५ छेदे, बेधे, ६ तेजोमय ज्योति, ७ अन्य, दूसरा

[ ३०२ ]

राग शंकरा भरवा, ताल धुमाली

हमें इक पागलपन दरकार ॥ टेक

अक़ल नक़ल नही चाहिये हम को पागलपन दरकार ॥ हमें इक० १

छोड़ पुवाड़े[1], झगड़े सारे, गोता वहदत[2] अन्दर मार ॥ हमें इक० २

लाख उपाय करले प्यारे ! कदे[3] न मिलसी यार ॥ हमें इक० ३

बेखुद[4] होजा देख तमाशा, आपे खुद दिलदार[5] ॥ हमें इक० ४

[ ३०३ ]

लावनी, ताल धुमाली

कोई हाल मस्त, कोई माल मस्त, कोई तूती मैना सूए में।
कोई खान मस्त, पैहरान मस्त, कोई राग रागनी दूहे[6] में ॥
कोई अमल मस्त, कोई रमल मस्त, कोई शतरंज चौपड़ जूए में।
इक खुद मस्ती बिन अवर मस्त, सब पड़े अविद्या कूप में ॥ १ ॥

कोई अक़ल मस्त, कोई शकल मस्त, कोई चंचलताई हाँसी में।
कोई वेद मस्त, कितेब मस्त, कोई मक्के में, कोई काशी में ॥
कोई ग्राम मस्त, कोई धाम मस्त, कोई सेवक में, कोई दासी में।
इक खुद मस्ती बिन अवर मस्त, सब बन्धे अविद्या फांसी में ॥ २ ॥

---

१ झगड़े बखेड़े, २ एकता, अद्वैत, ३ कभी भी, ४ अहंकार रहित, ५ आशिक़, प्यारा, ६ तुकबन्दी में दोहे चौपाई में।

कोई पाठ मस्त, कोई ठाठ मस्त, कोई भैरों में, कोई काली में।
कोई ग्रन्थ मस्त, कोई पन्थ मस्त, कोई श्वेत[1] पीत[2] रंग लाली में॥
कोई काम मस्त, कोई ग्वाम मस्त, कोई पूर्ण में, कोई खाली में।
इक खुद मस्ती बिन अवर मस्त, सब धन्धे अविद्या जाली में॥ ३॥

कोई हाट मस्त, कोई घाट मस्त, कोई वन पर्वत ओजाड़ा[3] में।
कोई जात मस्त कोई पाँत मस्त, कोई तात भ्रात सुत दारा में॥
कोई कर्म मस्त कोई धर्म मस्त, कोई मसजिद ठाकुरद्वारा में।
इक खुद मस्ती बिन अवर मस्त, सब बहे अविद्या धारा में॥ ४॥

कोई साक मस्त, कोई खाक मस्त, कोई खासे में, कोई मलमल में।
कोई योग मस्त, कोई भोग मस्त, कोई स्थिति में, कोई चलचल में॥
कोई ऋद्धि मस्त, कोई सिद्धि मस्त, कोई लेन देन की कल कल में।
इक खुद मस्ती बिन अवर मस्त, सब फंसे अविद्या दलदल में॥ ५॥

कोई ऊर्ध्व मस्त, कोई अधः[4] मस्त, कोई बाहर में, कोई अन्तर में।
कोई देश मस्त बिदेश मस्त, कोई औषध में, कोई मन्तर में॥
कोई आप मस्त, कोई ताप मस्त, कोई नाटक चेटक तन्तर में।
इक खुद मस्ती बिन, अवर मस्त, सब फंसे अविद्या यन्तर में॥ ६॥

कोई शुष्क[5] मस्त, कोई तुष्ट[6] मस्त, कोई दीर्घ में, कोई छोटे में।
कोई गुफा मस्त, कोई सुफा मस्त, कोई तूंबे में, कोई लोटे में॥
कोई ज्ञान मस्त, कोई ध्यान मस्त, कोई असली में, कोई खोटे में।
इक खुद मस्ती बिन अवर मस्त, सब रहे अविद्या टोटे में॥ ७॥

---

१ सफेद, २ ज़र्द, पीला, ३ उजाड़, वियावान, ४ नीचे, ५ खाली, अतृप्त ६ प्रसन्न चित्त।

[ ३०४ ]

राग झंजोटी, ताल तीन

आ दे मुकाम उत्ते[1] आ मेरे प्यारिया ! ( टेक )

पा गल्ल[2] असली पागल हो जा, मस्त अलस्त सफा मेरे
प्यारिया ! आ दे० १

ज़ाहर सूरत दौला[3] मौला, बातन[4] खास खुदा मेरे
प्यारिया ! आ दे० २ टेक

पुस्तक पोथी सुट[5] गंगा विच, दम दम अलख जगा मेरे
प्यारिया ! आ दे० ३

सेली[6] टोपी ला दे सिर तों, रुण्ड मुण्ड होजा मेरे
प्यारिया ! आ दे० ४

इज्ज़त फोकी फूक दुन्या दी, अक्क धतूरा खा मेरे
प्यारिया ! आ दे० ५

झगड़े झेड़े फैसल रिंदा, लेखा पाक[7] चुका मेरे
प्यारिया ! आ दे० ६

लड़का बगल, ढण्ढोरा किहा[8], ढूण्डन किते न जा मेरे
प्यारिया ! आ दे० ७

---

१ आ ( अद्वैत तत्व ) के पद पर, २ रमज, रहस्य ( असली वस्तु ), ३भोला भाला, ४ अन्दर से, ५ फैंक, ६ मान की ( दुन्या की ) पगड़ी, टोपी, ७ साफ हिसाब बेबाक़, ८ कैसा।

तेरी बुक्कल[1] बिच प्यारा लेटे, खोल तनी गल ला मेरे
प्यारिया ! आ दे० ८

आपे भुल, भुलावें आपे, आपे बने खुदा मेरे
प्यारिया ! आदे० ९

परदे फाड़ दूई[2] दे सारे, इक्को इक दिखा मेरे प्यरिया !
आ दे० १०

[ ३०५ ]

राग भैरवी, ताल दादरा

गर हम ने दिल सनम[3] को दिया, फिर किसी को क्या ।
इसलाम[4] छोड़ कुफ्र लिया, फिर किसी को क्या ॥ १ ॥

हमने तो अपना आप गिरेबां[5] किया है चाक[6] ।
आप ही सिया, सिया न सिया, फिर किसी को क्या ॥ २ ॥

आँखें हमारी लाला, सनम ! कुछ नशा पिया ? ।
आप ही पिआ, पिया न पिया फिर किसी को क्या ॥ ३ ॥

अपनी तो ज़िन्दगी मियां ! मिस्ले-हुबाब[7] है ।
गो खिज़र[8] लाख बरस जिया, फिर किसी को क्या ॥ ४ ॥

दुन्या में हमने आ के भला या बुरा कियो ।
जो कुछ किया सो हमने किया, फिर किसी को क्या ॥ ५ ॥

---

१ बग़ल, गोद, २ द्वैत, ३ प्यारा, ४ मुसलमानी धर्म, ५ अपना कपड़ा या चोग़ा ६ फाड़ा ७ बुलबुले के सदृश, ८ मुसलमानों में पानी के देवता का नाम है ।

[ ३०६ ]

राग मांड, ताल धुमाली

भला हुआ हर बीसरो[1], सिर से टली बलाय।
जैसे थे वैसे भये, अब कछु कहा न जाय॥ १॥

मुख से जपूं, न करं[2] जपूं, उर[3] से जपूं न राम।
राम सदा हम को भजे, हम पावें विश्राम[4]॥ २॥

राम मरे तो हम मरे ? हमरी मरे बलाय।
सत्पुरुषों का बालका मरे न मारा जाय॥ ३॥

हद टप्पे सो औलिया[5], बेहद टप्पे सो पीर।
हद बेहद दोनों टप्पे, वाका नाम फकीर॥ ४॥

हद हद करते सब गये, बेहद गया न कोय।
हद बेहद मैदान में रह्यो कबीरा सोय॥ ५॥

मन ऐसो निर्मल भयो जैसो गंगा नीर[6]।
पीछे पीछे हर फिरे, कहत कबीर, कबीर॥ ६॥

[ ३०७ ]

राग झिला, ताल दादरा

बाज़ीच-ए-इतफाल[7] है दुन्या मेरे आगे।
होता है शबो रोज़[8] तमाशा मेरे आगे॥ १॥

---

१ भूल गया, २ हाथ, ३ दिल या हृदय से, ४ आराम, ५ पैग़म्बर, ६ गंगा जल, ७ बच्चों का खेल, ८ रात और दिन।

इक खेल है औरंगे-सुलेमान्[1] मेरे नज़दीक।
इक बात है इजाज़े-मसीहा[2] मेरे आगे ॥ २ ॥

जुज़[3] नाम नहीं सूरते-आलम[4] मेरे नज़दीक।
जुज़ वीहम[5] नहीं हस्ती-ए-अशया[6] मेरे आगे ॥ ३ ॥

होता है निहां[7] खाक में स्वहरा[8] मेरे होते।
घिसता है जबीं[9] खाक पे[10] दरिया मेरे आगे ॥ ४ ॥

[ ३०८ ]

॥ राग ज़िला, ताल दादरा ॥

फैंके फलक को तारे, सब बख्श दूंगा मैं।
भर भर के मुट्ठी हीरे, अब बख्श दूंगा मैं ॥ १ ॥

सूरज को गर्मी, चाँद को ठण्डक, गुहर[11] को आब[12]।
यूँ मौज[13] अपनी आई, सब बख्श दूंगा मैं ॥ २ ॥

गाली, गलोच, झिड़की, तानें करूं मुआफ़।
बोली, ठठोली, धमकी, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ३ ॥

तारीफ़ से परे हूँ, ऐबों से मैं बरी हूँ।
हम्दो-सना-दुआ[14] भी, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ४ ॥

---

१ सुलेमान बादशाह का शाही तख़्त, २ हज़रत ईसामसीह की करामात, मोजज़ा, ३ सिवाय, ४ संसार का रूप वा दृश्य, ५ भ्रम, ६ पदार्थ की मौजूदगी, अथवा उस का दृश्य मात्र, ७ गुप्त होता, छिप जाता है, ८ जङ्गल, ९ माथा (मस्तक), १० पृथ्वी पर, ११ मोती १२ चमक, १३ तरंग १४ स्तुति, उपमा और प्रार्थना।

वाहिद[1] हूँ ज़ाते-मुत्लक[2], यां इम्तयाज़[3] कैसी।
औसाफ[4] को लुटा दूं, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ५ ॥

स्वहराये-बेकरां[5] हूँ, दरिया हूँ बे किनार।
बू[6] ग़ैर की न छोड़ू, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ६ ॥

दिल नज़र मेरी कर दो, हूँ शाहे-बेनियाज़[7]।
कौनो-मकां-जमां-ज़र[8], सब बख्श दूंगा मैं ॥ ७ ॥

झगड़े, क़सूर क़ज़िये, अच्छे बुरे ख्याल।
जूँ[9] ओस झट उड़ादूं, सब बख्श दूंगा मैं ॥ ८ ॥

मौजूद कुछ नहीं है, मेरे सिवा यहां।
वेह्मे-दुई[10], गुमानो-शक[11], सब बख्श दूंगा मैं ॥ ९ ॥

अक्लो-क़यास[12], जिस्मो-जां, मालो-दोस्तां।
कर राम पर निसार, यह सब बख्श दूंगा मैं ॥ १० ॥

[ ३०९ ]

सवैया राग धनासरी

सब शाहों का शाह मैं, मेरा शाह न कोय।
सब देवों का देव मैं, मेरा देव न होय ॥

---

१ एक, २ वास्तविक तत्व, ३ विवेचना, अन्तर, भेद, फरक, ४ गुण, ५ बेहद बियाबां, ६ द्वैत की गन्ध, ७ उदार चित्त बादशाह, ८ देश काल वस्तु और सम्पत्ति, ९ सदृश, १० द्वैत भ्रम, ११ संशय और अनुमान, १२ बुद्ध और ख्याल।

चाबुक सब पर है मेरा, क्या सुल्तान[1] अमीर[2]।
पत्ता मुझ बिन न हिले, आन्धी[3] मेरी असीर[4] ॥

[ ३१० ]

रागनी जयजय वन्ती, वा राग एमन कल्याण, ताल चलन्त ।

तमाम दुन्या है खेल मेरा, मैं खेल सब को खिला रहा हूँ।
किसी को बेख़ुद बना रहा हूँ, किसी को ग़म में रुला रहा हूँ ॥ १ ॥

अबस[5] है सदमा[6] भले बुरे का, हो कौन तुम और कहाँ से आये।
ख़ुशी है मेरी, मैं खेल अपना, बना बना के मिटा रहा हूँ ॥ २ ॥

फिरो हो रूये-ज़िमीन्[7] पे यारो! तलाश मेरी में मारे मारे।
अमल करो, तुम दिलों में देखो, मैं नहने-अक़रब[8] सुना रहा हूँ॥ ३ ॥

कभी मैं दिन को निकालूं सूरज़, कभी मैं शब[9] को दिखाऊँ तारे।
यह ज़ोर मेरा है दोनों पाँवों को मिस्ले-फिरकी फिरा रहा हूँ ॥४॥

किसी की गर्दन में तौक़े-लानत[10], किसी के सिर पर है ताजे-रहमत[11]।
किसी को ऊपर बुला रहा हूँ, किसी को नीचे गिरा रहा हूँ ॥ ५ ॥

---

१ महाराजा अधिराज, २ धनी, ३ घटा, ४ कैद, अधीन, ५ व्यर्थ, ६ चोट, ७ पृथ्वी के ऊपर, ८ शाहरग (कंठ) से भी अधिक समीप ईश्वर है, ९ रात्रि, १० लानत की ज़ंजीर, ११ कृपादृष्टि का ताज, तिलक,

[ ३११ ]

राग भैरवी, ताल चलंत।

कहूँ क्या रंग उस गुल[1] का, अहाहाहा, अहाहाहा।
हुआ रंगीं[2] चमन[3] सारा, अहाहाहा, अहाहाहा॥ १

नमक छिड़के है वह किस किस मज़े से दिलके ज़ख्मों पर।
मज़े लेता हूँ मैं क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा॥ २॥

ख़ुदा जाने हलावत[4] क्या थी, आबे-तेग़े-क़ातिल[5] में।
लबे-हर-ज़ख्म[6] है गोया, अहाहाहा, अहाहाहा॥ ३॥

शरारो[7]-बर्क़ में क्या फ़र्क़, मैं समझूँ कि दोनों में।
है इक शोला-भबूका[8] सा, अहाहाहा, अहाहाहा॥ ४॥

बला-गरदां[9] हूँ साक़ी[10] का, कि जामे-इश्क़[11] से मुझ को।
दिया घूँट है इक ऐसा, अहाहाहा, अहाहाहा॥ ५॥

मेरी सूरत-परस्ती[12] हक़-परस्ती[13] है, कहूँ मैं क्या?
कि इस सूरत में है क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा॥ ६॥

---

१ फूल; ( सुन्दर स्वरूप वा आत्मस्वरूप ) २ रंगदार ( नाना प्रकार की ), ३ बाग़, ४ मिठास, स्वाद, ५ क़ातिल की तलवार की धार, ६ हर घाव के समीप ७ अंगारा और बिजली, ८ भड़की हुई लाट, ९ कृतज्ञ, अर्पित हूँ, १० शराब (प्रेमामृत) पिलाने वाला, यहाँ आत्मज्ञानी वा गुरु से अभिप्राय है, ११ इश्क़ ( प्रेम रस ) का प्याला, १२ मूर्ति पूजा ( बुत परस्ती ), १३ ईश्वर पूजा,

ज़फर[1] आलम[2] कहूँ? कहूँ मैं क्या, तबीयत की रवानी[3] का।
कि है उमड़ा हुआ दरिया, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ७ ॥

[ ३१२ ]

ग़ज़ल क़व्वाली।

गर यूँ हुआ तो क्या हुआ, और वूँ हुआ तो क्या हुआ। टेक

था एक दिन वह धूम का, निकले था जब अस्वार हो।
हर दम पुकारे था नक़ीब[4], आगे बढ़ो, पीछे हटो।
या एक दिन देखा उसे, तन्हा[5] पड़ा फिरता है वह।
बस क्या खुशी, क्या ना खुशी, यकसां है सब ऐ दोस्तो ! ॥ गर यूं० १

या नेमतें[6] खाता रहा, दौलत के दस्तर-ख्वान पर।
मेवे मिठाई बा मज़ो[7], हलवा-ओ-तुर्शी[8] और शकर।
या बान्ध झोली भीख की, टुकड़े के ऊपर धर नज़र।
होकर गदा[9] फिरने लगा, कूचा बकूचा दर बदर[10] ॥ गर यूं० २

या इशरतों[11] के ठाठ थे, औ ऐश के असबाब थे।
साक़ी[12], सुराही[13], गुलबदन[14], जामो[15]-शराबे-नाब[16] थे।
या बेकसी के दर्द से बेहाल थे, बेताब थे।
आखिर जो देखा दोस्तो। सब कुछ ख्यालो-ख्वाब थे ॥ गर यूं० ३

---

१ कवि का नाम, २ हाल (अवस्था), ३ रफतार (चाल) गति, ४ कोचवान, चोबदार, ५ अकेला. ६ अच्छे अच्छे पदार्थ, ७ स्वादिष्ट, ८ खट्टा मीठा, ९ फ़क़ीर. १० द्वार द्वार पर, या गली दर गली, ११ विषयानन्द अर्थात् भोगों के पदार्थ. १२ प्रेमरस की शराब पिलाने वाला, १३ शराब रखने का बर्तन, १४ पुष्प वर्ण की सुन्दर स्त्रियाँ, १५ प्याला, १६ अंगूरी शराब।

डाल दो हथयार, मेरी राय[1] पुख़्ता अब हुई।
लग गया पूरा निशाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ६ ॥

होने दो जो हो रहा है, कुछ किसी से मत कहो।
सन्त हो किसि को सताना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ७ ॥

आत्मा के ज्ञान से हुआ कृतार्थ[2] जन्म है।
अब नहीं कुछ और पाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ ८ ॥

देह के प्रारब्ध से मिलता है सब को सर्व कुच्छ।
फिर जगत को क्यों रिझाना[3], काम क्या बाक़ी रहा ॥ ९ ॥

घोर[4] निद्रा से जगाया सद्गुरू ने वाह वा।
अब नहीं जगना जगाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १० ॥

मान कर मन में मियां, मौला[5] का मेला है यह सब।
फिर बनूं अब क्या मौलाना[6], काम क्या बाक़ी रहा ॥ ११ ॥

जान कर तौहीद[7] का मनशा[8], शुभा सब मिट गया।
यूं ही गालों का बजाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १२ ॥

एक में कसरत-व कसरत[9] में भी एक ही एक है।
अब नहीं डरना डराना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १३ ॥

अक़्ल से भी दूर है, कहने-व-सुनने से परे।
हो चुका कहना कहाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १४ ॥

---

१ सम्मति, २ संतुष्ट, ३ खुशामद करना, चापलूसी करना, ४ गहरी, सुषुप्ति, ५ ईश्वर लीला, ६ मौलवी, पंडित, ७ अद्वैत, एकता, ८ मन्तव्य, ९ बहुत अनेक।

रमज़[1] है तौहीद[2], यहां हुकमा[3] की हिकमत[4] तंग है।
हो गया दिल भी दीवाना[5], काम क्या बाक़ी रहा ॥ १५ ॥

रह गये उलमा-व-फुज़ला[6] इल्म की तहक़ीक़[7] में।
भ्रम है पढ़ना पढ़ाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १६ ॥

द्वैत और अद्वैत के झगड़े में पड़ना है फ़जूल।
अब न दाँतों को घिसाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १७ ॥

जान कर दुनिया को पूरे तौर से ख़्वाबो-ख़्याल[8]।
अब नहीं तपना तपाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १८ ॥

कुच्छ नहीं मतलब किसी से, सो रहा टांगें पसार।
अब कहीं काहे को जाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ १९ ॥

हो गयी दे दे के डङ्का, सारी शङ्का भी फना[9]।
अब मिला निर्भय[10] ठिकाना, काम क्या बाक़ी रहा ॥ २० ॥

[ ३१४ ]

नी[11] ! मैं पाया मरहम[12] यार।
जिस दे हुसन[13] दी अजब बहार ॥

जिस दा जोगी ध्यान लगावन।
पीर पैग़म्बर निश दिन ध्यावन ॥

---

१ इशारा, रहस्य, २ अद्वैत, एकता, ३ अक़लमन्द, ४ अक़ल, बुद्धि, ५ पागल, ६ विद्वान और महात्मा, ७ दर्याफत, ढूँढ, ८ स्वप्न भ्रम, ९ नाश, १० भय रहित और कवि का नाम भी है, ११ अजी! ऐ प्यारी; १२ अपना भेदी प्यारा, प्रेमात्मा, १३ सुन्दरता, सौन्दर्य।

पंडित आलिम[1] अन्त न पावन।
तिस दा कुल अज़हार[2] ॥ नी! मैं० ॥ १ ॥

"मैं" "तू" दा जद भेद मिटाया।
कुफ़र[3] इस्लाम दा नाम भुलाया ॥
ऐन[4] ग़ैन[5] दा फ़र्क गँवाया।
खुल्या सब इसरार[6] ॥ नी! मैं० ॥ २ ॥

वहदत[7] कसरत[8] विच समाई।
कसरत वहदत हो के भाई[9] ॥
जुज़[10] विच कुल[11] दी सूझी पाई।
विसर गया संसार ॥ नी! मैं० ॥ ३ ॥

कहन सुनन ते न्यारा जोई।
लामकाँ[12] कहे सब कोई ॥
"है" "नाहीं" दा झगड़ा होई।
तिस दा गर्म बाज़ार ॥ नी मैं० ॥ ४ ॥

साकी[13] ने भर जाम[14] पिलाया।
बे. खुद हो के जशन[15] मनाया ॥
ग़ैरीयत[16] दा नाम गँवाया।
हुई जय ज़य[17] कार ॥ नी मैं० ॥ ५ ॥

---

१ विद्वान, २ दृश्य, नाम रूप, ३ नास्तिकपन, ४ अद्वैत, ५ द्वैत से यहाँ अभिप्राय है, ६ भेद, रहस्य, ७ एकता, ८ अनेकता, ९ पसन्द आई, १० व्यष्टि, ११ समष्टि, १२ स्थान रहित, अर्थात देश से परे १३ निजानन्द रूपी शराब पिलाने वाला, यहाँ गुरू से अभिप्राय है, १४ प्रेम प्याला अथवा आत्मानन्द का प्याला, १५ खुशी मनायी १६ द्वैत भाग, भेद दृष्टि, १७ आनन्द का हुलास।

[ ३१५ ]

होरी, राग कालंगड़ा, ताल दीपचंदी।

रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई, अचरज लख्यो न जाई।
असत सत कर दिखलाई, रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई ॥ (टेक)

एक समय श्रीकृष्ण के मन में होरी खेलन की आई।
एक से होरी मचे नहिं कबहुँ, यातें करूं बहुताई।
यही प्रभु ने ठहराई, रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ १ ॥

पाँच भूत की धातु मिलाकर, अंड पिचकारी बनाई।
चौदह भुवन रंग भीतर भरकर, नाना रूप धराई।
प्रकट भये कृष्ण कन्हाई। रे कृष्ण कैसी होरी तैंने मचाई ॥ २ ॥

पाँच विषय की गुलाल बनाकर, बीच ब्रह्मांड उड़ाई।
जिस जिस नैन गुलाल पड़ी, उसकी सुध बुध बिसराई।
नहीं सूझत अपनाई[1]। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ ३ ॥

वेद अंत अंजन की शलाका[2], जिस ने नैन में पाई।
तिस का ही ठीक तम[3] नाश्यो, सूझ पड़ी अपनाई।
होरी कछु बनी न बनाई। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥ ४ ॥

[ ३१६ ]

मरज़ी चेतन की जब झुक मारन की होय।
मृग तृष्णा के नीर में बह चलयो बिन तोय[4] ॥ १ ॥

---

१ अपना आप, अपना स्वरूप, २ सीख, सलाई, ३ अन्धकार, ४ जल।

यह चलपो विन तोय सहारा कहीं न पावे।
इत उत धौते खाय बहोरी[1] पाछे फिर आवे॥
कहे गिरिधर कवी राय करूँ मैं का[2] पर अरज़ी।
इक मारन की चेतन की जब होवे मरज़ी॥

[ ३१७ ]

काफी

हुन[3] मैंनू कौन पछाने मैं कुछ हो गया होर[4] (टेक)

हादी[5] मैं नूं सबक[6] पढ़ाया ओथे[7] गैर[8] न आया जाया।
मुतलक़[9] ज़ात जमाल[10] दिखाया वहदत[11] पाया शोर॥१॥

अव्वल हो के लामकानी[12] जाहिर बातन[13] उस दा जानी।
रहया न मेरा नाम निशानी मिट गया झगड़ा शोर॥२॥

प्यारा! आप जमाल दिखाले मस्त कलन्दर हो मतवाले।
हँसा दे हुन देख के चाले बुल्लाह भुल गया कागाँदी[14] टोर[15]॥३॥

[ ३१८ ]

इस कदर मह्व[16] तजल्ली हो गया।
अक्स[17] मिट कर नूर पैदा हो गया॥१॥

---

१ पुनः २ किस, ३ अब, ४ दूसरा, ५ गुरु, ६ पाठ, ७ वहाँ, ८ अन्य, ९ सत्यस्वरूप, १० दर्शन, साक्षात्कार, ११ अद्वैत, १२स्थान रहित, १३बाहिर भीतर, १४ काक कौव्वों की, १५ चाल १६ आत्म ज्योति में लीन, १७ प्रतिबिम्ब।

बन्दगी है बन्दह बनने के लिये ।
जब हुआ आज़ाद मौला हो गया ॥ २ ॥

ग़ैरे-हक़[1] दिल में जहां आया ख्याल ।
बुत[2] ख़ुदा के घर में पैदा हो गया ॥ ३ ॥

साथ है सूरत के सूरत[3]-आफ़रीन् ।
नक़्श पर नक़्क़ाश[4] शैदा हो गया ॥ ४ ॥

शकले-अहमद[5] में अहद[6] था जल्वहगर[7] ।
देखने वालों को धोखा हो गया ॥ ५ ॥

दार[8] पर चढ़ कर कहा मनसूर[9] ने ।
आज अपना बोल वाला हो गया ॥ ६ ॥

सुन के आसी[10] तिरी ख़ुश[11] अलहानियां ।
बुलबुले-शीराज़ गोया[12] हो गया ॥ ७ ॥

[ ३१९ ]

मुझी से हुई इबतदाये[13]—दोआलम ।
मुझी में क़याम[14] इनका रहता है मुहकम[15] ॥

---

१ ईश्वर से इतर अर्थात् अनात्मा, २ मूर्ति, प्रतिमा, ३ स्तुति योग्य मूर्ति, ४ चित्रकार मूर्ति खैंचने वाला, ५ हज़रत अहमद के रूप में, ६ अद्वैत ब्रह्म, ७ प्रकाशमान्, ८ सूली, ९ एक मस्त का नाम, १० कवि का नाम, ११ मधुर स्वर, १२ बोलने वाला, १३ दोनों लोक, ( अर्थात लोक पर लोक ) का आरम्भ, १४ स्थिति, १५ दृढ़ ।

मुझी में फनाह[1] होंगे एक रोज़ एक दम।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं ॥ १ ॥

मैं दरया हूँ और मुझ में बेहद[2] हैं क़तरे।
मैं सूर्य हूँ और मुझ से रौशन हैं ज़र्रे॥
अहा हा अजब देखता हूँ तमाशे।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं ॥ २ ॥

चमक है मेरी मेहरो-मह[3] की ज़िया[4] में।
दमक लालो-गुहर[5] की आबो-सफ़ा[6] में॥
खिला[7] में मिरा नूर[8] है और मला[9] में।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं ॥ ३ ॥

बहिश्त बरीं[10] मेरा जल्वह जमाली[11]।
जहन्नम[12] के तबक़े हैं शकले-जलाली[13]॥
मेरी शानवहमो-गुमान्[14] से है आली[15]।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं ॥ ४ ॥

फलक[16] पर मलिक[17] और ज़मींपर बशर[18] हूँ।
यहाँ हूँ, वहाँ हूँ, इधर हूँ, उधर हूँ॥
जिधर देखिये मिहर[19] में जल्वहगर[20] हूँ।
शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं, शिवोऽहं ॥ ५ ॥

---

१ नाश, २असंख्य, ३ सूर्य और चाँद, ४ रौशनी, प्रकाश, ५ लाल मोती, ६ शुद्ध चमक, ७ आकाश, एकान्त, ८ ज्योति, प्रकाश, ९ भीड़, समूह, समाज १०सबसे ऊँचा स्वर्ग लोक अर्थात् ब्रह्मलोक, ११ सौन्दर्य व महिमा की विभूति, १२ नरक, दोज़ख़, १३ वैभव का रूप. १४ भ्रम और शंका, १५ ऊपर, १६आकाश या परलोक, १७ फरिश्ता, देवता, १८ मनुष्य वा प्राणी १९ कवि का नाम, २० प्रकाशवान् ।

[ ३२० ]

ग़ज़ल

बे होश हैं तो हम हैं, हुश्यार है तो हम हैं
मय नोश[1] हैं तो हम हैं, दीनदार[2] हैं तो हम हैं ॥ १ ॥

अपने सिवा नहीं है हस्ती किसी की हरगिज़।
बे जान हैं तो हम हैं, जान्दार हैं तो हम हैं ॥ २ ॥

गुलशन[3] में हम हैं नज़्हत[4], सहरा[5] में हम हैं वहशत[6]।
गर फूल हैं तो हम हैं, गर खार[7] हैं तो हम हैं ॥ ३ ॥

अलफ़ाज़[8] और मआनी[9] दिल से हमारे निकले।
गर नसर[10] हैं तो हम हैं, अशआर[11] हैं तो हम हैं ॥ ४ ॥

अय्यारी[12] और यारी दोनों की तह में हम हैं।
गर यार हैं तो हम हैं, अशआर[13] हैं तो हम हैं ॥ ५ ॥

झगड़ा भी तह करो तुम पे शेखे-रिन्द अपना।
बेदीन हैं तो हम हैं, दीनदार हैं तो हम हैं ॥ ६ ॥

इल्म[14] और जहल[15] पहलू दो अपनी ज़ात[16] के हैं।
नादान हैं तो हम हैं हुश्यार हैं तो हम हैं ॥ ७ ॥

हम से है सब अमीरी, हम से है सब फ़क़ीरी।
ज़रदार[17] हैं तो हम हैं, नादार[18] हैं तो हम हैं ॥ ८ ॥

---

१ प्रेम मद पीने वाले, २ धार्मिक, ३ बाग, ४ सुगन्ध, ५ जंगल बियाबान, ६ पशुत्व, ७ काँटा, ८ शब्द, ९ अर्थ, १० गद्य, ११ पद्य, १२ बदमाशी, १३ चालाक,बदमाश, १४ विद्या, १५ अविद्या, १६ निजात्मा, निज स्वरूप, के १७ धनी, १८ निर्धन।

हम ही निहां[1] रहे हैं, हम ही अयाँ[2] हुए हैं।
गर कशफ़[3] हैं तो हम हैं, असरार[4] हैं तो हम हैं॥ ९॥

हैं शैख़ सोमये[5] हैं और रिन्द मय-कदे[6] में।
हुश्यार हैं तो हम हैं, सरेशार[7] हैं तो हम हैं॥ १०॥

अपनी है सारी बरकत, अपनी है सारी हरकत[8]।
रफ़तार हैं तो हम हैं, गुफ़तार[9] हैं तो हम हैं॥ ११॥

वहदत[10] में हम निहां[11] हैं, कसरत में हम अयां[12] हैं।
मस्तूर[13] हैं तो हम हैं, दो चार हैं तो हम हैं॥ १२॥

मुनकर[14] हैं जो वह अपने और जो मुक़र[15] वह अपने।
इक़रार हैं तो हम हैं, इन्कार हैं तो हम हैं॥ १३॥

ख़ुद कहते हैं अनलहक़[16], ख़ुद पाते हैं सज़ायें।
मन्सूर[17] हैं तो हम हैं, और दार[18] हैं तो हम हैं॥ १४॥

अपने ही दम से सारी गुलज़ार[19] की फ़िज़ा[20] है।
गर बर्ग[21] हैं तो हम हैं, गर बार[22] हैं तो हम हैं॥१५॥

जिन्नत[23] जमाल[24] अपना, दोज़ख़[25] जलाल[26] अपना।
गर तूर[27] हैं तो हम हैं, गर नार[28] हैं तो हम हैं॥

---

१ गुप्त, अप्रकट, अविद्यमान, २ प्रकट, विद्यमान, ३ साक्षात्कार, ४ गुप्त, रहस्य, ५ पुजारी वा पादरी, ६ शराब खाना, ७ दोषों से पूर्ण, ८ चेष्टा, ९ बात चीत, बोल चाल, १० अद्वैत, ११ गुप्त, १२ प्रकट, १३ छुपे हुए वा परदे में, १४ इन्कार करने वाला, १५ स्वीकार करने वाल, १६ शिवोऽहं, १७ मस्त का नाम, १८ सूली, १९ बाग़, २० रौनक़, २१ पत्ते फूल, २२ फल व फलों का भार, २३ स्वर्ग, २४ वैभव, २५ नरक, २६ गौरव, सामर्थ्य, २७ पर्वत का नाम, २८ अग्नि।

हर शक्ल है हमारी, हर नाम है हमारा।
ऐ मेहर[1]! तुम से हर जा[2], दो चार हैं तो हम हैं ॥१७॥

( ३२१ )

बने ध्यान में जिस के ध्यानी हैं मजनूँ[3]।
हुए ज्ञान पर जिस के ज्ञानी हैं मफ़तूँ[4]॥
पढ़ा जिस का जोगी यति ने है अफ़सूँ[5]।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ १ ॥

कर्म जिस के मिलने को करता है कर्मी।
धर्म जिस के पाने को करता है धर्मी॥
मर्म जानता है फ़क़त्[6] जिस का मर्मी।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ २ ॥

जिसे यज्ञ और दान से ढूँढ़ते हैं।
जिसे तप और ज्ञान से ढूँढ़ते हैं॥
जिसे धारणा ध्यान से ढूँढ़ते हैं।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ ३ ॥

न आग़ाज़[7] जिसका, न अंजाम[8] जिस का।
जहाँ देखिये, जल्वह[9] है आम जिस का॥
हर इक शकल जिस की, हर इक नाम जिस का।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ ४ ॥

जिसे सुन के इन्सान् कहता नहीं है।
जिसे देख कर होश रहता नहीं है॥

---

१ कवि का नाक, २ सर्वत्र, ३ पागल, मस्त, आसक्त, ४ नोच्छावर, कहानी, कथा, ६ केवल, ७ आरम्भ, ८ अन्त, ९ दर्शन, प्रकाश।

जिसे पा के दुःख कोई सहता नहीं है।
यही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ ५ ॥

ज़मानो-मकान्[1] में हुआ जो नमायाँ[2]।
अलल[3] में हुआ-यन के इल्लत[4] जो पिनहाँ[5]॥
गरज़ जिस से मुमकन[6] है नैरंग[7]-इमकाँ[7]।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ ६ ॥

किसी शै की हस्ती नहीं जिस से बाहिर।
हर इक नूर[8] जिस नूर से है मुनव्वर[9]॥
जो बेमिसल[10] आनन्द का है समुन्दर।
यही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ ७ ॥

जिसे मेहरे[11] मौजूद माना है सब ने।
जिसे अपना मक़सूद[12] माना है सब ने॥
जिसे ग़ैरमहदूद[13] माना है सब ने।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥ ८ ॥

[ ३२२ ]

ग़ज़ल

हर बार नई शकल[14] से आलम[15] में अयाँ[16] हूं।
हूँ तिफ़ला[17] कभी, पीर[18] कभी, गह[19] जवां, हूँ ॥ १ ॥

---

१ देश, काल, २ प्रकट, विद्यमान, ३कारणों में, ४ कारण, ५ छिपा हुआ, अप्रकट, गुप्त, ६ नानत्व, ७ सम्भवता, ८ प्रकाश, ज्योति, ९ प्रकाशवान् या ज्योतिमय, १०अद्वितीय,११सूर्य, अथवा कवि का नाम,१२ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य, १३ अपरिच्छिन्न वा अनन्त, १४ रूप, १५ सृष्टि, जगत, १६ प्रकट, विद्यमान, १७ बालक, शिशु, १८ वृद्ध, १९ कभी।

मसजिद में कभी हूँ कभी बुतखाने[1] में मसकन[2] ।
वाइज़[3] हूँ किसी जा पे कहीं पीरमुग़ाँ[4] हूँ ॥ २ ॥

मिसले-दहने-यार[5] हूँ एक नुक़तह-ए-मौहूम[6] ।
क्या कोई क़ज़िया[7] हूँ कि मुहताजे-बियान्[8] हूं ॥ ३ ॥

बनता हूँ मुसव्वर[9] कभी और कभी तस्वीर[10] ।
गोया[11] हूँ कभी और कभी गूंगे की ज़ुबान् हूँ ॥ ४ ॥

कहता हूँ जो मन्सूर[12] के मानिन्द[13] अनलहक़[14] ।
मैं होश में उस वक़्त असद[15] अपने कहां हूँ ॥ ५ ॥

[ ३२४ ]*

गज़ल

मुझे बेखुदी! तू ने भली चाशनी चखाई ।
किसी आरज़ू[16] की दिल में नहीं अब समाई ॥ १ ॥

न हज़र[17] है, न खतर[18] है, न रजा[19] है, न दुआ[20] है ।
न ख्याले-बन्दगी[21] है, न तमन्ना[22] है खुदाई ॥ २ ॥

---

१ मन्दिर, २ रहने वाला, स्थित, ३ उपदेशक, ४ मौलवी, पूजारी ; गुरू, ५ प्यारे के मुँह के सदृश्य, ६ कल्पित बिन्दु, ७ वृतान्त, कहानी, वारदात ८ जिस के वर्णन करने की आवश्यकता है, ९ चित्रकार, १० चित्र, ११ वक्ता, १२ एक मस्त का नाम, १३ सदृश, १४ शिवोऽहं, अहं ब्रह्मास्मि, १५ कवि का नाम, १६ इच्छा, जिज्ञासा, १७ भय, १८ डर, १९ आशा, विश्वास, २० प्रार्थना, २१ सन्ध्योपासना का विचार, २२ अभिलाषा ।

* बीच में भजन नं० २७८ की संख्या दो बार भूल से दी गई थी इस लिए यहाँ एक संख्या जान बूझ कर बढ़ा दी गई है ।

न मुक़ामे-गुफ्तगू[1] है, न महले-जुस्तजू[2] है।
न वहां हवास[3] पहुंचें, न खिरद[4] को है रसाई[5] ॥ ३ ॥

न मकां[6] है न मकीं[7] है, न ज़मां[8] है न ज़मीं[9] है।
दिले-बेनवा[10] ने मेरे, वहां छावनी है छायी ॥ ४ ॥

न वसाल[11] है, न हिज़रां[12], न सरूर[13] है, न ग़म है।
जिसे कहिये ख्वाबे-ग़फ़लत[14], सो वह नींद मुझको आई ॥५॥

[ ३२५ ]

ग़ज़ल

जिधर देखता हूँ खुदा ही खुदा है।
खुदा से नहीं चीज़ कोई जुदा है ॥ १ ॥

जब अव्वल और आखिर खुदा ही खुदा है।
तो अब भी वही, कौन इस के सिवा है ॥ २ ॥

है आग़ाज़[15]-व-अंजाम[16] जेवर[17] का ज़र[18] में।
म्यान्[19] में न हरगिज़[20] वह ग़ैरे-तिला[21] है ॥ ३ ॥

वही आप हर एक सूरत में आया।
कहीं आबो-आतिश[22], ज़मीनो-हवा है ॥ ४ ॥

---

१ वाणी का स्थान, २ जिज्ञासा का स्थान व आधार, ३ ज्ञान-इन्द्रियां, ४ बुद्धि, ५ पहुँच, ६ देश, स्थान, ७ स्थान वाला, ८ काल, ९ पृथिवी, १० बिना हथ्यारों वा साधनों के दिल ने, ११ मिलाप, १२ जुदाई, १३ आनन्द, चैन, १४ सुषुप्ति, १५ आरम्भ, आदि, १६ अंत, १७ भूषण, १८ स्वर्ण, १९ बीच में, २० कदापि, २१ स्वर्ण से भिन्न, २२ जल-अग्नि।

खुदा में दूई[1] को जो देता दखल है।
वही काफ़रो-मुन्कर[2] व अहले-ख़ता[3] है ॥ ५ ॥

कहां उसको दूर और जुदा ढूँढते हो।
हमेशा है हाज़िर न हरगिज़ छुपा है ॥ ६ ॥

जिसे तुम समझते हो दुन्या पे ग़ाफ़िल[4] !
यह कुल हक़[5] ही हक़, न जुदा न मिला है ॥ ७ ॥

सफ़ाती यक़ीन[6] से हटा दिल को देखो।
यही एक ज़ाते-खुदा जा बजा[7] है ॥ ८ ॥

यही चीज़ ज़ाती[8], यही है सफ़ाती[9]।
सिर्फ़ इक तय्यन[10] में दो हो रहा है ॥ ९ ॥

नज़र आती हैं मुख़्तलिफ़[11] सूरतें गो[12]।
मगर रूये-मानी[13] से सब यक्ता[14] है ॥ १० ॥

हर इक चीज़ हस्ती[15] में अपनी है क़ायम[16]।
नहीं पैदा होता नहीं कुछ फ़ना[17] है ॥ ११ ॥

नहीं होता हरगिज़ फ़ना का फ़ना भी।
हुआ इससे साबित[18] बक़ा[19] ही बक़ा है ॥ १२ ॥

धर्मदास समझेगा वह बात मेरी।
दूई से किया जिस ने दिल को सफ़ा है ॥ १३ ॥

---

१ द्वैत, २ नास्तिक, ईश्वर न मानने वाला, ३ अपराधी, ४ अज्ञानी, ५ सत्य स्वरूप, ६ गुण और रूप अर्थात् नामरूपपर विश्वास, ७ सर्वत्र, ८ असली, ९ नकली, १० उपाधि व खयाल, ११ भिन्न-भिन्न रूप, १२ यद्यपि, १३ भीतर से, लक्ष्यार्थ से, १४ एक है, १५ निज स्वरूप, १६ स्थित, १७ नाश, १८ सिद्ध, १९ अविनाशी।

# राम-वर्षा

## दूसरा भाग

# विविध तरंग

# वेदान्त

## ❋ आज़ादी ❋

सोहनी, ताल दीपचन्दी

बल बे आज़ादी ! ख़ुशी की रूह[1] ! उम्मीदों की जान ।
बुलबुला सा दम से तेरे पेच खाता है जहान ॥
मुल्के-दुन्या के तेरे बस इक क़शमा[2] पर लड़े ।
ख़ून के दरया बहाये, नाम पर तेरे मरे ॥
हाय मुक्ति ! रुस्तगारी[3] ! हाय आज़ादी ! निजात[4] ।
मक़सदे-जुमला मज़ाहब[5] है फ़क़त तेरी ही ज़ात ॥

---

१ आनन्द के स्वरूप, २ खेल, नख़रा टख़रा, ३ छुटकारा, ४ मुक्ति, ५ सब मतों वा धर्मों का उद्देश्य वा लक्ष्य ।

उंगलियों पर बच्चे गिनते रहते हैं हफ़्ते[1] के रोज़।
कितने दिन को आयेगा यकशम्बह[2] आज़ादी-फ़रोज़[3] ॥
रम ब्रांडी के मुक़य्यद्[4] सच्ची आज़ादी से दूर।
हो गये नशे पै लट्टू, बहरे-आज़ादी-सरूर[5] ॥
साहिबो! यह नींद भी मीठी न लगती इस क़दर।
क़ैदे-तन से दो घड़ी देती न आज़ादी अगर ॥
क़ैद में फँस कर तड़पता मुर्ग़ है हैरान हो।
काश[6]! आज़ादी मिले तन को, नहीं तो जान को।
लम्हा[7] जो लज़्ज़त मये का था वह आज़ादी का था।
सच कहें, लज़्ज़त मज़ा जो था वह आज़ादी ही था ॥
क्या है आज़ादी? जहाँ जब जैसा जी[8] चाहें करें।
खाना पीना ऐश[9] गुलछर्रों में सब दिन काट दें ॥
राग शादी नाच इशरत[10] जलसे रंगा रंग के।
बंगले, बाग़ाते-आली योरोपियन[11] ढंग के? ॥
क़ता[12] टोपी की नयी, फ़ैशन निराला बूट का।
दिलकशो[13]-बेदाग़ खिलना बदन पर वह सूट का? ॥
दिलको रंगत जिस की भाये शादी[14] बेखटके करें।
धर्म की आयीनें[15] चुपके ताक पर ले कर धरें? ॥
खच्चरें फिटन के आगे कोचवान् का पोश पोश।
अबलक़ों[16] का बढ़ निकलना, हिनहिनाना जोश जोश॥

---

१ सप्ताह के दिन, २ रवि-वार, ३ आज़ादी देने वाला, ४ आसक्त क़ैदी, ५ आज़ादी के आनन्द की ख़ातिर, ६ ईश्वर करे, ७ काल, घड़ी, पल, ८ चित्त, ९ विषय भोग, १० विषयानन्द, ११ अंग्रेज़ों की तर्ज़ के मकान, १२ वज़ा, तर्ज़, १३ चित्ताकर्षक, १४ खुशी, १५ नियम, शास्त्राज्ञा १६ घोड़े।

कोट पैहनाता है नौकर, जूता पैहनाये ग़ुलाम।
नाक चढ़ाता है आक़ा, जल्द बेनुतफ़ा हराम!॥

मुँह में पट पट सोडावाटर और सिगारों का धूँवा।
ज़ोफ़[1] की दिल में शिकायत, राम की अब जा[2] कहां?॥

क्या यह आज़ादी है? हाय! यह तो आज़ादी नहीं।
गोये[3]-चौगाँ की परेशानी है, आज़ादी नहीं॥

अस्प[4] हो आज़ाद सरपट, क़ैद होता है स्वार।
अस्प हो मुतलक़[5] इनां[6], हैरान रोता है स्वार॥

इंद्रियों के घोड़े छूटे बाग डोरी तोड़ कर।
वह मरा वह गिर पड़ा, अस्वार सिर मुँह फोड़ कर॥

ताज़ी[7] तौसन तुन्दखू[8] पर दस्तो-पा[9] जकड़े कड़े।
ले उड़ा घोड़ा मिज़प्पा[10], जान के लाले पड़े॥

जाने[11]-मन! आज़ाद करना चाहते हो आप को।
कर रहे आज़ाद क्यों हो आस्तीं[12] के साँप को?॥

हाँ वह है आज़ाद जो क़ादिर[13] है दिल पर जिस्म पर।
जिसका मन क़ाबू में है, क़ुदरत[14] है शक्लो-इस्म पर॥

ज्ञान से मिलती है आज़ादी यह राहत[15] सर बसर[16]।
वार के फैंकू मैं इसपर दो जहां का मालो-ज़र[17]॥

---

१ कमज़ोरी, २ स्थान, जगह, ३ खेलने वाले गैंद, ४ घोड़ा, ५ पूरा, बिलकुल, ६ अपने वश में अर्थात् लगाम डोरी से क़ाबू कीया हुवा, ७ अरबी घोड़ा, ८ बदमिज़ाज, तेज़, ९ हाथ पाँव जकड़े हुए, १० नाम है, ११ ऐ मेरी जान (प्यारे), १२ बग़ल के सर्प को, १३ बलवान, बली, १४ ताक़त, बल, १५ आराम, १६ लगातार, १७ धन, दौलत।

## * वेदान्त आलमगीर *

[ ३२७ ]

(१) गर कमिशनर हो लाट साहब हो।
या कोई और ग़ैर साहब हो॥
हर[1] कोई उस तलक नहीं आता।
अधिकारी ही है दख़ल पाता॥
लैके जब अपने घर में आना हो।
कौन है उस वक़्त जो माने:[2] हो॥
जब कोई अपने घर को आता है।
हैफ़[3] उस पर है, रोकता जो है॥
हो जो वेदान्त, ग़ैर से यारी।
तब तो कहना बजा था अधिकारी॥
यह तो जी! अपने घर की विद्या है।
पाना इस को फ़र्ज़ सब का है॥
"मैं हूँ खुद ब्रह्म" यह करो अभ्यास।
मैं नहीं जिस्मो[4]-इस्मो—नौकर, दास॥
"मैं हूँ बेलौस[5], पाक, आला[6] ज़ात"।
जेहल[7] की हो कभी न जिस में रात॥
मैं हूँ खुर्शेद[8] तेज़ अनवर[9] आप।
मैं था ब्रह्मा का बाप सब का बाप॥

---

१ किंतु, २ मना करने वाला, रोकने वाला, ३ अफ़सोस, शोक, ४ शरीर और नाम, ५ निष्कलंक, स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र, निर्लिप्त, ६ परम स्वरूप, ७ अविद्या, अज्ञान ८ सूर्य, ९ प्रकाश स्वरूप।

देद है मेरा एक खर्राटा।
भेद दुन्या का मेरा खर्राटा॥
राम कहता नहीं है सैकिंडहैंड[1]।
वह तो खुद है श्रुति, न सैकिण्डहैंड॥
वह जो कमज़ोर आप होते हैं।
लुक़माये[2] तीन ताप होते हैं॥
हों न पढ़ाने के जो अधिकारी।
उन को मिलता नहीं है अधिकारी॥

(२) एक दफ़ा देव-ऋषि नारद ने।
रहम कर खूक[3] से कहा उस ने॥
"चल, तुझे ले चलेंगे हम बैकुण्ठ।
लीला अद्भुत विचित्र है बैकुण्ठ॥
खूक बोला ग़ज़ब से तब नादाँ।
क्या मुझे मिल सकेगा कीचड़ वाँ[4]?॥
जब ऋषी ने कहा "नहीं यह तो"।
खूक बोला "मैं जाऊं काहे को?"॥
यह न समझा वहां जो जाऊँगा।
जिस्म भी तो नया ही पाऊँगा॥
हविसे-दुन्या[5] के प्यारे शहतीरां!।
ऐ सतूनहाये दुन्या या बोह्तान[6]!॥
तुम न जी[7] में ज़रा भी घबराओ।
खटका मुतलक़ न दिल में तुम लाओ॥

---

१ दूसरे से सुनी सुनाई, २ ग्रास, ३ बराह, सूअर, ४ वहाँ से मुराद है, ५ दुन्या का लालच, ६ झूटे, ७ चित्त।

"हाय ! वेदान्त क्या ही कर देगा ।
ज़ेर[1] कर देगा, ज़बर[2] कर देगा ॥
तुम रखो अपने जी में इतमीनान[3] ।
शक नहीं इस में रत्ती भर तू जान ॥
गर अवारज़[4] तेरे बदल देगा ।
साथ तुम को भी और कर देगा ॥
लोटना छोड़ियेगा कीचड़ में ।
जालसाज़ी में, झूठ की जड़ में ॥
ख़ाक दुन्या की मत उड़ाइयेगा ।
असल अपना न भूल जाइयेगा ॥
"मैं हूँ यह जिस्म", फ़ोहश बोली है ।
स्वांग छोड़ो, सितम[5] यह होली है ॥

( ३ ) मिसर की खोद लीं जो मीनारें ।
हाये ! मुर्दों भरी वह मीनारें ॥
ममी मुर्दे उन्हीं में रक्खे थे ।
ऐसी तरकीबो-अक़्लमन्दी से ॥
गो हज़ारों बरस भी हो बीते ।
मुर्दे आते नज़र हैं जूं जीते ॥
प्यारे भारत के हिन्दू बाशिन्दो ! ।
गुस्सा मत करना ज़ाहिदो[6] ! रिन्दो[7] ॥
जी रहे हो कि मर गये हो तुम ? ।
ममी मीनार बन गये हो तुम ? ॥

---

१ नीचा, २ ऊंचा, ३ धैर्य, हौंसला, तसल्ली. ४ ईंट गिर्द. अड़ोस-पड़ोस ५ ग़ज़ब की होली, ६ कर्मकाण्डी, ७ मस्त ।

जीते तुम थे ऋषी मुनी थे जब।
ममी क्यों हो हज़ार साल के अब?॥
क्यों हो ज़िन्दा[1] बदस्ते-मुर्दा आप।
नाम रौशन डबोया उन का आप॥

वह तो जीते थे, तुम भी जी उट्ठो।
मुर्दा बच्चे न उन के हो बैठो॥
नाम तो ले रहे हो व्यास का तुम।
काम करते हो अदना[2] दास का तुम॥

बेटा वही सपूत होता है।
बाप से बढ़ के जो पूत होता है॥
छोड़ दो नाम लेना ऋषियों का।
खुद ऋषी हो अगर न अब बनना॥

जब यह कहता है एक नालायक़।
"भृगू मेरा बुजु़र्ग[3] था लायक़"॥
भृगू मनसूब[3] उस से होता है।
शर्म से अर्क़[4]-अर्क़ रोता है॥

दुःख मत दो उन्हें सताओ मत।
शर्म से सर नगूं[5] बनाओ मत॥
नाम-लेवे[6], अजब मिले ऐसे।
धब्बे यह नाम को लगे कैसे?॥

मूंछ दाढ़ी लगा के बुढ्ढे की।
बच्चा बूढ़ा नहीं कभी होगा॥

---

१. जीते जी मौत के हाथ होना, २ तुच्छ दास, ३ संबन्धी, ४ पसीना पसीना रोना, ५ नीचे सिर वाला, ६ नाम लेने वाले।

उस को वाजिब है तरबीयत[1] पाये।
वक़्त पर यूं बुज़ुर्ग ही होगा॥
उनकी डाढ़ी लगाया चाहते हो।
तरबीयत से गुरेज़[2] करते हो॥
है मुनासिब बुज़ुर्ग की ताज़ीम।
खंदाबर[3] न चाहिये तकरीम[4]॥
बूढ़ा खाता है खिचड़ी पतली रोज़।
नक़ल से कब जवान हो पीरोज़[5]॥
प्यारे! बनियेगा आप ज़िन्दा पीर।
उन बुज़ुर्गों की मत बनो तस्वीर॥
नक़्श जब है उतारता नक़्क़ाश[6]।
तकता रहता है असल को नक़्क़ाश॥
नक़्श यह गरचे: बादशाह का हो।
फिर भी मुर्दा है, ख़्वाह किसी का हो॥
फ़ेल[7] अतवार[8] ऋषियों मुनीयों के।
ऋषी तुम को नहीं बना सकते॥
अमल ज़ाहिर जो उन को ज़ेबा थे।
वक़्त था और, और ही दिन थे॥
जिस्म उन के थे जो, उन्हीं के थे।
वह तुम्हारे नहीं कभी होंगे॥
करके तक़लीद[9] तुम बना ही लो।
सूरते-शेर, नारह[10] क्योंकर हो?॥

---

१ पालन पोसन, शिक्षा पाना, २ भागना, ३ हंसते मुख से, ४ इज़्ज़त ५ बुड्ढा, ६ चित्रकार, ७ कर्म, ८ विधियाँ, ९ और की देखा देखी, बिना विवेचना के किसी की पैरवी करना, या नक़ल करना, १० गर्ज़।

आओ तज़वीज़ एक बतलायें।
ऋषी बनने की बात जतलायें॥
देह सूक्ष्म को और कारण को।
चीर कर चढ़िये मेहरे[1]-रौशन को॥

चढ़िये ऊपर को असल अपने को।
ज़िंदगी तुम में भी ऋषी की हो॥
मेहरे-रौशन जो आत्मा है तेरा।
यह ही वासिष्ट कृष्ण राम का था॥

उस में निष्ठा, नशस्त कर मुख़्तार।
छोड़िये ज़िकरो-फ़िकर सब बेकार॥
नक़्ल मत कीजीये फ़ेल-बेरूनी[2]।
आत्मा एक ही है अन्दरूनी॥

ब्राह्मणो! आप सीख लो विद्या।
फिर यह घर-घर फिरो पढ़ाते जा॥
और क़ौमें तुम्हारे बच्चे हैं।
गर शिकायत करें, वह सच्चे हैं॥
जबर से, क़हर[3] से, मुहब्बत से।
ज्ञान दीजे उन्हें मुरव्वत[4] से॥

वक़्त उपदेश को अगर दोगे।
तो ही क़ायम स्वरूप में होगे॥
गंगा हर वक़्त बैहती रहती है।
साफ़ निर्मल जभी तो रहती है॥

---

१ प्रकाश स्वरूप सूर्य ( आत्मा ), २ बाहर से कर्मों की, ३ सख़्ती या गुस्से से, ४ लिहाज़ से।

काँटे बोता है, झूट हो जिस में।
याद रखना है मौत ही उस में॥

## * ज्ञान के बिना शुद्धि नामुमकिन *

[ ३२८ ]

पिदरे[1]-मजनूँ ने पिदरे-लैली[2] से।
गिरया[3]-ज़ारी से आ कहा उसने॥
मेरी सारी रियासतें लीजे।
उमर भर तक गुलाम कर लीजे॥
मेरे लड़के को लैली जादू-चश्म[4]।
दीजे, छोड़ दीजे, आख़िर ख़श्म[5]॥
पिदरे-लैली ने फिर मुहब्बत से।
यूं कहा प्यार ही का दम भर के॥
मैं तो हाज़िर हूँ लैली देने को।
उज़र कोई भी है नहीं मुझ को॥
पर वह आख़िर जिगर का टुकड़ा है।
न वह पत्थर शजर[6] का टुकड़ा है॥
वह भी इन्सां-शिकम[7] से आयी है।
आस्माँ से तो गिर न आयी है॥
क़ैस[8] तुम को अज़ीज़ बेशक है।
पर वह मजनूँ[9] है, इस में क्या शक है॥

---

१ मजनू (एक प्यारे या आशिक़) का पिता, २ लैली (प्रिया वा माशूक़ा) का पिता, ३ रोते रोते ४ जादू भरे नेत्र वाली, ५ गुस्सा, ख़फ़गी, ६ वृक्ष, दरख़्त, ७ मनुष्य के पेट, ८ मजनूँ, ९ पागल।

ऐसी हालत में लड़की क्योंकर दूं ?।
इक जनूनी के मैं गले मढ़ दूं ? ॥
मज़[1] मजनूँ का पहले दूर करो।
सिर से सौदा अगर काफ़ूर करो ॥
शौक़ से लीजे, तब तुम्हारी है।
लैली दौलत यह सब तुम्हारी है ॥
हाय ज़ालिम, सितमगर ! बे रह्म !।
बाये नादाँ ग़रूर सूरते ज़ौह्म[2] ! ॥
देता लैली को बाये आज नहीं।
और मजनूँ का तो इलाज नहीं ॥
और तो सब इलाज कर हारा।
बचता मजनूँ नहीं वह बेचारा ॥
मारा मजनूँ बग़ैर लैली के।
था न चारा[3] बग़ैर लैली के ॥
हिन्दू पंडित महात्मा साधो !।
जी कड़ा क्यों है ? रैह्म को राह दो ॥
जीव मजनूँ बना है दीवाना।
दशते-ग़म छानता है वीराना ॥
दशते-दुन्या[4] में बेहूशी आवारह।
लैली "आनन्द" के लिये पारह[5] ॥
लैली समझे गुलों को चुनता है।
फिर पड़ा सिर को अपने धुनता है ॥
सरू[6] को जान कर यह लैली है।

---

१ पागल पन, २ दुःख रूप ( तकलीफ़ देने की सूरत वाला ), ३ इलाज़, ४ दुन्या के जंगल, ५ बेक़रार, अशान्त, अस्थिर, ६ एक वृक्ष का नाम है।

वह्म से जान, अपनी खो दी है ॥
चश्मे-आहू[1] को चश्मे-लैली[2] मान।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान ॥
असली आनन्दे-ज़ात से महरूम[3]।
ख़ारो-ख़स[4] में मचा रहा है धूम ॥
गाह[5] आनन्द दार को माने है।
बौल[6] में गाह ख़ाक छाने है ॥
लोग कहते न हों बुरा मुझ को।
नंग रह जावे, नाक हाथी को ॥
राये लोगों की, अहो मुतग़य्यर[7]।
इस के पीछे फिरे है मुतहय्यर[8] ॥
सारी वहशत,[9] यह बादिया-गर्दी[10]।
लैली ख़ातिर है, जुमला[11] सिरदर्दी ॥
लैली मिलती जुनूँ[12] जायेगा।
ब्रह्म-विद्या बिदूँ[13] न आयेगा ॥
शम दम आयेंगे ब्रह्म-विद्या से।
फ़िकर जायेंगे ब्रह्म विद्या से ॥
शम हो पहले, ज्ञान पीछे हो।
सेर[14] हो लें, तुआम[15] पीछे हो ॥
हाये पंडित! ग़ज़ब यह ढाते हो।
उलटी गङ्गा पड़े बहाते हो ॥

---

१ मृगनयन, मृग की आँख, २ लैली का नेत्र, ३ रहित, विहीन, बेख़बर, ४ ख़ाक मिट्टी में, ५ कभी, ६ मूत, पेशाब (अभिप्राय विषय भोग), ७ बदलने वाली, ८ आश्चर्यवान, हैरान हुए, ९ पशुपन, १० जंगलों में घूमना, ११ सब, कुल, १२ पागलपन, १३ बिना, बग़ैर. १४ तृप्त. सन्तुष्ट. १५ भोजन खाना।

यह इसी[1] पाप का नतीजा है।
डूबे दुःखों में आज जाते हो॥

वेद-दानों ! यह मौत मत रखना।
धीः[1] को, बुद्धि को घर में मत रखना॥

लड़की घर में न ज़ेब[2] देती है।
धन पराया फ़रेब देती है॥

ब्रह्म-विद्या का दान अब कर दो।
वरना इज़्ज़त से हाथ धो बैठो॥

वक़्त देखो, समय को संभालो।
ज़ात क़ायम हो, क़ाया[3] पलटा लो॥
नंगो-नामूस अब इसी में है।
बचना ज़िल्लत से बस इसी में है॥

डूबा तारा तुम्हारा पूरब को।
ब्रह्म-विद्या चली है यूरप को॥

हिंद मजनूँ बना है दीवाना[4]।
तलमलाता है मिस्ले-परवाना[5]॥

मुज़दहे-वसल[6] अब सुना देना।
खुशो-खुर्रम[7] अदा से गा देना॥

वेद का क़र्ज़ यह चुका देना।
फ़र्ज़ अपना यह कर अदा देना॥

---

लड़की रूपी बुद्धि, २ अच्छी लगती है, ३ शरीर, ४ पागल, ५ पतंग की तरह, ६ अभेदता ( आत्म-साक्षात्कार ) की खुश ख़बरी, ७ प्रसन्न मुखड़े से।

[ ३२९ ]

**॥ गुनाह ॥**

पाप क्या है ? गुनाह कितने हैं ? ।
दाख़िले-जेहल[1] सारे फ़ितने[2] हैं ॥
आत्मा जिस्म ही को ठैहराना ।
बूटा पापों का यह है लगवाना ॥
आत्मा पाक[3], हस्त[4], बरतर[5] है ।
इल्म-वाहिद[6], सरूरो-अकबर[7] है ॥
जिस्म[8] को शाने-आत्मा[9] देना ।
रात को आफ़ताब[10] कह देना ॥
किज़बे-बुतलाँ[11] यही है पाप की जड़ ।
एक ही जेहल तीन ताप की जड़ ॥
क्या तकब्बुर[12] है ? किबरयाई[13]-ए-ज़ात (को) ।
बेच देना द्रोग़[14] जिस्म के हात ॥
क्रोध क्या है ? जलाले[15]-वाहिदे-ज़ात (को) ।
बेच देना द्रोग़-जिस्म के हात[16] ॥
क्या है शहवत[17] ? सरूरे-पाके-ज़ात[18] ।
बेच देना हक़ीर[19] जिस्म के हात ॥

---

१ अज्ञान में प्रविष्ट, २ फिसाद, झगड़े, ३ शुद्ध, पवित्र, ४ सत्ता मात्र, वास्तविक वस्तु, ५ परम, सर्वोपरि, ६ अद्वैत ज्ञान, ७ घनानन्द, ८ शरीर, देह, ९ आत्मा का पद, १० सूर्य, ११ झूट मूठ, व्यर्थ झूठ, तुच्छ झूठ, १२ अभिमान, अहंकार, १३ निज स्वरुप की बड़ाई, १४ झूटा शरीर, १५ अद्वैत स्वरुप की महिमा वा रौनक़, १६ हाथ, कर, १७ विषयानन्द, १८ शुद्ध स्वरुप आत्मा का आनन्द, १९ तुच्छ ।

क्या अदावत[1] है ? पाक वहदते-ज़ात[2]।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
हिर्स[3] क्या ? सब पै कबज़ा-ए-कुल्ली[4]-ए-ज़ात।
वेचा देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
मोह क्या है ? क़यामे-यकसाँ[5] ज़ात।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
बस गुनाह क्या है ? आत्मा का हक़[6];
जहल[7] को छीन देना हक़ नाहक़[8] ॥
हस्ते[9]-मुतलक़ का जेहल में संसर्ग[10]।
तोशा[11] है पाप का, गुनाह का वर्ग[12] ॥

[ ३३० ]

## ❋ कलियुग ❋

सच्चे दिल से विचार कर देखो।
तुम ने पैदा किया है कलियुग को ॥
"मैं नहीं हूँ खुदा" यह कलियुग है।
"जिस्म ही हूँ", यक़ीन यह कलियुग है ॥
"जिस्म है आत्मा" यह कलियुग है।
चारवाकों का मत, यह कलियुग है ॥

---

१ शत्रुता, दुश्मनी, २ अद्वैत स्वरूप आत्मा, ३ लालच, ४ सर्व व्यापक की मेलकीयत (सर्वव्यापकता) का कब्ज़ा वा अधिकार, ५ एक रस स्वरूप की स्थिरता, ६ अधिकार, ७ अविद्या, अज्ञान, ८ व्यर्थ, बिना प्रयोजन, ९ सत-स्वरूप, १० प्रवेश, दख़ल, ११ भार, असबाब, ज़ख़ीरा, १२ पत्ता, फल।

खाऊँ, पीयूं, मज़े उड़ाऊँगा।
हां विरोचन[1] का मत, यह कलियुग है॥
बंदा-ए-जिस्म[2] ही बने रहना।
सब गुनाहों का घर, यह कलियुग है॥
जिस्म से कर निशस्त[3] अपनी दूर।
हू जीये[4] आत्मा में ख़ुद मसरूर[5]॥
जिस्म में गर निवास रक्खोगे।
ज्ञान से गर हिरास[6] रक्खोगे॥
पाप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़।
ताप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़॥
दूर कलियुग अभी से कीजेगा।
दान दीजेगा, दान दीजेगा॥
ठीक कर युग है, यह नहीं कलियुग।
दान कर दूर, कीजीये कलियुग॥
दिल पर गैहन[7] लग गया काला।
दान देने से खोल हो बाला॥

[ ३३१ ]

॥ दान ॥

दान होता है तीन क़िस्मों का।
अन्न का, इल्म का, व इरफ़ां[8] का॥

---

१ असुरों के राजा का नाम है, जो केवल शरीर को आत्मा कर के मानता और पूजता था, २ शरीर का अनुचर, दास, गुलाम वा देहासक्त बने रहना, ३ निष्ठा, स्थिति, ४ हो जाइये, या हो बैठिये, ५ आनन्द, मग्न, ६ भय, ७ ग्रहण, ८ आत्म ज्ञान (ब्रह्मविद्या)।

अन्न का दान एक दिन के लिये।
जिस्मे-बेरूँ[1] को तक़वीयत[2] देवे॥

इल्म का दान उमर भर के लिये।
जिस्मे-दोयम[3] को कर धनी देवे॥

दान इर्फ़ां का ता अबद[4] दायम।
कर सरूरे-अज़ल[5] में दे क़ायम॥

सब से बढ़ कर तो तीसरा है दान।
दान इर्फ़ां का, ज्ञान ही का दान॥

पंडितो! ज्ञान दान दीजेगा।
हिंद में आम दान दीजेगा॥

गर[6] यह कलियुग का गोहन[7] है बाक़ी।
कसर है ज्ञानदान देने की॥

लो बला टल गयी है, वाह वाह वा।
हिंद रौशन हुआ है, आहाहा हा॥

जाओ कलियुग, यहाँ से जाओ तुम।
भागो भारत से, फिर न आओ तुम॥

हुक्मे-नातिक़[8] है राम का तुम पर।
बंधिये बिस्तर को अब उठाओ तुम॥

हिंद ही रह गया है क्या तुम को?।
आग में, जल में, सिर छिपाओ तुम॥

---

१ बाह्य (स्थूल) शरीर, २ बुद्धि, ३ यहाँ अभिप्राय सूक्ष्म शरीर से है ४ नित्य सदा के लिये, ५ अनादि नित्यानन्द, ६ यदि, अगर, ७ ग्रहण, ८ अटल आज्ञा अर्थात् न टूटने वाला हुक्म।

[ ३३२ ]

## ॐ नै ॐ

ख़ाली बिलकुल है बांस की यह नै[1] ।
चन्द सूराख़दार बेशक है ॥
बोसा[2] देता है उस को जब नाई[3] ।
निकस उस नै से सात सुर आईं ॥
रागनी राग सब हुए ज़ाहिर ।
मुख़्तलिफ़ भाग सब हुए बाहिर ॥
एक ही दम[4] ने यह सितम ढाया ।
कलेजा अब बल्लीयों[5] उछल आया ॥
सब सुरों में जो मौज मारे है ।
दम वह तेरा ही कृष्ण प्यारे है ॥
दम तो फूंके था एक मुरलीधर ।
मुख़्तलिफ़ ज़मज़मे[6] बने क्योंकर ? ॥
सामया[7], बासरा[8], ख़्याली-अक़्ल ।
सब में वासिल[9] हुआ, करे है नक़्ल ॥
मर्द, औरत, गदा[10] में, शाहों में ।
क़हक़हों, चेहचहों में आहों में ॥
क़ुतब[11] तारे में, मेहर[12] में, माह[13] में ।
झोंपड़े में, मेहलसरा, राह में ॥

---

१ बांसुरी, २ चुम्बन, चूमना, ३ बांसुरी बजानेवाला, ४ श्वास, फूँकना, ५ कलेजा आनन्द से इतना लेहराने लगा कि प्रसन्नता अन्दर न समा सकी, ६ राग, गीत, सुरें, ७ सुनने की शक्ति, ८ देखने की शक्ति, ९ अभेद हुआ, १० साधु, फ़क़ीर, ११ ध्रुव तारा, १२ सूर्य, १३ चाँद ।

एक ही दम का यह पसारा है।
सब में वासिल है, सब से न्यारा है॥
दारे-दुन्या[1] की इक तिही[2] में।
प्राण तेरे ने राग फूंके हैं॥
तू ही नाई है, कृष्ण प्यारा है।
सारी दुन्या तेरा पसारा है॥

[ ३३२ ]

❀ शीश मन्दिर ❀

शीश मन्दिर में इक दफा बुल[3]-डाग।
आ फँसा तो हुआ बगूला आग॥
जौक़ दर[4] जौक़[4] पल्टनें सग[5] थे।
ठट के ठट[6] लग रहे थे कुत्तों के॥
सख़्त झुंजलाया यह, वह झुंजलाये।
चार जानिब[7] से तैश[8] में आये॥
बिगड़ा मुँह इस का, वह भी सब बिगड़े।
जब यह उछला, वह सब के सब कूदे॥
जब यह भौंका, सदाये-गुम्बज़[9] से।
क्या ही औसाँ[10] खता हुए इस के॥
"मैं मरा, मैं मरा" समझ कर वाये!।
मर गया डाग, सिर को धुन कर वाये!॥

---

१ दुन्या का घर, २ ख़ाली ( खोखली ) बांसरी, ३ एक प्रकार का कुत्ता, ४ गिरोह के गिरोह, ५ कुत्ते, ६ झुण्ड के झुण्ड, ७ चारों ओर से, ८ गुस्सा, ९ गुम्बज़ की आवाज़, १० आश्चर्यमय, घबराहट युक्त से चित्त।

शीश मन्दिर में आ के कुत्ता को।
जाहिले-ग़ैर-दान्[1] मरा भौंके ॥
नैह में क्यों भरमता जाता है।
अपने आपे में क्यों न आता है ॥

[ २३४ ]

### ❋ दृष्टान्त ❋

शीह[2] मालिक मकान का आया।
मर्दे-दाना[3] ने जल्वा[4] फ़रमाया ॥
रूये[5]-ज़ेबा को हर तरफ़ पाया।
फ़र्ते-शादी[6] से सीना भर आया ॥
फ़र्शे-अतलस नफ़ीस झालरदार।
अतरो-अंबर लतीफ़ ख़ुशबूदार ॥
तख़्ते-ज़री[7] पे रेशमी तकिये हैं।
गद्दे-मख़मल के ज़ेब देते हैं ॥
बैठा उससे से ज़ीनते-ख़ाना[8]।
गुद गुदी दिल में, झूमता शाना[9] ॥
जब नज़र चार सू[10] उठा देखा।
कुछ न अपने से मासिवा[11] देखा ॥
गरचे वाहिद[12] था, पर हज़ारों जा[13]।
जल्वा अफ़गन[14] रूये-सफ़ा[15] देखा ॥

---

१ द्वैत देखने वाला मूर्ख वा अज्ञानी, २ ईश्वर, ३ ज्ञानी पुरुष, ४ दर्शन दिया, ५ सुन्दर स्वरूप, ६ आनन्द की अधिकता से, ७ सुनैहरी तख़्त, ८ घर को रौनक देने वाला स्वस्वरूप, ९ कंधे, १० तरफ, ११ इतर, अतिरिक्त, १२ अद्वैत, १३ स्थान, १४ प्रकाशमान, १५ शुद्ध स्वरूप।

गाह[1] मूछों को ताओ दे दे कर।
सूरते-वीर-रस[2] में आ देखा॥
करके शृंगार कंघी पट्टी का।
पान होंटों तले दबा देखा॥
तेग़[3] मिसरी के देखने के लिये।
प्यारी प्यारी भवें चढ़ा देखा॥
ग़ंचह-गुल[4] की दीद[5] की ख़ातिर।
क्या तहे-दिल[6] से खिलखिला देखा॥
अब्रे-नेसां[7] का लुतफ़ लेने को।
तार आँसू का भी लगा देखा॥
ग़ैर देखे है जैसे इस तन को।
इस तरह उस से ही जुदा देखा॥
अक्स[8] इक छोड़ असल को आये।
सब वजूदों[9] में फिर समा देखा॥
गोलियां पीली काली सुर्ख़ और सब्ज़।
मुँह से अपने निकाल बाज़ीगर॥
आप ही देखता है अपने रंग।
आप ही हो रहा है मुतहय्यर[10]॥
बैठ हर तरह शीश मन्दिर में।
ठाठी पट्ठे ने बन बना देखा॥
(सुषुप्ति) मस्त कारण शरीर बन लेटा।
चार कूटों में लेटता देखा॥

---

१ कभी, २ वीर पुरुष के रूप में, ३ तलवार, ४ खिला हुआ पुष्प, ५ दृष्टि, ६ दिल भर कर, ७ वर्षा ऋतु का बादल, ८ प्रतिबिम्ब, ९ वस्तुओं (शरीरों) में, १० आश्चर्य, हैरान।

(स्वप्न) खुद जो जिस्मे-ख़्याल को धारा।
जुमला आलम[1] ख्याल का देखा॥
(जाग्रत) जागी सूरत क़बूल की जब खुद।
सब को फिर जागता हुआ देखा॥
तुझ से बढ़ कर हूँ, तेरा अपना आप।
मुझ को अपने से क्यों जुदा देखा॥
एक ही एक ज़ाते-वाहिद[2] राम[3]।
जुमला सूरत में जा बजा देखा॥
गद्दी, तकिये से मैं नहीं हिलता।
हिलता किस ने सुना है या देखा॥
क्यों खुशामद की बात करते हो।
शीशे मसनद[4] मकान ही कब था॥
यह तो सब इक ख़्याली लीला थी।
मौज में अपनी आप ज़ाहिर था॥
मौज भी आप, लीला चीला[5] आप।
लाल नुतक़ो[6]-ज़ुबां, यां पर था॥
नुतक़ में और शब्द में मौजूद।
एक वाहिद सफोट रौशन था॥

[ ३३३ ]

※ कोहे[7]-नूर का खोना ※

जेरे-नादिर[8] हुआ मुहम्मद शाह।
देहली उजड़ी ज़लील अबतर-आई[9]॥

---

१ समस्त संसार, २ अद्वैत तत्त्व, ३ कवि का नाम और ईश्वर से भी मुराद है ४ गद्दी, तख़्त, ५ खेल इत्यादि, ६ बोलने की शक्ति, जिव्हा ७ हीरे का नाम, ८ नादिर बादशाह के अधीन, ९ बहुत बुरा।

गरचे नादिर ने ख़ूब ही ढूँढा।
न मिला कोहे-नूर का हीरा॥
कह दिया इक हरीस[1] लौंडी ने।
है छिपाया कहाँ मुहम्मद ने॥

"उस को पगड़ी में सी के रखता था।
जुदा उस को कभी न करता था"॥

फिर तो बेहद तपाक से आकर।
बोला नरमी से, प्यार से नादिर॥

"ऐ शाहे-मेहर्बान् मुहम्मद शाह!।
यार भाई है तेरा नादिर शाह॥

पगड़ियाँ आज तो बदल लेंगे।
दिल मुहब्बत से खूब भर लेंगे॥
रसमे-उलफ़त[2] अदा[3] करो हमसे।
यह मुहब्बत वफ़ा करो हम से॥

छुट गयीं गो हवाइयाँ मुँह पर।
ज़ाहिर खँदा[4] से बोला "हां हां" कर॥

"शौक़ से पगड़ी बदलियेगा शाह"!।
मारा बेबस रंगीला देहली-शाह॥

थी मुहम्मद को ज़ाहरी इज़्ज़त।
यह तबद्दल[5] था असल में ज़िल्लत[6]॥
क़ीमते-ममलकत[7] से बढ़ कर था।
हीरा पगड़ी में उस को खो बैठा॥

---

१ लालची, २ प्रेम की रीति, रस्म, ३ पूरी करो, ४ ऊपर से हँस कर, ५ बदलना, ६ ख़ुवारी, ७ सारे राज्य की क़ीमत।

ऐ अज़ीज़ों! यह इज़्ज़तो दौलत।
नफ़स नादिर है, घर सरे-उल्फ़त॥
दामे-तज़वीर[1] में न आजाना।
जाँ न भरे[2] में फंस फंसो जाना॥

ख़िलअते-फ़ाख़रह[2] से हो ख़ुर्सन्द[3]।
खो के हीरा बने हो दौलतमंद॥
चैन पड़ने का है नहीं हरगिज़।
अमन हीरे बिना नहीं हरगिज़॥

ज़ाती[4] जौहर से ज़ाती इज़्ज़त है।
बाक़ी मा-ओ-मनी[5] की इल्लत[6] है॥
जब तू फ़ख़रे-ख़िताब लेता है।
आत्मा को अताब[7] देता है॥

तू करीमे-जहाँ[8] है, दाता है।
छोटा अपने को क्यों बनाता है॥
सब को रौनक़ है तेरे जल्वे[9] से।
तुझ को इज़्ज़त भला मिले किस से॥

सनद सर्टीफ़िकेट डिगरी की।
आज़ू[6] में है क़ैदे-ग़म तन की॥
तू तो मा़बूद[10] है ज़माने का।
क़ैद मत हो किसी बहाने का॥

---

१ दाम, फ़रेब का जाल, २ गर्व वा मान का हेतु रूप वस्त्र वा पारितोषिक, ३ प्रसन्न, ४ असली रत्न, ५ अहंकार और धन इत्यादि, ६ बीज, कारण, ७ ख़फ़गी, गुस्सा, क्रोध, ८ संसार का सख़ी ( दाता ), ९ प्रकाश, १० पूजने योग्य, पूजनीय।

[ ३३५ ]

**※ ख़िताब ब नपोलियन[1] ※**

वाह रे नपोलियन! नडर शहे-मर्द।
टिड्डी दल फ़ौज तेरे आगे गर्द॥
"हालट[2]!" कहकर सिपाहे-दुश्मन को।
लर्ज़ाँ[3] कर दे अकेला लश्कर को॥
जाँ-बाज़ी में, शेरे-मर्दी में।
खुश खुशां दश्ते-ग़मनवर्दी[4] में॥
रोब[5] से और ग़ज़ब की सौलत[6] से।
तू बराबर था हिन्दू औरत[7] के॥
राजपूतों की औरतों का दिल।
न हिले, गरचे कोह[8] जाये हिल॥
उन की जानब से शेर को चैलन्ज[9]।
लेक शोहरत के नाम से है रंज॥
पुश्ते-कुश्तों[10] के कर दिये हर सू[11]।
खूँ के जूए[12] भर दिये हर सू॥
मुलक पर मुलक तू ने मार लिया।
पर कहो, इस से क्या सँवार लिया?॥
देना चाहता था राज को वुसअत[13]।
पर मिली हिर्सो-आज़[14] को वुसअत॥

---

१ नपोलियन बादशाह के नाम ख़िताब अर्थात मान पत्र, २ खड़े हो जावो, ३ कम्पा देना, ४ ग़म दूर करने के जंगल में, ५ प्रभाव, ६ दबदबा, डर, ७ स्त्री, ८ पर्वत, ९ बुलावा मुक़ाबला करने वास्ते, १० मरे हुओं के ढेर, ११ हर तरफ़, १२ नदियें, नैहरें, १३ विस्तार, विशालता, १४ लालच, लोभ, आशा।

दिल तो वैसा ही रह गया पियाला ।
जैसा जंगो-जदल[1] से पहिले था ॥

[ ३३७ ]

※ सीज़र[2] ※

ऐ शहनशाहे-जूलयस सीज़र ! ।
सारी दुन्या का तू बना अफ़सर ॥
इतना क़िस्से को तूल क्यों खैंचा? ।
दिल ज़िमीं में फ़जूल क्यों खैंचा ? ॥
सैह्न दिल में रहा तअज्जब[3] खेज़ ।
खदशा[4] पेहलू में, मौजे-दर्द-अंगेज़[5] ॥
आ ! तेरी मंज़लत[6] को बढ़ायें ।
हिन्दू-ए-कैवान्[7] से भी परे जायें ॥
क्यों न इतना भी तुम को सूझ पड़ा ।
जिस में शै[8] आये वह है शै से बड़ा ॥
जुज़्व[9] कुल[10] से हमेशा छोटा है ।
छोटा कमरे से बक्स-व-लोटा है ॥
जबकि तुझ में जहान् आता है ।
आँख में बैह्रो-बर[11] समाता है ॥
कोहो दरया-ओ-शैहरो स्वहरा[12] वाग़ ।
बादशाहो-गदा-ओ-बुलबुलो-ज़ाग़[13] ॥

---

१ लड़ाई, २ रूम के बादशाह का नाम, ३ अश्चर्य बढ़ाने वाला, ४ डर, ५ दर्द देने वाली लैहर, ६ पद, ७ शनी तारे के सिरे से भी दूर, ८ वस्तु ९ टुकड़ा, अंश, १० अंशी, सालम, ११ पृथ्वी और समुद्र, १२ जंगल, १३ कौवा, काक ।

इल्म में और शऊर[1] में तेरे।
ज़र्रे से चमकते हैं बहुतेरे॥
खुद को महदूद[2] क्यों बनाते हो।
मंज़िल अपनी पड़े घटाते हो?।
तुझ में छोटे बड़े समाये हैं॥
तू बड़ा है, यह जिस में आये हैं॥
मुल्के-सरसब्ज़ और ज़मीन् शादाब[3]।
हैं, शुआ[4] में तेरी सुराबो-आब[5]॥
शम्स[6] मर्कज़[7] नज़ामे-शमसी[8] का।
है नहीं, तू है आश्रा सब का॥
नूर तेरे ही से ज़िया[9] लेकर।
मिहर[10] आता है, रोज़ चढ़ चढ़ कर॥
अपनी किरणों के आब में खुद ही।
डूब मत मर सुराब में खुद ही॥
जान अपने को गर लिया होता।
क़बज़ा आलम पै झट किया होता॥
सल्तनत में मती[11] चरिन्द व परिन्द।
राजे माहराजे होते ज़ाहद-व-रिंद[12]॥
ज़ात में हल[13] दिल किया होता।
हल उक़दह[14] को यूं किया होता॥

---

१ समझ, ज्ञान, २ परिछिन्न, ३ खुश, आनन्ददायक पृथिवी, ४ किरण, ५ मृगतृष्णा का जल, ६ सूर्य, ७ केन्द्र, ८ आकाश के तारे आदि का इन्तज़ाम, ९ प्रकाश, १० सूर्य, ११ अधीन, सेवक, १२ परहेज़गार और मस्त अथवा कर्मकाण्डी और विरक्त, १३ एकाग्र, लीन, १४ गुप्त भेद, गुप्त रहस्य।

हाथ में खड्ग हो कि खण्डा हो।
क़लम हो या बलन्द झण्डा हो॥
जुदा अपने को इन से जानते हैं।
इन के टूटे रञ्ज न मानते हैं॥
आप को शूरवीर इस तन से।
जुदा माने हैं जैसे आहन[1] से॥
गर बला से यह जिस्म छूट गया।
क्या हुआ गर क़लम यह टूट गया॥
तू है आज़ाद, है सदा आज़ाद।
रंजो-ग़म कैसा? असल को कर याद॥
ऐ ज़माँ[2]? क्या यह तुम में ताक़त है?।
ऐ मकाँ[3]! तुझ ही में लियाक़त है?॥
कर सको क़ैद मुझ को, मुझ को क़ैद।
फलक से तुम हो कलअदम[4] नापैद[5]॥
फ़िक्र के पाप को, वहें धूप[6]।
गर कभी हम से आन कर उलझें[7]॥
पुर्जे पुर्जे अलग हुए डर के।
धज्जियाँ जेहल[8] की उड़ीं डर से॥

[ ३३५ ]

## ❀ शाहे-ज़माँ[7] को वरदान ❀

क़ैसरे-हिन्द! बादशाह दावर[8]।
जानता है सदा शाहे-खावर[9]॥

---

१ लोहा, २ काल, ३ देश, ४ नाश, ५ झूठा, मिथ्या, ६ अज्ञान, ७ ज़माने अर्थात् वर्तमान समय के बादशाहों को वरदान, ८ मुनसफ़, न्याय कारी, ९ सूर्य का बादशाह अर्थात् सूर्य।

ताज पर तेरे मफ़खो-मशरफ़।
चमकता है सदा शाहे-मशरफ़[1] ॥
शाहे-मशरफ़ की ब्रह्म विद्या है।
रानी विद्याओं की यह विद्या है ॥
जाहे-ज़ातों[2] रहे क़रीब तुम्हें।
शाह इल्मों का हो नसीब तुम्हें ॥
नूर[3] का कोह[4] दमाग में दमके।
हिंद का नूर ताज पर चमके ॥
तेरे फ़िक्रो-ख़याल के पीछे।
शीरीं चश्मा[5] अजीब बहता है ॥
यह ही चश्मा था व्यास के अन्दर।
ईसा अहमद इसी में रहता है ॥
इस ही चशमे से वेद निकले हैं।
इस ही चशमे से कृष्ण कहता है ॥
चलिये आबे-शर्ष[6] बां पीजे।
दुःख काहे को यार सहता है ? ॥
पिछले ऋषियों ने इसी चशमे से।
भड़े भर भर के आबे[7] के रक्खे ॥
दुन्या पलटे, ज़माना बदलेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
मिहर[8] डूबेगा, क़ुतब[9] टूटेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥

---

१ सूर्य, २ स्वरूप की विभूति वा पदवी, ३ प्रकाश, ४ पर्वत, यहां कोहेनूर ( ज्ञान के हीरे ) से अभिप्राय है, ५ मीठा सरोवर, ६ अमृत, ७ जल, यहां अमृत से अभिप्राय है, ८ सूर्य, ९ ध्रुव तारा।

रस्मो[1]-मिल्लत तो होंगे मलिया मेट।
पर यह चशमा सदा हरा होगा॥
ऐसे चशमे से भागते फिरना।
बासी पानी को ताकते फिरना॥
तिशनह[2] रखेगा बेहरे-खातरे-आब[3]।
जा बजा आग तापते फिरना॥
राम को मानना नहीं काफी।
जानना उसका है फक़त शाफी[4]॥
बर्कले, कैंट, मिल्ल, हैमिलटान्[5]।
जुस्तजू[6] में तेरी है सरगर्दान्[7]॥
बाईबल, वेद, शास्त्र, कुरआन।
भाट तेरे हैं, ऐ शाहे-रह्मान[8]!॥
अपनी अपनी लियाक़तें ले कर।
तर-ज़ुबान्[9] गा रहे हैं तेरी शान्॥
मदाह-ख़्वां[10] शायरों को दो इनआम्।
वक़्ते-दरबारे-खासो-जलसा-ए-आम॥

[ ३३६ ]

### ※ आनन्द अन्दर है ※

सग[11] ने हड्डी कहीं से इक पाई।
शेरे-नर देख फिकर यह आई॥

---

१ रस्म रिवाज, २ प्यासा, ३ जल अर्थात् अमृत के लिये, ४ आराम देने वाला, पाप से मुक्त करनेवाला, ५ यह सब यूरुप के फिलास्फरों (तत्व वेत्ताओं) के नाम हैं, ६ तालाश, ७ भटकते फिरते, ८ कृपालु महाराजा, ९ मीठी वाणी से, १० स्तुति करने वाले, ११ कुत्ता।

कि कहीं मुझ से शेर छीन न ले।
हड्डी इक उस से शेर छीन न ले॥
लेके मुँह में उसे छुपा कर वह।
भागा खाई[1] को दुम दबा कर वह॥
अज़्म[2] चुभती थी मुँह में जब सग को।
खून लगता लज़ीज़ था सग को॥
मज़ा अपने लहू का आता था।
पर वह समझा मज़ा है हड्डी का॥
शेरे-नर, बादशाहे तन्हा-रो[3]।
हड्डी मुर्दे हों हर तरफ़ सौ सौ॥
वह तो न आँख भरके तकता है।
सगे-नादाँ[4] का दिल धड़कता है॥

स्वर्ग की नेमतें हों, दुन्या की।
हैं तो यह हड्डियाँ ही मुर्दे की॥
इन में लज़्ज़त जो तुम को आती है।
दर असल एक आत्मा की है॥

ऐ शहनशाहे-मुलक! ऐ इन्द्र!।
छीनता वह नहीं यह ज़रो-गौहर[5]॥
राज दुन्या का और स्वर्गो-बहिश्त।
बाग़ो-गुलज़ारो-संगमरमरे-खिशत[6]॥
नेमतें यह तुम्हें मुबारक हों।
बारे-ग़म[7], यह तुम्हें मुबारक हों॥

---

१ खंदक, २ हड्डी, ३ अकेला चलने वाला राजा, ४ मूर्ख कुत्ता, ५ स्वर्ण (धन) और मोती, ६ संगमरमर की ईंटें, ७ ग़म का भार।

देखना यह तुम्हारे मक़बूज़ात ।
क़बज़ा करते हैं क्या तुम्हारी ज़ात ॥
जाने-मन ! नूरे-ज़ात ही का नाथ[1] ।
फौज रखता नहीं है सूरज साथ ॥
जो ग़नी[2] ज़ात में हैं हीरो-वीर[3] ।
जल्वागर दर वजूदे-वर[4] ना पीर ॥
सब दहानों[5] से वह ही खाता है ।
स्वाद खाने भी बन के आता है ॥
"यह हूँ मैं", "यह हो तुम", यह असनीयत
मोजज़ह[6] है तिरा, न असलीयत ॥
सुवरो-अशकाल[8] सब करामत[9] है ।
मेरी क़ुदरत की यह अलामत[10] है ॥

[ ३४० ]

## * सकन्दर को अवधूत के दर्शन *

क्या सकन्दर ने भी कमाल किया ।
गुलगुला[11] शोरो-शर का डाल दिया ॥
बर लबे-आब[12] सिन्ध जब आया ।
डट गया फौज लेके, झिल्लाया ॥
उन दिनों एक सालिके-मालिक[13] ।
से मुलाक़ी[14] हुआ, रहा हक दक ॥

---

१ मालिक, २ अमीर, ३ बहादुर योधा, ४ युवक, ५ मुँहों, ६ द्वैत, ७ करामात, ८ शक्लें, सूरतें, नाम रूप, ९ महिमा, विभूति, १० चिह्न, पता, निशां, ११ वलवला, शोर इत्यादि, १२ दरिया सिन्ध के किनारे, १३ ईश्वर-भक्त, विरक्तात्मा वा मस्त पुरुष, १४ मिला, दर्शन किये ।

क्या अजब था फ़क़ीर आलमगीर।
क़ल्ब[1] साफ़ी मिसाले-गङ्गानीर[2]॥
उस की सूरत जमाले-सुरयानी[3]।
गुफ़्तगू में जलाले-उरयानी[4]॥
उस स्वामी ने कुछ न गिरदाना[5]।
ज़ोरो-ज़ारी[6]-ओ-ज़र से फुसलाना॥
शीशा आयीनागर[7] को दिखलाया।
दंग जूँ आयीना वह हो आया॥
रह के शशदर वह बादशाहे-जहाँ।
बोला साधू से सूरते-हैरान्॥
हिंद में क़द्र न परखते हैं।
हीरे को लीथड़ों में रखते हैं॥
चलियेगा साथ मेरे यूनां[8] को।
क़दम रंजा[9] करो मेरे हां को॥

[ ३४१ ]

※ अवधूत का ज्वाब ※

क्या ही मीठी ज़ुबान से बोला।
रास्ती[10] पर कलाम को तोला॥
कोई मुझसे नहीं है खाली जा[11]।
पूर पूरण, ज़रा नहीं हिलता॥

---

१ शुद्ध अन्तःकरण, २ गंगा जल के समान, ३ अत्यन्त सुन्दर भरी, ४ वैभव स्पष्ट हो रहा था, महिमा फूट रही थी, ५ समझा, ६ ज़बरदस्ती, चहलाना, भय और धन का लालच, ७ सकन्दर की उपाधि है, ८ देश का नाम ९ पधारियेगा, चलियेगा, १० सच्चाई, ११ जगह, स्थान।

जाऊँ आऊँ कहाँ किधर को मैं ?।
हर मकाँ[1] मुझ में, हर मकाँ में मैं ॥
यह जो लाहूत[2] से निदा[3] आई।
यवन[4] बेचारे को नहीं भाई ॥
फिर लगा सिर झुका के यूँ कहने।
इस के समझा नहीं हूँ मैं मयनं[5] ॥
"मुशको-काफ़ूर, अतरो अम्बर बू।
अस्पो-गुलज़ार[6], नाज़नी-खुशरू[7] ॥
सीमो-ज़र[8], खिलअतो[9]-समा-ओ-ज़ोद[10]।
मेवे हर नौ[11] के, आबशारो-रवद[12] ॥
यह मैं सब दूंगा आप को दौलत।
हर तरह होगी आप की खिदमत ॥
चलियेगा साथ मेरे यूनाँ को।
"चल मुबारक करो मेरे हाँ को" ॥
मस्त मौला[13] से तब यह नूर झड़ा।
आस्मां से सितारह टूट पड़ा ॥
"झूठ झूठों ही को मुबारक हो।
जैहल[14] नीचे दबे जो तारक[15] हो ॥
मैं तो गुलशन हूँ, आप खुद गुलरेज़[16]।
खुद ही काफ़ूर, खुद ही अम्बर[17]-रेज़ ॥

---

१ देश, २ ब्रह्म धाम, मस्त स्वरूप, ३ आवाज़, ४ सकन्दर से अभिप्राय है. ५ अर्थ, तात्पर्य, ६ घोड़े और बाग़, ७ सुन्दर स्त्री, प्रिया, ८ चाँदी सोना ९ उत्तम वस्त्र, १० राग रंग, ११ हर प्रकार, १२ बहते हुए झरने, १३ मस्त फ़क़ीर फिर यूँ बोला १४ अज्ञान, अविद्या, १५ अन्धकार अथवा अन्धा, १६ फूल झड़ी, पुष्पों के गिरानेवाला, १७अंबर झाड़नेवाला अर्थात् खुसबू वाला।

सोने चांदी की आबो-ताब[1] हूँ मैं।
गुल की बू मस्ती-ए-शराब हूं मैं॥
राग की मीठी मीठी सुर मैं हूँ।
दमक हीरे की, आबे-दुर मैं हूँ॥
खुश मज़ा सब तुआमें[2] हैं मुझ से।
अस्प की खुश खराम[3] है मुझ से॥
रक़्स[4] है आबशार[5] का मेरा।
नाज़ो-इश्वह[6] है यार का मेरा॥

ज़र्क़ बर्क़ सुनैहरी ताज तेरा।
मेरा मोहताज है, मोहताज मेरा॥
चान्दनी मुस्तआर[7] है मुझ से।
सोना सूरज उधार ले मुझ से॥

कोई भी शै[8] जो तेरे मन भाई।
मैंने लज़्ज़त अता[9] है फ़रमाई॥
दे दिया जब फिर उस का लेना क्या।
शाहे-शाहां को यह नहीं ज़ेबा[10]॥

करके बख़शिश मैं बाज़[11] क्यों लूंगा?।
फैंक कर थूक चाट क्यों लूंगा॥
प्रकृति को तो ईद[12] मुझ से है।
मांगूं अब मैं, बईद[13] मुझ से है॥

---

१ चमक दमक, २ खुराक, भोजन, ३ उत्तम चाल, ४ नृत्य, ५ पानी का झरना, ६ नाज़ नख़रे, ७ मांगी हुई आरोपित, ८ वस्तु, ९ बख़्शी, १० ठीक उचित, ११ फिर वापस, १२ आनन्द मंगल वा बड़ाई, १३ दूर, अनुचित।

ख़ुद ख़ुदा हूँ, सरूरे[1]-पाक हूँ मैं।
ख़ुद ख़ुदा हूं, ग़रूरे-पाक[2] हूँ मैं॥
ऐसा वैसा जवाब यह सुन कर।
भड़क उट्ठा ग़ज़ब से असकन्दर॥
चेहरा ग़ुस्से से तमतमा आया।
ख़ूने-रग जोश मारता आया॥
खैंच्च तलवार तान ली झट पट।
"जानता है मुझे तू ऐ नट खट!"॥
शाहे-ज़ी,शाहे-मुल्के-दारा जम[3]।
मैं हूँ शाह सकन्दरे-आज़म[4]॥
मुझ से गुस्ताख़ गुफ्तगू करना।
भूल बैठा है क्यों अभी मरना?॥
काट डालूं सिर तेरा तन से।
ज़रबे शमशेर से अभी दन[5] से॥
देख कर हाल यह सिकन्दर का।
साधु आज़ाद खिलखिल के हँसा॥
"किज़ब[6] ऐसा तू ऐ शहनशाह!।
उमर भर में कभी न बोला था॥
मुझ को काटे! कहां है वह तल्वार?।
दाग़ दे मुझ को! है कहां वह नार[7]?॥
हां गलायेगा मुझे! कहां पानी?।
बाद[8] सुखा ही ले! मरे नानी॥

---

[1] शुद्ध आनन्द, २ शुद्ध अहंकार वा शुद्ध आत्मा, ३ जमशेद और दारा के मुल्कों का बड़े भारी वा मान वाला बादशाह, ४ सब से बड़ा ५ तुरन्त, ६ झूठ, ७ अग्नि, ८ वायू।

मौत को मौत आ न जायेगी।
क़सद[1] मेरा जो करके आयेगी॥
बैठ बालू में बच्चे गंगा तीर।
घर बनाते हैं शाद या दिलगीर॥
फ़र्श करते हैं रेत में खुद घर।
यह रहा गुम्बज़-व-इधर है दर[2]॥
खुद तसव्वर[3] को फिर मिटाते हैं।
खाना[4] अपना वह आप ढाते हैं॥
वैह्म का घर बना था वैह्म मिटा।
बालू था बाद[5] में जो पैहिले था॥
रंग सुथरा था, नै[6] ख़राब हुआ।
फ़र्श पैदा हुआ था खुद बिगड़ा॥
रास्त तू उस ज़ुबान से सुनता है।
पर पड़ा आप जाल बुनता है॥
तू जो समझा यह जिस्म मेरा है।
फ़र्श तेरा है, फ़र्श तेरा है॥
सिर यह तन से अगर उड़ा देगा।
फ़र्श अपने ही को तू गिरा देगा॥
रेत का तो न कुछ बुरा होगा।
खाना[7] तेरा खराब ही होगा॥
मेरी वुसअत[8] को कौन पाता है।
मुझ में अर्ज़ो-समा[9] समाता है॥

---

१ इरादा, २ द्वार, ३ कल्पना वा कल्पित, ४ घर, ५ पीछे, ६ नहीं, ७ घर, ८ सीमा, विशालता, ९ पृथ्वी-आकाश।

ताज जूते के दरम्यान् वाक्या।
मैं नहीं हूँ, न तू है जाँ! वाक्या॥
इतना थोड़ा नहीं हदूद-अर्बा[1]।
पगड़ी जोड़ा नहीं हदूद-अर्बा॥
अपनी हत्तक यह क्यों करी तुमने?।
बात मानी मेरी बुरी तुम ने?॥
क्यों तनक[2] कर दिया है आत्म को।
एक जौहड़[3] बनाया कुलज़म[4] को॥
खुद तो मग़लूब[5] तुम ग़ज़ब[6] के हो।
शाहे-जज़बात[7] से भी अड़ते हो॥
गुस्सा मेरा गुलाम तुम उसके।
बन्दा-ए-बन्दगां, रहो बच के॥"
गिर पड़ी शाह के हाथ से शमशेर।
निगाहे-आरफ़[9] से हो गया वह ज़ेर[10]।
क्या अजब! यह तो ज़ेरे-आबतहे[11] तेग़।
गरजता था साले बाराँ मेघ[12]।
शाह के शोरो-ग़ज़ब[13] को जूँ मादर[14]।
नाज़ तिफ़्लक[15] का जानता था गर॥
और वह शाह सकन्दरे-रूमी।
बात छोटी से हो गया ज़ख़मी॥

---

१ सीमा, चौहद्दी, २ तुच्छ, छोटा, नाचीज़, ३ तालाब, छप्पर, ४ समुद्र, ५ अधीन, वशमें आये हुये, ६ गुस्सा, भारी, ७ काम क्रोधादि को वश में रखने वाला बादशा, ८ नौकरों के नौकर, ९ ज्ञानवान् की दृष्टि से, १० अधीन, नीचे, शर्मिन्दा, ११ खैंची हुई तलवार के तले, १२ वर्षा वाले बादल के समान, १३ गुस्से, क्रोध को, १४ माता के समान, १५ बच्चे का खेल, नखरा।

पास उस वक़ अपनी इज़्ज़त का।
हर दो जानिब को एक जैसा था॥
लैक[1] शाह को थी जिस्म में आनर[2]।
शाहे-शाह[3] का थी आत्मा में घर॥

क़िला मज़बूत उस का ऐसा था।
ऊँचे सूरज से भी परे ही था॥
कर सके कुच्छ न तीर की बूछार।
खाली जाये बन्दूक़ की भर मार॥
इस जगह ग़ैर[4] आ नहीं सकता।
यहाँ से कोई भी जा नहीं सकता॥

इस बलन्दी से सरफ़राज़ी से।
क़िला ए-मज़बूत शेरे-ग़ाज़ी से॥
यह ज़मीन् और इस के सब शाहान्।
तारा साँ, ज़र्रह[5] साँ, कि नुक़ता साँ॥
नुक़ता मौहूम[6] बन, हूये नाबूद[7]।
एक वहदत[8] हूँ, हस्तो-शावदो[9]-बूद॥

उड़ गये जूँ सपाहे-तारीकी[10]।
ताब किस को है एक झाँकी की?॥
रूए-आलम[11] पे जम गया सिक्का।
शाहे-शाहां हूँ, शाहे-शाहां शाह॥

---

१ परन्तु, लेकिन, २ इज़्ज़त ३ यहां मुराद है फ़क़ीर से, ४ अन्य, दूसरा, ५ परमाणु, ६ कल्पित, ७ मिथ्या, असत, ८ अद्वैत, ९ है, होगा, था, वर्तमान भविष्य, भूत, १० अन्धकार की सेना ( अर्थात् तारों ) के समान, ११ समस्त संसार।

पहले हैयत[1] ने भी पढ़ा होगा।
नुक़ता क्या खूब यह रियाज़ों का ॥
जबकि लाजु ब[2] एक सितारे का।
बेहस में हो हसाब या लेखा।
सिफर साँ यह ज़मीने-पेचाँ पेच[3]।
हेच[4] गिन्ते हैं, हेच मुतलक[5] हेच ॥
अब कहो जाते-बेहत[6] के होते।
क्यों ना अजसाम[7] जान को रोते ?॥

[ ३४२ ]

## ❋ जिस्म से बेतऽल्लुकी ❋

( देहाध्यास रहित अवस्था )

बादशाह इक कहीं को जाता था।
उस तर्फ से फक़ीर एक आता था ॥
बादशाह को घमंड ताज का था।
'मस्त को अपनी ज़ात[8] का था ॥
मस्त चलता था चाल मस्ती की।
राह न छोड़ा सलाम तक न की ॥
बादशाह तुर्श[9] हो के यूं बोला।
"सखत मग़रूर शोख गुस्ताखा ! ॥

---

१ नजूमी, ज्योतिष के जानने वाले, २ अचल, ३ पेचदार पृथिवी, ४ तुच्छ ५ नितान्त, ६ शुद्ध स्वरूप, ७ शरीर, नाम रूप, ८ निजात्मा, ९ कड़वा होकर

बादशाह हूँ, तुझे सज़ा दूंगा ।
जिस्म तेरा अभी जला दूंगा" ॥
तिस पै मौला कबीरे[1] आलीजाह[2] ।
शाहे-शाहां फ़क़ीर लापरवाह ॥

जिस का मुबद्दा-ओ-कुतब[3] आत्म था ।
महवरे-गुफ्तगू[4] भी आत्म था ॥
जिस्म पोयन्ट[5] से कुच्छ न करता था ।
आत्मा ही था, नूर झरता था ॥

पास धक धक जले थी इक भट्टी ।
टाँग उसमें फ़क़ीर ने धर दी ॥
तब मुखातब[6] हो शाह से बोला ।
नक़शे-तस्वीर ! शेरे-क़िर्तास[7] ! ॥
मैं हूँ क़िर्तास[8], उस पै तू तस्वीर ।
ज़ाते-असली हूँ, फ़र्ज़ है तस्वीर ॥

नक्श दावा करे, तकब्बर[9] है ।
क़िबराई[10] मेरी तो अज़हर[11] है ॥
जिस्म के इतबार ही से सही ।
मैं हूँ आज़ाद उस तरह से भी ॥
क़तल करने का क़द्र है तेरा ।
झिड़कना इख़्तियार है मेरा ॥

---

१ महान्, २ बड़े पद वा रुतबे वाला, परम पूज्य, ३ शुद्ध और आश्रय, अथवा आदि और अन्त, ४ धुरी अर्थात् वाणि का आधार, ५ शरीर के लिहाज़ या दृष्टि से, ६ सन्मुख मुँह करके, ७ ऐ काग़ज़ के शेर ! ८ काग़ज़, ९ अहंकार, १० बड़ाई, महत्व, ११ स्पष्ट, ज़ाहर, विद्यमान, प्रकट ।

क़तलो-धमकी का गर्म है बाज़ार।
सौदा मेरा है, मैं हूँ ख़ुदमुख़तार॥
जान लेना नहीं तेरे बस में।
तेरी तअ्ज़ीह[1] है मेरे बस में॥
तू जलायेगा, दर्द क्या होगा?।
देख ले, पैर जल गया सारा॥
इस से बढ़ कर तू सज़ा क्या देगा।
मेरा इक बाल भी न हो बाँका॥
आग में डाल दे, तू इस[2] तन को।
ख़्वाह शोलों[3] में डाल उस[4] तन को॥
दोनों हालत में मुझ को यकसान् है।
कुच्छ न बिगड़ा न बिगड़ सकता है॥
तुम से बढ़ कर तुम्हारा अपना आप।
मैं हां तुम हूँ, न तुम हो अपना आप॥
आग मेरा ही इक तजल्ला[5] है।
रोब[6] तेरा भी ज़ोर मेरा है॥
मुझ में सब जिस्म बुलबुले से हैं।
एक टूटेगा और क़ायम[7] हैं॥
साधू जब कर रहा था यह तक़रीर[8]।
शाह का दिल होगया वहीं नख़चीर[9]॥
दस्त बस्ता[10] खड़ा हुआ आगे।
सायीं! आरफ़[11] हैं आप अल्ला के॥

---

१ सज़ा देना, कैद करना. २ फ़क़ीर के शरीर से अभिप्राय है, ३ अग्नि की ज्वाला, ४ बादशाह के शरीर से अभिप्राय है, ५ तेज, प्रकाश, ६ भय, डर ७ स्थिर, ८ वक्तृता, ९ शिकार गाह, घायल, १० हाथ जोड़ कर, ११ आत्मवित।

तर्क दुन्या की, आखरत[1] की तर्क।
तर्क मौला की, तर्क की भी तर्क॥
दर्जा अव्वल के आप त्यागी हैं।
बार[2] दर्शन के हम भी भागी हैं॥

[ ३४३ ]

## ॐ फ़क़ीर का कलाम ॐ

क़दम-बोसी[3] को शाह झुका ही था।
कल्मा बेसाख्ता[4] यह तब निकला॥
ऐ शहनशाह! तुम मुबारक़ हो।
तुम ही सब से बड़े तो तारक[5] हो॥
अपनी कीजियेगा क़दम-बोसी खुद।
तुम ही त्यागी हो, तुम ही जोगी खुद॥
कुच्छ नहीं इस फ़क़ीर ने त्यागा।
ज़ात के राज पाठ में जागा॥
ख़ाक[6] ऊपर से जब हटा बैठा।
मादने-बेबहा[7] को पा बैठा॥
कूड़ा करकट उठा दिया इसने।
महल सुथरा बना लिया इसने॥
जेहल[8] को त्याग आप हो बैठा।
ज़ात तेरी तरह न खो बैठा॥

---

१ परलोक, २ एक बार, ३ चरण वन्दना को, ४ तत्काल, बिना सोचे समझे, बाधड़क, ५ त्यागी, ६ यहाँ शरीर के देहाध्यास से अभिप्राय है, ७ अनन्त, दाम की, अर्थात् अमुल्य कान ( ख़ज़ाना ) वा आत्म तत्व, ८ अज्ञान, अविद्या।

लेक[1] तुम ने स्वराज्य छोड़ा है।
कूड़ा रक्खा है, महल छोड़ा है॥
राख को तुम अज़ीज़[2] रखते हो।
असल मादन[3] को तुम न तकते हो॥
खाक सारे लपेट ली तुमने।
क्या रमाई भभूत है तुमने॥
जुड़ गये हो अविद्या से आप।
जोगी कैसे जुड़े बला के आप॥
तुम ही जोगी हो, मैं न जोगी हूँ॥
ज़ाते-तन्हा[4] हूँ, मैं वियोगी[5] हूँ॥
सुन के शाह, यह फ़क़ीर की तक़रीर।
सकता[6] शश कर गया, बना तस्वीर॥

[ ३४५ ]

❀ गार्गी ❀

जनक राजा की हुक्मरानी में।
उस विदेहों[7] की राजधानी में॥
नंगी फिरती थी गार्गी लड़की।
नूर चितवन में था जलाल भरी॥
चिहरे से रोब दाब बरसे था।
हुसन को माहताब[8] तरसे था॥

---

१ लेकिन, किन्तु, २ प्रिय, ३ खान, चशमा वा तत्व, ४ अद्वैत तत्व, ५ अलग, पृथक् वा असंगात्मा, ६ बेहोश, आश्चर्यमय, ७ विदेह मुक्त, ८ चाँद।

ज्ञान की असल जान की खूबी।
उस के हर रोम से चमकती थी॥
तक सके आँख भर के उस रू[1] को।
मारे दहशत[2] से ताब[3] थी किस को?॥
पाकबाज़ी[4] का वह मुजस्सम[5] नूर।
शप्पर[6] चश्म को भगाता दूर॥
एक दफ़ा मार्फ़त[7] की पुतली पर।
करती शक थी निगाहे-ऐब[8] निगर॥
दफ़अतन गार्गी यह भाँप[9] गयी।
जान क़ालब[10] में सब की काँप गयी॥
ऐब-बीनों[11] का कुफ़्र तोड़ दिया।
रुख़ अजसाम-बीन[12] को मोड़ दिया॥
शान से पुर दहान[13] यूं खोला।
नाफ़ाए-तातार था, कि अग्नि था॥
मैं वह ख़ंजर हूँ, तेज़ दम ज़ालिम।
लोहा माने हैं मिहरो[14]-माह अंजुम[15]॥
तीन जामों[16] में, या मियानों[17] में।
छिप के बैठी हूँ तीन ख़ानों में॥

---

१ मुख, २ मारे भय के, ३ शक्ति, ४ पवित्रता, ५ प्रकाश का शरीर अर्थात प्रकाशस्वरूप, ६ चमगीदड़, प्रकाश में न देखने वाला, ७ आत्मज्ञान वा ज्ञान-स्वरूप, ८ बुराई देखने वाले की दृष्टि, ९ ताड़ गयी, समझ गयी, १० तन, ११ दोष देखने वालों का, १२ पृथिवी के पदार्थ ( रूप ) देखने वाले अर्थात् बाह्य दृष्टि वाले के मुख को, १३ मुँह १४ सूर्य-चन्द्रमा, १५ सितारे, १६ पर्दों ( कपड़ों अर्थात शरीरों ), १७ कोश, ढकनों में।

दूर गर परदा-ए-हया[1] कर दूं।
फितनह-ए-महशर[2] अभी बपा[3] करदूं॥
शम्स[4] कब ताब[5] झलक की लाये।
चकाचूंदी सी आँख में आये॥
देख मुझ को फलक[6] के सब अजराम[7]
मिसले शबनम[8] उड़ें, करें आराम॥
कोहर[9] ऐसे यह दुन्या उड़ जाये।
देखने की मुझे सज़ा पाये॥
काश[10]! देखो मुझे, मुझे देखो।
हर सरे-मू से[11] चशमे-हैरत[12] हो॥
मैं ब्रहना[13] थी तुम ने समझा क्यों?।
खाक इस समझ पर, यह समझा क्यों?।
जिस्म में हूँ, यह कैसे मान लिया?।
हाय! कपड़ों को जान ठान लिया॥
खप गया जिस के दिल में हुसन[14] मेरा।
दंग सकते[15] का एक आलम[16] था।
जान जब हो चुकी हो नोछावर।
बोलो, वह फिर कहां रहा नाज़र[17]?॥
नाज़रो-नज़र[18] आप खुद मंज़ूर[19]।
वसल कैसे कहां हुआ महजूर[20]॥

---

१ लज्जा का पर्दा, २ क्रियामत (प्रलय) का समक्ष, ३ अभी पैदा कर दूँ, ४ सूर्य, ५शक्ति, तेज, ६ आकाश, ७ तारे इत्यादि, ८ ओस के समान, ९ धूँवा या ओस के समान, १० ईश्वरकरे, ११ बाल के सिरेसे, १२ हैरानी की निगाह, आश्चर्यमय दृष्टि, १३नंगी, १४सौंदर्य, १५आश्चर्य, १६हालत, अवस्था, १७ द्रष्टा १८द्रष्टा और दृष्टि, १९दर्शन किया गया वा दृश्य, २० जुदा, पृथक।

टूटे पड़ता है, हाय हुसन मिरा।
पर न गाहक़ कोई मिला उसका॥
खुद ही माशूक आप आशक़ हूँ।
नैं[1], ग़लत; मैं तो इशक़े-सादक़[2] हूँ॥
तारे कब रोशनी से नियारे[3] हैं।
तुम हमारे हो, हम तुम्हारे हैं॥
ऐ अदू[4]! ऐंठ ले, बिगड़ तन ले।
सख़्त कह दे, कि सुस्त ही कह ले।
जोशे-ग़ुस्सा निकाल ले दिल से।
ताक़ते-तैश[5] आज़मा तू ले॥
मुझे भी इन तेरी बातों से रोक थाम नहीं।
जिगर में थाम न करलूँ, तो राम नाम नहीं॥

[ ३४५ ]

※ गार्गी से दो दो बातें ※

राम भी एक बात जड़ता है।
ख़ंजरे-तेज़ दम से लड़ता है॥
हुसन की बेहर[6], ग़ैरते-ख़ूबी[7]!।
इक नज़र हो ज़री इधर तो भी॥
माना, दीदों[8] में है तेरे लाली।
जोत आँखों में है कपल[9] वाली॥

---

१ नहीं नहीं, यह ग़लत है. २ सच्चा असली इश्क़, अथवा प्रेम मैं हूँ, ३ पृथक, जुदा, ४ शत्रु, दुश्मन, ५ गुस्से का बल, ६ समुद्र, ७ दूसरे को लज्जा देने वाली सुन्दरता ८ नेत्रों, ९ कपिल मुनी का नाम।

भसम करता है तू हज़ारों को
कौन रोके भला अंगारों को ॥
लैक[1] मैं एक हूँ, हज़ार नहीं।
राम पर तेरा इख़्तयार नहीं ॥

झाँक आयीने[2] में दिल के देखले।
तू ज़रा गर्दन झुका कर देख ले॥
क़लब[3] किससे तेरा मुनव्वर[4] है।
जल्वागर[5] कौन उसके अन्दर है॥
चीं जबीं[6] हो के कुटिल कर भृकुटी।
तिर्छे चितवन नज़र कीये टेढ़ो ॥

क्यों ग़ज़ब तीर पास रखता है।
राम भृकुटि में बास रखता है ॥
छोड़ दो घूरकर दिखानी आँख।
राम बैठा है तेरी दाहनी आँख॥
तलख़कामी[7] से किसको दी दुशनाम[8]?॥
शाहे-रग[9] और कंठ में है राम ॥
चल करो गर दिमाग़ में तकरार।
राम बैठा है तेरे दसवें द्वार ॥
हर तरह राम से गुरेज़[10] नहीं।
जुदा आहन[11] से तेगे-तेज़[12] नहीं ॥

---

१ किन्तु, २ शीशा, ३ अन्तःकरण, ४ प्रकाशित, ५ प्रकाशमान, व प्रकाश देने वाला, ६ क्रोध होकर, माथे पर बल डालकर, ७ गुस्सा हो खराब बोली बोलना, ८ गाली, अपशब्द, ९ गले के भीतर बड़ी रग (नाड़ी), १० भागना ११ लोहा, १२ तेज़ तलवार।

ऐ मुर्दाते-किनार[1] ना पैदा ।।
हुस्नो-खूबी पे तेरी शुदा शैदा[2] ॥
बहरे-मव्वाज[3] है तलातम[4] में ।
हुस्न तूफ़ां है तेरा आलम में ॥
"मैं ब्रेह्ना[5] नहीं" यह क्यों बोला ।
सामने मेरे कुफ़र क्यों तोला ? ॥

पहिन कर आज मौज की चादर ।
नज़रे दूसरे हमीं से यह नादर ! ॥
"मैं ब्रेह्ना नहीं" यह क्या मानी[6] ? ।
बुर्क़ा[7] ओढ़ा हुबाब[8] लायानि[9] ! ॥
तिनका भर, किश्ती भर, जहाज़ सही ।
कोह[10] भर, बैहर भर, यह नाज सही ॥
हाय तुम ने तो क्या सितम[11] ढाया ।
जुमला[12] आलम द्रोग़[13] वह आया ॥
नून आँखों में कर दिया तुम ने ।
झूठ सच कर दिखा दिया तुम ने ॥
सितर[14] पर्दे सभी उठा दूंगा ।
झूठ बोले की मैं सज़ा दूंगा ॥
नाम रूपों की बू उठा दूंगा ।
हू ही[15] हू हूबहू दिखादूंगा ॥

---

१ ऐ अनन्त सीमा, अहाता वा विशालता रखने वाली, ! २ आसक्त, क़ुरबान, ३ लैहरों वाला समुद्र, ४ तूफ़ान ( लहराना ), ५ नंगा, ६ मतलब, ७ पर्दा, ८ बुलबुला, ९ बग़ैर मतलब के, व्यर्थ, १० पर्वत सम, ११ अन्याय, १२ समस्त, १३ झूठा (असत्य), १४ आवरण, १५ ईश्वर ही ईश्वर यह सब है ( सर्वं खल्विदं ब्रह्म ) ।

हाय ! इज़हार[1] आज लूं किस से ? ।
रूबरू हो खड़ा बने किस से ? ॥
आप ही गार्गी हूँ, आप ही हूँ राम ।
कुच्छ नहीं काम, रात दिन आराम ॥

[ ३४६ ]

## ❀ चाँद की करतूत ❀

अजब घूमते घूमते राम को ।
मिला इक तालाब सरे-शाम[2] को ॥
जुलाहे की थी पास इक झोंपड़ी ।
थी लड़की वहाँ खेलती इक पड़ी ॥
हवा चुपके से सरसराने लगी ।
उधर चाँदनी दम दमाने लगी ॥
मैं क्या देखता हूँ कि लड़की वहीं ।
है बुत बन रही और हिलती नहीं ॥
खुला मुँह है भोले से मुसका[3] रही ।
है आँखों से क्या चाँद को खा रही ॥
उतर आँख से दिल में दाखिल हुआ ।
दिले-साफ में चाँद सब घुल गया ॥
कहो तो अरे चाँद ! क्या बात है ? ।
यह क्या कर रहे हो, यह क्या घात है ॥

---

१ बियान, २ सायंकाल के समय, ३ मुसकराना, धीमे धीमे हँसना ।

पड़ा अक्स[1] ही तेरा तालाब पर।
पै लड़की के दिल में किया तू ने घर॥
दिया आलिमों[2] को न जिस राज़[3] को,
दिखाया न जो दूरबीन-बाज़[4] को॥
रियाज़ी का माहिर[5] न जो पा सका।
न हैयत[6] से जो भेद कुछ आ सका॥
जुलाहे के घर में दिया सब बता।
अरे चाँद! क्यों जी! हुआ तुझ को क्या?
यह नन्हें[7] से दिल में यह आराम क्या।
ग़रीबों के घर में तेरा काम क्या?॥

[ ३४७ ]

## ※ आरसी ※

दुलहन को जाँ से बढ़ कर भाती है आरसी[8]।
मुख साफ़ चाँद का सा दिखाती है आरसी॥
हस्ती-इल्म-सरूर[9], का मज़हर[10] तो खूब है।
हाँ इस से आबरू[11] को सजाती है आरसी॥
हम को बुरी बला से यह लगती है इसलिये।
वाहद[12] को कैदे-दुई[13] में लाती है आरसी॥

---

१ प्रतिबिम्ब, २ बुद्धिमानों, ज्ञानियों को, ३ भेद, गुह्य, रहस्य, ४ दूरदृष्टा वा त्रिकाल दर्शी, ५ गणित शास्त्र में निपुण, ६ शकल का इल्म, तस्वीर वा रूप की विद्या वा ज्योतिष शास्त्र, ७ छोटे से, ८ अँगूठे में डालने का ज़ेवर जिस में शीशा लगा होता है, ९ सच्चिदानन्द, १० ज़ाहिर होने का स्थान, ११ शान, इज़्ज़त, महिमा, १२ ऐकता, १३ द्वैत के बंधन में।

अज़ बस ग़नी[1] है हुस्न में वह अपने माहरू[2] ।
हैरत है उस के सामने आती है आरसी ॥
ख़ूबी है रूये[3]-ख़ूब में, शीशे में कुछ नहीं ।
हाथों में रूनुमाई[4] को आती है आरसी ॥
ज़ाहर में भोली भाली, हैराँ शक्ल वले[5] ।
क्या झूठ को यह रास्त[6] बताती है आरसी ॥
गैहनों में टुकड़ा आईना का है हक़ीरतर[7] ।
रुतबा[8] वले सफ़ाई से पाती है आरसी ॥
देखूं मैं या न देखूं, हूँ आफ़ताब रू[9] ।
ताहम हमारे दिल को लुभाती[10] है आरसी ॥
गंगा सुमेरू[11] अबर[12] सही, मिहरो-माह[13] सही ।
मुखड़े का अपने दर्श[14] कराती है आरसी ॥
है शौक़े-दीद[15] चेहरा-ए-ताबाँ[16] का राम को ।
यकसू-दिली[17] हर आन[18] बनाती है आरसी ॥

[ ३४८ ]

※ सदाये-आस्मानी ( आकाशवाणी ) ※

हाये चेचक[19] ने हाये चेचक ने ।
इस अविद्या के हाये चेचक ने ॥

---

१ सौन्दर्य में अत्यन्त धनी अर्थात् अत्यन्त सुन्दर, २ चाँद के मुखड़े वाला (प्यारा), ३ सुन्दर रूप वा मुख, ४ रूप को दिखाने को, ५ लेकिन, ६ सच, ७ तुच्छ, ८ दरजा, पद, ६ सूर्य मुख ( प्रकाश रूप वाला ), १० मोह लेती है, ११ पर्वत, १२ बादल, १३ सूर्य और चाँद, १४ दर्शन, १५ देखने का शौक़, १६ प्रकाशस्वरूप, १७ एकाग्रता, १८ प्रत्येक क्षण, १९ माता नाम की बीमारी (Small Pox), को कहते है यहाँ द्वैत रूपी बीमारी से अभिप्राय है ।

कर दिया आत्मा क़रीबुल-मर्ग[1]।
क़ैदे-कसरत[2] में हो गया संसर्ग[3]॥

चेहरा रौशन था साफ़ शीशा सा।
होगया दाग़ दाग़ यह कैसा ?॥

मिहरे-तलअ़त[4] पै दाग़ आन पड़े।
तारे सूरज पै कैसे आन चढ़े ?॥

एक रस साफ़ रुये-ज़ेबा[5] था।
दाग़े कसरत का लग गया धब्बा॥

हो गया पुष्प माल माता[6] का।
यानि वाहन[7] यह शीतला का हुआ॥

मर्ज़ ऐसा बढ़ा यह मुतअ़द्दी[8]।
हिन्द सारे की ख़बर इसने ली॥

वह दवा जिस से मर्ज़ जायेगा।
गौ-माता[9] के थन से आयेगा॥

पुर ज़रूरी है वैक्सीनेशन[10]।
वरना मरती है यह अभी नेशन[11]॥
छोड़ दो तुम ज़री तअ़स्सब[12] को॥
टीका लगवाइयेगा अब सब को॥

---

१ मृत्यु के समीपतम, २ नानत्व के बन्धन में, ३ आवेश, प्रवेश, ४ सूर्य जैसे सुन्दर मुख पर, ५ सुन्दर रूप, ६ शीतला देवी की सवारी, ७ सवारी अर्थात गधा, क्योंकि शीतला देवी का वाहन गधा होता है, ८ बढ़ जाने वा फैल जाने वाला, ९ यहाँ उपनिषद् से अभिप्राय है, १० ( अद्वैत का ) टीका लगाना, ११ जाति, राष्ट्र, नसल, क़ौम, १२ तर्फ़दारी, पक्ष, संकुचित ख़्याल।

गाये के थन से अलफ[1] की नशतर।
ला रही है इलाज, लीजे कर॥
शहर हर इक में हर गली घर घर।
टीका अद्वैत का लगा देना॥
बच्चे लड़के बड़े हों या छोटे।
यह सराअत[2] भरा दवा देना॥
गर न मानें तो पकड़ कर बाज़ू।
टीका यह तीन[3] जा लगा देना॥
दर्द भी होगा पीड़ भी होगी।
डर का नोटस[4] न तुम ज़रा लेना॥
"शुद्ध तू है" "निरञ्जनोऽसि[5] त्वम्"।
लौरी रोते समय यह गा देना॥
फिर जो चेचक के ज़ख्म भर आयें।
शीतला भी खुदा मना देना॥
ग़ैर[6]-बीनी-ओ-ग़ैर दानी[7] को।
मार कर फूंक इक उड़ा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
प्यारे हिन्दुस्तान! फलो फूलो।
पौदे[8] पौदे को ब्रह्म विद्या दो॥

---

१ अलफ से अभिप्राय यहां वह मासिक पत्र है, जिसके सम्पादक वास्तव में स्वामी रामजी महाराज थे, और जिस पत्र के अन्त में यह कविता दर्ज है, २ जल्दी अन्दर घुस जाने वाला वा शीघ्र प्रभाव डालने वाला, ३ तीन जगह (यहां तीन शरीरों से मुराद है. कारण, सूक्ष्म, स्थूल), ४ ख्याल, ध्यान, ५ तू कल्याण रूप है, ६ द्वैत दृष्टि, ७ भेद बुद्धि, ८ बूटे बूटे को, प्रत्येक बूटे को।

गह है वह आबे-गंग[1] मर्दुमें[2]-खेज़ ।
बूटे बूटे को कर जो दे ज़र-रेज़[3] ॥

घन है या बागे-खूब सूरत है ।
सब को इस आब[4] की ज़रूरत है ॥

रौशनी यह सदा मुबारक है ।
जान सब की है, यह मुबारक है ॥

सर्व[5] हो, गुल, ग्याह[6], गन्दुम[7] हो ।
रौशनी बिन तो नाक में दम हो ॥

सिफलापन[8], दासपन, कमीनापन ! ।
छोड़ दे हिन्द और चलता बन ॥

काशी, मक्का, युरुशलम[9], पैरिस ।
रूस, अफरीका अमरीका फारस ॥
बैहरो-बर[10], तूल वर्ज़ो-अर्ज़ो-बल्द[11] ।
और मरीखे-सुर्खों[12] माहे-वार्द[13] ॥

कुतब-तारा[14], फलक[15] के कुल अंजम[16] ।
काले अजराम[17] जो न जानें हम ॥
यह जगह वह जगह कहीं हर जा[18] ।
वह जो था, और है, कभी होगा ॥

---

१ गंगाजल, २ आँख जगाने वाला, अथवा आँख खोलने वाला वा पुरुषों को जगाने वाला, ३ मालदार, हरा भरा, ४ पानी, ५ सरु वृक्ष का नाम है, ६ घास, ७ गेहूँ, अनाज, ८ कमीनापन, कंजूसी, ९ ईसाइयों का तीरथ, १० खुशकी और तरी (पृथ्वी समुद्र), ११ समस्त लम्बाई, और समस्त चौड़ाई, १२ मंगल तारा, १३ वसन्त ऋतु का मास, १४ ध्रुव, १५ आकाश, १६ सारे तारे, १७ आकाश के पदार्थ, १८ स्थान ।

मुझ में सब कुछ है, सब मुझी में है।
मैं ही हब कुछ हूँ, ग़ैरे-मन ला-शै[1] ॥
ऐ शिखर सीम-तन[2] हिमालय की !।
ब्रह्म विद्या की तू ही माता थी ! ॥
गोद तेरी हरी रहे हर दम।
गिरजा[3] पैहलू में खेलती हरदम ॥
मौनसूनों[4] को यह बता देना।
इन्द्र और वर्ण को सुझा देना ॥
वर्षा जब देश में करेंगे जा।
नाज में यह असर खपा देना ॥
चाख भी ले जो नाज मेवों को।
नशा वहदत[5] में मस्त फ़ौरन हो ॥
खुद बखुद उस से यह कहा देना।
शक्क शुभह एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥

ऐ सबा[6] ! जा गुलों की मैहफल में।
शेर मर्दों के दल में बादल में ॥
चौंक उट्ठें जो तेरी आहट[7] से।
कान में उन के सरसराहट से ॥

---

१ मेरे बिना सब तुच्छ है अर्थात् मेरे बिना कुछ नहीं, २ चांदी के तन वाली अर्थात् बर्फ़ से ढकी हुई हिमालय की चोटी, ३ पार्वती, ब्रह्मविद्या से अभिप्राय है, ४ ग्रीष्म ऋतु में जो तूफान वायु का होता है मेघकाल की वायू (monsoons), ५ अद्वैत, ६ पर्वा वायु ( प्रातः काल की वायु ), ७ आवाज़ ।

चुपके से राज़[1] यह सुना देना।
शक शुभह एक दम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

बिजली! जा कर जहान पर कौंदो।
तीराखानों[2] को जगमगा तुम दो॥
दमक कर फिर यह तुम दिखा देना।
शक शुभह एकदम मिटा देना देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

द्वैत के, पक्षपात के, भ्रम के।
कड़क कर राद[3]! दो छुड़ा छक्के॥
गर्ज कर फिर यह तुम सुना देना।
शक शुभह एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

जाओ जुग[4] जुग जीयोगी गंगाजी।
ले अगर घूंट कोई जल का पी॥
उसके हर रोम में धसा देना।
शक शुभह एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

---

१ गुह्य भेद, २ अंधेरी कोठी में रहनेवालों को, ३ बिजली, ४ युग से अभिप्राय है।

गाओ वेदो ! सनां[1] मेरी गाओ ।
जाओ जीते रहो, सदा जाओ ॥
पेहले-टिट्विटै[2] हो, कोई पंडित हो ।
भक्ति तुमरी सदा अखंडित हो ॥
खैंच कर कान यह पढ़ा देना ।
शक शुभह एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥

पेहले-अखबार ! अपने पेपर्स[3] पर ।
कूक कैलास की छपा देना ॥
पेहले-तालीम ! मदरस्सों में तुम ।
बच्चों कच्चों को यह पिला देना ॥
नाज़रीन्[4] ! हिन्दुओं के जल्सों पर ।
कूक से सब के सब जगा देना ॥
चौक, मन्दिर में रेल में जाकर ।
ऊँचे पंचम की सुर से गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥

रिश्ता, नाता, क़रीबी समधी सब ।
शादी, जलसे पै हों इकट्ठे जब ॥
शादी-जोयां[5] हो, हेच दुन्या में ।
भूल बैठे हों यह कि "हूँ क्या मैं" ॥

---

१ महिमा, तारीफ़, २ वर्तमान काल का पढ़ा हुआ प्यारा, ३ अखबारों में ४ द्रष्टा लोग, ऐ देखनेवालों, ५ ब्याह करनेवाले, आनन्द ढूंढनेवाले।

चोट नक़्क़ारे पर लगा देना।
शक शुभह एकदम मिटा देना।
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

जाने-मन! वक़्ते-नज़ा[1], वालिद[2] को।
पाठ गीता का यह सुना देना॥
"तत्त्वमसि[3]" फूंक कान में देना।
"तो खुदाई[4]" का दम लगा देना॥
बैठ पैहलू में बाअदब[5] यह कूक।
आह में खूब पिस पिसा देना॥
हल आँसू में करके फिर इस को।
सीने पर बाप के गिरा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

मौत पर यह सबक़ सुना देना।
मातमी मुर्दा दिल जला देना॥
लाधड़क शंख यह बजा देना।
शक शुभह एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

मरने लड़ने को फौज जाती हो।
सामने मौत नज़र आती हो॥

---

१ मृत्यु काल, २ पिता, ३ ( तूही वह ब्रह्म है ), ४ तू खुदा है, ५ इज़्ज़त के साथ, सत्कार पूर्वक।

मिस्ल अर्जुन के दिल बढ़ा देना।
मस्त बाजे में गीत गा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

घुड़की तुम को जो दे कभी नाफ़ैह्म[1]।
तुम ने हरगिज़ भी छोड़ना मत रैह्म॥
धमकी गाली गलोच और अनबन।
प्यारे! खुद तू है, तू ही है दुश्मन॥
रमज़ आँखों से यह बता देना।
हाथ में हाथ फिर मिला देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

गर अदालत में तुम को लेजायें।
ईसा सुक़रात तुम को ठहरायें॥
तुम तो खुद मस्तीये-मुजस्सम[2] हो।
दावा, अर्ज़ी, क़सूर, कैसे हो?॥
चीफ जस्टिस का दिल हिलादेना।
हाँ! गला फाड़ कर यह गा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

नीज़ मक़तल[3] में खुश खड़े होकर।
हाज़रीं[4] के दिलों में घर कर कर॥

---

१ नासमझ, कमअक़ल, मूर्ख, २ आनन्द स्वरूप, ३ क़तल (फाँसी) की जगह, ४ उपस्थित लोग।

उङ्गलियाँ उठ रहीं हों चारों तरफ़।
हर कोई रख रहा हो तुम पर हरफ़[1] ॥
क़ातलों का भरम मिटा देना।
"ग़ैर फ़ानी[2] हूँ मैं" दिखा देना ॥
काटा जाने को सिर झुका देना।
नाराह[3] से गूँज़ इक उठा देना ॥
शक शुभह एकदम मिटा देना।
कूक कैलास से उठा है ओम्
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥

---

१ नुक़्स, इलज़ाम, दोष, २ न मरनेवाला, अमर, ३ गरज।

[ ३४९ ]

# माया

## माया और उसकी हकीकत

### * शाम *

( यह सारी कविता कलकत्ते नगर के वृत्तान्त की है और उसे माया के नाम से राम दर्शाते हैं )

गंगा की ठंडी छाती से आती है खुश हवा।
है भीने भीने बाग़ का साँस इस में मिल रहा॥
गंगा के रोम रोम में रचने लगा वह गौहर[1]।
आया ज़ुवार[2] ज़ोर का लैहरों पे लैहरे लैहर॥
देखो तो कैसे शौक़ से आते जहाज़ हैं।
मारे खुशी के सीटी बजाते जहाज़ हैं॥

---

१ समुद्र, २ समुद्र में तूफान, ज्वार भाटा, अर्थात् समुद्र में लहरों का चढ़ाव उतार।

शादी ज़िमी की पे लो ! फ़लक[1] से हुई हुई ।
वह सायवान क़नात है जब ही तनी हुई ॥
दुल्हा के सिर पै तारों का सिहरा खिला खिला ।
दुल्हन के बर्क़े-दिल[2] ने चिराग़ां[3] खिला दिया ॥

[ ३५० ]

## ※ मुकाम ( कलकत्ते का ईडन बाग़ ) ※

है क्या सुहाना[4] बाग़ में मैदाने-दिलकुशा[5] ।
और हाशिया[6] है बेञ्चों का सब्ज़ा पे वाह वा ॥
मजमा[7] हजूम लोगों का भर कर लगा है यह ।
मैदान आदमी से लबालब भरा है यह ॥
बेञ्चों पे बाज़ बैठे हैं, अक्सर हैं खुश खड़े ।
बाँके जवान बाग़ में हैं टहलते पड़े ॥
मैदान पार सड़क पै है बग्गियों की भीड़ ।
घोड़ों की सरकशी[8] है, लगामों की दे नपीड़ ॥
शौक़ीन कलकत्ता के हैं, मौजूद सब यहाँ ।
हर रंग ढंग वज़ा के मिलते हैं अब यहाँ ।

---

१ आकाश, २ दिल में रहने वाली बिजली, इस जगह अभिप्राय पृथिवी से है ३ बिजली की रौशनी फैल गयी, ४ दिलको अच्छा लगने वाला, ५ खुले दिल वाला अर्थात् विशाल मैदान, ६ किनारा, ७ गिरोह, भीड़, ८ सिर हिलाना, सिर हिलाकर लगाम तुड़वाना ।

[ ३५१ ]

## ❊ काम ❊

( अर्थात् कलकत्ते के बाग़ में लोगों का क्या काम है ? )

हम सब को देखते हैं, पर देखते कहाँ ? ।
आँखें तनी हुई हैं, यह क्या पीर क्या जवां ॥
मर्कज़[1] है सब निगाहों का उजला[2] चबूतरा ।
खुश बैंड[3] बाजा गोरों का है जिस में बज रहा ॥
गाते फुला फुला के हैं वह गालें गोरियाँ ।
क्या रौशनी में सुर्ख दमकती हैं कुरतियाँ ! ॥
ऐ लोगो ! तुम को क्या है ? जो हिलते ज़रा नहीं
क्या तुम ने लाल कुरती को देखा कभी नहीं ! ॥

[ ३५२ ]

## ❊ परदा ❊

इसरार[4] इस में क्या है, करो ग़ौर तो सही ।
इस टिकटिकी में क्या है, करो ग़ौर तो सही ॥
गोरों की कुर्तियों को हैं गो तक रहे ज़रूर ।
लेकिन नज़र से कुर्तियाँ गोरे तो सब हैं दूर ॥
लैहरा रहा है परदा सा सब की निगाह पर ।
इस परदे से पिरोई है हर एक की नज़र ॥

---

१ केन्द्र, २ रौशन, चमकीला, ३ अंग्रेज़ी बाजे का नाम है, ४ भेद, गुप्त भेद ।

यह परदा तन रहा है, अजब ठाठ बाठ का।
जिस में ज़मीनो-ज़मानो-मकान्[1] है समा रहा॥
परदा बला है, छेद कि सीवन[2] कहीं नहीं।
लेकिन मोटाई जो पूछो तो असला[3] नहीं नहीं॥
परदा सितम[4] है, सैहर[5] के नक़शो-निगार हैं।
हर आँख के लिये यां अलैहदा ही कार[6] हैं॥
सब सामयीन्[7] के सामने परदा है यह पड़ा।
हर एक की निगाह में नक़शा बना दिया॥
परदों से राग के है यह परदा अजब पड़ा।
गंधर्व शहर का है कि मिराज[8] का मज़ा॥
जादू है, पियानोटिज़म[9] है, परदा सुराब[10] है।
क्या सच है रंग ढंग, यह सब नक़शे[11]-आब है ? ॥
रमिये तो यार परदे में देखें तो कैफ़ीयत[12]।
आँखें सिली हैं परदा से क्यों ? क्या है माहीयत[13] ? ॥
दीदों[14] में और रंगों में क्या है मुनास्बत ? ।

[ ३५३ ]

※ विवाह ※

यह नौजवां के रूबरू नूरी लिबास[15] में।
दुल्हन खिली है फूल सी फूलों की बास में॥

---

१ देश, काल वस्तु, २ सिया हुआ, ३ बिल्कुल, नितान्त, ४ ज़ुल्म, आश्चर्य, ५ जादू, ६ काम, ७ सुनने वाले, श्रोतागण, ८ चढ़ाई, तरक़्क़ी, बलंदी ( यहाँ अभिप्राय स्वर्ग लोक से भी हो सकता है ), ९ पियानो बाजे बजाने का नाम है, १० रेत का मैदान जो धूप में पानी की तरह नज़र आये ( मृगतृष्णा का जल ), ११ पानी के नक़्श, १२ हाल, दशा, १३ असलीयत, १४ चक्षु, नेत्रों, १५ प्रकाश की पोशाक या वस्त्र।

शादी के राग रंग में बाजा बदल गया।
ऐ लो! बरात बैठी है, जलसा बदल गया॥
दुल्हन का रंग हू बहू गोया गुलाब है।
और चश्मे[1]-नीम मस्त[2] से झड़ता शराब है॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो, तो जुड़ जायें न आँखें॥

[ ३५४ ]

※ यूनीवर्स्टी कौन्वोकेशन। ※

ऐनक लगाये लड़के को वह इस ही परदे पर।
हरकारह दौड़ता हुआ लाया है क्या खबर॥
लेते ही तार हाथ में लड़का उछल पड़ा।
"मैं पास हो गया हूँ, लो मैं पास हो गया"॥
"बी० ए० के इमतहान में बढ़ कर रहा हूँ मैं।
इंगलिश में और हिसाब में अव्वल रहा हूँ मैं॥
है चांस्लर से जलसा में इनाम पा रहा।
और फैलो-साहबान्[4] से है इकरामें पा रहा॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आखें।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आखें॥

---

१ आँख, २ आधी मस्त, ३ यूनीवर्स्टी ( विश्वविद्यालय ) के भवन में प्रधान पुरुष ( सभापति ), ४ यूनीवर्स्टी के सभासद व मददगार, ५ उपाधि इत्यादि।

[ ३५५ ]

※ बच्चा पैदा हुआ । ※

वह देखना किसी के लिये इस ही परदे पर ।
पूरी हुई है आर्जू[६], पैदा हुआ पिसर[१] ॥
मंगल है, शादियाना[२] है, खुशियाँ मना रहा ।
दरवाजे पर है भाट खड़ा गीत गा रहा ॥
नन्हा[३] है गोल मोल, कि इक कमल फूल है ।
नाजुक है लाल लाल, अचँवा अमूल[४] है ॥
अब तो बहू की चाँदी है घर भर में बन गयी ।
सास भी जो रूठी थी, लो आज मन गयी ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आँखें ॥

[ ३५६ ]

※ नेशनल कांग्रेस[५] ※

वह देखना ? किसी के लिये इसी परदे पर ।
मण्डप है कांग्रेस का, गज़ब धूम कर्रोफ़र[६] ॥
लैकचर वह दे रहा, धुंआँधार सिहरकार[७] ।
जो चीर शक्को-शुभा को है जाता जिगर के पार ॥

---

१ पुत्र, २ खुशी के बाजे बज रहे हैं, ३ छोटा सा बच्चा, ४ अनंत मोल वाला अर्थात् अमूल्य, ५ राष्ट्रीय महासभा, ६ शान शौकत, ७ जादू की तरह असर करने वाला ।

हक्के[1]-ओ-दक सुकूत[2] में है पड़े हाज़रीन्[3] तमाम।
हरदीदा शोलावार[4] है! बिजली है ख़ासो-आम॥
वह तालियों की गूँज में इक दिल हुये तमाम।
वह मोतियों से आँख का छल के पड़ा है जाम[5]॥
"गो आन, गो आन[6]"! कहते हैं सब अहले-ज़िंदगी[7]।
हड्डी से खून से लिक्खेंगे तारीख हिन्द की॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें॥

इस परदे पर है, ठेका में, इक लाख की बचत।
इस परदे पर है, सेठ को, दो लाख की बचत॥
इस परदे पर है सिंह जवान खूब लड़ रहा।
तन्हा है एक फौज से क्या डट के अड़ रहा॥
इस परदे पर जहाज़ हैं आते खुशी खुशी।
मक़सदे[8] मुराद दिल की हैं लाते खुशी खुशी॥
इस परदे पर तरक्की है रुतबा बढ़ा बढ़ा।
इक दम है मेरे यार का दर्जा बढ़ा चढ़ा॥
इस परदे पर है सैरो-तमाशे[9] जहान के।
इस परदे पर हैं नक़्शे बहिश्तो-जुनाँ[10] के॥
बिछड़े हुए मिले हैं, मुर्दे भी उठ खड़े हैं॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग हो दिलख्वाह[11] तो जुड़ जायें न आँखें॥

---

१ हक्दक, आश्चर्य, हैरान्, २ चुपचाप, ३ श्रोतागण, ४ सब की आँखें लाल हैं, ५ प्याला ( मोतियों ), ६ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, ७ जानदार, ८ मुराद, मन्तव्य, ९ सैर और तमाशा, १० स्वर्ग नरक, ११ दिलपसंद, मनोरंजक।

[ ३५७ ]

## सल्तनत हकीकी अवधूत

वाह ! क्या ही प्यारा नक़शा है, आँखों का फ़ल मिला ।।
उस सोहने नौजवान् का जीना सफल हुआ ॥
महल उसका, जिस की छत पे हैं हीरे जड़े हुए ।।
कौसे-क़ज़ाह[1]-वअबर[2] के परदे तने हुए ॥
मसनद[3] बलन्द तखत है, पर्वत हरा भरा ।
और शजरे-देवदार[4] का है चँवर झुल रहा ॥
नग़मे[5]-सुरीले "ओम्" के हैं उससे आ रहे ।
नदियाँ परिन्दे[6], बाद[7] हैं, वह सुर मिला रहे ॥
बेहोशो-हिस है गर्चि पड़ा खाल की तरह ।
दुन्या है उसके पैर को फुट-बाल[8] की तरह ॥
कैसी यह सल्तनत[9] है, अदू[10] का निशान् नहीं ।
जिस जा[11] न राज मेरा हो ऐसा मकान् नहीं ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें ।
अय रंग हो दिलख्वाह तो जुड़ जायें न आँखें ॥

[ ३५८ ]

## माया सर्वरूप

माया का परदा फैला है क्या रंग रंग में ।
और क्या ही फड़ फड़ाता है हर आबो-संग[12] में ॥

---

१ इन्द्र धनुष, २ बादल, ३ बैठने की जगह, ऊँची, ४ देवदार के वृक्ष, ५ आवाज़, शब्द, ६ पक्षी, ७ वायु, ८ पावों से खेलने की गेंद, ९ बादशाह, राज्य, १० दुश्मन, ११ जगह, १२ पानी में, पत्थर में ।

इस परदे पर हैं झील[1], जज़ीरे[2], खलीजो-बेहर[3]।
इस परदे पर हैं कोह[4]-ओ-बियाबां[5] दियारो-शैहर[6]॥
सब पीर[7] सब जवान् इसी परदे पर तो हैं।
बाशिन्दे और मकान् इसी परदे पर तो हैं॥
पैग़म्बर और किताब इसी परदे पर तो हैं।
सब खाको-अस्मान् इसी परदे पर तो हैं॥
पील[8] अस्प[9] और ग़ुलाम इसी परदे पर तो हैं।
शाहंशाहों के शाह इसी परदे पर तो हैं॥
क्या झिलमिलाता परदा है अनकबूत्[10] का।
दे है ख्याल (उगला हुआ) काम सूत का॥

[ ३५९ ]

## * नक़्शो-निगार और परदा एक हैं *

यह दो नहीं हैं, एक हैं, परदा कहो कि नक़्श।
नक़्शो-निगार[11] परदा है, परदा ही तो है नक़्श॥
यह इस्तआरा[12] था, कि वह माया के रूप हैं।
माया कहो कि यूं कहो यह नाम रूप हैं॥
"इस्मो-शक्ल[13]" ही माया है, यह माया है इस्मो-शक्ल
हममानी[14] माया के हैं, यह रंग रूप-शक्ल॥

---

१ सरोवर, २ द्वीप, ३ खाड़ी और समुद्र, ४ पर्वत, ५ जंगल, ६ मुल्क और शहर, ७ वृद्ध, बुड्ढे, ८ हाथी, ९ घोड़े, १० मकड़ी जो अपने मुंह से तन्तु निकाल कर जाला तनती है, ११ नाना प्रकार के रंग रूप, १२ अभिप्राय, लक्ष्य, दृष्टान्त, तमसील, १३ नाम रूप, १४ एक समान अर्थ।

[ ३६० ]

* फिलसफा[1] *

परदा खड़ा है माया का यह किस मुकाम पर ? ।
है यह सवों ऊपर कि हवासे-अवाम[2] पर ? ॥
है भी कहीं कि मबनी[3] है, यह वैह्म-खाम[4] पर ।
क्या सच है, परस्तादा[5] है, यह मेरे राम पर ॥

[ ३६१ ]

* महले-परदा ( दृष्टान्त ) *

है इस तरफ़ तो शोर सरोदो[6] समा का ।
और उस तरफ है ज़ोर शुनीदन[7] की चाह का ॥
इन दोनों ताकतों का वह टकराना देखिये ।
पुर ज़ोर शोर लैहरों का चकराना देखिये ॥
लैहरें मिलीं मिटीं । ऐ लो ! पैदा हुए हुबाब[8] ।
यह बुलबुले ही बुर्का[9] हैं, परदा बरुए[10]-आब ॥
मौजों ही का मुकाबला परदा का है महल[11] ।
मौजें है आब, कहते नहीं क्यों महल है जल ? ॥
हां यह तो रास्त[12] है कि सरोद[13] और सामयीं[14] ।
दोनों मिले मिटे हैं, वह जल रूपे-राम[15] में ॥
और राम ही में परदा है नक्शो-निगार है[16] ।
यह सब उसी की लैहरों के मौजों[16] के कार[17] है[16] ॥

---

१ दर्शन शास्त्र, तत्वज्ञान, २ सब इन्द्रियसमय, ३ सहारा लिये हुए, आश्रित, ४ कच्चा वेहम अर्थात् कल्पित भ्रम, ५ सीधा खड़ा हुआ, अर्थात् आश्रित, ६ राग रंग ( आवाज़), ७ सुनना, ८ बुलबुला वा बुदबुदे, ९ परदा, १० पानी के चेहरे पर अर्थात् पानी की तह पर, ११ अधिष्ठाता वा आधार, १२ सच, १३ राग, १४ सुनने वाले, १५ जल रूपी राम में वा राम जो जल रूपी है उस में, १६ लहरें, १७ काम ।

[ ३६२ ]

## ✽ अहसासे-आम ( दार्ष्टान्त ) । ✽

महसूस[1] करने वाली इधर से आई लैहर ।
महसूस होने वाली उधर से आई लैहर ॥
दोनों के अक़दे[2]-शादी से पैदा हुए हुबाब[3] ।
यानी नमूद[4] "शै[5]" हुई पानी में झट शिताब ॥
लैहरें भी और बुलबुले सब एक आब[6] हैं ।
इन सब में राम आप ही रमते जनाब हैं ॥
माया तमाम इस की है हर फ़ेल[7]-ओ-क़ौल में ।
मफ़ऊल, फ़ेलो-फ़ाइल[8] हैं हर डौल डौल में ॥
आबशारों और फ़व्वारों की पुहारों की बहार ।
चश्मासारों, सब्ज़ाज़ारों[9], गुलइज़ारों[10] की बहार ॥
बैहरो-दरया[11] के झकोले और सबा[12] का ख़ुशख़राम[13] ।
मुझ में मुतसव्वर[14] हैं यह सब "ओम्" में जैसे कलाम[15] ॥
पसर[16] कर लेटा हूं जग में सुबह में और शाम में ।
चाँदनी में रौशनी में, कृष्ण में और राम में ॥

---

१ इन्द्रियगोचर पदार्थों को भान करने वाली वृत्ति वा भोक्ता पुरुष, २ विवाह वा मेल, ३ बुलबुला, ४ प्रकट, व्यक्त, ५ वस्तु, रूप, ६ जल, ७ काम और वचन, ८ कर्म, कर्म, और कर्ता, ९ बाग़ इत्यादि, १० पुष्प के कपोल वाले प्यारे, ११ समुद्र और नदी, १२ प्रातःकाल की वायु, १३ मटक कर चलना, १४ कल्पित, आरोपित हैं १५ शब्द, वाक्य, १६ फैलकर ।

[ ३६३ ]

## * राम सुवरा[1] । *

यह तो सब रास्त[2] है, बले[3] अज़ रूये[4]-ज़ात भी।
देखो तो परदा नक़श वग़ैरा न थे कभी॥
है मौजें ही में रहो-बदल[6] जिस के बावजूद।
क़ायम है ज्यूं का त्यूं सदा इक आब[7] का वजूद॥
अज़ एतबारे-ज़ात[8] यह कहना पड़ा है अब।
पैदा ही कब हुए थे वह अमवाज[9] और हुबाब[10]॥
अज़ रूये-राम पूछो तो फिर वह निगारो-नक़्श।
माया वग़ैरा का कहीं नामो-निशानो-नक़्श॥
हर्कत सकून[11] और तग़य्युर[12] का काम क्या?।
नुतको[13]-ज़ुबां को दख़ल, सिफ़ातों[14] का नाम क्या॥
इक़बाल[15] कहाँ, अद्बार[16] कहाँ, यां बेशी कमी को बार कहां।
यां पुण्य कहां, अरु पाप कहाँ, अरु मुझ में जीतो-हार कहां॥
इक़रार कहां, इन्कार कहां, तकरार कहां, इसरार[17] कहाँ।
महसूस-हवास[18] अहसास कहां, ख़ाक[19] आब[20] अरु बादो[21]-नार कहां॥
सब मर्कज़[22], सर्कज़, मर्कज़ है, इकतार[23] कहां, परकार[24] कहां।

---

१ शुद्ध स्वरूप राम, २ सच, ३ किन्तु, ४ वस्तुतः भी, ५ लैहर, ६ बदलना इत्यादि, ७ जल, ८ वस्तु के लिहाज़ से कहना पड़ा, ९ लैहरें, १० बुलबुला ११ अस्थिरता व स्थिरता, १२ तब्दीली विकार, १३ वाणि व वाक् इन्द्रिय, १४ गुण, १५ विभूति, महिमा १६ बोझ, १७ हठ, ज़िद, १८ स्पर्श-इन्द्रिय, पदार्थ, १९ पृथ्वी, २० जल, २१ वायु और अग्नि, २२ केन्द्र, २३ पंक्तियें २४ पंक्तियें डालने वाला औज़ार।

[ ३६४ ]

## नतीजा।

गलतां[1] है मुहीत बेपायां[2], यहां वार कहां, अरु पार कहां?।
जंगा है कहां, अरु बाग़ कहां, है सुलह कहां, पैकार[3] कहां?॥
यां नाम कहां, अरु रूप कहां, अख़्फ़ा[4] कहां, इज़्हार[5] कहां?।
नहीं एक जहां दो चार कहां, अरु मुझ मैं सोच विचार कहां?॥
मां बाप कहां, उस्ताद कहां? गुरु चेले का यां कार कहां?।
एहसान कहां, आज़ार[6] कहां? यां ख़ादिम[7] और सरदार कहां॥
न ज़मां[8] न मकां[9] का कभी था निशां, इल्लत[10] मालूल[11] अज़्कार[12] कहां।
नहीं ज़ेर[13], ज़बर[14] पस[15], पेश कहां? तक़्ती[16] और शेर अशआर[17] कहां॥
इक नूर[18] ही नूर हूं शोलाफिशां[19], गुलज़ार[20] कहां और ख़ार[21] कहां।
लैक्चर तक़रीर उपदेश कहां? तैहरीर[22] कहां, प्रचार कहां?॥
तप दान और ज्ञान और ध्यान कहां? दिल बेबस सीनाफ़िगार[23] कहां॥
नहीं शोख़ी शोख़ी आर[24] कहां? सिर टोपी या दस्तार[25] कहां?
नहीं बोली ताना धमकी यहां, सूफ़ार[26] कहां और दार कहां[27]॥

---

१ पेच खाता हुआ, (ग़र्क़ या मग्न हुआ), २ बेहद (अनन्त) अहाता, ३ लड़ाई, जंग, ४ पोशीदगी (अव्यक्त), ५ व्यक्त, ६ दुःख, ७ नौकर, ८ काल, ९ देश, १० कारण, ११ कार्य, १२ ज़िकर, चरचा, १३ नीचे, १४ ऊँचे, १५ पीछे आगे, १६ टुकड़े करना, कविता का वज़्न बनाना, १७ कविता, नज़्में, १८ प्रकाश, १९ दमकने वाला, यहाँ दमक मार रहा है, २० बाग़, २१ काँटा, २२ लेख, २३ सीना फाड़ने वाला वा ज़ख़्मी दिल (आशिक़ वा प्रेमासक्त), २४ लज्जा, हया, २५ पगड़ी, २६ तीर का मुँह, २७ सूली।

इक मैं ही मैं ही मैं ही हूं, शैं[1] ग़ैर का दारो-मदार कहां।
आलायशे-क़ैदो-निजात[2] कहां? अहवामे[3]-रसन[4] और मार[5] कहां॥
घर बार कहां, कोहसार[6] कहाँ, मैदान कहां, और ग़ार[7] कहां।
मह[8], अञ्जुम[9], फ़र्श[10], और अर्श[11] कहां? यां ख़्वाब[12] कहां बेदार[13] कहां।
जब ग़ैर[14] नहीं, डर ख़ौफ़ कहां, अन्भेद से हालते-ज़ार[15] कहां?॥
मैं इक तूफ़ाने-वहदत[16] हूँ, कहो मुझ में इस्तफ़सार[17] कहां।
इक मैं ही, मैं ही, मैं ही हूँ, यां बन्दे[18] और सरकार[19] कहां॥

[ ३६५ ]

## दुन्या की हक़ीक़त

क्या हैं यह? किस तरह हुए मौजूद?।
इक निगाह पर सब की हस्ती-ओ[20]-बूद॥
हां जगत है, सबूत दीजियेगा।
इन्द्रियों पर यक़ीन न कीजियेगा॥
( १ ) बेशक आती नज़र है दुन्या, पर।
है कहां, आप ही न देखें गर॥
माहा-माही[21]-व शाहो-ज़र्रीन ताज।
अपनी हस्ती को हैं तेरे मोहताज॥

---

१ दूसरी वस्तु, भिन्न वस्तु, २ मुक्ति और बद्ध का लेश, ३ रस्सी की भ्रान्ति, ४ रस्सी, ५ साँप, ६ पर्वत, ७ कन्दरा, गुफा, ८ चाँद, ९ तारे, १० पृथिवी, ११ आकाश, १२ स्वप्न, १३ जाग्रत, १४ अन्य १५ रोने की दशा, १६ एकता का तूफ़ान, १७ प्रश्न करना वा पूछना, १८ प्रजा, सेवक, १९ राजा, मालिक, २० स्थिती, होना, २१ चाँद सूर्य ( अथवा चाँद से मछली पर्यंत सब जीव जन्तु )

बर्क़[1] मौजूद है सभी शै में।
गो हवासों के हो न हलक़े[2] में॥
वक़्ते-इज़हार[3], बर्क़-शोख़ी बाज़।
ख़ुद ही मुसबत[4] है, ख़ुद ही मनफ़ी[5] नाज़॥
तेरी माया है बर्क़-वश[6] चञ्चल।
यारो आगे कहां चलें छल बल॥
तू इधर देखता है आँख उठा।
तू उद्धर बन गया कोहो-सहरा[7]॥

( २ ) ख़्वाब में हैं ख़्याल की दो शान।
जुज़्वी[8], कुल्ली[9] "यह एक मैं" ,,यह जहान"
"मैं हूँ इक मर्द" शाने जुज़्वी है॥
"जुमला आलम[10]," यह शाने-कुल्ली है॥
ख़्वाबे-पुख़्ता[11] शुदः है बेदारी।
जाग! सारी तेरी है गुलकारी[12]॥
तू ही शाहिद[13] बना है, तू मशहूद[14]।
शान तेरी है आस्मानो-कबूद[15]॥
ख़्वाब तेरा ख़याल तेरा है।
जो ज़मीनो-ज़मान[16] ने घेरा है॥
जल्वा[17] तेरा यह अम्बसाती[18] है।

---

१ बिजली, २ घेरा, हद, ३ दृश्य, ज़ाहिर होने के समय, ४ हाँ, होने, व्यक्त, ५ नहीं, न होना, अव्यक्त, ६ बिजली की तरह, ७ पर्वत और जंगल, ८ व्यष्टि, ९ समष्टि, १०संसार,११दृढ़ स्वप्न, १२बाग़, बूटा,१३गवाह, साक्षी, १४ दृष्ट वा दृश्य, १५ नीला आकाश, १६ देश काल, १७ दर्शन, १८ अज्ञान अथवा माया की विक्षेप शक्ति।

बीज माया ही फैल जाती है ॥
क्या यह दुन्या ख़याल मात्र है ।
क्या यह सच मुच ख़याले-ख़तिर[1] है ॥
अगर तुझे इसमें शक नज़र आवे ।
कुछ भी बिन ख़याल के दिखा तो दे ॥

( चित्त वृत्ति के फ़ुरने बग़ैर कोई भी शै महसूस[2] नहीं हो सकती )

हां यह ख़्वाबो-ख़याले-माया है ॥
'एक' कसरत[3] में आ समाया है ॥

( २ ) मरना जीना यह आना जाना सब ।
ठैहरना चलना फिरना गाना सब ॥
सब यह करतूत जान माया की ।
मेहरे-तावां[4] की एक छाया की ॥
पुर[5] ज़िया आफ़ताबे-रौशन राये ।
गंग लैहरों पै नाचता है आये ॥
साक्षी सूरज कहीं न हिलता है ।
आब[6] बैहता है, यूं वह फिरता है ॥
छोटी बूंदो पै नूर सूरज का ।
क्या धनुष बन गया है अचरज सा ॥
शीश मंदिर में शमा[7] जो रक्खा ।
क्या समय हो गया चिराग़ां का ॥
फ़ितनागर[8] आयीना में चश्मे-निगार ।
झूट है, गो है यार से दो चार ॥

---

१ दिल ( मन ) का ख़याल, २ भान, प्रतीत, ३ नानत्व, ४ सूर्य, ५ प्रकाश से भरपूर, ६ जल, ७ दीपक, ८ झगड़ा डालने वाला ।

यह अविद्या में जो पड़ा आभास ।
ब्रह्म कहलाया इस से जीव और दास ॥
यूं जो संसर्ग[1] से हुआ अध्यास ।
सानी[2] यकता का ला बिठाया पास ॥
माया आयीना कैसी खुर्सन्द[3] है ।
मज़हरे-राम[4] सच्चिदानन्द है ॥
कुच्छ नहीं काम रात दिन आराम ।
काम करता है फिर भी सब में राम ॥
क्योंजी जब आप ही की माया है ।
दिल पै अन्दोह[5] क्यों यह छाया है ॥
हेच[6] दुन्या के वास्ते फिर क्यों ।
भाई भाई से तीरह-ख़ातिर[7] हों ? ॥
खटका कैसा ? झजक ख़तर क्या है ? ।
बीमो[8] उम्मेद कैसी ? डर क्या है ? ।
बादशाह का बुरा जो चाहता है ।
सख्त जुरमे-कबीरह[9] करता है ।
देखियेगा हक़ीक़ी शाहंशाह ।
राज जिस का है काह से ता माह[10] ॥
तेरे नस में रगों में नाड़ों में ।
पेहले-सौदागरां[11] है राहों में ॥
जिसका पेहरे-हकूमते-वर्कत[12] ।
चैन दे सिर में अक़ल को हर्कत ॥

---

१ अन्दर प्रवेश, २ दूसरा, ३ खुश, अच्छी, ४ राम के दिखाने वाली, ज़ाहिर होने का स्थान, ५ दुःख, फ़िकर, ६ नाचीज़, तुच्छ ७ ख़राब दिल, द्वेष भरा चित्त, ८ आशा-डर, ९ बड़ा भारी पाप, १० तृण से चन्द्रमा तक, ११ अभिप्राय खून दम इत्यादि १२ राज्याधिकार, प्रभाव, वो प्रताप ,

ऐसा सुलतान् अज़ीमे-आली[1] जाह ।
तेरा ही आत्मा है जाये-पनाह[2] ॥
ऐसे सुलतां से जो हुआ ग़ाफ़िल ।
हाये ख़ुदकुश[3] है, शाहकुश क़ातिल[4] ॥
क्यों जी कुच्छ शर्मो-आर[5] भी है तुम्हें ।
क्यों यह कंगलों से दाँत लिलके हैं ? ॥
रींगना क्यों ? कमर यह टूटी क्यों ! ।
वाये क़िस्मत तुम्हारी फूटी क्यों ॥
रास्ती के गले छुरी क्यों है ? ।
हक़[6] ही जीतेगा, सत की है जे ॥
क्यों ग़ुलामी क़बूल की तुम ने ।
दर-बदर ख्वार भीक ली तुमने ॥
थी यह लीला रची अनोखे ढब ।
खेल में भूल क्यों गये मनसब[7] ? ॥
ताजे-नूरी को सिर से फेंक दिया ।
टोकरा रंजो-ग़म का सिर पै लिया ॥
अब जलालो-जमाले-ज़ात[8] सम्भाल ।
उठो, शब सा हों सब विषय पामाल ॥
नैय्यरे-आज़म हो, तुम तो नूर फ़िगन[10] ।
ख़िदमते-माया में न ढूँडो धन ॥
वैह्म का मार[11] आस्तीन् से खोल ।
मत फिरो मारे मारे डाँवां डोल ॥

---

१ महान, भारी पदवी वाला, २ सब का आश्रय व आधार, ३ आत्मघाती, ४ आत्म स्वरूप रूपी बादशाह को मारने वाला, ५ लज्जा, हया, ६ सत्य, ७ पद, दर्जा ८ स्वरूप का तेज और वैभव ९ सूर्य, १० प्रकाश डालने वाले, ११ साँप ।

[ ३६६ ]

* ज़ाते बारी[1] *

लीक माया यह आ गयी क्योंकर ? ।
रूये-आलम[2] पै छा गयी क्योंकर ? ।
ज़ाते-वाहिद[3] को क्यों शरीक लगी ? ।
बे बदल हुसन[4] को क्यों यह लीक लगी ! ॥
बद्र[5] को गैहन[6] यह लगा कैसे ? ।
ऐसा ज़िल्ले-ज़मीन्[7] पड़ा कैसे ? ॥

[ ३६७ ]

* जवाब *

( १ ) ऐ ज़मीन्दोज़[8] चश्मे-दुन्या बीं[9] ! ।
तू ही खुद है बनी खसूफ़[10] वही ॥
चाँद राहू ने जा न पकड़ा है ।
वैह्म तेरे ने तुझ को जकड़ा है ॥
ज़ाते-वाहिद[11] सदा है जूँ की तूँ ।
उसमें रद्दो बदल[12] है यां न यूँ ॥
दायें बायें इधर उधर हर सू[13] ।
आप ही आप एक रस है हू[14] ॥

---

१ ईश्वर, असली स्वरूप, २ जगत, दुनिया, ३ एक अद्वतीय, ४ निर्विकार सौन्दर्य, ५ चौदश का चंद्रमा अर्थात् पूर्णिमा, ६ ग्रहण ७ परछांई पृथिवी की, ८ पृथिवी से तद्रूप, ९ ऐ संसार को संसार की दृष्टि से देखनेवाली चक्षु वा दृष्टि, १० ग्रहण वा ग्रहण की छाया, जगत में आसक्त, ११ अद्वैत स्वरूप, १२ विकार, १३ तरफ़, १४ ईश्वर, ब्रह्म ।

ईन्[1] आन्[2], चूँ[3], चुगूँ[4], चुनीं[5]-ओ चुनां[6]।
लौट आते हैं वहां से हो हैरान् ॥
बरतर अज़ फ़हमो-अक़्लो-होशो-गुमां[7]।
लामकां[8], लाज़मां[9]-निशां-अमकान्[10] ॥

(२) रूये-खुर्शीद[11] पर नक़ाब[12] नहीं।
दोपैहर को कोई हिजाब[13] नहीं ॥
आब[14] हायल नहीं, सहाब[15] नहीं।
देखने की किसी को ताब नहीं ॥
मौजज़न[16] हो रही है उर्यानी[17]।
तिस पै परदा है तुर्रह हैरानी ॥

(३) जूँ रसन[18] में पदीदे-सूरते-मार[19]।
मुझ में माया-नमूद है तूमार[20] ॥
यह स्वरूपाध्यास[21] है इज़हार।
जान तुझको, रहे न यह पिंदार[22] ॥
और संसर्ग[23] को जो माना था।
तब तलक ही था, जब न जाना था ॥
मारे-मौहूम[24] में मोटाई तूल[25]।
तो वही है जो थी रसन में मूल ॥

---

१ यह, २ वह, ३ क्यों, ४ किस तरह, ५ ऐसा, ६ और वैसा, ७ समझ होश और अक़्ल से भी दूर, ८ देश रहित, ९ काल रहित, १० चिन्ह रहित, निराकार या सम्भवता रहित, ११ सूर्य के मुख पर, १२ परदा, १३ परदा, १४ चमक ढांपे हुये नहीं, १५ बादल, परदा, १६ लहरें लहरा रही है, १७ नंगापन १८ रस्सो में, १९ साँप की सूरत नज़र आती है, २० लम्बी गाथा, भ्रम, २१ अपने स्वरूप का भ्रम, २२ घमंड, भ्रम, समझ, २३ आवेश, प्रवेश, २४ कल्पित साँप, २५ लम्बाई।

यह हक़ीक़ी रसन का तूलो-अर्ज़[1]।
मारे-मौहूम में हो आया फ़र्ज़॥
इस तरह गचें माया मिथ्या है।
उस में संसर्ग सत्त ही का है॥
दूर रहते हैं मारे दैहशत[2] के।
नागनी काली से सभी हट के॥
पर जो आकर क़रीबतर[3] देखा।
बेख़तर[4] हो गये, मिटा खटका॥
माहीयत[5] पर निगाह गर डालो।
असले-हस्ती को खूब सम्भालो॥
कैसी माया? कहां हुआ संसर्ग?।
कब थी पैदायश-व-कहां है मर्ग[6]॥
काल वस्तु का देश का मुझ में।
नाम होगा न है हुआ मुझ में॥
कौन तालिब[7] हुआ था, मुर्शिद[8] कौन।
किस ने उपदेश करा, पढ़ाया कौन?॥
किस को संशय शकूक उठते थे?।
कब दलायल से हल फिर तै[9] हुये?॥
हस्ती-ओ-नेस्ती नहीं दोनों।
रस्तगारी[10]-ओ-क़ैद क्योंकर हों?॥
क्या ग़ुलामी, कहां की शाही है?।
आली जाही[11] कहां? तबाही है॥

---

१ लम्बाई, चौड़ाई, २ डर, भय, ३ बहुत समीप, ४ निडर, निर्भय, ५ असल वस्तु, हक़ीक़त ६ मृत्यु, ७ जिज्ञासु, ८ गुरू, ९ साफ़ हल हुये, १० आज़ादी, मुक्ति, ११ उच्च पद वा पदवी।

मैं कहां ? तू कहां ? सग़ीर-ओ-कबीर[1] ? ।
किस का सय्यादो-दाम[2] दाना असीर[3] ? ॥

किस की वहदत[4] और उसमें कसरत क्या ? ।
क्या खुदाई यहां ? अबादत[5] क्या ? ॥

किस की तशबीह[6] और मुशब्बाह[7] क्या ? ।
जैहल[8] क्या और इल्म हो कैसा ? ॥

कैसी गंगा यहां पै राम कहां ? ।
ज़ाते-मुतलक़[9] में मेरी नाम कहां ? ॥
कब खिली चाँदनी ? है ख़्वाब कहां ? ।
रात कैसी हो ? आफ़ताब कहां ? ॥

कब रसन था ? यहां पै मार नहीं ।
कोई दुशमन हुआ न यार नहीं ॥
अक्स इस जा नहीं है, ऐन नहीं ।
नुक़ता पैदा नहीं है गैन नहीं ॥

कब जुदा थे, ? न पाई बीनाई[10] ।
खुद खुदाइ है, बल बे रानाई[11] ॥
कुछ बियान कीजियेगा हाले-ज़ात[12] ।
हाय कहने में आये क्योंकर बात ? ॥

कब कुंवारी के फ़ैहम[13] में आवे ।
लज्ज़ते-वस्ल[14] कौन बतलावे ? ॥

---

१ छोटा, बड़ा, २ शिकारी और जाल, ३ कैद, ४ एकता ५ बन्दगी, ६ हमशकल, दृष्टांत, ७ जिस पर दृष्टांत दिया जाय, बराबरी वाला, ८ अज्ञान, ९ मेरे वास्तव स्वरूप, १० दृष्टि, ११ विना वाहरी सज धज, १२ आत्मा का वर्णन १३ समझ में आवे, १४ विषयानन्द ।

दस्पना[1] पकड़ता है अशया[2] को ।
कैसे पकड़े जो उङ्गली काबिज़[3] हो ? ॥
अक़्ल बुद्धि हवास मन सारे ।
मिस्ले चिमटा हैं, दुन्या अङ्गारे ॥
आत्मा अक़्ल बुद्धि मन सब को ।
क़ाबू रखता है, हाथ चिमटे को ॥
दुन्यवी शै पे अक़्ल का बस है ।
आगे मुझ आत्मा के ख़ुद ख़स[4] है ॥
अक़्ल से ब्रह्म चाहो पहचाना ।
हाथ चिमटे के बीच में लाना ॥
ग़ैर मुमकिन, मुहाल ही तो है ।
दम जो मारे मजाल किस को है ? ॥
नुत्क़[5] ! मशहूर है तू कार-आरा[6] ।
राम तक पहुँचने का है यारा[7] ? ॥
नुत्क़ ने ज़ोर जान तक मारा ।
गिर पड़ा आख़िरश थका हारा ।
आँख ख़ाने[8] से अपने बाहर आ ।
ढूंढ बैठी है बाग़ बन सेहरा[9] ॥
छान मारा जहान् को सारा ।
कैसे देखियेगा आँख का तारा ? ॥
ऐ ज़ुबान् ! मोम तुझ से है ख़ारा[10] ।
कुछ पता दे कहां पे है दारा[11] ? ॥

---

१ चिमटा, २ वस्तु, ३ जो उङ्गली चिमटे को ख़ुद पकड़े हुए हो, ४ तुच्छ, ५ वाणी, बोलने की शक्ति, ६ काम पूरा करने वाली; ७ बल, ८ घर, ९ जंगल, १० पत्थर, ११ दारा बादशाह से भी अभिप्राय है और अपने घर से वा स्वरूप से भी अभिप्राय है।

अपना सब कुछ ज़ुबान् ने वारा ।
चढ़ गया उड़ गया चले पारा ॥
खूं रोता क़लम है बेचारा ।
लिखते लिखते ग़रीब मैं मारा ॥
ऐ क़लम, नुत्क़ ! ऐ ज़ुबान्, दीदा ! ।
जुस्तजू[1] में मरो, है निस्तारा[2] ॥
आँख की आँख, जान् की है जान् ।
नुत्क़ का नुत्क़, प्राण का है प्राण ॥
कौन देखे यहां दिखाये कौन ? ।
कौन समझे यहां सुनाये कौन ? ॥
लद गया अक़लो-होश बनजारा ।
ओस[3] सा कर सका न नज़्ज़ारा[4] ॥
राम मीठा नहीं, नहीं खारा ।
राम खुद प्यार है, नहीं प्यारा ॥
राम हलका नहीं, नहीं भारा ।
राम मिलता नहीं, नहीं न्यारा ॥
खँड टुकड़ा नहीं, नहीं क्यारा ।
ख़्याले-तक़सीम[5] पर चला आरा ॥
राम है तेग़-तेज़ की धारा ।
खेल ले जान् पर तू आ यारा[6] ! ॥
उस को आदिल[7] रहीम ठहराना ।
उससे दुन्या में बेहतरी चहना ॥

---

१ ढूंढ, २ छुटकारा, ३ शबनम, ओस, ४ किसी वस्तु का देखना, ५ बाँटने के ख़्याल पर, भिन्नता के विचार पर, ६ ऐ प्यारे, ७ मुन्सिफ़, न्यायकारी ।

ख्वाहिशों का दिलों में भर लाना।
उनके बर आने की दुआ गाना॥
मतलबी यार उसका बन जाना।
चल परे हट ! नहीं वह अंजाना॥
राम जारोब-कश[1] नहीं तेरा।
सिर से गुज़रो, विसाल[2] हो मेरा॥
ख्वाहिशों को जिगर से धो डालो।
हविसे-दुन्या[3] को दिल से रो डालो॥
आजू को जला के ख़ाक करो।
लज़्ज़तों को मिटा के पाक करो॥
बहके फिरना भटक भटक बातिल[4]।
छोड़ कर हूजिये अभी कामिल॥
तू तो माबूद[5] है ज़माने का।
देवताओं का देव तू ही था॥
ऐहले-इसलाम[6], हिन्दु, ईसाई !।
गिर्जा, मन्दिर, मसीत, दुहाई !॥
दे के दुहाई राम कहता है।
तू ही तो राम, गाड[7], मौला है॥
सब मज़ाहब में सब के मोबद[8] में।
पूजा तेरी है, नेक में, बद में॥
ऐ सदा मस्तराज मतवाला !।
रुतबा औसाफ़[9] से तेरा बाला[10]॥

---

१ झाड़ू देने वाला ( भंगी ), २ मेल, दर्शन, ३ दुनिया के पदार्थों का लालच, ४ झूठमूठ, ५ पूजनीय, ६ ऐ मुसलमानो ! ७ God, ईश्वर, ८ मंदिर, ९ सिफ़तों, गुणों १० परे, ऊपर।

ऐ सदा मस्तराज मतवाला ! ।
अपनी महिमा में मौज कर वाला ॥
एकमेवाद्वितीयं तेरी ज़ात ।
वाहिदु[1]-लाशरीक[2] मेरी ज़ात ॥
पास तेरे फ़र्क़ ले ग़ैरीयत ।
ग़ैरमुमकिन है; वल वे महवीयत[3] ॥
एक ही एक, आप ही हूँ आप ।
राम ही राम, किस की माला जाप ? ॥

[ ३६८ ]

## ❋ आदमी क्या है ? ❋

( १ ) दाना खशखश का एक बोया था ।
बाबा आदम[4] ने इब्तदा[5] में ला ॥
एक दाना में ज़ोर यह देखा ।
बढ़ गया इस क़दर, नहीं लेखा ॥
इस क़दर बढ़ गया, फला फैला ।
जमा करने को न मिला थैला ॥
कुठले कुठली भरे हुए भर पूर ।
बनिये, सौदागरों के कोठे पूर ॥
एक दाना हक़ीर[6] छोटा सा ।
अपनी ताक़त में क्या बला निकला ॥

---

१ सिर्फ़ एक ही है, दो नहीं, एक के सिवाय और नहीं, २ एक, बिना दूसरे साथी के, ३ बल्कि लीन वा अभेद होना, ४ हज़रत आदम जिसको ईसाई और मुसलमान अपना पहिला पैग़म्बर सृष्टि रचने वाला मानते हैं, ५ आरम्भ में, ६ तुच्छ ।

आज बोने को दाना लाते हैं।
इस की ताक़त भी आज़माते हैं॥
यह भी खशखश ही का दाना है।
यह भी ताक़त में क्या यगाना[1] है॥
हूबहू है वुही तो इस में भी।
शक्ति आदम के बीज में जो थी॥
सच बतायें, है यह वुही दाना।
न यह फैला हुआ न दोगाना[2]।
खूब देखो विचार करके आप।
माहीयत[3] बीज को क़लील[4] सा नाप॥
ग़ौर से देखिये हक़ीक़त को।
नज़र आता है बीज क्या तुम को?॥
असल दाना नज़र न आता है।
न वह घटता है, बढ़ न जाता है॥
मेरे प्यारे! तू ज़ाते-वाहिद[5] है।
तेरी कुदरत अगर्चि बेअद[6] है॥

( २ ) जान नन्ही[7] को जब कि सायन्सदां[8]।
इम्तिहान् को है काटता यक्सान्॥
जिस्म गो होगया हो दो टुकड़े।
लैक मरते नहीं वह यूं कीड़े॥

---

१ अकेला, अद्वितीय, २ दूसरे क़िस्म का, ३ असली, ४. थोड़ा सा, ५अद्वैतस्वरूप, ६ अगणित, बिना गिन्ती के, ७ छोटी सी (कीड़ा जो कि दो बराबर हिस्सों में काटे जाने से मरता नहीं बल्कि एक के बजाय दो कीड़े हो जाते हैं ) ८ सायंस या पदार्थ विद्या का जानने वाला।

पेशतर काटने के एक ही था।
जब दिया काट दो हुए पैदा॥
दोनों वैसा ही ज़ोर रखते हैं।
जैसे वह कीड़ा जिससे काटे हैं॥
दो को काटें तो चार बनते हैं।
चार से आठ बन निकलते हैं॥

क्या दिखाती है, खोल कर यह बात।
काटने में नहीं है आती ज़ात[1]॥
गो मनु का शरीर छूट गया।
पर करोड़ों हनूद हैं पैदा॥

हर ऋषि की नसल[2] में है वुही।
शक्ति आदि मनु में जो तब थी॥
हां अगर कुछ कसर है ज़ाहिर में।
दुर्रे यक्ता[3] पड़ा है कीचड़ में॥

झट निकालो यह हीरा साफ़ करो।
ज़िद न कीजियेगा, बस मुआफ़ करो॥
एक शीशे में एक ही रू[4] था।
शीशा टूटा, अदद[5] बढ़ा रू का॥

मुख़तलिफ़ हो गये बहुत अबदां[6]।
इन में ज़ाहिर है एक ही इन्सां॥
जैद हो बकर हो उमर ही हो।
मज़हरे[7]-आदमी है, कोई ही हो॥

---

१ सत्य वस्तु, २ औलाद,कुल, ३ अद्वितीय मोती, ४ चेहरा, मुख, ५ गिन्ती, नम्बर, ६ देह, शरीर, ७ मनुष्य के ज़ाहिर होने का स्थान, जतानेवाला।

गो है नकरे[1] का मारफ़ों[2] में ज़हूर।
नाम रूपों में है, यही मामूर[3] ॥
पर वह नकरा बजाते खुद क्या है?।
इस में हिस्सों का दख़ल बेजा[4] है ॥
इस्म फ़रज़ी, शकल बदलती है।
पर जो तू है, सो एक रस ही है ॥
तू ही आदम बना था, तू हव्वा[5]।
तू ही लाट साहब, तू ही हौवा ॥
तू ही है राम, तू ही था रावण।
तू ही था वह गडरिया वृन्दावन[6] ॥
झूठ तुम को सनमँ[7]! न ज़ेबा[8] है।
तू ही मौला है, छोड़ दे है है ॥
सीमबर[9] का वह चाँद सा मुखड़ा।
तेरा मज़हर है, नूर का टुकड़ा ॥
दिल जिगर सब का हाथ में है तेरे।
नूरे-मौफ़ूर[10] साथ में है तेरे ॥
माहो-खुर्शीद[11], बर्क़ो-अंजमो-नार।
जान करते हैं राम पर ही निसार[12] ॥

---

१ साधारण शब्द जो बोलने व लिखने में आये, २ गुणवाचक अथवा नाम-वाचक शब्द, ३ भरपुर, ४ अनुचित, ५ आदम हव्वा मुसलमानों के दो पैग़म्बर है जिनसे वह पृथिवी उत्पन्न हुई मानते हैं, ६ कृष्ण से अभिप्राय है, ७ ऐ प्यारे! ८ उचित, ठीक, ९ चाँदी वाला, १० बहुत ज़्यादा किया हुआ प्रकाश अर्थात् प्रकाश स्वरूप, ११ चाँद सूर्य, बिजली तारे और अग्नि, १२ न्यौछावर, अर्पण।

नोट—नं० १, २, ३ से अभिप्राय तीन प्रकार (बीज, कीड़ा, शीशा) की युक्तियों से है जिनसे स्वामीजी ने सिद्धांत (आत्मा सदा निर्विकार, अपरिवर्तनशील है, परिवर्तन, विकार केवल बाह्य नाम रूपों में है) को दर्शाया है—

# तीन शरीर और वर्ण

## तीनों अजसामं

ग़ज़ल

(१) जाने-मन[2] ! जिस्म[1] एक खिलता[3] है ।<br>
इसके उतरे न कुछ बिगड़ता है ॥<br>
याद रख, तू नहीं यह जिस्मे-कसीफ़[4] ।<br>
और हरगिज़ नहीं तू जिस्मे-लतीफ़[5] ॥<br>
जिस्म तेरा कसीफ़[6] ओवर-कोट[7] ।<br>
जिस्म तेरा लतीफ़ अंडर-कोट[8] ॥<br>
जिस्म बेरूनी[9] झट बदलता है ।<br>
जिस्म अन्दर का देरपा[10] सा है ॥<br>
देह स्थूल मर गया जिस वक़्त ।<br>
देह सूक्ष्म चला गया उस वक़्त ॥<br>
देह सूक्ष्म फिरे है आवागमन ।<br>
तू तो हर जा[11] है, आना जाना कौन ॥

---

१ शरीर, २ ऐ मेरी जान ! ऐ मेरे प्यारे ! ३ चोगा, कोट है, ४ स्थूल शरी[र], ५ सूक्ष्म शरीर, ६ स्थूल, ७ कोट के ऊपर का कोट, ८ कोट के नीचे का को[ट], ९ बाह्य शरीर अर्थात् ओवर कोट, १० देर तक रहने वाला, ११ हर जगह है ।

(२) पक्की मट्टी के बेशुमार घड़े।
भर के पानी से धूप में धर दे ॥
जितने बर्तन हैं, अक्स[1] भी उतने।
मुख़तलिफ़ से नज़र आयेंगे ॥
लैक सूरज तो एक है सब में।
और जो सायंस पढ़ा हो मकतब में ॥
तब तो जानोगे तुम, कि यह साया।
आब[2] अन्दर कभी नहीं आया ॥
नूर[3] बाहर है, लैक धोखे से।
बीच पानी के लोग थे समझे ॥
अब यह पानी घड़े बदलता है।
टूटते हैं सबू[4], यह रहता है ॥
पानी जिस्मे-लतीफ़ को जानो।
मट्टी जिस्मे-कसीफ़ पहिचानो ॥
जाने-मन ! तू तो मिहरे-ताबां[5] है।
एक जैसा सदा दरख़शां[6] है ॥
जैहल[7] से है तू क़ैदे-क़ालिब[8] में।
तुझ में सब कुछ है, तू ही है सब में ॥
गो यह जिस्मे-लतीफ़ पानी सां।
बदलता है हमेशा ही अबदान्[9] ॥
पर तेरी ज़ाते-कुदसे-बाला[10] का।
बाल हरगिज़ न हो सका बीङ्का[11] ॥

---

१ प्रतिबिम्ब, २ पानी, जल, ३ प्रकाश, ४ घड़े, ठलिया, ५ प्रकाश करने वाला सूर्य, ६ चमकने वाला, प्रकाशस्वरूप, ७ अविद्या, अज्ञान, ८ शरीर की कैद, ९ बहुत शरीर, देह, १० तेरा परम शुद्ध स्वरूप (आत्मा) ११ टेढ़ा ।

मेरे प्यारे ! तू आफ़ताब ही है।
अक्स मुतलक़ नहीं, तू आप ही है॥
रूये-अनवर[1] ज़रा दिखा तो दे।
पानी उड़ता है, अक्स हो कैसे ?॥
कैसा पानी, कहां तनासख़[2] हो ?।
मैं ख़ुदा हूँ, यक़ीन रासख़[3] हो॥
इल्मे-ओप्टिक्स[4] से गर करो कुछ ग़ौर।
तो सुबू, आब, मिह्र[5] से नहीं और॥
यह ज़मीन् और सारे सय्यारे[6]।
चश्मा-ए-नूर[7] से नहीं न्यारे[8]॥
नेबूलर[9] मसले को जाने दो !
एक सीधी सी बात यूं देखो॥
यह जो आबो-सुबू-ओ-सहरा[10] है।
रात काली में किस ने देखा है॥
चश्म जब आफ़ताब ने डाली।
पानी बर्तन दिखाये बनमाली॥
आप बर्तन है, आप पानी है।
क्या अजब राम की कहानी है॥
आप मज़हर[11] है, साया अफ़गन[12] आप।
साया मज़हर कहां ? है आप ही आप॥
क्या तहय्युर[13] है, हाये हैरत है।
ग़ैर से क्या ग़ज़ब की ग़ैरत है॥

---

१ प्रकाश वाला स्वरूप, (अपना स्वरूप). २ आवागमन (मरना और फिर जीना), ३ सच्चा व पक्का, निश्चय,४ नज़र, दृष्टि का शास्त्र, ५ घड़े, पानी और सूरज,६ आकाश के तारे इत्यादि,७ प्रकाश के स्रोत, खज़ाने से ८ जुदा, पृथक्, ९ आकाश के तारे इत्यादि की विद्या के भेद, १० जंगल, ११ जगह ज़ाहिर होने की. १२ प्रतिबिम्ब डालने वाला १३ आश्चर्य।

कैसी माया, यह कैसा तिलिस्म[1] है।
दुनियाँ तो हैरते-मुजस्सम[2] है॥
अब ज़रा और खोज[3] कीजेगा।
यह अचम्भा अजीब है माया॥
कहिये आश्चर्य क्या कहाता है?।
इन्तहा का मज़ा जो आता है॥
इन्तहा का मज़ा है आनन्दघन।
यानी खुद राम सच्चिदानन्द घन॥
पस यह माया भी आप ही है ब्रह्म।
नाम रूप हैं कहां? है खुद ही ब्रह्म॥
उमड आयी हो गर स्पाहे[4]-वैहम।
फिर भगा दो उसे, न जाना सैहम[5]॥
माया माया की कुछ नहीं दरअसल।
वसल कैसे हो, अहद[6] में कब फसल[7]॥
इस को देखें बइतबारे अवद।
तब तो माया यह जैहल[8] है बेदर्द॥
प्राण, अव्यक्त और अविद्या भी।
इल्लते[10]-औला हैं, नाम इस के ही॥
ख्वाबे[11]-ग़फलत है, घन सुपुप्ती है।
दीद[12] कारण भी यह कहलाती है॥
आलमे-ख्वाब और बेदारी[13]।
इस ही चश्मे से होगये जारी॥

---

१ जादू, २ आश्चर्यरूप, ३ विचार, सोचा, ४ भ्रम की फ़ौज (सैना) ५ डर, भय, ६ अद्वैत, एक, ७ फासला, अन्तर, ८ जीव के लिहाज़ से, जीव दृष्टि से, ९ अविद्या, अज्ञान, १० सबसे पहिला कारण, इत्यादि, ११ स्वप्न, १२ दृष्टि, १३ जाग्रत।

[ ३७० ]

## कारण शरीर।

( ३ ) जौग्रफी[1] में नक़शा दरिया का।
जूँ शजर[2] सरनगूँ[3] है दिखलाया॥
गरचि निसवत शजर से रखता है।
जड़ को ऊञ्चा तने से रखता है॥
बेख[4] दरिया की तरफ जड़ क़ायम।
रहती कैलास पर ही है दायम[5]॥
मुर्तफ़ा[6] बेख की तरह कारण।
मुञ्जमिद[7] सर्द ठोस ज़रीन[8] तन॥
सखत मस्ती ग़रूर से भरपूर।
नेसती[9], लाशरीक[10], हर्कत दूर॥

[ ३७१ ]

## सूक्ष्म शरीर।

इस ही कारण शरीर से पैदा।
यह लतीफो-कसीफ[11] जिस्म हुआ॥
ऊंचे कोहों[12] पै बर्फ सारे है।
सोने चान्दी की झलक मारे है॥

---

१ भूगोल, २ वृक्ष, ३ सिर के बल, उलटा मुँह ( अर्थात् ऊर्ध्व मूल मधा शाखा; गीता ) ४ मूल, जड़, ५ नित्य ६ ऊँचे उठी हुई अर्थात् ऊँची जड़ वाले की तरह, ७ जमा हुआ, ८ सुनैहरी तन वाली, ९ अव्यक्त, १० अद्वितीय, ११ सूक्ष्म और स्थूल, १२ पर्वत।

पिघलते पिघलते बर्फ़ यही ।
पर्वतों पर बनी है गंगा जी ॥

इस से शफ्फाफ नदियां बहती हैं ।
खेलती जिन में लैहरें रहती हैं ॥

कोह का, फूल का, फल का, पत्तों का ।
साया लैहरों पै लुत्फ़ है देता ॥

नन्हें, नन्हें[1] यह सब नदी नाले ।
बर्फ़ ऊंची के बाल के बाले ॥

देनी निसबत उन्हें मुनासिब है ।
देह सूक्ष्म से, औ'न वजिब है ॥

देह सूक्ष्म है "फ़िक्रो-अक़लो-होश ।
इमत्याज़ो खयालो-गुफ़तो-नोश[2]" ॥

आलमे-ख्वाब[3] में यही सूक्ष्म ।
चलता पुरज़ा बना है क्या चम ख़म ॥

टेढ़े तिर्छे कलोल करता है ।
चुहल पुहलों में क्या लचकता है ॥

बर्फ़ जड़ जो शरीर कारण है ।
ज़ेरे-अन्वारें[4]-मिहरे-रौशन है ॥

देह सूक्ष्म इसी से ढलता है ।
जूँ पहाड़ी नदी निकलता है ॥

---

१ छोटे छोटे, २ अक़्ल, होश, तमीज़, ख्याल, वाणी और श्रोतादि इन्द्रियाँ ये सब ( अन्तःकरण ) सूक्ष्म शरीर कहलाता है, ३ स्वप्नावस्था, ४प्रकाश स्वरूप सूर्य ( आत्मा ) के तले ( नीचे ) है ।

[ ३७२ ]

### ❋ स्थूल शरीर ❋

ख्वाब गुज़रा तो जाग्रत आई ।
नदी मैदान् में उतर आई ॥
ज्यूँ ही सूक्ष्म ने क़दम यहां रक्खा ।
गदला खाकी कसीफ़[1] जिस्म लिया ॥
या कहो यूं कि जिस्मे-नाज़ुक[2] ने ।
सूफ मोटे के कपड़े पैहने ॥
शब को शीरीं-बदन जो सोता है ।
जामा[3] तन से उतार देता है ॥
जब ज़मिस्तां[4] की रात आती है ।
नंगा दरिया को कर सुलाती है ॥
दरिया का करके मुशाहदा[5] देखा ।
खिर्क़ा[6] हर साल में नया ही था ॥
ठीक इस तौर पर ही, जिस्मे-लतीफ़ ।
बदलता पैरहन[7] है जिस्मे-कसीफ ॥
यूं तो हर शब लिबासे-ज़ाहिर को ।
दूर करता है बदने-दरबर[8] को ॥
इल्ला[9] फिर सुबह पैहन लेता है ।
स्थूल देह में फिर आन रहता है ॥

---

१ मोटा, स्थूल, २ सूक्ष्म शरीर, ३ कपड़ा, वस्त्र, लिबास, ४ शरद ऋतु, शीत काल, ५ दृष्टि, नज़र करना, ६ वस्त्र, लिबास, ७ पोशाक, ८ अपने ऊपर के शरीर को, ९ किन्तु ।

[ ३७३ ]

### ※ आवागमन। ※

लैक मरते समय यह जिस्मे-लतीफ़।
बदलता मुतलक़न[1] है जिस्मे-कसीफ़॥

जब पुरानी यह हो गयी पोशाक।
दे उतारी यह फेंक दी पोशाक॥
केंचली चोला को उतार दिया।
और ही जिस्म फिर तो उधार लिया॥

इस को कहते हैं हिंदू आवागमन।
बदलना जिस्म का है आवागमन॥

[ ३७४ ]

### ※ आत्मा। ※

मिहर[2] जो बर्फ़ पर दरख़शाँ[3] था।
साफ़ नालों पे नूर[4]-अफ़शाँ था॥

वही स्थूल रवद[5]-मैदान् पर।
जल्वा अफ़गन[6] था, आबे-हैराँ[7] पर॥
एक दरिया के तीन मौक़ों पर।
मिहर है एक हाज़िरो-नाज़िर॥

---

१ बिलकुल, नितान्त, २ सूर्य, ३ चमकीला, ४ प्रकाश छिड़कता था, ५ मैदान की नदी, ६ प्रकाश अर्थात् अपना बिम्ब डालने वाला है, ७ चञ्चल जल।

बल्कि दुनियाँ के जितने दरिया हैं।
तैहते परतौ[1] सभों के सेह[2] जा हैं॥
आत्मा एक तीन जिस्मों पर।
जल्वा-अफ़गन है, हाज़िरो-नाज़िर॥
सारी दुन्या के तीन जिस्मों पर।
एक आत्म है बातनो-ज़ाहिर[3]॥
आना जाना नहीं है आत्म में।
यह तो मफरूज़[4] सब हुये तन में॥
आत्मा में कहां की आवागमन।
आये किस जा[5]? और जाये कौन?॥

[ ३७५ ]

※ तीन वर्ण। ※

असल को अपने भूल कर इन्सान्।
भूला भटका फिरे है, हो हैरान्॥
मरता ख़रगोश जबकि जाता है।
झाड़ी झाड़ी में सिर छुपाता है॥
है तअक़ब[6] में पैछा का सय्याद[7]।
छोड़ता ही नहीं ज़रा जल्लाद[8]॥
गाह[9] बदने-कसीफ में आया।
गाह जिस्मे-लतीफ में धाया॥

---

१ प्रकाश के तले, २ तीनों स्थान, ३ अन्दर और बाहर, ४ कल्पित, फ़र्ज़ किये गये, ५ स्थान, ६ पीछे जाना; भागे हुये का पीछा करना, ७ शिकारी, ८ मारने वाला या पोस्त उतारने वाला ज़ालिम, ९ कभी।

कभी क़ारण में है पनाहगज़ी[1]।
वैह्म से बन गया है वाख़ता दीन[2]॥

[ ३७६ ]

* शूद्र *

जिसने स्थूल में निशस्त[3] करी।
"जिस्मे[4]-बेरूं हूँ" ठान जाँ[5] में ली॥

नक़्शे-उलफ़त को बदन में रक्खा।
ऐशो-इशरत हवास[6] में चक्खा॥

करलिया जिस्म अपना पाया-ए-तख़्त
खाने पीने में समझ रक्खा बख़्त[7]॥

न रक्खी इल्मो-फ़ज़्ल से कुछ गर्ज़।
एक तनपरवरी[8] ही समझा फ़र्ज़॥

गर्ज़ यह थी, चला जो चाल कहीं।
कि न हो जिस्म को ज़वाल[9] कहीं॥

जिसको परवाह नहीं है इज़्ज़त की।
है फ़क़त आज़ू[10] तो लज़्ज़त की॥

डाल कर लङ्गरे-अनानीयत[11]।
समझा दरिया कसीफ़ जमीअत[12]॥

---

१ आश्रय लेने वाला, २ व्याकुल, थका, माँदा, ३ स्थिति, आसक्ति, ४ बाह्य अर्थात् स्थूल शरीर, ५ चित्त, ६ इन्द्रिय, ७ नसीब, भाग्य, शुभ, प्रारब्ध; ८ केवल प्राण रक्षा या देह का पालन पोषन, ९ गिरना, पतला होना १० इच्छा, ख़्वाहिश, ११ अहंकार का लंगर, १२ इकट्ठा किया हुआ ख़ज़ाना।

वे दिरम[1] देहे-कसीफ़[2] का चाकर।
इस को कहना ही चाहिये शूदर॥

[ ३७७ ]

### ※ वैश्य ※

डेरा जिस ने लतीफ़[3] में रक्खा।
राजधानी उसे बना बैठा॥
कह रहा है ज़ुबाने-हाल[4] से वह।
"देह सूक्ष्म हूँ मैं" जो हो सो हो॥
जो ठठोली से क़ाबू आता है।
ताना खंजर सा चीर जाता है॥
भूका काटेगा नँगा रह लेगा।
ज़ाहरी पीड़ दुःख सह लेगा॥
मौका शादी का हो, कि मरने का।
मर मिटेगा नहीं वह डरने का॥
घर गिरौ रख के खर्च कर देगा।
चोटी क़र्ज़े से भी जकड़ देगा॥
कोई मेरे को बोली मार न दे।
जिस्म सूक्ष्म को गोली मार न दे॥
फिकर हर दम जिसे यह रहती है।
देखूँ क्या खल्क़[5] मुझ को कहती है॥

---

१ एक पैसा भी जिसका मूल्य न हो, अति तुच्छ, २ स्थूल शरीर, ३ सूक्ष्म शरीर, ४ अपनी वाणी अर्थात् वाणी और अमल से, ५ जनता, लोग।

जान जिस की है निन्दा-स्तुति में।
हमनशीनों[1] से बढ़ के इज़्ज़त में॥
पल में तोला, घड़ी में माशा है।
पैंडूलम[2] की तरह तमाशा है॥
राये लोगों की मिस्ले-चौगां[3] है।
गेंद सां दौड़ता हरासां[4] है॥
रात दिन पेचो-ताब[5] है जिस को।
नंग[5] का इज़्तराब[6] है जिस को॥
रहता इसी उधेड़ बुन में है।
पासे-नामूस[7] ही की धुन में है॥
जीता औरों की राये पर जो है।
ख्याले-वैहशत[8] फ़ज़ाये पर जो है॥
क़ियास में ज़िस के टेढ़ा बेढ़ापन।
तबा[9] जिस की सदा है मुतलव्वन[10]॥
गाह[11] चढ़ती है, गाह घटती है।
रुख पहाड़ी नदी बदलती है॥
ऐसा वैह्मी मिज़ाज है जिस का।
देह सूक्ष्म से काज है जिस का॥
वैश्य कहना बजा[12] है ऐसे को।
शक्लो-सूरत में ख्वाह कैसे हो॥

---

१ बराबर वाले साथियों से, २ घड़ी के नीचे जो धातु का टुकड़ा लटक हुआ एक ओर से दूसरी ओर हिलता रहता है, ३ गुल्ली डंडा के खेल की तरह, ४ परेशान, व्याकुल, घबराहट, ५ इज़्ज़त, ६ व्याकुलता, ७ इज़्ज़त (नाम) का ख्याल, डर, ८ नफरत बढ़ानेवाले ख्याल, ९ प्रकृति, स्वभाव, १० नाना रंग बदलने वाली, ११ कभी, १२ उचित।

[ ३७८ ]

❀ क्षत्रिय ❀

जिस की निष्ठा है देह कारण में ।
है अचल, बज़्म[1] में हो या रण में ॥
दुनियाँ हिल जाये पर न हिलता है ।
मुस्तक़िल[2]·अज़्म क़ौल[3] पक्का है ॥
ख्वाह तारीफ ख्वाह मुज़म्मत[4] हो ।
शादी और ग़म पे जिस की कुदरत[5] हो ।
लाज से भय जिसे असला[6] हो ॥
दो दिली से न काम पतला हो ॥
जो नहीं देखता है पबलिक[7] को ।
मद्दे-नज़र[8] बातने-मुबारिक[9] हो ॥
राये पर और की न चलता है ।
क़ौम को आप जो चलाता है ॥
लोग दुनियाँ के मुखालिफ सब ।
जान लेने को आयें उस की जब ॥
ज़हर, सूली,सलीब[10] या फाँसी ।
हँस के सहता है जैसे हो खांसी ॥
जिस को तारीफ की नहीं परवाह ।
खाली तारीफ से ही वह होगा ॥
पैर पूजेंगे, नाम पूजेंगे ।
लोग सब उस की बात बूझेंगे[11] ॥

---

सभा, २ दृढ़ निश्चय, ३ वचन वा प्रतिज्ञा, ४ निन्दा, घृणा, ५ ताक़त वा वश, ६ बिलकुल, ७ जनता, ८ दृष्टि तले, ९ जिसे अपनी (भीतर की ) सम्मति धन्य हो, १० सूली, ११ समझेंगे ।

उस को अवतार करके मानेंगे ।
लोग जब उस की बात जानेंगे ॥
धर्म क्षत्रिय है, यह मुबारिक धर्म ।
बरतर अज़ ज़ोफो-नंगो, आरो-शर्म[1] ॥
आज इस धर्म की ज़रूरत है ।
धर्म यह बरतर अज़ क़दूरत[2] है ॥
नाम को ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो ।
नाम को वैश्य और कि शूद्र हो ॥
सब को दरकार है, यह क्षत्रिय धर्म ।
जान नेशन[3] की है यह क्षत्रिय धर्म ॥
इस को कहते हैं लोग कैरेक्टर[4] ।
देह कारण को जान, इस का घर ।
उस तलेटी पै रहता है क्षत्रिय ।
राना प्रताप और शिवा जी ॥
जिस से नदियां तमाम आती हैं ।
वञ्ज व्यौपार को सजाती हैं ॥
है चमक दमक और आबो-ताब ।
यह बलन्दी है गोया आलमे[5]-ताब ।
इस ज़मीन पर यह है बुलन्द[6] तरीं ।
मसनद[7] शाही को है ज़ेब[8] यहीं ॥
चश्मा व्यवहार का है सम्भाला ।
राज है उस का, मरतबा आला ॥

---

१ लज्जा, शर्म, निर्बलता, इज्जत से अतीत, २ मलिनता, गदलापन, ३ राष्ट्र, ४ श्रेष्ठ आचरण, उत्तम एवं दृढ़ चरित्र, ५ प्रकाश देने वाले सूर्य के समान, ६ बहुत ऊँची, ७ गद्दी, तखत, ८ उचित, शोभा ।

जोश है और खरोश है जिस में।
शूरमापन का होश है जिस में॥
शेरे-नर को न लाये खातर में।
तैहलका डाले फौजो-लशकर में॥
गरज से कोह को हिलाता है।
दिल बबर[1] का भी दहिल जाता है॥
जौक़[2] दर जौक़, फौज दल बादल।
मिथ्या, ला[3] शै है, हेच[4] और बातल[5]॥
धर्म की आन पर है जान् कुर्बान्।
गीदी[6] बन कर न हो कभी हैरान्॥
वही क्षत्रिय है, राम का प्यारा।
देश पर जिस ने जान को वारा॥
मस्त फिरता है ज़ोर में, बल में।
कौन्द जाता है बिजली बन, पल में॥
तोप बंदूक़ की सदा[7] से डर!
उङ्गली लेता नहीं वह कान में धर॥
कपकपी में नहीं कभी आता।
लाले-जान के पड़ें, नहीं डरता॥
गर्चि घायल हो, फिर भी सीनह सपर[8]।
शोक करता नहीं, नहीं कुच्छ डर॥
तीरो-तल्वार की दना दन में।
अभिमन्यु[9] सा जा पड़े रण में॥

---

१ बड़ा भारी शेर, २ झुंड के झुंड, ३ झूटा ४ कुछ नहीं, तुच्छ, ५ झूठी, ६कमज़ोर दिल, ७ आवाज़, ८ उत्साह से भरा हुआ (छाती मज़बूत किये युद्ध में डटा रहने वाला), ९ अर्जुन के पुत्र का नाम।

जां बाज़ी ही जिस की राहत[1] हो।
जंगो-ज़ोरावरी ही फरहत[2] हो॥
रण हो, घमसान का क़यामत हो।
बला का हंगामा[3], और शामत हो॥
ज़ख्म ज़ख्मों पे खूब खाता है।
पैर पीछे नहीं हटाता है॥
सख्त से सख्त कारज़ारो-रज़ाम[4]।
शान्ति दिल में हो, अज़म हो बिलज़म[5]॥
जिस्म हर्कत में, चित्त साकन[6] हो॥
दिल तो फारिग़ हो, कारकुन तन हो॥
हर दो जानिब समा भयङ्कर था।
तुन्द मोरो-मलखँ सा लशकर था॥

हाथी घोड़ों का, शूर बीरों का।
शँख बाजे का, और तीरों का॥
शोर था आस्मां को चीर रहा।
गर्द से मिहर बन फ़क़ीर रहा॥
अफरा तफरी में और गड़बड़ में।
वह दिलावर कमाल की जड़ में॥
क्या दिखाता जवान मर्दी है।
क्या ही मज़बूत दिल है, मर्दी है॥
गीत ठण्डक भरा सुनाता है।
फिल्सफा[8] क्या अजब बताता है॥

---

१ आराम, चैन, आनन्द, २ खुशी, प्रसन्नता, ३ युद्ध, लड़ाई, ४ महाभारत, ५ बड़े मज़बूत ( पक्के ) इरादे वाला, ६ स्थिर, अचल, ७ अगणित, बेशुमार, ८ शास्त्र, तत्त्वज्ञान।

जिसके नुक़्तों[1] को ता अबद[2] कामिल[3] ।
सोचा चाहें गे गौर से मिल मिल ॥
सख़्त नारों[4] में शांत यह सुर है ।
सच्चा यह मन चला बहादुर है ॥

[ ३७९ ]

ब्राह्मण ।

कोह[6] पर शिव नज़र जो आता है ।
बर्फ़ को आब[7] कर बहाता है ॥
जिस से कैलास ही न तावां[8] है ।
रौनक़े-बेहर[9] और बियाबां है ॥
वैश्य क्षत्रिय को और शूद्र को ।
दे है प्रकाश किह-ओ-मिहतर[10] को ॥
ओम् आनन्द आत्मा चैतन्य ।
तीनों देहों में है जो नूर अफ़गन[11] ॥
निष्ठा इस में है जिस की कि "यह मैं हूँ"
"शिव हूँ, सूरज हूँ, खास शङ्कर हूँ" ॥
रूये-आलम[12] पे नूर-अफ़गन[13] है ।
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है ॥

---

१ गुह्य वाक्यों, वचनों, २ सदैव, ३ बुद्धिमान ४ यहाँ भगवान् कृष्ण की ओर संकेत है, ५ गरजों में, भीषण शब्दों में, ६ पर्वत, ७ जल, ८ चमकीला, ९ समुद्र की शोभा, १० छोटे और बड़े सब को, ११ प्रकाश, ( तेज ), डालने वाला, १२ सारे संसार पर, १३ प्रकाशमान् ।

मुक्त खुद, दर्शनों से मुक्त करे।
नूर और ज़िन्दगी से चुस्त करे॥
तीन गुण से परे है, पर सब को।
नूर देता है, ख्वाह क्या कुच्छ हो॥
जिसको फरहत न दे कभी पैसा।
ब्राह्मण है वही जो हो ऐसा॥
खड़ा करता नहीं है, दस्ते-दुआ[1]।
है ग़नी[2] ज़ात[3] ही में वह घनी हुआ॥
मांगता ख्वाब में भी कुछ न है।
उसकी दृष्टि से काञ्च कुंदन है॥
विष्णू को लात मार देता है।[4]
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है॥

[ ३८० ]

## * शुद्ध स्वरूप *

तीनों अजसाम से गुज़र कर पार।
यां[5] अदू[6] है नहीं न कोई यार॥
हुसन में अपने खुद दरख़शाँ[7] हूँ।
मिहरे-ताबां[8] हूँ, मिहरे-ताबां हूँ॥
मिल्लतें[9] क्या मज़े से खाता हूँ।
मौत चटनी मिर्च लगाता हूँ॥

---

१ माँग के लिये हाथ पसारना, २ बड़ा धनवान, ३ स्वस्वरूप, ४ यहाँ भृगु ऋषि की ओर संकेत है, ५ यहाँ है, ६ दुशमन, शत्रु, ७ रौशन, ८ प्रकाशमान् सूर्य, ९ मत, भेद, पन्थ।

मेरी किरणों में हो गया धोका।
आब[1] का था सुराबे-दुन्या[2] का॥
क़िला दुःखों का सर किया, ढाया।
राज अफलाको-मिहर[3] पर पाया॥
हस्ते-मुतलक़[4], सरूरे-मुतलक़[5] पर।
झंडा गाड़ा, फरेरा लेहराया॥
कुछ न बिगड़ा था, कुछ न सुधरा अब।
कुछ गया था न, कुछ नहीं आया॥

---

१-जल, २ मृग तृष्णा के जल का, ३ आकाश और सूर्य, ४ सत्य स्वरूप, ५ आनन्द स्वरूप।

[ ३८१ ]

# निजी अनुभव

## तस्वीरे-यार[1]

ग़ज़ल

इस लिये तस्वीरे-जानां[1] हमने खिचवाई नहीं। (टेक)
बात थी जो असल में, वह नक़ल में पाई नहीं। इस० १
पहिले तो यहाँ जान की तन से शनासाई[2] नहीं॥ इस० २
तन से जाँ जब मिल गयी तो उसमें दो ताई[3] नहीं॥ इस० ३
एक से जब दो हुए, तो लुत्फ़े-यकताई[4] नहीं॥ इस० ४
हम हैं मुशताक़े-सखुन[5], और उसमें गोयाई[6] नहीं॥ इस० ५

---

१ प्यारा यार अर्थात् अपने स्वरूप की मूर्ति, २ पहचान, ३ द्वैतपन वा दो होना (अर्थात् जब शरीर के साथ प्राण मिलकर बिलकुल एक हो गये तो उनको फिर अलग अलग होकर ही नहीं सकते, तो फिर तस्वीर कैसे), ४ एकता का आनंद, ५ वार्तालाप के इच्छुक, ६ मगर तस्वीर में बोलने की शक्ति नहीं।

पाओं लँगड़ा हाथ लुंझा, आँख बीनाई[1] नहीं ॥ इस० ६
यार का खाका[2] उड़ाना, यह भी दानाई[3] नहीं ॥ इस० ७
कागज़ी यह पैरहन[4] है, दिल को यह भाई नहीं ॥ इस० ८
दिल में डर है कि मुसव्वर[5] ही न बन बैठे रक़ीब[6] ॥ इस० १०
दाम माँगे था मुसव्वर, पास इक पाई नहीं ॥ इस० १०
असल की खूबी कभी भी नक़ल में आई नहीं ॥ इस० ११

[ ३८२ ]

※ निफाक़ ※

रेखता

सत्य धर्म को छिपा दिया, किसने ? निफाक़ ने
लोगों में छल फैला दिया, किसने ? निफाक़ ने } टेक

यह देश इक ज़माने में दुनिया की शान था।
अब सब से अदना[7] कर दिया, किसने ? निफाक़ ने ॥ १ ॥

द्विज धर्म कर्म करने में रहते थे नित्य मग्न।
अब उनको पस्त[8] कर दिया, किसने ? निफाक़ ने ॥ २ ॥

हर घर में शब्द सुनते थे वेदों-पुराण के।
इन सब को ही मिटा दिया, किसने ? निफाक़ ने ॥ ३ ॥

महाबली रावण को तो जानत सभी यहां।
सब नाश उसका कर दिया, किसने ? निफाक़ ने ॥ ४ ॥

आया है वक़्त अब तो हितैषी बनो सभी।
घर घर में दखल कर लिया, किसने ? निफाक़ ने ॥ ५ ॥

---

१ (तस्वीर में) आँख की दृष्टि नहीं, २ नक़्शा, अभिप्राय हँसी उड़ाना, ३ बुद्धिमता, ४ काग़ज़ी वस्त्र, ५ तस्वीर खैंचने वाला, चित्रकार, ६ शत्रु, दूसरा आशिक़, सम प्रीतम ७ [illegible], अधम हीन ८ [illegible]

[ ३८३ ]

### * समय *

समय कैसा यह आया है ( टेक )

न यारों से रही यारी, न भाइयों में वफ़ादारी।
मुहब्बत उठ गई सारी, समय कैसा यह आया है ॥ १ ॥

जिधर देखो भरी कुलफत[1], भुला दी सब ने है उलफत[2]।
बुरी सोहबत[3], बुरी संगत, समय कैसा यह आया है ॥ २ ॥

सभायें की बहुत जारी, बने खुद उन के अधिकारी।
न छोड़े कर्म व्यभिचारी, समय कैसा यह आया है ॥ ३ ॥

बहुत उमदा कहें लेक्चर, मगर उलटा चलें उन पर।
अक़ल पर पड़ गये पत्थर, समय कैसा यह आया है ॥ ४ ॥

सचाई को छुपाते हैं, दिल औरों का दुखाते हैं।
वृथा सांचे[4] कहाते हैं, समय कैसा यह आया है ॥ ५ ॥

नहीं व्यवहार की शुद्धि, विपर्यय[5] हो रही बुद्धि।
विचारें सत नहीं कुछ भी, समय कैसा यह आया है ॥ ६ ॥

घटा है पाप की छाई, उपद्रव होवें हर जाई[6]।
है एक को एक दुःखदाई, समय कैसा यह आया है ॥ ७ ॥

न जाने देश के बासी, बनें कब सत्य विश्वासी।
मिटे अब कैसे उदासी, समय कैसा यह आया है ॥ ८ ॥

---

१ द्वेष, २ प्रम, ३ संग, संसर्ग, ४ सच्चे पुरुष, ५ उलटी, ६ हर जगह,

# भारत वर्ष

[ ३८४ ]

## भारत स्तुति

राग गारा, ताल धुमाली।

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं उसकी, यह बोस्तां[1] हमारा ॥ १ ॥
गुर्बत[2] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन[3] में।
समझो वहीं हमें भी, हो दिल जहां हमारा ॥ २ ॥
पर्वत वह सब से ऊँचा, हमसाया आसमां[4] का।
वह सन्तरी हमारा, वह पासबां[5] हमारा ॥ ३ ॥
गोदी में खेलती हैं जिस के हज़ारों नदियाँ।
गुलशन[6] है जिनके दम से रश्के-जहां[7] हमारा ॥ ४ ॥
ऐ आबे-रवद[8] गंगा! वह दिन है याद तुझ को।
उतरा तेरे किनारे जब कारवां[9] हमारा ॥ ५ ॥
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तान् हमारा ॥ ६ ॥
यूनानो-मिसरो-रूमा सब मिट गये जहां से।
बाकी पर है अभी तक नामो-निशां हमारा ॥ ७ ॥
कुछ बात है कि हस्ती[10] मिटती नहीं हमारी।
सदियों[11] से आसमां है ना मेहरबान् हमारा ॥ ८ ॥

---

१ बाग़, २ विदेश, ३ स्वदेश, जन्मभूमि, ४ आकाश का पड़ोसी, ५ चौकीदार, रक्षक, ६ वाटिका, ७ संसार के ईर्ष्या का स्थान, ८ ऐ बहती गङ्गाजी का जल, ९ काफला, १० स्थिति, वस्तुता, ११ सैकड़ों वर्षों से।

इक़बाल[1] अपना कोई मैहरम[2] नहीं जहां में।
मालूम है हमीं को दर्दे-निहां[3] हमारा ॥ ९ ॥

[ ३८५ ]

भारत वर्ष की महिमा।

चिश्ती[4] ने जिस ज़मीन् में पैग़ामे-हक़[5] सुनाया।
नानक ने जिस क़लीम[6] में वहदत[7] का गीत गाया॥
तातारियों ने जिस को अपना वतन बनाया।
जिसने हजाज़ियों से दश्ते-अरब[8] छुड़ाया॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है॥ १ ॥ (टेक)

यूनानियों को जिस ने हैरान कर दीया था।
सारे जहाँ को जिसने इलमो-हुनर दीया था॥
मिट्टी को जिसकी हक़[9] ने ज़र[10] का असर दीया था।
तुरकों का जिस ने दामन[11] हीरों से भर दीया था॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है॥ २ ॥

फिर ताव[12] देके जिस ने चमकाये कहकशां[13] से।
टूटे थे जो सतारे फारस के आस्मां से॥
वहदत की नै[14] सुनी थी दुन्या ने जिस मकां से।
मीरे-अरब[15] को आई ठंडी हवा जहां से॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है॥ ३ ॥

---

१ कवि का नाम है, २ भेदी, परिचित या वाक़िफ़ पुरुष, ३ छुपा हुआ दर्द, ४ मुसलमानों का पैग़म्बर, ५ ईश्वर का हुक्म, ६ मुल्क, ७ अद्वैत, ८ अरब मुल्क का जङ्गल, रेगस्तान् ९ ईश्वर, १० स्वर्ण, ११ चादर का पल्ला अर्थात् जेब, १२ ताकत, १३ आकाश में दूधीया रास्ता ( miky path ) के समान, १४ बाँसुरी अर्थात् अद्वैत का राग, १५ हज़रत महम्मद से अभिप्राय है।

गौतम[1] का जो वतन है, जापान का हरम[2] है।
ईसा के आशक़ों का छोटा योरूशलम[3] है॥
मदफ़ून[4] जिस ज़मीन में असलाम का चशम है।
हर फूल जिस चमन का फ़रदौस[5] है, अरम[6] है॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है॥ ४॥

[ ३८६ ]

## हुब्बे-वतन[7] अर्थात् स्वदेश-प्रीति

देखा है प्यारे! मैं ने दुन्या का कारख़ाना।
सैरो-सफ़र[8] किया है, छाना है सब ज़माना॥
अपने वतन से बेहतर[9] कोई नहीं ठिकाना।
ख़ारे-वतन[10] को गुल[11] से ख़ुशतर[12] है सबने माना॥
अहले-वतन[13] से पूछो, तुम ख़ूबियां वतन की।
बुलबुल ही जानती है आज़ादियां चमन[14] की॥ १॥

खाओ हवा वतन की, कुछ और ही मज़ा है।
पानी पीयो वतन का, अमृत से भी खरा[15] है॥
ख़ाके-वतन[16] न कहिये, इक्सीरो-कीमीया[17] है।
रुतबा[18] तेरी ज़िमीं का कुछ ऐ वतन! जुदा है॥
जो शय[19] ग़रज़ यहाँ है, दुन्या से है निराली।
नामे-वतन[20] ने इसमें ताज़ा है जान डाली॥ २॥

---

१ बुद्ध भगवान्, २ तीर्थ का मुक़ाम, बड़ा मंदर, ३ ईसायों के पूजने का मंदिर, ४ दफ़न कीया गया, ५ बहिश्त, ६ स्वर्ग, ७ अपने देश की प्रीति, ८ देश यात्रा देशाटन, ९ उत्तम, १० स्वदेश का काँटा अर्थात् दुःख, ११ पुष्प, १२ उत्तम, १३ स्वदेश के लोगों से, १४ बाग़, १५ अच्छा, स्वच्छ, १६ जन्मभूमि की मट्टी १७ दुःखनाशक रसायन, १८ दर्जा, १९ वस्तु, २० स्वदेश के नाम ने।

बाग़ों में फिर के देखो कुछ और ही है नुज़हत[1]।
खेतों से यहाँ के आती है आँख में तरावत[2]॥
रखते हैं याँ के दरिया कुछ और ही लताफ़त।
याँ के पहाड़ में है अर्शे-बिरीं[3] की रफ़अत[4]॥
दुन्या में फिर के देखा हरगिज़ कहीं नहीं है।
बाग़े-बहिश्त[5] कहिये यां की ज़िमीन् नहीं है॥ ३॥

है धूप में वतन की कुछ और नूर[6] तावां[7]।
और चांदनी यहाँ की चाँदी सी है दरख़शां[8]॥
अन्वार[9] की तजल्ली[10] बिजली सी है नुमायां[11]।
रहमत की वह झड़ी है, कहिये न उसको बारां[12]॥
मिसले-ज़मीरे-रौशन[13] मतला[14] की है, सफ़ाई।
दिल में उठीं उमंगे, जिस दम घटा भर आई॥ ४॥

देखे यहाँ के इन्सां अक्सर फ़रिश्ता[15] खो हैं।
सब औरतें[16] हूरीं[17] हैं सब मर्द खूबरू[18] हैं॥
रखते हैं यहाँ के हैवां कुछ और खो-ओ-बू[19] हैं।
और ताइरों[20] को देखो तो क्या ही खुशगलू[21] हैं॥
इन्सान और हैवान् यूँ तो हैं देखे भाले।
लेकिन यहां हैं सब के अन्दाज़[22] कुछ निराले॥ ५॥

---

१ शुद्धताई, पवित्रता, २ स्वच्छता, कोमलता, ३ सबसे ऊंचा आकाश स्वर्ग, ४ उँचाई, बुलन्दी, ५ स्वर्ग की वाटिका, ६ और सूर्य वा प्रकाश, ७ चमक रहा है, ८ चांदी सी है चमकीली, ९ प्रकाश अर्थात् चाँद सितारे इत्यादि, १० तेज, चमक, ११ अधिक स्पष्ट, १२ वर्षा, १३ शुद्ध चित्त की तरह, १४ आकाश से अभिप्राय है, १५ देवता के स्वभाव वाले, १६ स्त्री जाति, १७ सुन्दर, १८ सुन्दर मुख, १९ स्वभाव और मिज़ाज़, २० पक्षी, २१ उत्तम गले (सुरीले कण्ठ) वाले, २२ ढङ्ग, यहाँ बज़ा, कता क़द इत्यादि से अभिप्राय है।

जौहर[1] वतन में आकर खुलता है आदमी का।
जब था वतन से बाहर, वेशक वह आदमी था॥
यां आदमी नहीं वह है वाप या कि वेटा।
कहता है कोई भाई, कोई उसे भतीजा॥
यां गोशज़द[2] हैं हरसू[3] उलफत भरी[4] सदायें[5]।
बाहर वतन से हरगिज़ जो कान में न आयें॥ ६॥

है हम को जानो-दिल से अपना वतन प्यारा।
अच्छा वह दिन है उस की खिदमत में जो गुज़ारा॥
कहते हैं हम वतन को आँखों का अपनी तारा।
वह जान है हमारी, ईमान है हमारा॥
हां मेहर[6]! यह सखुन[7] है, दुन्या में सब ने माना।
अपने वतन से बेहतर[8] कोई नहीं ठिकाना॥ ७॥

[ ३८७ ]

## स्वदेश की पूर्वदशा स्मृति

राग देश

कभी हम भी बलन्द इक़बाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
हर फ़न में रखते कमाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ १॥

पढ़ते थे जब हम वेद को, जाने थे सब के भेद को।
रखते न अपनी मिसाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ २॥

पाबन्द थे जब धर्म के, माहर थे अपने कर्म के।
रौशन सभी पुरजलाल[9] थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ ३॥

---

१ गुण, खूबी, २ कान भर रही या कानों को सुना रहीं, ३ सर्व ओर, ४ प्रेम भरी, ५ आवाज़ें, ६ कवि का नाम है, ७ वचन, वाक्य, बात, उपदेश है, ८ अच्छा, उत्तम, ९ दबदबे वाले, बड़े तप वाले।

जब से जहालत[1] आ गयी, तारीकी[2] हर सू[3] छा गयी।
मुफलिस हैं जो खुशहाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ ४॥

हाकिम हैं जो महकूम[4] थे, खादम[5] हैं जो मखदूम[6] थे।
शेर अब हुए जो शृगाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ ५॥

हालत दिगरँगू[7] हो गयी, क़िसमत किश्वर[8] की सो गयी।
रोते हैं अब जो निहाल[9] थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ ६॥

[ ३८८ ]

## स्वदेश की वर्तमान दशा

### भजन

इक दिन राहे-तरक्की में हम भी रहनुमा[10] थे।
अब लोग पूछते हैं नामो-निशां हमारा॥

यूनान, मिसर, रूमा, इंगलैण्ड, गाल, जरमन[11]।
शागिर्द इक ज़माने में था जहान् हमारा॥

दुन्या में हो रहा था भारत वर्ष का चर्चा।
सब की ज़ुबान पर था लुत्फ़े-बियान्[12] हमारा।

गौतम, व्यास, भीषम थे नामवर यहीं के।
अर्जुन सा तीर-अफगन[13] था इक जवान्[14] हमारा॥

---

१ अज्ञान, १ अन्धकार, ३ तरफ, सर्व ओर, ४ प्रजा, जिन पर हकूमत थी, ५ नौकर, दास, ६ खिदमत किया गया अर्थात् स्वामी, ७ दूसरी तरह, ८ मुल्क, देश, ९ खुश, आनंद, १० नायक, रास्ता दिखाने वाला, ११ मुल्कों के नाम हैं, १२ हमारे ही ज़िकर के गीत अथाव महिमा, १३ तीर फैंकने वाला, १४ शूरवीर बहादर।

रौनक़ चमन[1] की सारी फसले-खज़ां[2] ने लूटी।
वीरान हो गया है सब गुलिस्तान्[3] हमारा ॥

हां अहले-हिन्द[4] उट्ठो, हालत ज़रा संभालो।
नक़शा हुआ दिगर[5] गूं है बेगुमान् हमारा ॥

राहत[6] की गर तलब[7] है, सब इत्तफ़ाक़ करलो।
छोड़ो नफ़ाक़, इसी में होगा ज़ियान्[8] हमारा ॥

[ ३८९ ]

## भारत कुल

लौनी

आज्ञा में जिन की जहान था, उन की कुल में हमीं तो हैं। } (टेक)
सात द्वीप नवखंड बीच में जिन का मान था, हमीं तो हैं ॥

चौदा विद्या जो निधान[9] थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन से चतुर हैं पशु हैवान् अब, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥
वेदों का माने प्रमाण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
बांचे है मिथ्या ज्ञान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥
सब विद्याओं की जो खान[10] थे, उन की कुलमें हमीं तो हैं ॥१॥ सात०

ब्राह्मण यहां पूर्ण गुणवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
मूर्ख हुये जाती अभिमान में, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥

---

१ बाग़ की बहार, २ शरद ऋतु, ३ उपवन, ४ भारत वासी, ५ उलट, दूसरी तरह का, ६ आराम, आनन्द, ७ जिज्ञासा, ८ नुक़सान, हानि, ९ चौदह विद्या में चतुर अर्थात् चौदह विद्या के खज़ाने वाले, १० मूल, मंबा, खज़ाना।

सब का जो चाहें कल्याण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
ठग्गी की धरली दुकान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या का करते थे दान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ २॥ सात०

ऋषी मुनि जहां ज्ञानवान् थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भंग चर्स में हैं गलतां[1] अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
जिन का देव सर्व शक्तिमान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन का इष्ट है विषय ध्यान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
संसकृत जिन की अपनी ज़ुबान् थी, उन की कुल में हमीं तो हैं॥३॥सात०

आकाश में चलते बिमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
रेल देख हो गये हैरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
चली भीमसैन बालों से समान थे, उन की कुलमें हमीं तो हैं।
घुटनों पर रख उठें हाथ अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
कृष्ण, राम, भीषम् समान थे, उन की कुल में हमी तो हैं॥४॥सात०

ब्रह्मचर्य की जिन को बान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं।
बल बीर्य खोय नातवाँ[2] हुए, ऐसे नादान् हमीं तो हैं॥
लक्षसिंहारी[3] जिन के बान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
चूहे का नहीं कटें कान अब, एसी सन्तान हमीं तो हैं॥
अंगद सुग्रीव हनूमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ ५॥ स...

देश उन्नति का था ध्यान जिन्हें, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भारत में कर बैठे हान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
प्राणियों पर देते प्राण जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
अब मद मांस को करे पान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
गौ जान पर जिनकी जान थी, उनकी कुल में हमीं तो हैं॥ ६॥ सात०

---

१ फंसे हुये, डूबे हुये, २ कमज़ोर, ३ लक्ष सिंहों को मारने वाले।

आर्यावर्त जिन का स्थान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन का स्थान हिन्दुस्थान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
बड़े बड़े यहां धनवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भोजन बिन हो रहे विरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या में करते स्नान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ ७॥ सात०

सत उपदेश करतेथे गान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
कोक[1] शास्त्र करें बिखान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
सत असत लेते थे छान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
सुन के सत जायें बुरा मान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
नवलसिंह[2] कहे वेद धर्म पर धरो ध्यान फिर हम ही तो हैं॥८॥सात०

[ ३९० ]

## भारत-नींद

उठो अब नींद को त्यागो, हुआ बिलकुल सवेरा है।
हवा बदली ज़माने की, तुम्हें आलस ने घेरा है॥

बड़े बनने लगे तुम से जो छोटे थे कई दरजे।
तुम्हारी अक़ल पर कीना जहालत[3] ने बसेरा है॥

पड़े तुम बेखबर सोते, नहीं जगते जगाने से।
तुम्हारे घर में घुस बैठा, अविद्या का लुटेरा है॥

बुज़ुर्गों की थी क्या इज्ज़त, तुम्हारा हाल है अब क्या?
ज़रा तो ग़ौर कर सोचो, हुआ यह क्या अँधेरा है॥

---

१ एक शास्त्र का नाम है जिनमें विषय भोग करने की नानाविधि लिखी हुई हैं अर्थात् विषय भोग का शास्त्र, २ कवि का नाम है, ३ अविद्या, अज्ञान।

करो अब देश की चिंता यह गफ़लत नींद का त्यागो।
नहीं तो डूबता कुछ दिन में यह भारत का बेड़ा है॥

चली जब जायगी सारी तुम्हारी शान और शौकत।
तो फिर अफ़सोस खाओगे, पड़े जब दुःख घनेरा[1] है॥

जगाओ ऐ प्रभु! अब तो हमारे देश भाइयों को।
यही बलदेव की अरज़ी, भरोसा नाथ! तेरा है॥

[ ३९१ ]

## स्वदेश-प्रीति की नित्यता

आग में पड़कर भी सोने की दमक जाती नहीं।
काट देने से भी हीरे की चमक जाती नहीं॥

सिल पर घिसा देने से भी जाती नहीं चन्दन की बू।
फूल की मिट्टी में मिल कर भी महक[2] जाती नहीं॥

कूट कर आता नहीं कुछ लाल की रंगत में फर्क।
तोड़ देने से भी मोती की चमक जाती नहीं॥

रंज में आता नहीं नेकों की पेशानी[3] पै बल।
धूप की तेज़ी में सबज़ा की लहक जाती नहीं॥

रुक नहीं सकती कटहरों में शेरों की धहाड़।
दस्ते-गुलचीं[4] में भी गुंचों की महक[5] जाती नहीं॥

---

१. अति भारी, २ सुगंध, ३ मत्था, ४ फूल तोड़ने वाले हाथ में, ५ सुगंध।

खौफो-खतरे में बदल सकती नहीं मरदों की खो[1]।
अन्दलीबों[2] की क़फ़स में भी चहक जाती नहीं॥

साहिबे-हिम्मत नहीं दबता मुखालिफ से कभी।
ज़ोर से आंधी के आतिश की भड़क जाती नहीं॥

नारहज़न रहता है आफातो-हवादस[3] में दलेर।
बादलों में घिर के बिजली की कड़क जाती नहीं॥

मुल्क की उलफत का जज़बह[4] दिल से मिट सकता नहीं।
कौम की खिद्मत में ख्वाहश, पे फलक[5] जाती नहीं॥

[ ३९२ ]

## भारतीय का प्रण

नाम ज़िन्दों में लिखा जाँयगे मरते मरते।
लाज भारत की बना जाँयगे मरते मरते॥

जान पर खेल ही जाँयगे अगर हम तौ भी।
सैंकड़ों ही को जला जाँयगे मरते मरते॥

सरो-तन होंगे जुदा उन को तो होना ही है।
हम तो बिछड़ों को मिला जाँयगे मरते मरते॥

वह कोई और होंगे जो रो के रुला के मरते।
हम रक़ीबों को हँसा जाँयगे मरते मरते॥

---

१ प्रकृति, २ बुलबुल पक्षियों, ३ कष्टों और विपत्तियों, ४ प्रेम का वेग वा प्रवाह, ५ कवि का नाम, देव लोक।

ख़ाक में जिस्म किसी और का मिलता होगा।
हम तो भूखों को खिला जायँगे मरते मरते ॥

तिशनह लब आयँगे जिस वक़्त रक़ीबे-नादान्।
ख़ूँ तक अपना पिला जायँगे मरते मरते ॥

[ ३९३ ]

## हिन्दुओं को चितावनी

हे हिन्दु कौम! तेरा गो है निशान बाक़ी।
लेकिन नहीं है तुझ में बिल्कुल ही जान बाक़ी ॥ १ ॥

सब गोश्त पोस्त तेरा अफ़सोस सड़ चुका है।
अब रह गये हैं तुझ में कुछ उस्तख्वान्[1] बाक़ी ॥ २ ॥

सिर हाथ पैर टाँगें, तेरी अलग अलग हैं।
हैरत है किस तरह फिर तुझ में हैं प्राण बाक़ी ॥ ३ ॥

मत भेद से हज़ारों फिरके हुए हैं तुझ में।
जिन में नहीं है कुछ भी जुज़[2] ऐंठ तान बाक़ी ॥ ४ ॥

हर एक दूसरे का बदख्वाह[3] हो रहा है।
दिल में नहीं किसी के कुछ तेरा ध्यान बाक़ी ॥ ५ ॥

ऐ हिन्दु क़ौम! तेरे बेटों के पास अब तो।
बस रह गई है ख़ाली ज़िल्लत[4] व हानि बाक़ी ॥ ६ ॥

ईसाई खा रहे हैं मुरदा समझ के तुझ को।
खा लेंगे जो रहा है पहले-कुरान्[5] बाक़ी ॥ ७ ॥

---

१ हड्डी, २ अतिरिक्त, ३ अशुभचिन्तक ४ ज़लील होना, ५ मुसलमान लोग।

हालत यही रही गर कुछ दिन भी तो बिलाशक ।
क़ायम नहीं रहेगा तेरा निशान बाक़ी ॥ ८ ॥

जो तेरे थे मुहाफ़िज़ दुनियां से चल बसे वह ।
कोई नहीं है तेरा अब पासबान बाक़ी ॥ ९ ॥

राम और कृष्ण जैसे सच्चे सपूत तेरे ।
सब चल बसे, रहे हैं हमनाम जान बाक़ी ॥ १० ॥

वीरों से गोद तेरी ख़ाली हुई है माता ।
कोई नहीं है तुझ में भीष्म समान बाक़ी ॥ ११ ॥

बाज़ार धर्म का सब मसमार[1] हो चुका है ।
ठगों की रह गई है बेशक दुकान बाक़ी ॥ १२ ॥

पीछे पड़ी हुई हैं जुमला[2] अछूत क़ौमें ।
जिन को नहीं है तेरा मुतलिक़[3] भी ध्यान बाक़ी ।

सालिग[4] से पुत्र तेरे बलहीन प्यारी अम्मां ।
करने को रह गये हैं आहो-फ़ुगान[5] बाक़ी ॥ १४ ॥

[ ३९४ ]

## हिन्दुओं की दशा

किस ओर गिर रहे हो किस धुन में जा रहे हो ?
अपनी यह हिन्दुओं ! क्या हालत बना रहे हो ? ॥ १ ॥

किस कोढ़ ने है घेरा ? कैसी लगी बीमारी ?
न वह छोड़ती है, न तुम ही छोड़ रहे हो ॥ २ ॥

न तो सो ही तुम रहे हो, जगते भी नहीं खुलकर ।
कहला के आर्य भारत रज[1] में मिला रहे हो ॥ ३ ॥

---

१ टूट गया, नष्ट हो चुका, २ समस्त, ३ नितांत, ४ कवि का नाम ५ रोना चिल्लाना, मिट्टी में ।

फहराती जो पिताका ऋषियों की हम के ऊपर।
क्यों भाग्यहीन उस को नीचे गिरा रहे हो ॥ ४ ॥

सब त्यागते के साथ ही भाषा भी छोड़ बैठे।
हो कौन मुँह लगाकर हिन्दू कहा रहे हो ॥ ५ ॥

इस बाढ़ में समझ लो बह जाओगे सरासर।
हिन्दी का हिन्द से जो नाता छुड़ा रहे हो ॥ ६ ॥

अब भी समय बहुत है करलो सुधार अपना।
सिर पर कलङ्क का क्यों टीका लगा रहे हो ॥ ७ ॥

चिल्लाते मर गये हम, पीछे जगे भी तो क्या।
"माधव[1]" के दिल जले को, फिर क्यों जला रहे हो ॥ ८ ॥

[ ३९५ ]

## हिन्दुओं को हिन्दी माता की अपील

ऐ हिन्द के सपूतों! क्या है खता[2] हमारी।
जो आज गिर रही हूँ आँखों से मैं तुम्हारी ॥ १ ॥

मुख चूम चूम मैं ने है बोलना सिखाया।
हा[3]! वह मेरी मुहब्बत तुम देते हो बिसारी ॥ २ ॥

हिन्दी हूँ माँ तुम्हारी, कुछ तो नज़र उठाओ।
देखो पिता तुम्हारा भी हो रहा भिखारी ॥ ३ ॥

खाती हूँ लात दर दर, जीती हूँ, बेहया[4] हूँ।
पर क्या करूँ जिगर में इक आस है तुम्हारी ॥ ४

तुम लाख कैसे ही हो, खूने-जिगर हो अपने।
इक दिन कभी तो बच्चो! सुधि लोगे ही हमरी ॥ ५

---

१ कवि का नाम, २ अपराध, ३ हाय शोक, ४ निर्लज्ज।

[ ३९६ ]

## बलि-बलि जाऊँ ।

मैं तो भारत पै बलि-बलि जाऊँ ।। ⎫
गुइयाँ मैं तो भारत पै बलि-बलि जाऊँ ॥ ⎭ टेक

भारत है मेरा प्राणों का प्यारा ।
दिल का दुलारा, जीवन अधारा ॥
उस पै तन मनको वारूँ, उस पै त्रिभुवन को हारूँ ।
उसको पलकों पै धारूँ, उस को दिल पै बैठाऊँ ॥१॥ टेक

भारत है मेरा कुँवर कन्हैया,
बन बन में मेरी चराता है गैया ।
उस को बन से बुलाऊँ, उस को माखन खिलाऊँ ।
उस से बंसी बजवाऊँ, अपने अँगना नचाऊँ ॥२॥ टेक

भारत है मेरा प्यारा ललनवा ।
करता कलोलें (मेरे) दिल के पलनवा ।
उस को गोदिया उठाऊँ, उस के कजरा लगाऊँ ।
उसको मल-मल न्हिलाऊँ, उसको अंचरा पिलाऊँ ॥३॥ टेक

भारत है मेरा दुनिया से न्यारा ।
मेरी बलंदी, मेरा सितारा ।
उस पै दिठिया लगाऊँ, उस से रोशन हो जाऊँ ।
मैं तो उस में समाऊँ, अपना आपा भुलाऊँ ॥४॥ टेक

( श्रीपद्म-कोट, प्रयाग )

[ ३९७ ]

## शिक्षक भारत

भारत हमारा जग को क्या क्या सिखा रहा है । ( टेक )

उस के सुपुत्र सारे संसार के हैं प्यारे।
पूरण प्रशान्त पावन जीवन की ज्योति धारे।
संसार भर के सेवक, संसार भर से न्यारे।
उन के पवित्र मन का दर्पन दिखा रहा है ॥१॥ टेक

"दुष्कृत कोई न कर तू, करते सुकृत न डर तू।
"हर कर किसी के धनको अपना भवन न भर तू।
"पर-हित के साधने में कोई न कर कसर तू"।
शुभ कर्म की तरफ यों सब को झुका रहा है ॥ २ ॥ टे

"कर न्याय की न हिंसा, हे नर न हो नृशंसा।
"धर सत्य की सुपंथा, होकर निडर, निसंसा।
"भर ले हृदय-भवन में भगवान् की प्रशंसा"—
अनमोल सत-बचन का अमृत चखा रहा है ॥ ३ ॥ टेक

भारत का जग ऋणी है, यह जग-शिरोमणी है।
शुचिता में सौम्यता में, दृढ़ता में अग्रणी है।
दर्शक है पुण्य-पथ का, कर्मण्य है, प्रणी है।
सद्धर्मता के धन की निधि को रखा रहा है ॥ ४ ॥ टेक

( श्रीपद्म-कोट, प्रयाग )

[ ३९८ ]

हित-अनहित

समझ मन रे मूरख नादान।
अपना और पराया, जग में, हित अनहित पहचान ॥ टेक ॥

अपनों का तुझे ज्ञान नहीं है, गैरों पर है ध्यान।

जिन को कुछ परवाह नहीं तेरी, उन पर तू कुरबान ॥
समझ मन रे मूरख नादान ॥ १ ॥

अपनों और परायों में जो रखता ग़लत गुमान ।
खाता खता एक दिन भारी, खोता सारी शान ॥
समझ मन रे मूरख नादान ॥ २ ॥

हित अनहित की समझ समस्या हो जा सजग, सुजान ।
अगर पार करना हो जीवन का अपार मैदान ॥ ३ ॥
समझ मन रे मूरख नादान

( श्रीपद्म-कोट, प्रयाग )

[ ३९९ ]

## प्रेममय संसार

प्रेममय है सारा संसार
प्रेमहि का सारा प्रसार है, मत कह इसे असार ॥ १ ॥

प्रेम वार है, प्रेम पार है, प्रेमहि है मंझधार ।
बेड़ा पड़ा प्रेम सागर में, प्रेम से होगा पार ॥
प्रेममय है सारा संसार ॥ २ ॥

प्रेमहि है स्वारथ, परमारथ, सकल-पदारथ-सार ।
प्रेम बिलग जो है तेरे मन में वो है प्रेम-विकार ॥
प्रेममय है सारा संसार ॥ ३ ॥

हो जा निडर, छोड़ दे गड़बड़, पकड़ प्रेम की धार ।
प्रेम के बल से केवल होगा, निबल, तेरा निस्तार ॥
प्रेममय है सारा संसार ॥ ४ ॥

( श्रीपद्म-कोट, प्रयाग )

[ ५०० ]

## लावनी*

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर, अमर, अज अविनाशी।
जास ज्ञान से मोक्ष हो जावे कट जावे यम की फांसी॥
अनादि ब्रह्म, अद्वैत, द्वैत का जा में नामो-निशान् नहीं।
अखंड सदा सुख, जा का कोई आदि मध्य अवसान नहीं॥
यही ब्रह्म हूँ, मनन निरन्तर, करें मोक्ष-हित संन्यासी।
शुद्धि सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर, अमर, अज, अविनाशी॥ १॥

सर्वदेशी हूँ, ब्रह्म हमारा एक जगह अवस्थान नहीं।
रमा हूँ सब में, मुझ से कोई भिन्न वस्तु इन्सान नहीं॥
देख विचारो, सिवाय ब्रह्म के हुआ कभी कुछ आन नहीं।
कभी न छूटे पीड़ दुःख से जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं॥
ब्रह्म ज्ञान हो जिसे उसे नहीं पड़े भोगनी चौरासी।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ अजर, अमर, अज, अविनाशी॥ २॥

अदृष्ट, अगोचर, सदा दृष्ट में जा का कोई आकार नहीं।
नेति, नेति, कह निगम ऋषीश्वर, पाते जिस का पार नहीं॥
अलख ब्रह्म लियो जान, जगत नहीं, कार नहीं, कोई यार नहीं।
आँख खोल दिल की टुक प्यारे कौन तरफ़ गुलज़ार नहीं॥
सत्य स्वरूप आनंद राशी हूँ, कहें जिसे घट घट बासी।
शुद्ध सच्चिदानंद ब्रह्म हूँ, अजर, अमर, अज, अविनाशी॥ ३॥

---

* भूल से यह लावनी निजानन्द के अध्याय में छपने से रह गई थी इसलिये अब इसे अन्त में दे दिया है।

# भजनों की वर्णानुक्रमणिका

अ

| भजन. | पृष्ठ, |
|---|---|

आ



इ

छ



ज

ज्ञ

य



र

श



स

इति वर्णानुक्रमणिका समाप्तः

# श्रीमद्भगवद्गीता

पर

## हमारी प्रकाशित व्याख्या क्यों अधिक प्रतिष्ठित है ?

इस व्याख्या के लेखक परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज के ...ट शिष्य श्रीनारायण स्वामीजी ने इसे अनेक प्रकार से अलंकृत किया है। भूमिका, प्रस्तावना, गीता-माहात्म्य, विषयानुक्रमणिका, पूर्व वृत्तान्त, मूल गीता, शब्दार्थ, अन्वयार्थ, व्याख्या तथा टिप्पणियाँ देकर इस संस्करण की बड़ी शोभा बढ़ाई है। पहले मूल श्लोक, उसके बाद अन्वयाङ्कानुसार प्रत्येक श्लोक के प्रत्येक शब्द का अर्थ दिया है, उसके बाद अन्वयार्थ और व्याख्या है। और जगह जगह पर बड़े महत्व की टिप्पणियाँ दी हुई हैं। जहाँ जहाँ मूल का विषयान्तर होता दिखाई पड़ा, वहाँ वहाँ सम्बन्धिनी व्याख्या लिखकर विषय का मेल मिला दिया है। सब से बड़े महत्व की बात स्वामीजी ने यह की है कि प्रत्येक अध्याय के अन्त में उसका सार संक्षेप पूर्वक दे दिया है जिससे साधारण पाठक भी अपना हित साधन कर सकें। मतलब यह कि क्या बहुज्ञ और क्या अल्पज्ञ दोनों के सन्तोष का साधन स्वामी जी ने इस संस्करण में विद्यमान कर दिया है। इसी कारण अनेक गीता प्रेमियों और पत्रिकाओं का मत है कि इस व्याख्या ने लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक कृत व्याख्या का भी स्थान छीन लिया है। पृष्ठ संख्या लगभग १२०० है।

यह व्याख्या दो भागों में विभक्त है, मूल्य प्रत्येक भाग रु० २)

निवेदक

**श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग**

नं० २५, मारवाड़ी गली, लखनऊ.